Table of Contents

शीर्षक पेज
छाप पृष्ठ
इस ईबुक का उपयोग कैसे करें
समर्पण
सूक्ति
अंतर्वस्तु
1 मृत्यु या गौरव
2 आशा ही ईश्वर है
3. कायर होने से बेहतर मर जाना है
4 उत्कृष्टता की निरंतर खोज
5 मौत के क्षेत्र में
6. चंद्रमा तक तैरना
7 मिशन
8 सबसे ऊंचे दांव
9 सम्मान कमाया जाता है
10 चरम सीमा की सामान्यता
11 बचाव!
12 अंधेरे में
13 अराजकता के समय में
14 शिखर बुखार
15 एक पर्वत की राजनीति
16. हार मानना खून में नहीं होता।
17 तूफान के बीच
18 द सैवेज माउंटेन
19 एक पर्वतीय मानसिकता
20 जन परियोजना
21 एपिक
उपसंहार: शिखर पर
परिशिष्ट एक: मृत्यु क्षेत्र से सीखे गए सबक
परिशिष्ट दो: चौदह पर्वत: अनुसूची
परिशिष्ट तीन: विश्व रिकॉर्ड
स्वीकृतियाँ
चित्र आभार
फुटनोट
चित्र अनुभाग 1
चित्र अनुभाग 2

निम्सडे पुर्जा

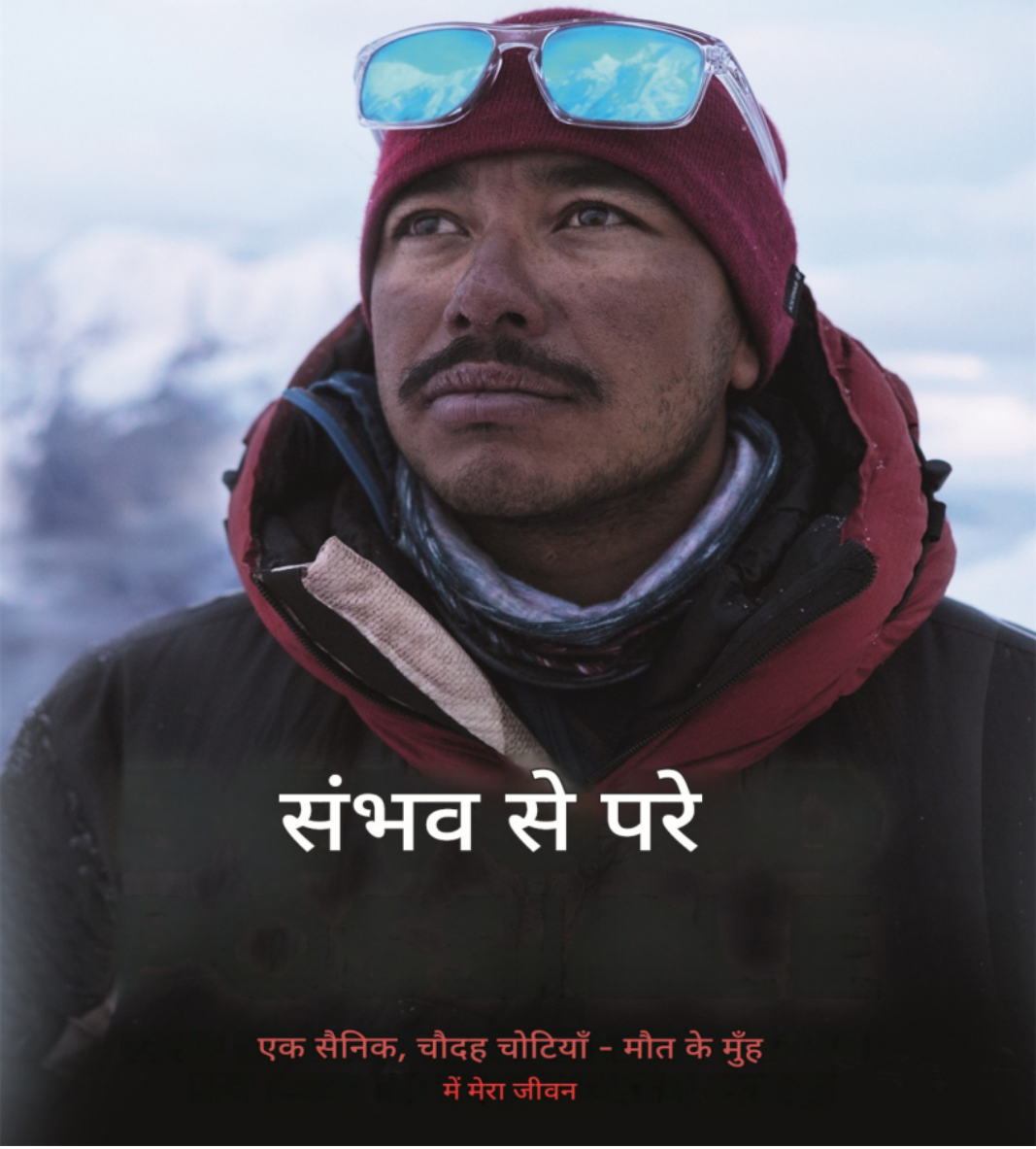

संभव से परे

एक सैनिक, चौदह चोटियाँ - मौत के मुँह में मेरा जीवन

Table of Contents

लेखक के बारे में
शीर्षक पेज
छाप पृष्ठ
इस ईबुक का उपयोग कैसे करें
समर्पण
सूक्ति
अंतर्वस्तु
1 मृत्यु या गौरव
2 आशा ही ईश्वर है
3. कायर होने से बेहतर मर जाना है
4 उत्कृष्टता की निरंतर खोज
5 मौत के क्षेत्र में
6. चंद्रमा तक तैरना
7 मिशन
8 सबसे ऊंचे दांव
9 सम्मान कमाया जाता है
10 चरम सीमा की सामान्यता
11 बचाव!
12 अंधेरे में
13 अराजकता के समय में
14 शिखर बुखार
15 एक पर्वत की राजनीति
16. हार मानना खून में नहीं होता।
17 तूफान के बीच
18 द सैवेज माउंटेन
19 एक पर्वतीय मानसिकता
20 जन परियोजना
21 एपिक
उपसंहार: शिखर पर
परिशिष्ट एक: मृत्यु क्षेत्र से सीखे गए सबक
परिशिष्ट दो: चौदह पर्वत: अनुसूची
परिशिष्ट तीन: विश्व रिकॉर्ड
स्वीकृतियाँ

चित्र आभार
फुटनोट
चित्र अनुभाग 1
चित्र अनुभाग 2

निर्मल ('निम्स') पुरजा एमबीई का जन्म नेपाल में हुआ था। उन्होंने गोरखा सैनिक के रूप में और विशिष्ट स्पेशल बोट सर्विस (एसबीएस) में अपनी सेवाएं दीं, जिसके बाद उन्होंने पर्वतारोहण और अन्वेषण के अपने जुनून पर ध्यान केंद्रित करने के लिए यह सेवा छोड़ दी।

संभव से परे

एक सिपाही, चौदह चोटियाँ –
मृत्यु क्षेत्र में मेरा जीवन

Nimsdai Purja

www.hodder.co.uk

यह पुस्तक पहली बार ग्रेट ब्रिटेन में 2020 में हॉडर एंड स्टॉटन द्वारा प्रकाशित की गई थी।
हैचेट यूके कंपनी

Copyright © Nirmal Purja 2020

निर्मल पुरजा को इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने का अधिकार।
उनके द्वारा कार्य का दावा किया गया है
कॉपीराइट, डिजाइन और पेटेंट अधिनियम 1988।

Cover photograph: Nims Purja/Sandro Gromen-Hayes

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।
किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से प्रेषित
इसका अर्थ है प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना, और न ही ऐसा किया जाना चाहिए।
अन्यथा किसी अन्य बंधन या आवरण के रूप में प्रसारित किया गया हो, सिवाय इसके।
जिसमें इसे प्रकाशित किया जाता है और इसी तरह की कोई शर्त नहीं होती है
बाद के खरीदार पर लगाया गया।

इस पुस्तक का सीआईपी कैटलॉग रिकॉर्ड ब्रिटिश लाइब्रेरी से प्राप्त किया जा सकता है।

ईबुक ISBN 9781529312270
हार्डबैक ISBN 9781529312249
ट्रेड पेपरबैक ISBN 9781529312256

हॉडर एंड स्टॉटन लिमिटेड
कार्मलाइट हाउस
50 विक्टोरिया तटबंध
लंदन EC4Y 0DZ

www.hodder.co.uk

ईबुक में दिए गए लिंक टेक्स्ट (जो नीले रंग में है) पर ध्यान दें।
जिसे आप नोट्स और मुख्य पाठ के बीच नेविगेट करने में सहायता के लिए चुन सकते हैं।

मेरी मां, पूर्णा कुमारी पुरजा को, जिन्होंने मेरे सपनों को साकार करने के लिए इतनी मेहनत की, और नेपाल के पर्वतारोहण समुदाय को, जो 8000 मीटर से अधिक ऊंचे पहाड़ों का घर है।

आपकी अतिवादी सोच मेरे लिए सामान्य बात है।

अंतर्वस्तु

1 मृत्यु या गौरव
2 आशा ही ईश्वर है
3. कायर होने से बेहतर मर जाना है
4 उत्कृष्टता की निरंतर खोज
5 मौत के क्षेत्र में
6. चंद्रमा तक तैरना
7 मिशन
8 सबसे ऊंचे दांव
9 सम्मान कमाया जाता है
10 चरम सीमा की सामान्यता
11 बचाव!
12 अंधेरे में
13 अराजकता के समय में
14 शिखर बुखार
15 एक पर्वत की राजनीति
16. हार मानना खून में नहीं होता।
17 तूफान के बीच
18 द सैवेज माउंटेन
19 एक पर्वतीय मानसिकता
20 जन परियोजना
21 एपिक

उपसंहार: शिखर पर
परिशिष्ट एक: मृत्यु क्षेत्र से सीखे गए सबक
परिशिष्ट दो: चौदह पर्वत: अनुसूची
परिशिष्ट तीन: विश्व रिकॉर्ड
स्वीकृतियाँ

चित्र आभार

फुटनोट
चित्र अनुभाग 1
चित्र अनुभाग 2

डेथ ओर ग्लोरी

दिनांक: 3 जुलाई 2019

जैसे ही मैं नांगा पर्वत की बर्फीली ढलान पर सिर के बल फिसला, दुनिया मेरे पैरों तले से खिसक गई। दस, बीस, तीस मीटर पलक झपकते ही धुंधले से गुजर गए।

क्या मैं अपनी मौत की ओर गिर रहा था?

कुछ ही पल पहले मैं सुरक्षित महसूस कर रहा था, खड़ी ढलान पर मजबूती से टिका हुआ था और तेज़ हवाओं का सामना कर रहा था। तभी मेरी पकड़ छूट गई, मेरे क्रैम्पोन के दांत बर्फ में धंस नहीं पा रहे थे और मैं तेज़ी से नीचे गिरने लगा, पहले धीरे-धीरे, फिर तेज़ी से, बहुत तेज़ी से, हर पल मेरी गति बढ़ती जा रही थी, मेरा दिमाग उन पलों का हिसाब लगा रहा था जब मैं पहाड़ से हमेशा के लिए दूर चला जाऊंगा, मेरा शरीर नीचे कहीं नुकीली चट्टानों पर बिखर जाएगा, या किसी गहरी दरार में जा गिरेगा।

भाई, इसे सुधारने के लिए तुम्हारे पास ज्यादा समय नहीं है।

अगर मेरी मौत हो जाती, तो इस खूनी अंत के लिए किसी और को दोष नहीं दिया जा सकता था। मैंने दुनिया के नौवें सबसे ऊंचे पर्वत पर बर्फीले, निर्मम तूफ़ान में चढ़ने का फैसला किया था। मैंने सात महीनों के भीतर चौदह 'डेथ ज़ोन' पर्वतों पर विजय प्राप्त करने का निश्चय किया था, एक साहसिक और रिकॉर्ड तोड़ने वाले प्रयास में; हर चढ़ाई 8,000 मीटर से अधिक की ऊंचाई पर थी, एक ऐसी ऊंचाई जहां हवा इतनी पतली हो जाती है कि दिमाग और शरीर सूखकर काम करना बंद कर देते हैं। और मैंने उतरते समय एक रस्सी को छोड़ने का फैसला किया था, जो एक दूसरे पर्वतारोही को रास्ता देने के लिए एक दोस्ताना इशारा था, क्योंकि वह घबराकर पहाड़ से नीचे उतर रहा था। लेकिन एक, दो, तीन कदम आगे बढ़ने के बाद, बर्फ अजीब तरह से हिल गई, खिसक गई, ढह गई और मुझे भी अपने साथ नीचे खींच लिया।

मैं बेकाबू हो गया था और अभियानों के लिए मैंने जो दो नियम पहले से तय किए थे, वे अत्यधिक दबाव में परखे जा रहे थे। पहला: आशा ही ईश्वर है। दूसरा: विशाल पर्वतों पर छोटी-छोटी चीजें ही सबसे ज़्यादा मायने रखती हैं। रस्सी से दूर हटकर, मैं नियम दो को भूल चुका था, जो मेरी गलती थी, मेरी ही समस्या थी।

तो अब मेरे पास सहारा लेने के लिए केवल नियम एक ही बचा था।

क्या मैं उन कुछ पलों में मरने से डर गया था? बिलकुल नहीं। मैं कायरता के बजाय किसी भी समय मृत्यु को चुन लेता, खासकर तब जब यह मुझे अपनी क्षमताओं को मानवीय सीमाओं से परे ले जाने के प्रयास में मिलती। 2018 में, चौदह डेथ ज़ोन चोटियों पर चढ़ाई के पिछले सर्वश्रेष्ठ समय को तोड़ने की योजना की घोषणा के बाद, शारीरिक क्षमता की सीमाओं का परीक्षण करना ही मेरी आशा थी। यह रिकॉर्ड 2013 में कोरियाई पर्वतारोही किम चांग-हो ने बनाया था - उन्होंने यह उपलब्धि सात साल, दस महीने और छह दिनों में पूरी की थी। पोलैंड के पर्वतारोही जेरज़ी कुकुज़्का ने भी इसी तरह सात साल, ग्यारह महीने और चौदह दिनों में यह उपलब्धि हासिल की थी।

इतना समय बचाने का लक्ष्य रखना साहसिक, यहाँ तक कि अमानवीय भी लग रहा था, लेकिन मुझे खुद पर इतना भरोसा था कि मैंने ब्रिटिश सेना में अपनी नौकरी छोड़ दी, जहाँ मैंने कई वर्षों तक गोरखा सैनिक के रूप में सेवा की थी, और फिर स्पेशल बोट सर्विस (एसबीएस) में शामिल हो गया – जो स्पेशल फोर्सेज का एक हिस्सा है और दुनिया के कुछ सबसे खतरनाक युद्धक्षेत्रों में काम करने वाले सैनिकों का एक विशिष्ट समूह है। इतने प्रतिष्ठित करियर को छोड़ना जोखिम भरा लग रहा था, लेकिन मैं अपनी महत्वाकांक्षा के लिए सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार था।

आत्मविश्वास ने मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और मैंने इस चुनौती को एक सैन्य अभियान की तरह लिया। योजना बनाते समय, मैंने अपने विश्व रिकॉर्ड तोड़ने के प्रयास का नाम 'प्रोजेक्ट पॉसिबल' रखा था और बाद में यह नाम उन लोगों के लिए एक करारा जवाब जैसा लगा जो मेरे सपने पर विश्वास नहीं करते थे या नहीं कर सकते थे। ऐसे लोग बहुत थे; संदेह करने वाले हर तरफ से सामने आए, हालांकि समर्थन करने वाले भी कभी-कभी थोड़े संशय में दिखते थे। 2019 में, रेड बुल की वेबसाइट ने दावा किया कि मेरा लक्ष्य 'चाँद तक तैरने' जैसा था। मैं इससे अलग सोचता था। मैं इस दुनिया में हारने के लिए नहीं आया था। हार मानना मेरे स्वभाव में नहीं था, यहाँ तक कि मृत्यु के संकट में भी नहीं। मैं चरवाहे के धक्के खाने वाली भेड़ नहीं था; मैं एक शेर था और मैंने बाकियों के साथ चलने-फिरने से इनकार कर दिया।

कई ऊँचाई वाले पर्वतारोहियों की विशेषज्ञता के मुकाबले, मैं शायद काफी अनुभवहीन लग रहा था। मैंने कुछ ही साल पहले 8,000 मीटर से ऊपर चढ़ाई शुरू की थी, लेकिन मैं ऊँचाई पर जल्दी ही एक माहिर पर्वतारोही बन गया था और मुझे लगता है कि इसका बहुत कुछ मेरे अनोखे शारीरिक गठन से जुड़ा था। एक बार जब मैंने मृत्यु क्षेत्र में चढ़ाई शुरू कर दी, तो मुझे ऊँचाई पर तेज़ी से चलना अपेक्षाकृत आसान लगा, मैं साँस लेने के लिए रुकने से पहले सत्तर कदम चल लेता था, जबकि अन्य पर्वतारोही केवल चार या पाँच कदम ही चल पाते थे।

मेरी रिकवरी क्षमता भी कमाल की थी। मैं अक्सर चोटियों से तेज़ी से नीचे उतरता था, बेस कैंप में रात भर पार्टी करता था और अगली सुबह हैंगओवर हो या न हो, अपने अगले अभियान पर निकल जाता था। यही था निम्स स्टाइल का पर्वतारोहण: कठिन परिस्थितियों में उत्कृष्टता की निरंतर खोज। परिस्थितियाँ कैसी भी हों, कोई भी चीज़ मुझे रोक नहीं सकती थी।

मृत्यु या गंभीर चोट को छोड़कर, यानी।

तीस-चालीस मीटर का सफर तेज़ी से बीत गया। गिरते हुए मुझे अपना ध्यान केंद्रित करना पड़ा। अपनी गति और बढ़ती रफ्तार पर; ऊपर बादलों में धुंधले होते लोगों पर, जिनसे मैं धीरे-धीरे दूर होता जा रहा था। और उन तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करना पड़ा जिनकी मदद से मैं खुद को रोक सकता था। क्या मैं अपनी बर्फ की कुल्हाड़ी का इस्तेमाल कर सकता था, उसे पहाड़ में गाड़कर गिरने की गति को धीमा कर सकता था? कुल्हाड़ी को नीचे खींचते हुए, मैंने उसके सिरे को मजबूती से पकड़ लिया, उसकी नोक को बर्फ में गाड़ दिया, लेकिन नीचे की बर्फ बहुत नरम थी, इसलिए मैंने फिर से धक्का दिया। कुछ नहीं हुआ। कोई सहारा नहीं मिला।

समस्या को हल करने की अपनी क्षमता पर जो थोड़ा सा भरोसा मुझे था, वह तेज़ी से कम हो रहा था। मेरी गिरने की गति बढ़ गई थी और मैंने अपना सारा नियंत्रण खो दिया था, तभी... वहाँ! फुहार के बीच से मुझे वह रस्सी दिखाई दी जिसका इस्तेमाल हम कुछ देर पहले उतरने के लिए कर रहे थे। अगर मैं पूरी ताकत से उसे पकड़ लेता, तो शायद मैं उस पर लटक पाता। यही मेरी आखिरी उम्मीद थी, इसलिए मैंने मुड़कर अपना हाथ आगे बढ़ाया और रस्सी को पकड़ने की कोशिश की... संपर्क! मजबूती से पकड़ते हुए, हथेलियों में जलन के बावजूद, मैंने खुद को रोक लिया।

मानो दुनिया ने गहरी, शांत साँस ली हो। क्या मैं ठीक था? देखने से तो ऐसा ही लग रहा था, हाँ, हालाँकि एड्रेनालाईन के कारण मेरे पैर ज़रूर लड़खड़ा रहे थे। मेरा दिल भी ज़ोर से धड़क रहा था।

मैंने सोचा, तुम ठीक हो भाई। अभी चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

एक-दो पल रुककर खुद को संभालने के बाद, मैं खड़ा हुआ और अपनी चाल में बदलाव करते हुए, अधिक सतर्क हो गया। 'अगले कुछ कदम पूरी सावधानी से उठाओ और संभलकर चलो...'

ऊपर मौजूद साथियों को मैं बिल्कुल शांत और स्थिर लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो मैं सामान्य परिचालन की स्थिति में लौट आया हूँ, और ऐसे काम कर रहा हूँ जैसे कुछ भी असामान्य नहीं हुआ हो, लेकिन गिरने से मैं बुरी तरह हिल गया था। मेरे आत्मविश्वास को थोड़ी सी चोट पहुँची थी, इसलिए मैंने रस्सी को कसकर पकड़ा और हर कदम को ध्यान से देखा जब तक कि मेरा आत्मविश्वास वापस नहीं आ गया। अब मेरा नज़रिया बदल गया था। जैसे ही मैंने बर्फ पर अपने जूते जमाए, मैंने खुद से कहा कि मौत तो कभी न कभी मुझे आएगी ही – शायद किसी पहाड़ पर प्रोजेक्ट पॉसिबल के दौरान, शायद बुढ़ापे में, दशकों बाद – लेकिन नंगा परबत पर नहीं, और न ही अगले ही पल।

आज नहीं।

आज नहीं।

लेकिन जब?

और क्या मैं अपना शुरू किया हुआ काम पूरा कर पाऊंगा?

आशा ही ईश्वर है

मुझे दुनिया की चौदह सबसे ऊंची चोटियों पर बेहद तेज़ी से चढ़ने की प्रेरणा मिली थी और मैं नेपाल की महान चोटियों अन्नपूर्णा, धौलागिरी, कंचनजंगा, एवरेस्ट, ल्होत्से, मकालू और मनास्लू को भी पार करने की उम्मीद कर रहा था; पाकिस्तान में नांगा पर्वत, गाशेरब्रुम प्रथम और द्वितीय, के2 और ब्रॉड पीक पर चढ़ाई करने की, और अंत में, तिब्बत की खतरनाक 8,000 मीटर ऊंची चोटियों - चो ओयु (जिस तक नेपाल से भी पहुंचा जा सकता था) और शिशपंगमा को फतह करने की। लेकिन क्यों? ये धरती के कुछ सबसे दुर्गम स्थान थे और इस तरह की चुनौती, जिसकी समय सीमा केवल छह महीने या उससे कुछ अधिक थी, अधिकांश लोगों को पागलपन लग सकती थी। लेकिन मेरे लिए यह दुनिया को यह साबित करने का एक अवसर था कि अगर कोई व्यक्ति अपना दिल और दिमाग किसी योजना में लगा दे तो सब कुछ, कुछ भी संभव है।

किसी को क्या फर्क पड़ता था कि यह कितना खतरनाक था?

मेरी मातृभूमि में स्थित विश्व की सबसे ऊंची चोटी और हिमालय की एक भव्य धरोहर, माउंट एवरेस्ट से इस रोमांच की शुरुआत हुई। नेपाल जैसे छोटे, चारों ओर से ज़मीन से घिरे देश से बाहर के लोगों के लिए एवरेस्ट किसी पौराणिक कथा जैसा है। लेकिन बचपन में यह मुझे एक दूर की चीज़ लगती थी। मेरा परिवार गरीब था; हमारे घर से एवरेस्ट तक और वापस आने का सफ़र स्थानीय लोगों के लिए भी महंगा था और इसमें लगभग बारह दिन लगते थे। इसके अलावा, रास्ते में पड़ने वाले गांवों में बने छोटे-छोटे होटलों में रुकना पड़ता था, इसलिए मैंने कभी इस रोमांच का अनुभव नहीं किया।

जब मैं 2003 में इंग्लैंड आया, एक युवा गोरखा सैनिक के रूप में ब्रिटिश सशस्त्र बलों में सेवा करते हुए, लोग मुझसे हमेशा एक ही सवाल पूछते थे: 'एवरेस्ट कैसा है?' नेपाल के भूगोल से अपरिचित मेरे साथियों को लगता था कि वह पर्वत शायद मेरे घर के पीछे वाले बगीचे में ही भव्य रूप से खड़ा होगा। जब मैंने स्वीकार किया कि मैंने बेस कैंप तक नहीं देखा है, चढ़ाई करना तो दूर की बात है, तो वे अप्रभावित दिखे। इसके बाद एक योद्धा के रूप में मेरी क्षमता पर सवाल उठाए गए।

‘यह तुम्हारे घर के बिल्कुल सामने है, दोस्त, और तुमने ज़रा भी परवाह नहीं की? और हमने सोचा था कि गोरखा बहादुर होते हैं...’

दस साल बाद, आखिरकार उन मज़ाकों और कटाक्षों से मेरा मन तंग आ गया।

ठीक है। मैं चढ़ाई शुरू करता हूँ। अब समय आ गया है।

मैंने दिसंबर 2012 में पृथ्वी के सर्वोच्च स्थान की ओर अपना पहला कदम रखा, जब उनतीस वर्ष की आयु में मैंने एवरेस्ट की दुर्गम चोटी की तलहटी तक की यात्रा की। उस समय तक मैं गोरखा रेजिमेंट से आगे बढ़कर सैन्य अभिजात वर्ग में शामिल हो चुका था, और एक मित्र के माध्यम से मेरा संपर्क प्रसिद्ध नेपाली पर्वतारोही दोरजे खत्री से हुआ, जिन्होंने कई दिनों तक चलने वाली मेरी यात्रा में मुझे बेस कैंप तक ले जाने की पेशकश की। दोरजे कई बार एवरेस्ट पर चढ़ाई कर चुके थे और शेरपा गाइडों के अधिकारों के प्रबल समर्थक थे: उन्होंने उनके अधिकारों की रक्षा की और बेहतर वेतन के लिए अभियान चलाया, लेकिन वे जलवायु परिवर्तन के प्रति भी सक्रिय थे और हिमालय के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास करते रहे।

इस यात्रा के लिए इससे बेहतर साथी मुझे नहीं मिल सकता था। लेकिन जब मैंने 8,848 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एवरेस्ट की चोटी को निहारा, तो मैंने फैसला किया कि ट्रेकिंग काफी नहीं है और मुझे जोखिमों की बिल्कुल भी परवाह नहीं थी। अब और ऊपर जाने का समय था।

काफी समझाने-बुझाने के बाद, मैंने दोरजे को 8,000 मीटर ऊँची चोटी पर चढ़ने के लिए ज़रूरी कुछ हुनर सिखाने के लिए राज़ी कर लिया। पहले तो मैंने उनसे पास ही स्थित 6,812 मीटर ऊँची चोटी अमा डबलाम पर चढ़ने की कोशिश करने की अनुमति देने की गुहार लगाई, लेकिन दोरजे ने मेरे इस विचार को हँसकर टाल दिया।

उन्होंने कहा, 'निम्स एक बहुत ही तकनीकी पर्वत है। एवरेस्ट पर चढ़ने वाले लोगों को भी शिखर तक पहुंचने में काफी संघर्ष करना पड़ता है।'

इसके बजाय हम पास की चोटी, लोबुचे ईस्ट की ओर रवाना हुए, पास के एक गाँव से कुछ किराए के उपकरण लिए और फिर शिखर की ओर चढ़ाई शुरू की। काम धीमा था, लेकिन लगातार जारी था, और दोरजे के मार्गदर्शन में, मैंने पहली बार क्रैम्पोन पहने, घास की ढलान पर चलते हुए घास में उनके स्टील के नुकीले हिस्सों की चुभन महसूस की। यह अनुभव अजीब था, लेकिन इससे मुझे एक वास्तविक पर्वतारोहण के दौरान होने वाले अनुभव का अंदाजा हो गया और जैसे-जैसे हम धीरे-धीरे शिखर की ओर बढ़ते गए, कड़ाके की ठंड और तेज़ हवाओं के बीच, मैंने पहली बार अभियान का रोमांच महसूस किया।

हर कदम पर मुझे रुककर बहुत सोचने पर मजबूर होना पड़ता था – बीच-बीच में डर का सैलाब उमड़ आता था; कभी-कभी तो ऐसा लगता था मानो मेरी जान ही निकल जाएगी। लेकिन इतना तनाव लेने में ऊर्जा बर्बाद करने के बाद, आखिरकार मुझे आगे बढ़ने का आत्मविश्वास मिला और मैं बिना किसी चिंता के दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ी।

शिखर पर पहुँचते ही चारों ओर का नज़ारा देखकर मैं दंग रह गया: हिमालय की ऊबड़-खाबड़ चोटियाँ बादलों की चादर से ढकी हुई थीं, लेकिन कहीं-कहीं धुंध के बीच से कुछ चोटियाँ झाँक रही थीं। दोरजे ने एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू की ओर इशारा किया तो मेरा उत्साह चरम पर पहुँच गया। मुझे गर्व का अनुभव हुआ, साथ ही साथ उत्सुकता भी जाग उठी। मैंने दूर दिख रही उन तीनों चोटियों पर चढ़ने का निश्चय कर लिया था, हालाँकि ऊँचाई पर पर्वतारोहण के लिहाज़

से मुझे देर से शुरुआत करने वाला माना जा सकता है।

मुझे और भी कुछ जानने की इच्छा थी। उसी समय मुझे कुछ रोमांचक जानकारी मिली: 2015 में, गोरखा ब्रिगेड - नेपाल की गोरखा लड़ाकू सेनाओं का सामूहिक नाम - ब्रिटिश सेना के साथ अपनी दो शताब्दियों की सेवा का जश्न G200 नामक समारोह में मना रही थी। कई प्रतिष्ठित कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा था, जिनमें लंदन में गोरखा प्रतिमा पर एक स्मारक सेवा, संसद भवन में एक स्वागत समारोह और रॉयल अल्बर्ट हॉल में एक स्मृति स्थल शामिल थे। लेकिन इस भरे-पूरे सांस्कृतिक कार्यक्रम के बीच एवरेस्ट अभियान का भी जिक्र था।

गोरखाओं ने पहले अपनी मजबूत पर्वतारोहियों के रूप में ख्याति अर्जित की थी, लेकिन युद्ध के दौरान सैनिकों की भारी आवाजाही और अफगानिस्तान और इराक में रेजिमेंट की हालिया तैनाती के कारण, कोई भी सेवारत गोरखा सैनिक एवरेस्ट की चोटी तक नहीं पहुंच पाया था। (स्थानीय निवासियों को मिलने वाली कुछ छूटों के बावजूद भी, नेपाली लोगों के लिए एवरेस्ट पर चढ़ना बहुत महंगा था।) यह सब तब बदलने वाला था जब द्विशताब्दी समारोह के हिस्से के रूप में, लगभग एक दर्जन गोरखाओं को साउथ कोल मार्ग से एवरेस्ट की चोटी पर ले जाने की एक महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा की गई।

जी200 अभियान (जी200ई) नामक यह मिशन चुनौतीपूर्ण होने के साथ-साथ इतिहास रचने वाला भी था। इससे भी अच्छी बात यह थी कि ब्रिटेन के विशेष बलों में सेवारत गोरखा होने के नाते, मैं पर्वतारोहण के लिए योग्य था। मुझे अपनी रेजिमेंट पर गर्व था, मैं उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ भी करने को तैयार था, और यह मुझे एक सम्मानजनक कार्य प्रतीत होता था।

मैंने अपने कौशल को निखारा और अपनी महत्वाकांक्षा को बढ़ाया। ब्रिटिश सेना का हिस्सा होने का एक फायदा यह था कि मुझे कई विशिष्ट पाठ्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला। मैंने एक ऐसे पाठ्यक्रम के लिए आवेदन किया जिसमें सैनिकों को अत्यधिक शीतकाल में युद्ध करने की कला सिखाई जाती थी, और अंततः मैं पर्वतीय युद्ध विशेषज्ञों के उस विशिष्ट दल का हिस्सा बन गया। फिर मैंने अमेरिका की सबसे ऊंची चोटी डेनाली पर चढ़ाई की, जो सेवन समिट्स में से एक है। सेवन समिट्स में प्रत्येक महाद्वीप की सबसे ऊंची पर्वत चोटी शामिल है, साथ ही एवरेस्ट (एशिया), एल्ब्रस (यूरोप), किलिमंजारो (अफ्रीका), विन्सन (अंटार्कटिका), एकॉनकागुआ (दक्षिण अमेरिका) और कार्स्टेन्ज़ पिरामिड (ओशिनिया) भी शामिल हैं।

6,190 मीटर की चढ़ाई वाला डेनाली कोई आसान काम नहीं था। एकांत और भीषण ठंड में, वहाँ का तापमान कभी-कभी -50°C तक गिर जाता था, जो मेरे जैसे नौसिखिए पर्वतारोही के लिए एक गंभीर समस्या थी, लेकिन डेनाली एक आदर्श प्रशिक्षण स्थल भी था। मैंने रस्सी के कौशल सीखे और स्पेशल फोर्सेज में मिली अपनी सहनशक्ति का भरपूर इस्तेमाल किया, घंटों तक घनी बर्फ में अपनी स्लेज को खींचते हुए, पहाड़ पर मौजूद कई दरारों में गिरने से बचने के लिए हर संभव सावधानी बरती।

फिर 2014 में, मैंने अपनी पहली डेथ ज़ोन चोटी पर चढ़ाई की। धौलागिरी एक अचूक पर्वत था। गहरी बर्फ से ढकी इसकी खड़ी और खतरनाक ढलानों के कारण इसे 'सफेद पर्वत' उपनाम दिया गया था, और साथ ही इसे दुनिया के सबसे खतरनाक अभियानों में से एक माना जाता था,

जिसका कारण इसकी भयावह मृत्यु दर थी। उस समय तक, अस्सी से अधिक पर्वतारोहियों की वहाँ मृत्यु हो चुकी थी और इसके दक्षिणी भाग पर अभी तक कोई चढ़ाई नहीं कर पाया था, हालाँकि रेनहोल्ड मेसनर जैसे पर्वतारोहियों ने, जो एवरेस्ट पर अकेले चढ़ाई करने वाले पहले पर्वतारोही थे, इस असंभव से दिखने वाले मार्ग पर प्रयास किया था।

इसका सबसे बड़ा खतरा हिमस्खलन का था, जो अचानक कहीं से भी आ जाता था और अपने रास्ते में आने वाले हर किसी और हर चीज़ को बहा ले जाता था। 1969 में, पाँच अमेरिकी और दो शेरपा पर्वत से गायब हो गए। छह साल बाद, एक जापानी अभियान के छह सदस्य बर्फ की दीवार में दबकर मर गए। धौलागिरी की चढ़ाई को हल्के में नहीं लिया जा सकता था, खासकर ऐसे पर्वतारोही के लिए जिसे केवल अठारह महीने का अनुभव था और चरम चोटियों पर पाई जाने वाली खतरनाक परिस्थितियों का सीमित ज्ञान था। लेकिन अफगानिस्तान में लड़ाई से छुट्टी मिलने पर अपने पर्वतारोहण कौशल को बेहतर बनाने की चाहत में, मैंने ऊपर जाने का फैसला किया।

ब्रिटिश स्पेशल फोर्सेज की एक शाखा, स्पेशल एयर सर्विस (एसएएस) के एक साथी - गोपनीयता बनाए रखने के लिए हम उन्हें जेम्स कहेंगे - मेरे साथ इस यात्रा पर आए थे। हम दोनों ही स्पेशल एयर सर्विस के सदस्य जैसे लग रहे थे, क्योंकि हम बेस कैंप में फ्लिप-फ्लॉप, शॉर्ट्स और रे-बैन के धूप के चश्मे पहने पहुंचे थे। हमारा आगमन भी समय के हिसाब से ठीक नहीं था। हम एक बड़े अभियान दल में शामिल हो रहे थे, जो एक महीने से वहां की परिस्थितियों और कम हवा के अनुकूल ढल रहा था। खुंबू आइसफॉल में हिमस्खलन के कारण एवरेस्ट की उनकी यात्रा बीच में ही रुक गई थी, इसलिए वे धौलागिरी पर चढ़ाई करने के लिए वहां चले गए थे।

हम दोनों सैन्य अवकाश सीमित होने के कारण निर्धारित समय से पीछे चल रहे थे, इसलिए हमारे लिए उन सामान्य प्रक्रियाओं का लाभ उठाना संभव नहीं था जो उच्च ऊंचाई पर काम करने की उम्मीद रखने वाले पर्वतारोहियों को मिलती हैं, जैसे कि अनुकूलन के लिए बारी-बारी से प्रशिक्षण लेना। इस बीच, हमारे पर्वतारोहण साथी काफी अनुभवी लग रहे थे, क्योंकि वे पहले ही उस क्षेत्र में पहुँच चुके थे और वहाँ बस गए थे, और जब हम सभी बेस कैंप की यात्रा के लिए निकले, तो हम जल्द ही पीछे रह गए। जेम्स को ऊंचाई से बहुत परेशानी हो रही थी। हमें यात्रा पूरी करने में दूसरों की तुलना में तीन दिन अधिक लगे।

कुछ देर बाद एक आदमी ने पूछा, 'आप लोग क्या करते हैं?' जब हम पहली बार वहाँ पहुँचे थे, तब उसने हमारी शक्ल-सूरत पर ध्यान दिया था। मैं समझ गया था कि वह क्या सोच रहा है। या तो हम निडर और बागी थे, या फिर ऐसे बेकाबू लोग जिनसे किसी भी कीमत पर बचना चाहिए, खासकर जब हम शिखर पर चढ़ने की जोखिम भरी कोशिश कर रहे हों।

मैंने कंधे उचका दिए। हम दोनों में से कोई भी अपनी पूरी सैन्य भूमिका का खुलासा करने को तैयार नहीं था, खासकर तब जब हम गोपनीयता के कुछ स्तरों से बंधे हुए थे। साथ ही, हम दोनों को यह विचार पसंद था कि हमारी विशिष्ट युद्ध विशेषज्ञता के बजाय हमारे पर्वतारोहण कौशल के आधार पर हमारा मूल्यांकन किया जाए।

‘ओह, हम सेना में हैं,’ मैंने अंततः यह कहते हुए उम्मीद जताई कि अब सवालों का सिलसिला

खत्म हो जाएगा।

पर्वतारोही ने हैरानी से अपनी भौंहें उठाईं। हमारा यात्रा सामान काफी बिखरा हुआ लग रहा था, हालांकि जेम्स और मैं जो चढ़ाई का सामान लाए थे, वह उच्च गुणवत्ता का था। फिर भी, हमारे अभियान साथियों ने हमें अनुभवहीन पर्यटक समझ लिया। मुझे लगता है कि उनका अनुमान आधा सही था, लेकिन मैं किसी को भी अपनी कमियों को उजागर नहीं करने देना चाहता था, और बेस कैंप में हमने उत्साहपूर्वक अपने पहले अनुकूलन चक्र की तैयारी शुरू कर दी। अगले सप्ताह, हमारी योजना शिखर तक जाने वाले मार्ग पर स्थित चार चौकियों में से कैंप 1 और 2 तक प्रतिदिन चढ़ाई करने की थी। फिर हम शिखर पर चढ़ाई के लिए तैयार होने तक पहाड़ के निचले हिस्से में आराम करते।

जैसे ही हमने अपना सारा सामान तैयार कर लिया और पहली अनुकूलन चढ़ाई शुरू की, यह स्पष्ट हो गया कि जेम्स की शारीरिक क्षमता मुझसे अलग थी। यह बात सबसे पहले हमारे बेस-कैंप ट्रेक के दौरान ही स्पष्ट हो गई थी, लेकिन जैसे ही हमने कैंप 1 तक पहुंचने के लिए अपनी पहली चढ़ाई शुरू की, वह मेरी गति बनाए रखने में असमर्थ रहा क्योंकि मैं आगे बढ़ता जा रहा था। ऊंचाई की बीमारी उसे थका रही थी और मुझे एहसास हुआ कि जब हम अपनी पहली चढ़ाई के दौरान कैंप 1 पर आराम करने के लिए रुके, तो वह वास्तव में संघर्ष कर रहा था।

अगले दिन जब मैं तेज़ी से आगे बढ़ा, तो जेम्स फिर से पीछे रह गया, जबकि एक शेरपा उसके अधिकांश सामान में उसकी मदद कर रहा था और मैं लगभग तीस किलो का बोझ खुद ही ढो रहा था। वैसे भी, मुझमें घमंड करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। कुछ ही देर में, मैं भी बुरी तरह थक गया। पागलपन में आकर, मैं अपनी गति दिखाना चाहता था, लेकिन मैं बहुत आगे निकल गया, और जब मैं कैंप 1 पर कुछ घंटों के लिए आराम कर रहा था, गर्म चाय बना रहा था, और मेरी छोटी सी टीम अभी तक नहीं पहुंची थी, तभी मेरे मन में एक भयानक विचार आया।

क्या जेम्स अभी भी जीवित था?

धौलागिरी हिमस्खलन के कारण अक्सर कांपता रहता था, साथ ही यह अपनी गहरी दरारों के लिए भी जाना जाता था। जेम्स और उसका शेरपा अनजाने में किसी दरार में गिर सकते थे। अगर ऐसा होता, तो उन्हें कई दिनों तक, या शायद कभी भी, खोजा जाना असंभव था। थोड़ी घबराहट में, मैंने अपना बर्तन और कप समेटा और उन्हें ढूंढने के लिए बेस कैंप की ओर चल पड़ा। (मैंने बहुत पहले ही सीख लिया था कि पहाड़ पर कहीं भी अपना सामान नहीं छोड़ना चाहिए; हमेशा सब कुछ अपने साथ रखना ही सबसे अच्छा था, ताकि किसी भी आपात स्थिति में काम आ सके।)

ज्यादा देर नहीं लगी। मेरे नीचे दो लोग धीरे-धीरे चल रहे थे। जल्द ही पता चला कि वे मेरे पर्वतारोहण दल के सदस्य थे, लेकिन जेम्स की हालत पहले से भी बदतर थी।

मैंने उनका अभिवादन करते हुए कहा, 'भाई, यह बहुत बड़ा पहाड़ है। आपको मौसम के अनुकूल ढलने में परेशानी हो रही है, मैं आपका बैग उठा लेता हूँ।'

मैंने उसका बोझ हल्का करने की कोशिश की, लेकिन जेम्स हिचकिचा रहा था। वह दर्द के आगे हार नहीं मानना चाहता था, पर मैं अड़ा रहा। स्पेशल फोर्सेज के साथ युद्ध क्षेत्रों में लड़ते

समय, इस तरह का रवैया सराहनीय माना जाता। धौलागिरी जैसे खतरनाक पहाड़ पर, यह आत्महत्या के समान था।

मैंने कहा, 'सुनो, अपना अहंकार भूल जाओ। अगर तुम शिखर पर पहुंचना चाहते हो, तो मुझे तुम्हारी मदद करने दो।'

जेम्स मान गया। धीरे-धीरे लेकिन लगातार, हम कैंप 1 तक वापस पहुँच गए, लेकिन इस मेहनत का असर मुझ पर भी पड़ा था। मैंने अपनी क्षमता से ज़्यादा ज़ोर लगा दिया था और पहाड़ मुझे अपना पहला बड़ा सबक सिखा रहे थे: कभी भी बेवजह खुद को थकाओ मत। तब से, मैंने वादा किया कि मैं अपनी कीमती ऊर्जा बर्बाद नहीं करूँगा; मैं तभी मेहनत करूँगा जब ज़रूरत होगी। कुछ दिनों बाद जब पहली बार 8,000 मीटर की चोटी पर चढ़ने का समय आया, तो मैंने बेस कैंप से धौलागिरी की चोटी तक जाते समय आगे चल रहे समूह के पीछे रहने का ध्यान रखा, आंशिक रूप से हमें शिखर तक ले जा रहे कई शेरपाओं के प्रति सम्मान के कारण, और इसलिए भी क्योंकि मैंने पहले कभी इतने बड़े पहाड़ पर चढ़ाई नहीं की थी और मैं फिर से ऊर्जा की कमी का अनुभव नहीं करना चाहता था।

तभी मैंने अभियान दल में गाइडों के लगातार बदलते काम पर ध्यान दिया। थोड़ी-थोड़ी देर में, आगे चल रहा शेरपा कमर तक ऊंची बर्फ में अपने कदमों से रास्ता बनाते-बनाते थोड़ा आराम करता और अपने किसी साथी को कुछ देर के लिए आगे बढ़ने देता। फिर वह पीछे रह जाता और अगली बार जब उसकी बारी आती तो वह फिर से आगे बढ़ता। हम बाकी लोग बर्फ में उसके पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ते, जिससे काम काफी आसान हो जाता था। इस तकनीक को मैंने बाद में पथप्रदर्शक बनना कहा और अपनी निस्वार्थ मेहनत से वह अभियान दल को ऊपर की ओर एक सुगम मार्ग पर चलने में मदद कर रहा था। मैं हर गाइड के प्रयास का सम्मान करता था।

जब पथप्रदर्शक बनने की बात आती थी, तो सीखने के लिए दो तकनीकें थीं। पहली तकनीक घुटने से घुटने तक गहरी बर्फ के लिए लागू होती थी: ऐसी परिस्थितियों में पर्वतारोही को हर कदम पर अपने घुटने को अपनी छाती तक उठाकर पैर जमाना होता था, फिर उसे मजबूती से रखना होता था। दूसरी तकनीक अधिक कठिन परिस्थितियों के लिए थी जब बर्फ जांघ या कमर तक ऊंची होती थी। ऐसे मामलों में, आगे बढ़ने वाले व्यक्ति को अपने कूल्हों से आगे की ओर धकेलना होता था, जिससे पैर बाहर निकालने और अगला कदम उठाने के लिए कूल्हे को घुमाने से पहले जगह बन जाती थी।

अचानक, मेरे आगे खड़ा एक व्यक्ति कतार से बाहर निकला और मदद करने के लिए समूह के आगे की ओर बढ़ने लगा।

मैंने ऊपर से उसे आवाज़ दी, 'अरे भाई! तुम क्या कर रहे हो? शेरपा लोग नाराज़ तो नहीं होंगे ना?'

उसने मुझे हाथ हिलाकर मना कर दिया। 'नहीं यार, मैं अपना फर्ज निभा रहा हूँ, शेरपा भाइयों की मदद कर रहा हूँ...'

मुझे लगा था कि इस तरह समूह का नेतृत्व करना अभियान के मार्गदर्शकों का अपमान होगा;

ऐसा लग रहा था मानो कोई और हीरो बनने की कोशिश कर रहा हो, जो कि मैंने पहले सोचा था कि इतने जोखिम भरे पहाड़ पर एक खतरनाक कदम होगा। लेकिन मैं गलत साबित हुआ और एक अन्य शेरपा ने जल्द ही मेरी शंका दूर कर दी।

'निम्स, बर्फ बहुत गहरी है। अगर आपमें ऊर्जा है और आप आगे आकर मदद कर सकते हैं, तो कृपया करें...'

इससे उत्साहित होकर, मैंने आगे बढ़कर तेज़ी से बढ़ना शुरू किया। बर्फीली ज़मीन से पैर उठाते ही मेरे पैर पिस्टन की तरह चलने लगे। मेहनत बहुत थी, लेकिन हर कदम को एक महत्वपूर्ण प्रगति और एक बड़े टीम प्रयास का हिस्सा मानते हुए, मैं लगातार आगे बढ़ता रहा। मेरी जांघों और पिंडलियों में दर्द हो रहा था, लेकिन मेरे फेफड़े हल्के थे। ऊंचाई पर सबसे फुर्तीले लोगों को भी थका देने वाली थकान मुझ पर हावी नहीं हो रही थी। मैं मज़बूत था। बूम! बूम! बूम! हर कदम ज़ोरदार था। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा कि मैं कितनी दूर आ गया हूँ, तो अपने बाकी पर्वतारोही साथियों को देखकर मैं दंग रह गया। वे नीचे छोटे-छोटे काले बिंदुओं की तरह दिख रहे थे।

वाह, ये तो कमाल है! मैंने सोचा, अपने पदचिह्नों को निहारते हुए। मैं बिना ज्यादा सोचे-समझे काम कर रहा था, उस लय में था जिसका जिक्र एथलीट तब करते हैं जब वे विश्व रिकॉर्ड तोड़ते हैं या चैंपियनशिप जीतते हैं। मैं पूरी तरह से अपने काम में मग्न था।

पहले की तरह खुद पर ज़्यादा ज़ोर न डालने के लिए, मैं धीरे-धीरे अगली पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ा और बाकी समूह के आने तक एक घंटा इंतज़ार किया। जब वे बाद में मेरे चारों ओर जमा हुए, तो मुख्य शेरपा गाइड ने उत्साह से चिल्लाते हुए मेरी पीठ थपथपाई। अभियान के अन्य साथी, पर्वतारोही जिन्होंने कुछ दिन पहले मुझे शिखर पर पहुँचने की संभावना से परे समझकर नीचा दिखाया था, अब मुझसे हाथ मिला रहे थे।

सभी को राहत मिली कि मैंने काफी मेहनत की थी और मेरी लगन ने टीम के सभी सदस्यों के रवैये को पूरी तरह बदल दिया था। मैं अब सिर्फ एक पर्यटक नहीं था। मेरी सोच भी बदल चुकी थी। जब मैं शिखर पर पहुंचा, तब तक मैं 70 प्रतिशत से अधिक मार्ग पर रास्ता बना चुका था, और मैं न केवल अपनी उपलब्धि पर आश्चर्यचकित था, बल्कि मेरा हौसला भी बढ़ा था।

मैंने मन ही मन सोचा, 'भाई, तुम तो ऊँचाई पर कमाल के हो।'

*

मुझे आनुवंशिक रूप से डेथ ज़ोन में सफलता के लिए तैयार नहीं किया गया था और पर्वतारोहण निश्चित रूप से मेरे पारिवारिक जीवन का हिस्सा नहीं था। जब मैं बच्चा था, तो मैं दो चीज़ों में से एक बनना चाहता था। मेरा पहला विकल्प: अपने पिता की तरह गोरखा सैनिक बनना, क्योंकि दुनिया भर में उन्हें एक निडर सैन्य शक्ति माना जाता था। एक लड़ाकू इकाई के रूप में, वे ऐतिहासिक रूप से नेपाली, ब्रिटिश और भारतीय सेनाओं के साथ-साथ सिंगापुर पुलिस में भी तैनात रहे थे; हालाँकि उनके सभी सैनिक नेपाल से ही थे, और उन्हें एक कुलीन योद्धा माना जाता था, जो साहस और वफादारी से परिपूर्ण थे, और रानी और देश के प्रति अटूट विश्वास रखते थे।

उनकी उत्पत्ति के बारे में पर्याप्त इतिहास की किताबें लिखी जा चुकी हैं, यदि आप चाहें तो पढ़ सकते हैं, लेकिन यहाँ संक्षेप में पृष्ठभूमि दी गई है। नेपाल, जिसे उस समय गोरखा साम्राज्य के नाम से जाना जाता था, और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (या ईआईसी, एक निजी सेना, जो नियमित ब्रिटिश सेना से दोगुनी थी) के बीच हुए एंग्लो-नेपाली युद्ध (1814-16) के दौरान, नेपाली लड़ाकों के कौशल की इतनी प्रशंसा की गई कि संधि समझौते के बाद ईआईसी में काम के लिए आने वाले किसी भी भगोड़े को 'अनियमित सेना' के रूप में नियुक्त किया गया।

बाद में गोरखा रेजिमेंट अपने आप में एक अत्यंत सम्मानित रेजिमेंट बन गई और द्वितीय विश्व युद्ध के साथ-साथ आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध के दौरान इराक और अफगानिस्तान में भी तैनात की गई। मेरे दो बड़े भाई, गंगा और कमल, ने पिताजी के समान ही मार्ग अपनाया था और जब भी वे छुट्टी पर नेपाल लौटते थे, लोग उन्हें किसी रॉक स्टार की तरह श्रद्धा से देखते थे। गोरखा सैनिक एक किंवदंती थे और उनका आदर्श वाक्य, "कायर होने से बेहतर मरना", वीरता की छवि प्रस्तुत करता था। सफल युद्ध अभियानों और विपरीत परिस्थितियों में किए गए साहसिक कारनामों की कहानियों ने इस भावना को और भी प्रबल बना दिया।

मेरी दूसरी महत्वाकांक्षा सरकारी अधिकारी बनने की थी – लेकिन मैं नेपाल का रॉबिन हुड बनना चाहता था, जो अमीरों से चुराकर गरीबों को देता था। जिस देश में मैं पला-बढ़ा, वह बहुत छोटा था और आम आदमी को लंबे समय से अधिकारों से वंचित रखा गया था; बचपन से ही मैं समझता था कि मेरे आस-पास के लोगों के पास बहुत कम था और वहाँ गरीबी दर बेहद अधिक थी। कई नेपाली नागरिक हिंदू थे और धन की कमी के बावजूद वे जब भी मंदिर जाते थे, अक्सर अपना पैसा दान करते थे।

मैं नहीं। अगर मेरे पास कभी पैसे होते, तो मैं मंदिर के बाहर सड़क पर खड़े किसी व्यक्ति, बेघर, अंधे या विकलांग को अपना बटुआ खाली करने में ज़्यादा खुश होता। मैं बस में भी ऐसा ही करता, जहाँ अक्सर सड़क पर गाने वाले कलाकार होते हैं, जो किसी भयानक चोट या गंभीर बीमारी के कारण काम करने में असमर्थ होते हैं।

हर दान के साथ एक शर्त होती थी: ये तुम्हारे लिए है, भाई, लेकिन इसे शराब पर खर्च मत करना। ध्यान रखना कि तुम्हारे परिवार को ज़रूरत का खाना मिले। मैं हमेशा से ऐसा ही रहा हूँ। पैसे ने मुझे कभी आकर्षित नहीं किया, लेकिन बचपन से ही मेरा सपना था कि मैं किसी अधिकारी के यहाँ वर्दी पहनकर नौकरी करूँ। इसलिए नहीं कि मुझे सत्ता या रुतबा चाहिए था, बल्कि इसलिए कि मुझे नेपाल के अति-अमीरों से, खासकर उन लोगों से जो बेहद भ्रष्ट थे, पैसा लूटने और फिर उस लूट को ज़रूरतमंदों में बाँटने का विचार अच्छा लगता था।

यह रवैया शायद आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि मैं शुरू से ही गरीबी में पला-बढ़ा था। मेरा जन्म 25 जुलाई 1983 को पश्चिमी नेपाल के म्याग्दी जिले के दाना नामक गाँव में हुआ था। यह छोटा सा गाँव समुद्र तल से लगभग 1,600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, इसलिए ऐसा नहीं था कि मैं बचपन से ही पैरों में क्रैम्पोन बांधकर और ऊँचाई से शारीरिक रूप से जुड़ाव महसूस करते हुए बड़ा हुआ था। धौलागिरी उस क्षेत्र का सबसे बड़ा पर्वत था, लेकिन वह मेरे घर से बहुत दूर था और वहाँ तक पहुँचने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती।

मेरे और मेरे बड़े भाइयों गंगा, जीत और कमल के बीच लगभग अठारह साल का अंतर था, और मेरे बाद मेरी छोटी बहन अनीता थी। हम एक प्यार करने वाला परिवार थे; हमारे पास पैसे नहीं थे और कार चलाने का ख्याल भी नामुमकिन था, लेकिन मैं एक खुशमिजाज बच्चा था। मुझे खुश रखने के लिए ज्यादा कुछ नहीं चाहिए होता था।

सभी के अनुसार, मेरे जन्म से बहुत पहले से ही मेरे माता-पिता की मुश्किलें शुरू हो गई थीं। उनकी परेशानियाँ तब शुरू हुईं जब उन्होंने अलग-अलग जातियों या वर्गों में शादी की। नेपाल में यह स्वीकार्य नहीं था और उनके परिवार इस रिश्ते से नाराज़ हो गए। जल्द ही वे अपने माता-पिता और भाई-बहनों से अलग हो गए, जिसका मतलब था कि उन्हें अपना नया जीवन लगभग शून्य से शुरू करना पड़ा।

उस समय पिताजी भारतीय गोरखा रेजिमेंट में सेवारत थे, लेकिन उनकी तनख्वाह से परिवार का गुजारा नहीं हो पाता था, इसलिए गंगा, जीत और कमल के जन्म के बाद माँ ने गाँव के खेत में काम करना शुरू कर दिया। ज़्यादातर समय, कम से कम एक बच्चा उनकी पीठ पर कपड़े से बंधा रहता था। एक छोटे परिवार की देखभाल करने के साथ-साथ कड़ी मेहनत करके घर का खर्च चलाना बहुत थकाने वाला रहा होगा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी, और मेरी मेहनत करने की आदत का बहुत बड़ा हिस्सा मेरी माँ से आया है - उनका मुझ पर बहुत बड़ा प्रभाव था, जैसा कि उनसे मिलने वाले कई लोगों पर भी था।

मेरी माँ अशिक्षित थीं, जिससे उन्हें ज़रूर चिढ़ होती होगी, क्योंकि उन्होंने इलाके की अन्य महिलाओं की मदद करने का सपना देखा और अंततः नेपाल में एक कार्यकर्ता बन गईं, जहाँ उन्होंने लैंगिक समानता और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को बदलने के लिए काम किया। उस समय नेपाल में यह आम बात नहीं थी, लेकिन माँ ने अपने विश्वास के लिए संघर्ष किया और अधिकांश सप्ताह वे मुश्किल से ही पेट भरने लायक कमा पाती थीं। फिर भी परिवार का गुज़ारा चलता रहा। बाद में, जब मेरे भाई बड़े हो गए, तो उन्हें भी काम पर लगा दिया गया। उनका काम सुबह 5 बजे उठना और फिर दो घंटे पैदल चलकर परिवार की तीन भैंसों के लिए घास ढूंढना और काटना होता था। इसके बाद वे पूरे दिन की कक्षाओं के लिए स्कूल जाते थे।

मेरी ज़िंदगी थोड़ी आसान थी। हमारे बगीचे में कई संतरे के पेड़ थे और शरद ऋतु में जब फल पक जाते थे, तो मैं डालियों पर चढ़कर उन्हें तब तक हिलाता था जब तक कि वे पूरी तरह खाली न हो जाएं। ज़मीन जल्द ही फलों से भर जाती थी और मैं तृप्त होने तक उन्हें खाता रहता था। अगले दिन, मैं और फल इकट्ठा करता और यही दावत दोहराता। लेकिन जब मैं चार साल का था, तो परिवार रामनगर नामक जंगल के एक दूसरे गाँव में चला गया, जो चितवन में स्थित था, दाना से 227 मील दूर, और देश के सबसे गर्म और समतल हिस्से में बसा हुआ था। मेरे माता-पिता दाना में बढ़ते भूस्खलनों को लेकर चिंतित हो गए थे, जहाँ कई तेज़ बहने वाली नदियाँ बाढ़ लाकर तबाही मचाने के लिए जानी जाती थीं।

मुझे स्थानांतरण की कोई परवाह नहीं थी। जंगल हमारे घर के बिल्कुल पास था, माँ आग जलाने के लिए झाड़ियों में लकड़ी लाने जाती थीं, जबकि मुझे भी खूब मनोरंजन मिलता था: सड़कों पर, जंगलों में, पानी के किनारे – खोजबीन की अपार संभावनाएं थीं।

बचपन से ही मैंने यह सीख लिया था कि न्यूनतम संसाधनों में भी मैं भावनात्मक रूप से संतुष्ट रह सकता हूँ, शायद इसी वजह से मैं बाद में अपना अधिकांश जीवन युद्ध के अराजक माहौल में या पहाड़ की ढलान पर लगे तंबू में गुजार पाया। मेरी माँ बहुत सख्त थीं, लेकिन सप्ताहांत में, जब मैं स्कूल में नहीं होता था, तो वह मुझे अकेले रामनगर घूमने की अनुमति देती थीं। ज्यादातर समय मैं पास की नदी पर जाता था, सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक किनारे पर बैठा रहता था और केकड़े-झींगे पकड़कर समय बिताता था। मुझे प्रकृति में सबसे ज्यादा खुशी मिलती थी; रोमांच हर जगह मौजूद लगता था, हालाँकि जब भी मैं गर्व से अपनी पकड़ी हुई मछलियाँ माँ को दिखाने लाता था, तो वह अक्सर नाक-भौं सिकोड़ लेती थीं।

'तुम मेरे लिए कीड़े क्यों लाए हो?' वह शिकायत करती थी।

जल्द ही मेरी ज़िंदगी बेहतर होने वाली थी। जब मेरे भाई गोरखा सेना में भर्ती होने गए, तो उन्होंने बताया कि वे मुझे बेहतर जीवन देने की उम्मीद रखते हैं। हर महीने, उनकी तनख्वाह का एक हिस्सा घर भेजा जाता था, जो चितवन के एक अंग्रेज़ी-भाषी बोर्डिंग स्कूल, स्मॉल हेवन हायर सेकेंडरी में मेरी शिक्षा के लिए एक उपहार था। और जब मैं लगभग पाँच साल का हुआ, तो मुझे वहाँ भेज दिया गया। यह एक बड़ी विलासिता थी, हालाँकि यह हमेशा के लिए नहीं थी, और माँ अक्सर मेरे भाइयों की उदारता की अस्थायी प्रकृति का ज़िक्र करती थीं।

वह कहती थीं, 'एक दिन उनकी शादी हो जाएगी। उनके अपने परिवार होंगे जिनकी उन्हें देखभाल करनी होगी और वे तुम्हारी शिक्षा का खर्च नहीं उठा पाएंगे।'

लेकिन बचपन से ही मैंने परिवार का सहारा बनने की योजना बना रखी थी। 'देखिए, कोई बात नहीं,' मैंने माँ से कहा, मानो उन पर से सारा दबाव हटा रही हूँ। 'मैं बड़ी होकर परीक्षा पास कर लूँगी और फिर स्कूल में या फिर किसी नर्सरी में टीचर बन जाऊँगी। तब मैं आपकी देखभाल कर पाऊँगी।'

लेकिन असल में, मैं एक गोरखा बनना चाहता था।

मुझमें सैन्य सेवा में सफल होने के सारे गुण मौजूद थे। हालांकि मैं केवल पाँच वर्ष का था जब मैंने बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया, फिर भी घर से दूर जीवन की लय मुझे रास आ गई। सभी बच्चे एक ही हॉस्टल में सोते थे, जहाँ बड़े बच्चों का दबदबा रहता था और अगर कोई बच्चा अनुशासन भंग करता तो शिक्षक उसे पीटते थे। यह मेरी पहली चुनौती थी, मुझे ऐसे कठिन वातावरण में जीवित रहना सीखना था - और वह भी जल्दी।

जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, खेल के मैदान में होने वाली रोज़ाना की लड़ाई को संभालना मुश्किल होता गया। बेशक, मैं अपनी उम्र के हिसाब से काफी मज़बूत था, लेकिन वहाँ मुझसे बड़े कई बच्चे भी थे जिनसे निपटना पड़ता था। और अगर कभी माँ मुझसे मिलने आतीं और अपने साथ खाना या सामान लातीं, तो उनके घर लौटने के बाद अक्सर सीनियर स्कूल के बदमाश आकर मुझे परेशान करते थे। कभी-कभी मेरा खाना छीन लिया जाता था और मैं कुछ नहीं कर पाता था।

मेरी पहली सचेत प्रवृत्ति भाग जाना थी, पेड़ों में छिप जाना ताकि कोई मुझे लूट न सके। मैं तेज़ था; मुझमें भरपूर सहनशक्ति थी और मैं शारीरिक शिक्षा के दौरान ट्रैक एंड फील्ड

प्रतियोगिताओं में खूब आनंद लेता था। लेकिन स्कूल के गुंडों से निपटने के लिए मेरी दूसरी सचेत प्रवृत्ति थी उनसे लड़ना। जैसे-जैसे मैं बड़ा और परिपक्व हुआ, मैं और भी मजबूत होता गया, बहुत मजबूत, और किशोरावस्था में पहुँचते ही मैंने किकबॉक्सिंग शुरू करने का फैसला किया। मैंने जल्द ही आत्मरक्षा करना सीख लिया, प्रतिद्वंद्वियों को हराते हुए क्षेत्रीय चैंपियन का खिताब हासिल किया।

जब मैं स्कूल में नौवीं कक्षा में दाखिल हुआ, तब तक मुझे सिर्फ़ एक ही हार का सामना करना पड़ा था, वो भी नेपाल के राष्ट्रीय चैंपियन से, और वो मुझसे कई साल बड़ा था। जब भी कोई स्कूल का बदमाश मेरे खाने-पीने का सामान छीनने आता, मैं उसकी धमकियों का डटकर सामना करता और फिर उसे बुरी तरह पीट देता। उसके बाद बहुत कम बच्चों ने मुझे चुनौती दी। किकबॉक्सिंग मेरे लिए एक आदमी बनने की दिशा में पहला कदम था।

मेरा अगला कदम गोरखा सेना में आवेदन करना था।

कायर होने से बेहतर मर जाना है।

मैं मानव एंटीबायोटिक था।

लगभग दस साल की उम्र में मुझे टीबी हो गया, जो नेपाल में एक गंभीर और चिंताजनक रूप से आम बीमारी थी, लेकिन मैंने उससे जंग जीत ली। बाद में मुझे अस्थमा का पता चला। जब डॉक्टर ने इसके कुछ दीर्घकालिक प्रभावों के बारे में बताया, तो मैंने सोचा, कोई बात नहीं। कोई भी चीज़ मुझे अपनी ज़िंदगी जीने से नहीं रोक सकती थी और मैं इससे उबर गया, बाद में मज़े के लिए जंगलों में दौड़ने लगा और स्कूल की दौड़ में लंबी दूरी तय करने लगा।

बचपन से ही मुझे सकारात्मक सोच की शक्ति पर पूरा भरोसा था; मैंने खुद को बीमारियों या ऐसी गंभीर बीमारियों से हार मानने नहीं दिया जो दूसरों को सालों तक परेशान कर सकती थीं। मैं खुद को एक चलती-फिरती दवा की तरह महसूस करती थी क्योंकि मैंने खुद को ऐसा सोचना सिखाया था: मुझे खुद पर भरोसा था कि मैं ठीक हो जाऊंगी। मुझे विश्वास था। और इसी सोच ने मुझे ब्रिटिश सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, जहाँ मैंने दबाव में असाधारण सहनशक्ति दिखाई। यह मेरे चारों ओर एक सुरक्षा कवच की तरह थी और मैंने जल्द ही सीख लिया कि अगर किसी योद्धा में अटूट आत्मविश्वास हो, तो कुछ भी संभव है। गोरखा सेना में शामिल होने के बाद मुझे इसकी हर एक बूंद की जरूरत पड़ेगी।

रेजिमेंट में शामिल होने के लिए प्रत्येक उम्मीदवार को जिस चयन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था, वह शुरू से ही बेहद क्रूर और निर्मम थी, और मैंने अपने साथियों से इसके बारे में सारी कहानियां सुनी थीं। गोरखा प्रशिक्षण में किसी को भी शामिल करने से पहले, सत्रह से इक्कीस वर्ष की आयु के प्रत्येक आवेदक का गहन शारीरिक और मानसिक मूल्यांकन किया जाता था। उदाहरण के लिए, चार से अधिक फिलिंग वाले किसी भी बच्चे को निकाल दिया जाता था। नकली दांत, या मुंह में अत्यधिक बड़े गैप भी अस्वीकृति का कारण थे, और शारीरिक श्रेष्ठता के साथ-साथ बुद्धि भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी।

मुझे नेपाली स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट पास करना था, जो ब्रिटेन में GCSE और A-लेवल के बीच की शैक्षणिक योग्यता थी, लेकिन मुझे मिली शिक्षा की बदौलत मैं इसे पास कर पाया। जब 2001 में रेजिमेंट में भर्ती होने का समय आया, तो एक सेवानिवृत्त ब्रिटिश गोरखा (उस समय मूल्यांकनकर्ताओं को गल्ला वाला कहा जाता था) ने गांव में मेरा मूल्यांकन किया। मेरे पूरे शरीर की जांच की गई; शरीर पर कोई भी निशान होता तो मुझे अस्वीकार कर दिया जाता, हालांकि

सौभाग्य से मुझे किकबॉक्सिंग में कोई गंभीर चोट नहीं लगी थी। लेकिन अंत में, मैं असफल हो गया। कारण ठीक-ठीक मुझे नहीं पता - मैंने सभी शारीरिक और शैक्षिक मूल्यांकन पास कर लिए थे - हालांकि मेरा अनुमान है कि मूल्यांकनकर्ता को मुझसे कुछ खास पसंद नहीं आया होगा।

हालांकि शारीरिक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले केवल अठारह आवेदकों में से मैं एक था, लेकिन गल्ला वाले ने मुझे अंतिम उम्मीदवारों की सूची में छब्बीसवें स्थान पर रखा। उस वर्ष गोरखा चयन के अगले चरण में केवल पच्चीस व्यक्तियों को ही चुना गया था और यह अस्वीकृति मेरे लिए बेहद निराशाजनक थी। हतोत्साहित होकर मैंने इस अन्याय के खिलाफ जमकर गुस्सा निकाला और कुछ समय के लिए मैंने रेजिमेंट में शामिल होने के अपने सपने को छोड़ने पर भी विचार किया।

अंततः, मैं अपनी निराशा से उबर गया, हालाँकि मैं अब भी थोड़ा नाराज़ था, और एक साल बाद अपने दूसरे प्रयास में मुझे सफलता मिली। मैं तुरंत अगले चरण, क्षेत्रीय चयन में पहुँच गया, जहाँ मुझे अंग्रेजी और गणित की परीक्षा देने से पहले कई पुश-अप्स, सिट-अप्स और हील्स करने पड़े। फिर मुझे तीसरे और अंतिम चरण, केंद्रीय चयन में ले जाया गया, जहाँ काम और भी कठिन होने वाला था।

गोरखाओं के केंद्रीय चयन चरण की सबसे प्रसिद्ध परीक्षाओं में से एक डोको दौड़ थी, जिसमें आवेदकों को अपने सिर पर बांस की टोकरियाँ ले जाने का आदेश दिया जाता था। उस समय, प्रत्येक टोकरी तीस किलो रेत से भरी होती थी और प्रत्येक संभावित गोरखा को अड़तालीस मिनट से कम समय में पाँच किलोमीटर की चढ़ाई वाली परिक्रमा पूरी करनी होती थी।

दौड़-भाग में मेरी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। ट्रैक एंड फील्ड के प्रति मेरा उत्साह अब और भी गंभीर हो गया था: सातवीं कक्षा में पढ़ते हुए, मैंने शिक्षकों को उन बड़े बच्चों के लिए ट्रायल आयोजित करने में मदद की थी जो क्षेत्रीय चैंपियनशिप में बोर्डिंग स्कूल का प्रतिनिधित्व करना चाहते थे। सभी एथलीट मुझसे काफी बड़े थे, शायद दो या तीन साल बड़े, और मेरा काम ट्रैक को सफेद मार्कर से चिह्नित करना था, लेकिन जब 400 मीटर की दौड़ शुरू हुई, तो मैं मजे के लिए उसमें शामिल हो गया। पहले मोड़ पर मैं लगभग सबसे आगे था, लेकिन दूसरे मोड़ पर मुझे लगा कि मुझे कोई रोक नहीं सकता और मैं सबसे आगे दौड़ने वालों से आगे निकल गया और पहले स्थान पर फिनिश लाइन पार की।

मेरे शिक्षक ने मुझे बांह से पकड़ लिया। उन्हें लगा कि मैंने किसी शरारत के तौर पर बीच दौड़ में हिस्सा लिया है।

‘पुरजा, तुम कहाँ से आई हो? क्या यह कोई मजाक है?’

‘नहीं, महोदय,’ मैंने घबराते हुए कहा। ‘मैंने दूसरों के साथ शुरुआत की थी... उनसे पूछिए!’

जब यह पुष्टि हो गई कि मैंने बाकी बच्चों के साथ ईमानदारी से दौड़ पूरी की थी, तो स्कूल के पास बहुत कम विकल्प बचा था। उन्हें सातवीं कक्षा के एक छात्र को क्षेत्रीय प्रतियोगिता में उतारना ही पड़ा, जिस पर आमतौर पर दसवीं कक्षा के लड़कों का दबदबा रहता है।

मेरे शिक्षक ने कहा, 'तुम्हारी उम्र चाहे जो भी हो, हम तुम्हें अपने यहाँ ठहरा रहे हैं।'

मैं दबाव से बिल्कुल भी विचलित नहीं हुआ, लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि मुझसे क्या उम्मीद की जा रही है या तैयारी कैसे करनी है। फिर भी, जब अंतर-बोर्डिंग स्कूल चैंपियनशिप की बात आई, जिसमें मुझे 4x400 मीटर रिले, 800 मीटर, 2,400 मीटर और 5,000 मीटर दौड़ में भाग लेना था, तो मैंने खुद को तैयार महसूस किया। मैंने नंगे पैर दौड़ने का फैसला किया था, क्योंकि मुझे लगता था कि दौड़ने वाले जूते या स्पाइक्स मुझे भारी कर सकते हैं, और मेरी एकमात्र रणनीति यही थी कि 'दौड़ के पहले आधे हिस्से में थोड़ा पीछे रहूँ... फिर तेज़ी से दौड़ूँ!' लेकिन इसी एक विचार पर टिके रहने से मैंने 800 मीटर और 2,400 मीटर दोनों स्पर्धाओं में पहला स्थान प्राप्त किया। मैंने 4x400 मीटर रिले में भी अपने स्कूल को जीत दिलाई। मेरे स्कूल के लिए जो एक बड़ा जोखिम जैसा लग रहा था, उसका मुझे भरपूर फायदा मिला।

क्योंकि मैं एक बेहद सक्षम एथलीट था, इसलिए डोको रेस का वह हिस्सा मेरे लिए कोई समस्या नहीं थी, लेकिन रेत से भरी बांस की टोकरी एक चुनौती थी जिससे मुझे तालमेल बिठाना होगा, हालांकि मुझे कुछ बुनियादी प्रशिक्षण तो मिला ही था। पता नहीं क्यों, मैंने स्कूल में रेस की तैयारी के लिए एक अपरंपरागत तरीका अपनाया था और अक्सर सुबह चार बजे हॉस्टल से चुपके से निकलकर पास की गलियों में दौड़ता था। शारीरिक मेहनत बढ़ाने के लिए मैं इधर-उधर पड़ी कुछ धातु की छड़ों को एक लचीली पट्टी में डाल देता था, जिसे मैं अपने पैरों पर बांध लेता था। सूरज निकलने पर, मैं किसी के ध्यान देने से पहले चुपके से बिस्तर पर वापस चला जाता था। उम्मीद है कि अब मेरी मेहनत रंग लाएगी।

मुझे इस बात से भी मदद मिली कि मेरे दोनों भाई भी उसी कठिन परीक्षा से गुज़र चुके थे और उन्हें पता था कि क्या उम्मीद करनी है। कमल मेरी परीक्षा से कुछ समय पहले छुट्टी पर था, जो पोखरा में दोबारा हो रही थी, जबकि गंगा, जो 2002 में सेना से सेवानिवृत्त हो चुके थे, भी वहीं थे। वे कुछ दिनों के लिए मेरे साथ आए और हमने मिलकर एक योजना बनाई।

एक दोपहर कमल ने मुझे एक बांस की टोकरी देते हुए कहा, “ठीक है निर्मल, हमें तुम्हारी तैयारी और तेज़ करनी होगी।” फिर उसने उसमें एक भारी पत्थर डाल दिया। मेरे हाथ उस भार से थोड़े झुक गए। “अब थोड़ी देर इस वजन की आदत डाल लो, फिर चलो दौड़ते हैं।”

पोखरा के ऊबड़-खाबड़ इलाके में, नदी के किनारे और खड़ी ढलानों से होते हुए हम आगे बढ़े। मेरे सिर पर रखी टोकरी दस टन के वजन जैसी लग रही थी। गर्दन, पीठ और पिंडलियों में असहनीय दर्द हो रहा था। जब हम आखिरकार रुके, तो कमल ने अपनी घड़ी देखी। उसके माथे पर शिकन आ गई।

'एक घंटा, निर्मल। इस तरह के प्रदर्शन से तुम पास नहीं हो पाओगे। हम कल फिर कोशिश करेंगे।'

अगले दिन, मेरी गति बढ़ गई और मैंने अपना समय घटाकर पचपन मिनट कर लिया। एक दिन बाद, मैं दौड़ते हुए कोर्स पर तेज़ी से आगे बढ़ा और पाँच किलोमीटर की दूरी अड़तालीस मिनट के निर्धारित समय से कुछ कम समय में पूरी कर ली। मुझे लग रहा था कि सब ठीक हो जाएगा। लेकिन जब मैं आखिरकार एक डोको रेस में शामिल हुआ, जिसमें किशोरों का एक बड़ा

समूह भी था जो मेरी तरह ही केंद्रीय चयन प्रक्रिया से गुज़रने की उम्मीद कर रहे थे, तो मैंने फिनिश लाइन के उस पार देखा और थोड़ा चिंतित हो गया। सभी के अनुसार, उनमें से कई ने एक स्थानीय एथलेटिक्स कंपनी को अपने शरीर को एक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम से तैयार करने के लिए पैसे दिए थे। वे क्वालिफिकेशन के लिए पूरी तरह तैयार लग रहे थे, उनमें से कुछ के पास तो नए जूते और डरावने मिलिट्री स्टाइल के हेयरकट भी थे।

मुझे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी। दौड़ में अग्रणी प्रतिभागियों के बीच रहकर, मुझे पता था कि मुझमें दुनिया की सबसे बहादुर सैन्य टुकड़ी में शामिल होने की क्षमता है।

*

अंतिम शारीरिक आकलन के दौरान किए गए सभी पुश-अप्स भी मुझे तोड़ नहीं पाए। पुल-अप्स, सिट-अप्स, स्प्रिंट्स, क्रॉस-कंट्री रन या बीप टेस्ट जैसे सभी परीक्षण मैंने आसानी से पास कर लिए – यहाँ तक कि डेढ़ मील की दौड़ में मैं प्रथम स्थान पर भी आया। अंग्रेजी या गणित की परीक्षा के मानसिक तनाव का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ, जब तक कि अंततः मुझे ब्रिटिश सेना में भर्ती नहीं कर लिया गया और जल्द ही मैं क्वीन के गोरखा इंजीनियर्स का सदस्य बन गया। केंद्रीय चयन प्रक्रिया पास करने के दो सप्ताह के भीतर ही मैं इंग्लैंड के लिए रवाना हो गया, जहाँ मैंने यॉर्कशायर के कैटरिक स्थित इन्फैंट्री ट्रेनिंग सेंटर में गोरखा ट्रेनिंग कंपनी में भर्ती हो गया। मैं कभी विदेश नहीं गया था, इंग्लैंड जैसी दूर की यात्रा तो दूर की बात है, लेकिन इतनी अलग संस्कृति में घुलमिल जाना मुझे अपेक्षाकृत आसान चुनौती लग रही थी, ऐसा मैंने सोचा था।

मैंने सोचा, 'कोई बात नहीं। मैं बोर्डिंग स्कूल जा चुका हूँ। मेरी अंग्रेजी बहुत अच्छी है। मैं ठीक रहूँगा।'

जनवरी 2003 में पहुँचने पर मैं हैरान रह गया। जब हमारा विमान हीथ्रो में उतरा, तो वहाँ बहुत ठंड थी। मैंने सोचा था कि बस हमें मध्य लंदन में एक छोटे से दर्शनीय स्थलों के भ्रमण पर ले जाएगी, जहाँ मुझे बिग बेन, सेंट पॉल कैथेड्रल और बकिंघम पैलेस जैसे सभी प्रसिद्ध स्थलों की झलक देखने को मिल जाएगी। लेकिन इसके बजाय हम मोटरवे पर आ गए और भेड़ों, पहाड़ियों और बीच-बीच में पड़ने वाले पेट्रोल पंपों से भरे एक सुंदर रास्ते से होते हुए इंग्लैंड के उत्तर में पहुँचते ही, स्थानीय संस्कृति में ढलने का मेरा आत्मविश्वास जल्दी ही खत्म हो गया।

सबसे पहले तो मौसम बेहद खराब था, हवा और बारिश इतनी तेज़ थी कि ऐसा लग रहा था जैसे तिरछी बारिश हो रही हो। दूसरी बात, भाषा की बाधा ने मुझे बहुत परेशान किया और स्थानीय लोगों से हुई मेरी सारी बातचीत मेरी समझ से परे हो गई। हालाँकि स्कूल में मेरी लिखित अंग्रेज़ी काफी अच्छी थी, लेकिन लहजों को समझने में मैं पूरी तरह से असमर्थ था। जॉर्डी, मैनचेस्टर, कॉकनी। हर बोली मुझे बिलकुल अजनबी लग रही थी। इंग्लैंड में जिस पहले व्यक्ति से मैं मिला, वह लिवरपूल का था और जब मैंने उससे हाथ मिलाकर अभिवादन किया, तो उसने गाढ़े स्कॉउस लहजे में जवाब दिया। मैं एकदम घबरा गया।

मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आया कि वह क्या कह रहा था।

मेरी समस्या यह थी कि नेपाल में मेरी शिक्षा पूरी तरह से पढ़ने, सुनने और बोलने के माध्यम से हुई थी, लेकिन किसी ने भी मुझे विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों के बारे में चेतावनी नहीं दी थी। जब मुझे ब्रिटिश लड़कों के साथ वास्तविक जीवन की स्थितियों में डाला गया, तो मैं गंभीर रूप से पिछड़ गया। पहले कुछ हफ्तों में, मैं अक्सर बातचीत के दौरान सोचता रहता था, ये सब क्या हो रहा है?

कैटरिक में अपने रंगरूट प्रशिक्षण के दौरान, मैंने अच्छे कपड़े पहनना भी सीखा: हमें जिन कई नियमों का पालन करना अनिवार्य था, उनमें से एक यह भी था कि हर समय सूट-बूट पहनना ज़रूरी था। समुद्र तट पर अपनी पहली यात्रा के दौरान, मेरी पलटन नंगे पैर रेत पर चली, सूट की पैंट ऊपर मोड़ी हुई थी और जैकेट कंधों पर लटकी हुई थी। वहाँ से गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति को हम हास्यास्पद लग रहे होंगे।

जब युद्ध के मैदान में उतरने का समय आया, तो मैं पूरी तरह से तैयार था, लेकिन वहाँ तक पहुँचने में मुझे चार साल लग गए। छत्तीस सप्ताह के गोरखा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में, मैंने रेजिमेंट के मूल सिद्धांतों के बारे में सीखा; हमने सांस्कृतिक प्रशिक्षण और पैदल सेना के युद्धक्षेत्र प्रशिक्षण के मॉड्यूल पर काम किया। भर्ती प्रशिक्षण उत्तीर्ण करने के बाद, मैं गोरखा इंजीनियर्स में शामिल हो गया और मुझे एक ट्रेड चुनने का निर्देश दिया गया, जहाँ मुझे बढ़ईगीरी और प्लंबिंग सहित एक सूची में से एक कौशल सीखना था। मैंने भवन निर्माण और संरचनात्मक परिष्करण में काम करने का विकल्प चुना, और नौ महीने तक मैं केंट के चैथम में रहा, जहाँ मुझे दीवारों पर प्लास्टर करना सिखाया गया, साथ ही पेंटिंग और सजावट की बारीकियाँ भी सिखाई गईं। यह प्रयास नीरस था लेकिन सार्थक था, और मुझे पता था कि अगर सेना में मेरा जीवन सफल नहीं हुआ, तो मेरे पास एक सुविधाजनक पेशा होगा जिस पर मैं भरोसा कर सकता हूँ।

बाद में, मैंने लड़ाकू इंजीनियर के लिए आवश्यक सभी कौशल सीखे और कई क्षेत्रीय अभ्यासों में भाग लिया। अंततः डेवोन के लिम्पस्टोन स्थित रॉयल मरीन कमांडो प्रशिक्षण केंद्र में तेरह सप्ताह का ऑल आर्म्स कमांडो कोर्स पूरा करने के बाद, मुझे 2007 में ऑपरेशन हेरिक के तहत अफगानिस्तान में तैनात किया गया - यह बारह साल की एक रणनीति थी जिसका उद्देश्य देश में सैन्य उपस्थिति बनाए रखना और तालिबान द्वारा रची जा रही किसी भी आतंकवादी गतिविधि पर नज़र रखना था। स्थानीय लोगों को नई सरकार बनाने में मदद करना भी हमारे कार्यों में से एक था, लेकिन काम बेहद कठिन था।

कई बार मेरा काम बड़े-बड़े भूभागों में इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (IED) की खोज करना होता था। ऑपरेशनों में, रॉयल मरीन कमांडो अक्सर पहले जाते थे, और किसी संदिग्ध ट्रिगर डिवाइस का पता चलने पर, मेरी टीम को उस क्षेत्र को खाली करने, बम की सटीक स्थिति का पता लगाने और फिर उसे निष्क्रिय करने का काम सौंपा जाता था। इसके बाद हमारी पूरी यूनिट सुरक्षित रूप से आगे बढ़ पाती थी। काम हमेशा बेहद कठिन होता था, क्योंकि एक भी गलती मुझे टुकड़े-टुकड़े कर सकती थी, और हर काम में गति का भी विशेष महत्व था। खुले मैदान में सुस्ती दिखाने का समय नहीं होता था, क्योंकि दुश्मन किसी भी क्षण हमला कर सकता था।

अधिकांश समय मुझे रॉयल मरीन की बटालियन के आकार की 'फॉर्मेशन', 40 कमांडो के साथ काम करने के लिए तैनात किया गया था। संयुक्त ऑपरेशनल कार्यों में से एक था घर-घर गश्त करना, गोला-बारूद और हथियारों की जाँच करना, या तालिबान के मादक पदार्थों के भंडार की जाँच करना। मैं एक अत्यंत वफादार सैनिक था और ब्रिटिश सेना में गोरखाओं की प्रतिष्ठा पर गर्व करता था - मैं इसकी रक्षा के लिए कुछ भी कर सकता था। मैं महारानी और राजशाही के प्रति भी अत्यंत आदर रखता था - वे मेरे लिए सर्वोपरि थे। लेकिन मैं अपने मन की बात कहने से डरता नहीं था।

एक ऑपरेशन के दौरान, मुझे दुश्मन के एक परिसर में बारूदी सुरंगों की तलाशी का जिम्मा सौंपा गया था और चूंकि मेरी यूनिट उस समय खुले मैदान में नहीं थी, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतना ही बेहतर समझा गया। मैं कोई भी जगह छोड़ना नहीं चाहता था। लेकिन तभी मुझे अपने पीछे एक कमांडर की निगाहें महसूस हुईं। उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

'पुर्जा, जल्दी करो,' उसने कहा। 'क्या समस्या है?'

'हाँ, मैं जल्दी कर सकता हूँ,' मैंने कहा। 'शायद, मैं इसे छोड़ कर कह सकता हूँ, "काम हो गया!" लेकिन मैं इसे ठीक से इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं नहीं चाहता कि गोरखाओं पर किसी भी आईईडी को न देख पाने का आरोप लगे। यह सिर्फ मेरे बारे में नहीं है...'

मुझे अपने कमांडर का यह सुझाव भी पसंद नहीं आया था कि कुछ गड़बड़ है। क्या उनका इशारा यह था कि मैं जल्दी काम करने से बहुत डर रहा था? सच तो यह था कि कमरे में इधर-उधर घूमते हुए, यह जानते हुए कि किसी भी पल बम फट सकता है, हाँ, मैं थोड़ा घबराया हुआ था - मैं पागल नहीं था। लेकिन डर का मेरी दुनिया में कोई स्थान नहीं था, यहाँ तक कि अफगानिस्तान में भी नहीं।

'तुम्हें लगता है कि मैं इससे डरता हूँ?' मैंने बम और बारूदी सुरंगों का पता लगाने वाले वैलन डिटेक्टर को नीचे रखते हुए और कमरे में बेफिक्र होकर घूमते हुए कहा। 'यहाँ मेरी जान की कोई कीमत नहीं है। लेकिन इज्जत मायने रखती है। इसीलिए मैं यह काम ठीक से कर रहा हूँ।'

'ओह...', मेरे कमांडर ने कहा। वे इतने अचंभित लग रहे थे कि उन्होंने मुझे अवज्ञा के लिए फटकार नहीं लगाई।

अफगानिस्तान में अपने समय के दौरान मुझे रॉयल मरीन कमांडो के प्रति सम्मान विकसित करने में ज्यादा समय नहीं लगा। मुझे उनका आदर्शवाद बहुत पसंद आया। वे सुपर-सैनिक थे, लेकिन साथ ही विनम्र भी थे, जिसकी मैंने सराहना की। मुझमें भरपूर आत्मविश्वास था, लेकिन मुझे अहंकार और खुद को श्रेष्ठ समझने की प्रवृत्ति पसंद नहीं थी। जब भी हम एक साथ गोलीबारी में फंसते थे, दोनों समूहों के बीच सम्मान का भाव बना रहता था।

अक्सर ऐसी स्थितियों में गोरखा सैनिकों का काम नज़दीकी लड़ाई में सहायता प्रदान करना होता था और हमें दुश्मन के ठिकानों के दरवाजों पर L9 बार माइन लगाने के लिए बुलाया जाता था। मूल रूप से टैंक रोधी बारूदी सुरंग के रूप में डिज़ाइन किए गए ये विस्फोटक उपकरण बाधाओं को हटाने में भी उपयोगी थे; ये अफगानिस्तान में आम तौर पर पाई जाने वाली मोटी दीवारों को आसानी से भेद सकते थे। मेरा काम था चुपके से दरवाजे तक जाना, माइन लगाना,

भाग जाना और... धमाका! फिर यूनिट धुएँ से भरे उस गड्ढे में घुसकर दूसरी तरफ से हम पर हमला कर रहे दुश्मन सैनिकों को मार गिराती थी।

कई बार मुझे हल्की मशीन गन (LMG) के साथ तैनात किया जाता था। मैं सुबह 4 बजे उठकर रेगिस्तान की खुली घाटियों में गश्त लगाता था ताकि आस-पास देखने वालों को हमारी मौजूदगी का एहसास हो सके; फिर मेरी टुकड़ी चिलचिलाती धूप में कस्बों और गांवों में घूमती, दोस्ताना स्थानीय लोगों से हालचाल पूछती, और साथ ही दुश्मनों पर गोलियां चलाती। काम तनावपूर्ण था, लेकिन संतोषजनक भी। जब हथियार चलते थे, तो मेरे अंदर एड्रेनालाईन का प्रवाह बढ़ जाता था।

मेरी रोज़मर्रा की ज़िंदगी लड़ाई के इर्द-गिर्द घूमती थी, और जोखिम स्पष्ट रूप से परिभाषित थे। किसी न किसी को मरना ही था, जो दुर्भाग्यपूर्ण था, और किसी दिन वह व्यक्ति मैं भी हो सकता था, लेकिन मैं इसके लिए तैयार था। और मैं हमेशा अपनी क्षमता से बढ़कर काम करना चाहता था। कई बार मुझे उन अभियानों की कहानियाँ सुनने को मिलती थीं जो हमारी तैनाती के दायरे से बाहर चल रहे थे: बंधकों को छुड़ाना, तालिबान के गंभीर नेताओं की ज़बरदस्ती गिरफ़्तारियाँ और घर-घर जाकर छापे मारना, ये सभी काम स्पेशल एयर सर्विस (एसएएस) या स्पेशल बोट सर्विस (एसबीएस) द्वारा किए जाते थे। ये गुप्त रेजिमेंट यूके स्पेशल फोर्सेज का हिस्सा थीं और जहाँ तक मेरा सवाल था, उनका काम गोरखाओं से भी कहीं बेहतर था। जब मैंने पहली बार कैटरिक में उनके बारे में जाना, तो मैं बहुत प्रभावित हुआ।

वाह! मैं भी उन लोगों में से एक बनना चाहता हूँ।

मुझे सैनिक बनना बहुत पसंद था, लेकिन उससे भी ज़्यादा मुझे शीर्ष स्तर का बनने का विचार अच्छा लगता था, और स्पेशल फोर्सेज वाकई में कुलीन वर्ग की थीं। इसलिए, 2008 के अंत में, मैंने अपने विकल्पों पर विचार किया और मुझे पता चला कि एसबीएस रॉयल मरीन से संबद्ध है, और एसएएस ब्रिटिश सेना से। मैंने शुरू में एसएएस में शामिल होने में अपनी रुचि दिखाई और स्क्वाड्रन के कार्य करने के तरीके और आवेदन की आवश्यकताओं के बारे में जानकारी ली। मैं प्रभावित हुआ। वे ज़मीन, समुद्र और हवा में काम करते थे। लेकिन फिर एक दोस्त ने मुझे एसबीएस के बारे में कुछ और जानकारी दी। पता चला कि वे और भी ज़्यादा बहादुर थे।

उन्होंने कहा, 'ये लोग पैराशूट से कूदते हैं, जमीन पर और पानी में लड़ते हैं। एसएएस जो कुछ भी करता है, ये सब वही करते हैं, लेकिन वे युद्ध में गोता भी लगाते हैं और तैरते भी हैं।'

अफगानिस्तान में रॉयल मरीन के साथ काम करने के अनुभव से मुझे पता था कि मैं मानसिक रूप से तो आसानी से घुल-मिल जाऊंगा, और इसके तुरंत बाद मैंने एसबीएस ब्रीफिंग कोर्स में भाग लिया। यूके स्पेशल फोर्सेज सिलेक्शन में शामिल होने के लिए मेरा आवेदन 2008 में स्वीकार कर लिया गया। यह एक कठिन, छह महीने लंबी परीक्षा होती है जो इस समूह में शामिल होने के योग्य सैनिकों को अयोग्य सैनिकों से अलग करती है। गोरखाओं के साथ छह साल बिताने के बाद, मैं आगे बढ़ रहा था। सैन्य अभिजात वर्ग में शामिल होने का मेरा समय आ गया था।

उत्कृष्टता की निरंतर खोज

जब मैंने कहा कि मेरा मिशन स्पेशल बोट सर्विस (एसएएस) में शामिल होना है, तो किसी ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया, शायद इसलिए कि इससे पहले कोई भी गोरखा सैनिक इसमें शामिल नहीं हुआ था, हालांकि मुझे पता था कि मेरे कई साथी एसएएस में तरक्की कर चुके थे। लेकिन एसबीएस में जगह बनाना थोड़ा मुश्किल था, क्योंकि स्क्वाड्रन के हर सैनिक को युद्ध के दौरान तैरना और गोता लगाना आना चाहिए था, और गोरखा एक ऐसे देश से आते हैं जो चारों ओर से ज़मीन से घिरा है, इसलिए शुरुआत से ही मेरे खिलाफ हालात थे, और मेरे आस-पास के सभी लोग यह जानते थे।

अगर मैं चयन प्रक्रिया में सफल भी हो जाता, तो भी मुझे एसबीएस में शामिल होने के लिए कई विशेषज्ञ पाठ्यक्रमों को पास करना पड़ता। पानी में काम करना मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था, लेकिन मैं इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार था। फिर भी, गोरखा रेजिमेंट के भीतर से संदेह भरी आवाजें मुझ पर उठती रहीं।

तुम मजाक कर रहे हो यार। तुम बस यूं ही कह रहे हो।

मैंने टिप्पणियों को नजरअंदाज किया और अपनी महत्वाकांक्षा पर शोध करने में जुट गया।

मुझे समझ आ गया था कि स्पेशल फोर्सेज ऑपरेटर बनने के लिए न केवल बढ़ते कार्यभार और खतरनाक युद्ध क्षेत्रों में दुश्मन की सीमाओं के पीछे लड़ाई के तीव्र तरीके के अनुकूल होना ज़रूरी था, बल्कि अपने आस-पास के लोगों के साथ तालमेल बिठाना भी ज़रूरी था। मैं नेपाल से था। स्क्वाड्रन में मेरे जैसा कोई और नहीं था। इसलिए सांस्कृतिक झटके से निपटने के लिए मैंने ब्रिटिश चुटकुलों का एक संग्रह याद करने का फैसला किया। पिता के चुटकुले। अश्लील चुटकुले। पुराने सिटकॉम और स्टैंड-अप शो के चुटकुले। नेपाली हास्यबोध एसबीएस में पाए जाने वाले हास्यबोध से बहुत अलग है, इसलिए मैंने किसी भी ठीक-ठाक चुटकुले या मज़ेदार कहानियों को याद कर लिया।

उस गोरी लड़की ने संतरे के जूस की बोतल को क्यों घूरा? क्योंकि उस पर लिखा था: 'जूस: कॉन्सेंट्रेट'।

मैं वहां घुलमिल जाने के लिए इतना उत्सुक था।

ब्रिटिश संस्कृति से इस तरह परिचित होने का एक और महत्वपूर्ण कारण था। स्पेशल फोर्सेज में शामिल होने के योग्य उम्मीदवारों का आकलन करते समय, मूल्यांकनकर्ता या डायरेक्टिंग

स्टाफ (डीएस) सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवारों की तलाश करते थे। संभावित रंगरूटों को अत्यधिक केंद्रित सैनिकों के दस्ते में सहजता से घुलमिल जाना होता था और दुनिया के कुछ सबसे खतरनाक युद्ध क्षेत्रों में लड़ते समय, टीम का मनोबल एक महत्वपूर्ण कारक होता था। यदि कोई संभावित एसबीएस ऑपरेटर मज़ाक में शामिल नहीं हो पाता था, या युद्ध के दौरान इस्तेमाल होने वाले व्यंग्य को नहीं समझ पाता था, तो अक्सर इसे उसके खिलाफ माना जाता था।

यह बेहद ज़रूरी था कि मैं सहजता से उनकी दुनिया में घुलमिल जाऊं; यह मेरे लिए बहाना नहीं होना चाहिए था कि, 'ओह, मैं गोरखाओं से आया हूं, इसलिए मुझे समझ नहीं आता।' या, 'मेरी शिक्षा इंग्लैंड में नहीं हुई, यह बात मेरी समझ से परे है।' मुझे हर स्तर पर उस उद्देश्य के लिए उपयुक्त होना ज़रूरी था।

खुद को शारीरिक रूप से तैयार करने के लिए, मैंने कड़ी मेहनत करके खुद को बेहद कठिन प्रशिक्षण दिया। केंट के मेडस्टोन में गोरखा बैरक में तैनात रहते हुए, मैं दिन भर अपनी सैन्य जिम्मेदारियों को पूरा करता था, लेकिन शाम 5 बजे तक मैं जल्दी से घर लौट आता था, जहाँ मैं जल्दी से खाना खाकर सत्तर मील की साइकिल यात्रा के लिए जिम चला जाता था।

यह जानते हुए कि लड़ाकू तैराकी मेरे प्रशिक्षण का एक अहम हिस्सा होगी – और उस समय मैं कोई बहुत अच्छा तैराक नहीं था – मैंने उतनी किलोमीटर तैराकी की जितनी मेरा शरीर सहन कर सकता था। मैं पूल में एक के बाद एक फ्रीस्टाइल लेंथ तेज़ी से तैरता रहा, और 2,500 मीटर के बाद थककर चूर हो जाता था। मैं आधी रात से पहले शायद ही कभी सो पाता था, जहाँ मैं थककर चूर हो जाता था, और कभी-कभी सुबह 2 बजे उठकर मेडस्टोन बैरक से चैथम तक 75 पाउंड का बोझ ढोता था।

सप्ताहांत में, मैं दौड़ने का अभ्यास करता था, और घंटों दौड़ना मेरी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बन गया था। मैं सुबह 8 बजे उठकर अपने दो-तीन गोरखा साथियों के साथ गलियों में दौड़ लगाता था। हमारा समूह एक रिले सिस्टम में दौड़ता था, जिसमें मैं अकेला सैनिक था जिसे आराम करने की अनुमति नहीं थी। एक साथी छह मील तक मेरे साथ दौड़ता था, मुझे अपने साथ तेज़ गति से खींचता हुआ ले जाता था। उसकी दूरी पूरी होने पर, दूसरा साथी दौड़ना शुरू करता और हम साथ मिलकर छह मील और दौड़ते। यह सिलसिला घंटों तक चलता था और यह शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से बहुत कठिन था।

आधी रात को मूसलाधार बारिश के बीच बिस्तर से उठना बेहद निराशाजनक अनुभव था, लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। जब बर्फ गिरने लगी, तो मैंने अलार्म बंद करने की इच्छा को दबा दिया। भावनात्मक नियंत्रण उन अनेक गुणों में से एक था जो मुझे एक कुशल सैनिक बनने के लिए आवश्यक थे।

आराम का नामोनिशान नहीं था। कई बार मैं अकेले ही काम करता था, 75 पाउंड वजन से लदे बैग के साथ, जिससे छह घंटे के प्रशिक्षण सत्र और भी कठिन हो जाते थे। मैं समझता था कि स्पेशल फोर्सेज के साथ लड़ते समय आराम करने का समय नहीं मिलेगा, इसलिए जितना हो सके उतना कठिन प्रशिक्षण ही आगे बढ़ने का सबसे अच्छा रास्ता लग रहा था। मैंने हर कदम पर संदेह से लड़ाई लड़ी: गोरखाओं में मेरे साथियों और वरिष्ठ अधिकारियों को लगता था कि उच्च

सैन्य सेवा मेरे बस की बात नहीं है और शारीरिक कष्टों से भरा यह स्वयं-प्रेरित कार्यक्रम उस समय मेरे जीवन की सबसे कठिन चुनौती थी। लेकिन उनमें से कोई भी यह नहीं समझ पाया कि मैं कितना समर्पित हो गया था, या मेरी यह मानसिकता आने वाले वर्षों में मुझे असंभव को संभव करने में कैसे मदद करेगी। मुझे उम्मीद थी। और उम्मीद ही भगवान थी।

मैं धार्मिक व्यक्ति नहीं था। मेरे माता-पिता हिंदू थे, लेकिन मैं किसी एक सर्वोच्च शक्ति को नहीं मानता था। इसके बजाय, मुझे हर चीज़ का जश्न मनाना पसंद था। कभी मैं चर्च जाता था, कभी बौद्ध मठ में जाता था, लेकिन मैं हमेशा नए विचार सीखना चाहता था; मैं खुला और मानवीय था, मैं दुनिया के हर धर्म का सम्मान करता था, लेकिन मुझे खुद पर सबसे ज़्यादा भरोसा था। बचपन में, गोरखा बनना मेरी ख्वाहिश थी। वही मेरा भगवान था। छह साल बाद सैन्य अभिजात वर्ग में शामिल होना मेरी अगली ख्वाहिश थी। वह भी मेरा भगवान बन गया था। और मुझे उस पर विश्वास करना ज़रूरी था। विश्वास के बिना, चयन प्रक्रिया को पास करने जैसी बड़ी चुनौती में असफल होना तय था, इसलिए मुझे केवल संतुष्टि या शेखी बघारने के उद्देश्य से कहीं ज़्यादा प्रतिबद्धता की ज़रूरत थी। एसबीएस ऑपरेटर बनना एक उद्देश्य की तरह था, और मैंने इसके लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।

जब आखिरकार 2009 में मेरा चयन हो गया, तो हर दिन शारीरिक और भावनात्मक दृढ़ता की एक अविश्वसनीय परीक्षा थी। छह महीने तक चलने वाली इस चयन प्रक्रिया की शुरुआत हिल्स चरण से हुई, जिसमें दक्षिण वेल्स की ब्रेकोन बीकन्स पर्वत श्रृंखला पर समयबद्ध दौड़ की एक श्रृंखला शामिल थी। मुझ पर पड़ने वाले दबाव से विचलित हुए बिना, मैंने आने वाले हफ्तों में मेरे समूह के लिए निर्धारित परीक्षाओं की चिंता करने के बजाय, केवल अगले चौबीस घंटों पर ध्यान केंद्रित किया।

हर दिन की शुरुआत में मैं सोचता था, 'आज मैं अपना पूरा प्रयास करूंगा और सफल हो जाऊंगा। कल की चिंता मैं बाद में करूंगा।'

मैंने अपनी सारी ऊर्जा बचाकर नहीं रखी, क्योंकि मुझे पता था कि पूरी कोशिश न करने पर असफलता ही मिलेगी। मैं हर दिन पहाड़ियों पर जमकर मेहनत करता, रात को फिर से ऊर्जा जुटाता, और अगले चौबीस घंटों तक उतनी ही मेहनत करने का हौसला पैदा करता।

लगभग तुरंत ही, मुझे लगा कि मैं पिछड़ रहा हूँ। ब्रिटिश स्पेशल फोर्सेज में काम करने वाले किसी भी व्यक्ति की प्रमुख विशेषताओं में से एक थी 'ग्रे मैन' बनने की क्षमता। सैन्य या निगरानी के क्षेत्र में, इस प्रक्रिया में आसपास के वातावरण में घुलमिल जाना शामिल था ताकि किसी की नज़र में न आए या अवांछित जांच से बचा जा सके। कभी-कभी चयन के दौरान भी 'ग्रे मैन' की रणनीति अपनाना मददगार साबित होता था। जो संभावित ऑपरेटर लगातार सबसे आगे रहते थे, उन्हें डीएस (डिजिटल ऑफिसर) से मानसिक दबाव का सामना करना पड़ता था। जो जवान भारी शारीरिक कार्यभार को संभाल नहीं पाते थे, उन्हें अक्सर प्रशिक्षण से बाहर निकालने और वापस अपनी रेजिमेंट में भेजने से पहले मौखिक रूप से फटकार लगाई जाती थी।

मेरी त्वचा के रंग के कारण, मेरे लिए समूह में घुल-मिल जाना या अन्य लड़कों के बीच छिपना नामुमकिन था। हालाँकि हर कोई कभी-कभार गलती कर बैठता था, मेरी गलतियाँ आमतौर पर

डीएस (डिफेंसिव एडवाइजर) द्वारा तुरंत पकड़ ली जाती थीं, और अक्सर दूर से ही। थोड़ी देर बाद ही चिल्लाना और ताने मारना शुरू हो जाता था, लेकिन मैं अपना ध्यान बनाए रखने में कामयाब रहा। खैर, ज़्यादातर समय तो ऐसा ही रहा। एक टेस्ट मार्च के दौरान, मैं कोर्स की समय सीमा से बस एक मिनट से चूक गया। तुरंत ही मुझे दबाव महसूस होने लगा। इस प्रक्रिया में हर दिन और भी कठिन होता गया, और एक दिन असफल होने के बाद मुझे पता चल गया कि अगले चौबीस घंटे और भी ज़्यादा चुनौतीपूर्ण होने वाले हैं। मेरी महत्वाकांक्षाएँ दांव पर लगी थीं।

अगली सुबह भी बेहद चुनौतीपूर्ण होने वाली थी: पहाड़ी चरण का अंतिम दिन लगभग तीस किलोमीटर की तेज़ पैदल यात्रा थी। इसके बाद कुख्यात अंतिम पैदल यात्रा थी – साठ किलोमीटर से अधिक की सहनशक्ति की परीक्षा, जिसे भारी बर्गेन रकसैक, हथियार, पानी और आपूर्ति के साथ पूरा करना था। इन सबका कुल वज़न लगभग अस्सी पाउंड था।

मेरे सामने करो या मरो वाली स्थिति थी: अगर मैं निर्धारित बीस घंटे के समय में टाइम ट्रायल और अंतिम मार्च पूरा कर लेता, तो मेरे चुने जाने की संभावना बनी रहती; अगर मैं असफल हो जाता, तो मुझे गोरखा रेजिमेंट में वापस लौटना पड़ता। लेकिन किसी भी हालत में मैं अपनी पुरानी रेजिमेंट में वापस नहीं जाना चाहता था। मैंने तय कर लिया था कि अगर चयन मेरे बस की बात नहीं है, तो सेना को हमेशा के लिए छोड़ने का समय आ गया है।

'या तो यह करो, निम्स, या घर जाओ,' मैंने अगली सुबह अपना सामान समेटते हुए सोचा।

मैंने मन तो बना लिया था, लेकिन उस दिन मुझे थोड़ा तनाव हुआ। यह तनाव कोर्स पूरा करने के लिए आवश्यक अत्यधिक सहनशक्ति के कारण नहीं था, बल्कि इसलिए था क्योंकि जब शुरुआती लाइन पर सभी रंगरूटों के उपकरणों की अचानक जाँच की गई, तो यह स्पष्ट हो गया कि मैंने खुद को थोड़े नुकसान में डाल दिया था।

'यह क्या है, पुरजा?' डीएस ने पूछा, और साथ ही वह मेरे पीठ पर बंधे हुए बर्गन बैग में कुछ ढूंढने लगा।

वह मेरी पानी की बोतल को इधर-उधर लहरा रहा था। मेरा दिल बैठ गया। धिक्कार है, ढक्कन गायब था। इससे भी बुरा, कुछ पानी बाहर गिर गया था।

चयन प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा करने का एक अहम हिस्सा व्यक्तिगत उपकरणों का रखरखाव था – उच्च मानकों के बिना, एक ऑपरेटर के युद्ध में असफल होने की संभावना अधिक थी। पानी की बोतल का ढक्कन जैसी छोटी सी चीज भी भूल जाना किसी गुप्त मिशन के सफल होने और दुश्मन द्वारा पकड़े जाने के बीच का अंतर हो सकता था। थकान भी कोई बहाना नहीं थी, और पहाड़ी चरण के दौरान थकावट महसूस करने से मेरी ध्यान देने की क्षमता प्रभावित हुई थी, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि मेरे पास स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त ऊर्जा होगी। अब मुझे इसके परिणाम भुगतने थे।

'लगता है आज तुम्हारा वजन थोड़ा ज्यादा होगा,' डीएस ने इतराते हुए कहा।

मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा बर्गन खोला जा रहा हो। अंदर एक पत्थर गिरा दिया गया, और भार के कारण मेरी पट्टियाँ खिंच गईं, लेकिन अजीब बात यह है कि इस झटके ने मुझे और भी अधिक प्रेरित किया।

जैसे ही मैंने एक और थका देने वाली लंबी पैदल यात्रा शुरू की, मैंने सोचा, 'ठीक है, निम्स। किसी न किसी तरह, तुम्हें यह साबित करना होगा कि तुम यहाँ के सर्वश्रेष्ठ लोगों में से एक हो, चाहे वे तुम्हें देख सकें या नहीं।'

डोको रेस के लिए उन कठिन प्रशिक्षण सत्रों से मुझमें पैदा हुए दर्द के परिचित एहसास में ढलते हुए, मैं आगे बढ़ता रहा। कठिन भूभाग पर अपेक्षित गति असहनीय थी, लेकिन मेरे बस में थी और मैं जल्दी ही अभ्यस्त हो गया। मुझे यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि चयन प्रक्रिया लोहे के बने सैनिकों को खोजने के बारे में नहीं थी; डीएस ऐसे पुरुषों की तलाश कर रहे थे जो लचीले हों और किसी भी परिस्थिति में खुद को ढाल सकें।

मानसिक और शारीरिक रूप से, मैं पहाड़ी चरण की सबसे कठिन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम महसूस कर रहा था। खड़ी चढ़ाइयों पर चढ़ते समय मैं खुद को मजबूत महसूस कर रहा था। समतल और ढलान वाले रास्तों को मैंने दौड़ की गति से पार किया, किलोमीटर दर किलोमीटर, घंटों दर घंटों, और लगभग पूरे दिन की मेहनत के बाद, मैंने फिनिश लाइन पार की, और उस दिन का सबसे तेज़ प्रतिभागी बना।

अब तक की सबसे कठिन चुनौती का सामना करते हुए भी मैं टूटा नहीं। मैं झुक गया और लचीला हो गया। मैं अनुकूलनीय था।

*

अपने प्रशिक्षण के दौरान, जब मैं एक विशिष्ट सैनिक बनने के लिए प्रयासरत था, तो कई बार मेरे सैनिक कौशल की चरम सीमा तक परीक्षा हुई, और ऐसी परीक्षा तब सबसे अधिक हुई जब मुझे जंगल में कार्रवाई करने के लिए कहा गया।

सैन्य दृष्टि से, जिन दूरस्थ और अति-गुप्त वर्षावनों में मुझे काम करना पड़ा, वे किसी भयानक मंजर से कम नहीं थे। तापमान बेहद गर्म और उमस भरा था, इसलिए मेरा अनुभव हमेशा निराशाजनक और गीला ही रहा। हर कोई बदबूदार था। इसने जंगल को सैन्य कौशल की एक कठिन परीक्षा बना दिया। वनस्पति में कीड़े-मकोड़े और सांप भरे हुए थे, और उष्णकटिबंधीय परिस्थितियाँ एक बेहद खतरनाक चुनौती थीं।

लेकिन जब भी मैं वहाँ होता, अक्सर कई हफ़्तों तक, मैं हमेशा कीचड़ और गीलेपन में भी मुस्कुराता रहता था; मैं अपने काम में मग्न, उत्पादक और खुश रहता था, जबकि मेरे आस-पास के कुछ साथी परेशान होते थे। समूह के कुछ अन्य लोगों को तो यह भी लगता था कि मुझमें कुछ गड़बड़ है। एक सुबह, नेविगेशन जाँच के लिए एक विशाल पहाड़ी पर चढ़ते समय, मैंने देखा कि मेरी टुकड़ी के छलावरण वाले चेहरे अविश्वास से मेरी ओर घूर रहे थे।

‘अरे यार, निम्स,’ लड़कों में से एक ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘मैं इन गश्तों पर पसीने से भीगकर बैठा हूँ, और तुम... इसका मज़ा ले रहे हो?’

मैंने इसे हंसकर टाल दिया और समझाया कि मैं ऐसे माहौल में काम कर रहा था जिसकी मुझे बचपन से आदत थी। जंगल मेरा घर जैसा था। लेकिन मैंने फिर भी वही गलतियां कीं जो बाकी सब करते हैं, जैसा कि मैंने अब तक अपने पूरे करियर में किया था, लेकिन मैंने यह मानकर काम

किया कि जब मैं सैन्य अभिजात वर्ग में जाऊंगा तो वे मुझसे दृढ़ और लचीला होने की उम्मीद करेंगे, और कोई भी मुझ पर कोई एहसान नहीं करेगा या मुझे और मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करेगा। मुझे हर समय खुद को प्रेरित करना था। अगर मैं किसी बुरी स्थिति में फंस जाता, तो उससे बाहर निकलना मेरी ही जिम्मेदारी होती। अक्सर भावनात्मक तनाव में टूट जाने से खुद को रोकना मुश्किल होता था, और सब कुछ दिमागी तौर पर उलझा हुआ लगता था।

मुझे हर आलोचना को चुपचाप सहना पड़ता था। एक बार, मेरी गश्ती टीम के एक साथी ने टोही अभ्यास में गड़बड़ कर दी, लेकिन जंगल में ज़्यादातर काम टीमवर्क पर आधारित होने के कारण, बाद में पूरे समूह को खूब डांट पड़ी। हमने घंटों झाड़ियों के बीच रेंगते हुए बिताए, उन सैनिकों की नाक के नीचे जो हमारे साथ जंगल में रह रहे थे और 'नकली' दुश्मन का काम कर रहे थे। जैसे-जैसे हम उनके ठिकाने के करीब पहुँचते गए, मेरे एक साथी ने और आगे बढ़ने की ज़िद की। मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं माना। और हालाँकि हम गश्ती सैनिकों की नज़रों से बच निकलने में कामयाब रहे, लेकिन हमारे आकलन दल के एक सदस्य ने हमें अपने शिविर की ओर लौटते समय देख लिया।

'अरे, क्या तुम लोग अच्छी तरह से रेकी करने निकले थे?' उसने कहा। 'यहाँ पकड़े जाना शायद अच्छा विचार नहीं है।'

जब गश्ती दल ने हमें एक साथ बुलाया, तो हमें खूब खरी-खोटी सुनाई गई। मुझे बताया गया कि मैंने दुनिया के सबसे बुरे सैनिक होने का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है।

उनमें से एक ने चिल्लाकर कहा, 'पुरजा, तुम यहाँ कर क्या रही हो?'

जब मैंने जवाब देने की कोशिश की, तो उसने मुझे तुरंत रोक दिया। मेरे लहजे की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, 'अंग्रेज़ी में बोलो।' मेरा मन किया कि उसे घूंसा मार दूं, लेकिन मैंने खुद को रोक लिया, क्योंकि मुझे पता था कि यह सब परीक्षा का हिस्सा है। मैं उकसावे पर प्रतिक्रिया नहीं कर सकता था। इसलिए मैंने चुप रहकर आलोचना को सहन कर लिया।

मुझे बस डटे रहना होगा। ये कमीने मुझे तोड़ने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, मैं अंत तक टिका रहूंगा।

मेरा मनोबल तोड़ना उनका काम था; मेरा काम अंत तक लड़ते रहना था।

मैं जल्द ही कठिन परिस्थितियों में स्पष्ट रूप से सोचने और प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम हो गया। मेरा व्यक्तिगत रखरखाव एकदम सही था। मैंने सैन्य अभ्यास से लेकर नकली हताहत निकासी (CASEVAC) अभियानों तक, हर तरह की परीक्षा का सामना किया और मेरा संकल्प अटल रहा। मैं सोचता, 'आओ और मेरी परीक्षा लो। कोई गलती ढूंढ कर दिखाओ।'

जंगल में प्रशिक्षण समाप्त होते-होते मैं पहले से कहीं अधिक युद्ध के लिए तैयार महसूस कर रहा था; मेरा संकल्प अटूट था। और हर नए अनुभव के साथ, मैं एसबीएस का पूर्ण सदस्य बनने के और भी करीब पहुँच रहा था। मेरा नया भगवान।

*

कई अतिरिक्त विशेषज्ञ पाठ्यक्रमों को उत्तीर्ण करने के बाद, मुझे स्पेशल बोट सर्विस के सदस्य

के रूप में स्थायी नियुक्ति मिल गई। मेरे बैजिंग दिवस पर, मैंने सेवा के अन्य जवानों के साथ दीक्षा समारोह के दौरान पहली बार शराब का सेवन किया। इसकी शुरुआत एक गिलास व्हिस्की से हुई। इसके बाद डेढ़ लीटर मिश्रित शराब पी गई: लेगर, वाइन, स्पिरिट - सब कुछ। मुझे वह सब एक ही बार में पीना पड़ा, हालांकि उस समय मुझे इसकी ज्यादा परवाह नहीं थी। मुझे मेरा ईश्वर मिल गया था। मैं अब एक स्पेशल फोर्सेस ऑपरेटर था और एक विशिष्ट क्लब का हिस्सा था, क्योंकि मैंने खुद को उच्चतम स्तर पर लड़ने में सक्षम साबित कर दिया था। मैं उनमें से एक था। अपने बालों को लंबा करना अगला तार्किक कदम लगा - मुझे एक रॉक स्टार जैसा महसूस हो रहा था।

मेरे पहले हैंगओवर के शांत होते ही, जीवन की रफ़्तार तेज़ हो गई। एक पल मैं नाव में प्रशिक्षण ले रहा था, अगले ही पल मैं समुद्र के ऊपर उड़ते हुए हरक्यूलिस विमान से पैराशूट के सहारे कूद रहा था। मेरा जीवन अब तेज़ रफ़्तार और चुनौतीपूर्ण था, लेकिन कभी नीरस नहीं था।

काम बेहद कठिन था। एसबीएस में शामिल होने के बाद, प्रत्येक ऑपरेटर को किसी विशेष क्षेत्र में और अधिक निपुणता प्राप्त करने के लिए कई भूमिकाओं में से एक को निभाना पड़ता है। मैंने ट्रॉमा मेडिक बनना चुना, और गोलीबारी के दौरान मेरे साथियों को लगी चोटों या ज़ख्मों का इलाज करना मेरी ज़िम्मेदारी थी; मैंने गोली के घावों और आईईडी विस्फोटों से लगी चोटों का इलाज करना सीखा।

अंततः, जुलाई 2010 में मुझे वास्तविक युद्धक्षेत्र में उतरने का अवसर मिला, जहाँ मैंने कई युद्ध क्षेत्रों में परिचालन किया और कठिन गिरफ्तारी छापों में भाग लिया। मेरा काम सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ घरों और दुश्मन के ठिकानों में घुसना था, जहाँ मुझे खतरनाक दुश्मन बलों या विस्फोटित बमों का सामना करना पड़ता था।

दरवाजे तोड़कर अंदर घुसना रोमांचक होने के साथ-साथ डरावना भी था, और स्पेशल फोर्सेज में अपने कार्यकाल के दौरान मैं एक कुशल सैनिक बन गया। लड़ाई के दौरान मैं पूरी तरह से सतर्क हो जाता था; अपने प्रशिक्षण और अनुभव के कारण मैं अत्यधिक दबाव में भी शांत रह पाता था, साथ ही गोरखा भावना ने मुझे कठिन समय में प्रेरित रखा। हमें अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखनी थी: हम दुनिया की सबसे शक्तिशाली लड़ाकू सेनाओं में से एक के रूप में जाने जाते थे और मैं उस छवि को बरकरार रखने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

मेरा एक सिद्धांत था: बहादुरी सबसे ऊपर। और मेरे लिए जीने का कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

मृत्यु क्षेत्र में

लंबे समय तक युद्ध में बने रहने के बाद जीवन और भी कठिन हो जाता था। स्क्वाड्रन अपने सभी सदस्यों को उत्कृष्टता की ओर प्रेरित करता था, छिपने की कोई जगह नहीं थी और जिन शत्रु सेनाओं से हम लड़ रहे थे, वे अनुकूलनशील थीं और आत्मसमर्पण करने को तैयार नहीं थीं। कई बार काम भावनात्मक भी हो जाता था।

लेकिन मैं टूटा नहीं। मैं अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने वाला व्यक्ति नहीं था, यहाँ तक कि अपनी पत्नी सुची से भी नहीं, और एक सैनिक होने के नाते मैंने जल्द ही अपने काम के दौरान होने वाले किसी भी दुख को छुपाना सीख लिया था। मेरा मानना था कि युद्ध के दौरान होने वाले किसी भी भावनात्मक दर्द को छुपाना महत्वपूर्ण है।

चयन प्रक्रिया के दौरान, मैं नहीं चाहता था कि रक्षा अधिकारी यह सोचें कि मैं अपनी सीमाओं के चरम पर काम करते समय सक्षम नहीं हूँ; युद्ध के दौरान, मैं निश्चित रूप से नहीं चाहता था कि दुश्मन को यह एहसास हो कि मैं कमजोर, थका हुआ या डरा हुआ हूँ – इससे उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से और भी बल मिलता। अपने दर्द और पीड़ा को छुपाना एक ऐसा कौशल था जिसका मैंने हमेशा अभ्यास किया और ऐसा मैंने अपने काम पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करके किया; इससे मुझे अपने आसपास की अराजकता से दूर रहने में मदद मिली।

एक मिशन के दौरान मुझे गोली भी लगी थी, लेकिन मैंने डर या कमजोरी नहीं दिखाई। यह चोट सीमा चौकी पर हुई गोलीबारी के दौरान लगी, जब मुझे एक छापे में फायरिंग में सहायता देने के लिए कहा गया था। हम घिरे हुए थे और हमारे कुछ सैनिक हताहत हो गए थे। एक परिसर की छत पर पोजीशन लेकर, पेट के बल लेटकर अपनी बंदूक चलाते हुए, मुझे किसी चीज से चोट लगी - पहले तो मुझे पता नहीं चला कि वह क्या थी, लेकिन वह इतनी शक्तिशाली थी कि मुझे इमारत से नीचे गिरा दिया।

मैं धड़ाम से ज़मीन पर गिरा, और दस फीट या उससे ज़्यादा नीचे गिरने के बाद होश में आने में कुछ सेकंड लगे। आखिर हुआ क्या? मेरे मुँह में खून का गर्म, धातु जैसा स्वाद था। ज़मीन पर मेरे चारों ओर खून का एक छोटा सा तालाब बनता जा रहा था। एक पल के लिए मुझे लगा कि गोली लगने से मेरा आधा चेहरा छलनी हो गया है, हालाँकि कोई दर्द नहीं था।

क्या मैं सदमे में था?

क्या मेरा जबड़ा साबुत था?

मैंने घबराकर अपनी ठुड्डी को छुआ। शुक्र है! वो अभी भी सही सलामत थी। लेकिन साफ था कि दुश्मन की गोली मुझे जान से मारते-मारते बची थी, जिससे मेरे चेहरे पर गहरा घाव हो गया था, जबड़े और होंठ बुरी तरह छिल गए थे। जब मैंने अपना हथियार देखा, तब जाकर समझ आया कि मैं मौत के कितने करीब आ गया था। गोली मेरे बट एक्सटेंडर पर लगी थी, वो सपोर्टिंग आर्म जिसकी मदद से मैं राइफल को कंधे पर टिकाकर गोली चलाता था।

एक स्नाइपर ने गोली चलाई थी, मुझे लगा कि वह शायद मेरी गर्दन या सिर पर निशाना लगा रहा था, लेकिन निशाना ज़रा सा चूक गया। गोली धातु के एक्सटेंशन से टकराकर राइफल के ट्रिगर हाउसिंग मैकेनिज़्म को तोड़ते हुए ऐसे कोण से निकली कि वह मेरे चेहरे के आर-पार चली गई। भयानक रूप से, उस एक गोली की ऊर्जा में इतनी शक्ति थी कि उसने मुझे लेटी हुई स्थिति से छत से नीचे गिरा दिया। मेरा हथियार अब बेकार हो चुका था, मैंने उसे एक तरफ फेंक दिया और लुढ़ककर छिप गया। गोलीबारी अभी खत्म नहीं हुई थी, इसलिए मैंने पिस्तौल से फिर से फायरिंग शुरू कर दी और यूनिट को सूचना दी कि मुझे गोली लगी है।

ऑपरेशन खत्म होने और मेरे घाव पर पट्टी लगने के बाद, मैं कुछ दिनों बाद बेस पर लौट आया, लेकिन मेरी चोट की खबर पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थी। यह बात फैल गई थी कि मैं गोलीबारी में घायल हो गया हूँ और स्क्वाड्रन के वेलफेयर ऑफिसर ने सुची को फोन करके बताया था कि मुझे गोली कैसे लगी, हालाँकि इसके अलावा कोई और जानकारी नहीं दी गई। स्वाभाविक रूप से घबराकर उसने बेस पर फोन करके हालचाल पूछा। वैसे मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं था। जब मैं आराम कर रहा था, तभी मेरे सार्जेंट मेजर ने दरवाजा खटखटाया।

'अरे यार, तुम गोरखाओं!' वह हँसते हुए बोला। 'क्या तुम लोग अपने परिवार को यह बताने की जहमत भी नहीं उठाते कि तुम ठीक हो?'

आपका क्या मतलब है?

'आपकी पत्नी ने फोन किया था, यह जानने के लिए कि आप ठीक-ठाक हैं या नहीं।'

मुझे बहुत गुस्सा आया और मैंने गुस्से में सुची को वापस फोन किया।

मैंने कहा, 'ये क्या बकवास है? तुम क्यों फोन कर रहे हो?'

सुची ने बताया कि उसे सबसे बुरे की आशंका थी। परिवार को भी चिंता थी कि कहीं मैं मुसीबत में न पड़ जाऊं। धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि मेरी प्रतिक्रिया ज़रूरत से ज़्यादा थी – मैं उस समय जवान था, मैंने खुद को उसकी जगह रखकर नहीं देखा था। शांत भाव से मैंने सुची को आश्वस्त किया कि मैं ठीक हूँ और मैंने तय किया है कि जब तक मैं अपनी सैन्य सेवा समाप्त होने के बाद सुरक्षित घर नहीं पहुँच जाता, तब तक मैं किसी को भी इस घटना के बारे में नहीं बताऊंगा। मेरे दूर रहने के दौरान पत्नी या माता-पिता को परेशान करने का ख्याल किसी भी गोलीबारी से कहीं ज़्यादा तनावपूर्ण लग रहा था।

मैंने सुची को समझाया कि उसे सच में तभी चिंता करनी चाहिए जब रॉयल मरीन के दो वर्दीधारी अधिकारी, जिन्होंने काली टाई पहनी हो, हमारे दरवाजे पर दस्तक दें, और तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। इसके अलावा, उसे ऐसे व्यवहार करना था जैसे सब कुछ ठीक हो। कुछ लोगों को यह रवैया अजीब लग सकता है, लेकिन यह उन कई बचाव तंत्रों में से एक था जिन्हें मैं अपने

साथ रखता था ताकि इस बेहद अराजक भूमिका को संभाल सकूँ।

कई वर्षों तक लगातार गोलीबारी में बच निकलने के बाद, मैंने सेना के उच्च विशिष्ट पर्वतारोहण पाठ्यक्रमों में उपलब्ध अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया और चुनौतीपूर्ण चोटियों पर चढ़ाई की तथा खड़ी चट्टानों से रस्सियों के सहारे नीचे उतरा, जब तक कि 2015 में होने वाले आगामी G200E एवरेस्ट चढ़ाई अभियान में मेरा स्थान लगभग सुनिश्चित नहीं हो गया। इसके बाद मुझे गोरखा रेजिमेंट के कई रंगरूटों को प्रशिक्षित करने का कार्य सौंपा गया, जो उसी अभियान में शामिल होने की उम्मीद कर रहे थे, और साथ मिलकर हमने मकालू की दक्षिण-पूर्वी रिज की लगभग 6,200 मीटर की चढ़ाई की। इस क्षेत्र को इसलिए चुना गया था क्योंकि इसके कठिन भूभाग से निपटने के लिए बहुत अधिक तकनीकी चढ़ाई की आवश्यकता थी। अभियान दल के भावी सदस्यों ने प्रभावी ढंग से जुमार और बेले करना सीखा, साथ ही अपने क्रैम्पोन के उपयोग और पर्वतारोहण कौशल में आत्मविश्वास बढ़ाया। उन्होंने अत्यधिक ऊंचाई पर नुकीली चोटियों पर गंभीर जोखिम का सामना किया और काम लगातार कठिन था।

अभियान के अंत में जमकर जश्न मनाने के बाद, मैंने अमा डबलाम पर्वत पर चढ़ाई करने का फैसला किया। यह वही पर्वत था जिससे मुझे 2012 में अपने दोस्त और पर्वतारोहण गुरु दोरजे के साथ उस ट्रेक के दौरान प्यार हो गया था, जब हमने येलो टावर की लगभग खड़ी ढलान पर चढ़ाई की थी। कैंप 1 पर आराम करने और वातावरण के अनुकूल होने के बजाय, मैंने बेस कैंप से सीधे कैंप 2 तक एक ही बार में जाने का अपरंपरागत रास्ता चुना और लगभग तेईस घंटों में हिमालय के सबसे कठिन पर्वतों में से एक की चोटी पर पहुँच गया।

लेकिन कुछ ही समय बाद, मुझ पर दोहरी त्रासदी आ पड़ी। पहली त्रासदी यह थी कि 18 अप्रैल 2014 को एवरेस्ट पर दोरजे की मृत्यु हो गई, जब पश्चिमी ढलान से सेराक FN4 के ढहने से एक भीषण हिमस्खलन हुआ। बर्फ, चट्टान और हिम का एक सैलाब खुंबू हिमपात से गुज़रा, जिसमें सोलह शेरपा मारे गए। उस समय इसे शिखर पर हुई सबसे भीषण आपदाओं में से एक माना गया था। मृतकों के सम्मान में गाइडों द्वारा काम करने से इनकार करने के बाद, एवरेस्ट को शेष सीज़न के लिए बंद कर दिया गया था। सैन्य दौरे पर रहते हुए यह खबर सुनकर मुझे गहरा सदमा लगा, लेकिन युद्ध क्षेत्र में शोक मनाने का बहुत कम समय था; दुश्मन शायद ही कभी हमें चिंतन के क्षण देते थे और मुझे बिना किसी परवाह के अपना काम जारी रखना था, मानो कुछ हुआ ही न हो।

कई महीनों बाद, एक ज़बरदस्त झटके के रूप में, यह घोषणा की गई कि मई में मेरी स्क्वाड्रन को सैन्य कार्रवाई में तैनात किया जा रहा है, ठीक उसी समय जब 2015 की G200E यात्रा निर्धारित थी। टीम में मेरी जगह चली गई और मैं निराश हो गया। मैंने जिस चीज़ पर काम किया था, वह मुझे उस एक अभियान की ओर ले जा रही थी, और धौलागिरी, अमा डबलाम और डेनाली जैसी चोटियों पर चढ़ाई करने से मेरा शरीर और मन तैयार महसूस कर रहा था, लेकिन मुझे अपनी निराशा को भुला देना था। पेशेवर पर्वतारोही होना मेरा काम नहीं था। मेरी भूमिका युद्ध में काम करने की थी और शिकायत करने या रूठने की कोई गुंजाइश नहीं थी, हालाँकि बाद में शायद भाग्य ने ही अपना खेल खेला था।

जब गोरखा अभियान दल एवरेस्ट बेस कैंप में तैयारी कर रहा था, तभी रिक्टर स्केल पर 8.1 तीव्रता के भूकंप ने एक विशाल हिमस्खलन को जन्म दिया, जिसने बेस कैंप को एक बार फिर तबाह कर दिया। इस हिमस्खलन ने 2014 की भयावह मौतों की संख्या को भी पीछे छोड़ते हुए बाईस लोगों की जान ले ली, हालांकि अभियान दल का कोई भी सदस्य गंभीर रूप से घायल नहीं हुआ। दुनिया भर में सुर्खियां बनीं और अपने रेगिस्तानी ठिकाने से मुझे पता चला कि जी200ई अभियान को रद्द किया जा रहा है, जैसा कि उस वर्ष के सभी अभियानों के साथ हुआ था। जब बाद में मई 2017 के लिए एक तारीख तय की गई, तो मुझे उम्मीद थी कि मैं टीम में वापस शामिल हो पाऊंगा।

ऐसा नहीं था कि मेरी नौकरी पूरी तरह से सुरक्षित थी। दो साल में कुछ भी हो सकता था, और जैसा कि मैंने पहले भी सीखा था, सेना के प्रति मेरी प्रतिबद्धताओं ने मेरी किसी भी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा को पीछे छोड़ दिया था। मैंने अत्यधिक उत्साहित होने से खुद को रोका, हालांकि मैंने अपने पर्वतारोहण कौशल को बेहतर बनाने पर पूरा ध्यान दिया, ताकि अगर 2017 योजना के अनुसार बीता, तो मैं एवरेस्ट के लिए तैयार रहूँ। और फिर, अप्रत्याशित रूप से, 2016 के वसंत में दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत पर चढ़ने का एक अवसर मिला, जब मेरी सैन्य तैनाती की योजनाएँ अंतिम समय में बदल गईं। साल के शुरुआती हिस्से में एक अति-गुप्त युद्ध क्षेत्र के लिए प्रशिक्षण लेने के बाद, मुझे अचानक दूसरे क्षेत्र में काम करने के लिए कहा गया।

मेरे सार्जेंट मेजर ने कहा, 'हमें वहां आपके अनुभव की जरूरत है।'

मुझे निराशा का गहरा एहसास हुआ। 'धिक्कार है, मैं तो छह महीने पहले ही तो वहाँ था...'

लेकिन मेरा तबादला पहले ही तय हो चुका था और इससे बचने का कोई रास्ता नहीं था। सौभाग्य से, एक सुखद मोड़ आने वाला था।

'देखो, निम्स, हम तुम्हें मानक तीन सप्ताह की छुट्टी के बजाय चार सप्ताह की छुट्टी देंगे,' मेरे सार्जेंट मेजर ने कहा। 'यह कैसा रहेगा?'

यह अच्छी और बुरी दोनों खबरें थीं। अच्छी बात यह थी कि मैंने अपनी पत्नी सुची से वादा किया था कि अगली छुट्टी मिलते ही हम बीच पर छुट्टियां मनाने जाएंगे – मैं आराम और तरोताजगी के लिए बहुत उत्सुक था। बुरी बात यह थी कि बीच पर लेटे-लेटे चार हफ्ते सोना, पढ़ना, संगीत सुनना, समुद्र को निहारना और धूप सेंकना मेरे लिए नामुमकिन था। पांच मिनट में ही ऊब शुरू हो जाती। लेकिन तभी मुझे एक अवसर नज़र आया।

शायद मैं एवरेस्ट पर चढ़ सकता हूँ?

रसद के लिहाज़ से यह एक बहुत मुश्किल काम था और इस अभियान में बहुत जोखिम था। समय की कमी के कारण, मुझे दो महीने का अनुकूलन समय नहीं मिल पाता, जैसा कि ज़्यादातर लोग 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर चढ़ाई करते समय लेते हैं। लेकिन छोड़ो, मैंने धौलागिरी पर भी यही किया था - तो यह कैसे अलग होता? आर्थिक रूप से भी हालात मेरे खिलाफ थे। उस तरह के पहाड़ पर चढ़ाई का खर्च बहुत ज़्यादा था और अनुमानित खर्च लगभग 50,000 से 60,000 पाउंड था। (शुरू में सुची थोड़ी नाराज़ थी, हालाँकि जब मैंने उसे बताया कि G200E टीम में मेरी जगह पक्की नहीं है, तो वह मान गई।) लेकिन यह जानते हुए कि ऐसा मौका शायद

दोबारा न मिले, मैंने सोचा, तो क्या हुआ? और मैं बैंक से निजी ऋण लेने चला गया।

'श्री पुरजा, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपको पैसों की ज़रूरत किसलिए है?' क्लर्क ने पूछा।

'हाँ, मुझे कार खरीदनी है,' मैंने झूठ बोला।

कुछ ही मिनटों में मुझे 15,000 पाउंड का ट्रांसफर मिल गया। फिर मेरी सारी निजी बचत खत्म हो गई और मैंने नेपाल की राजधानी काठमांडू के लिए फ्लाइट बुक कर ली।

हालांकि, यह वित्तीय धोखाधड़ी तो आधी लड़ाई ही थी। इंग्लैंड छोड़ने के बाद, मैंने अनुमान लगाया था कि उस मौसम में एवरेस्ट पर चढ़ने वाले अधिकांश लोग पहले ही कैंप 3 की ओर बढ़ रहे थे और साउथ कोल मार्ग से शिखर पर चढ़ाई की तैयारी में खुद को अनुकूलित कर रहे थे - यह हवादार पहाड़ी मार्ग एवरेस्ट को पास के ल्होत्से शिखर से जोड़ता है। शेरपाओं की सहायता से मैं 'माउंट एवरेस्ट का प्रवेश द्वार' कहे जाने वाले लुकला हवाई अड्डे से बेस कैंप तक की यात्रा आसानी से कर सकता था और फिर ऊपरी शिविरों तक आसानी से पहुँच सकता था, लेकिन मैं शेरपाओं की सहायता नहीं लेना चाहता था।

मैं एवरेस्ट पर अकेले चढ़ना चाहता था।

यह एक पागलपन भरा विचार था और मैं यह जानता था, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे बड़े पहाड़ों पर चढ़ने का केवल कुछ वर्षों का अनुभव ही था और मैं अभी भी अपने कौशल को निखार रहा था।

अकेले पर्वतारोहण के अपने अपेक्षाकृत कम अनुभव को लेकर जो भी चिंताएँ मेरे मन में थीं, वे मेरे अनुभव के बारे में थोड़ी सी जानकारी मिलने से कम हो गईं। अगर ऊँचाई पर मुझे कोई परेशानी होती, तो मेरे चिकित्सा कौशल काम आ सकते थे, लेकिन वे अकेले ही मुझे 8,000 मीटर ऊँची चोटी के खतरों से नहीं बचा सकते थे – मेरी मृत्यु का निर्धारण इस बात से होता कि मैं अत्यधिक ऊँचाई पर कितनी जल्दी प्रतिक्रिया दे पाता हूँ। शुक्र है कि मेरे अब तक के व्यापक सैन्य पर्वतारोहण प्रशिक्षण और धौलागिरी, अमा डबलाम और मकालू के उन अभियानों ने मुझे जीवित रहने का अच्छा ज्ञान दे दिया था।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैंने युद्ध के दौरान अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना सीख लिया था, इसलिए डर मुझ पर ज़रा भी असर नहीं करता था, यहाँ तक कि जब मैं दुश्मन के हाथों मारे जाने के कगार पर था, जो मेरे काम में एक बढ़ता हुआ खतरा था। सैकड़ों मौतों का गवाह रहे पहाड़ पर चढ़ना एक जोखिम भरा काम लग रहा था, लेकिन यह एक ऐसा जोखिम था जिसे उठाने के लिए मैं योग्य था।

मुझे यह भी एहसास हुआ कि अगर मुझे किसी दिन एक कुशल पर्वतारोही बनना है, तो मुझे इस तरह की चुनौती को स्वीकार करना ही होगा, चाहे मेरा काम का बोझ कितना भी बढ़ जाए और सफलता की संभावनाएं कितनी भी कम हो जाएं। बेशक, पैंतीस किलो वजनी बर्गन (एक प्रकार का तंबू और अन्य सामान) को चढ़ाई के उपकरणों के साथ लेकर चलना आसान नहीं होगा, लेकिन यह मेरी क्षमता के भीतर था। मेरा इरादा 7,400 मीटर से ऊपर ऑक्सीजन सपोर्ट का उपयोग करने का भी था, जिसे अत्यधिक ऊंचाई पर चढ़ाई करने वाले कुछ पर्वतारोहियों द्वारा विवादास्पद माना जाता था। अतिरिक्त सामान से वजन और बढ़ जाएगा, लेकिन मुझे लगा कि

यह बहुत जरूरी होगा, क्योंकि मैं अकेले ही काम कर रहा था।

कुल मिलाकर, सबसे बड़ा जोखिम मनोवैज्ञानिक था: मैं अपनी प्रतिष्ठा को दांव पर लगा रहा था – अगर मैंने कोई गड़बड़ कर दी तो सेना में लोग क्या सोचेंगे? जब मैं काठमांडू और फिर लुकला हवाई अड्डे के लिए उड़ान भर रहा था, तो मैंने संभावित आपदा के बारे में ज्यादा न सोचने की कोशिश की।

मेरा मिशन तय था। मैं दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ाई करने जा रहा था।

*

'तुम झूठ बोल रहे हो।'

मई के अंत में शिखर पर पहुंचने का समय तेज़ी से कम होता जा रहा था, और लुकला में मेरी मुलाकात जिन लोगों से हुई थी, उनमें से ज़्यादातर को उम्मीद नहीं थी कि मैं तीन हफ़्तों में एवरेस्ट की चोटी पर पहुंच जाऊंगा। इनमें सबसे कम अमेरिकी कैमरा क्रू था जो एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाने के लिए तैयार था, जिसे उन्होंने अनौपचारिक रूप से 'एवरेस्ट एयर' नाम दिया था। उनका उद्देश्य एक बचाव दल का पीछा करना था, जो पहाड़ पर किसी भी चिकित्सा आपात स्थिति में मदद करने के लिए तैनात था। 8,000 मीटर से अधिक ऊंचे पहाड़ों की प्रकृति को देखते हुए, 'एवरेस्ट एयर' में संपादन के लिए भरपूर एक्शन होना तय था, और जब मैं अपना सामान तैयार कर रहा था, तो मुझसे दोस्ताना सवालों की बौछार होने लगी, ठीक उसी तरह की बातचीत जो जोखिम भरे अभियान की दहलीज पर खड़े उत्साही और घबराए हुए पर्वतारोहियों के बीच अक्सर होती है।

'निम्स, तुम कहाँ से हो?'

इंग्लैंड।

'ओह, ठीक है। लंबा रास्ता है यार। तुम क्या करते हो?'

मैं एक चिकित्सक हूँ। मैं लंदन में काम करता हूँ।

धौलागिरी की यात्रा के बाद, मैंने तय किया कि यह एक बेहतरीन बहाना होगा, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि कहानी में थोड़ी सच्चाई थी। अगर कोई मेरे मनगढ़ंत मेडिकल करियर के बारे में पूछताछ करता, तो मैं कम से कम उसे चोटों के इलाज के अपने अनुभव के बारे में बताकर गुमराह कर सकता था। ब्रिटिश स्पेशल फोर्सेज के साथ काम करने की बात तो किसी को बताना नामुमकिन था।

टीम का मुख्य व्यक्ति मेरे सामान का जायज़ा ले रहा था। 'यह तो बहुत सारा सामान है। क्या आप ट्रेकिंग के लिए आए हैं? क्योंकि आप एवरेस्ट पर समय पर चढ़ने के लिए बहुत देर कर चुके हैं।'

नहीं, मैं तो चढ़ाई के लिए यहाँ आया हूँ। और मैं समय पर पहुँच जाऊँगा – मुझे पहुँचना ही होगा।

कुछ देर सन्नाटा छा गया। 'क्या? फिर तुम्हारी बाकी टीम कहाँ है?'

मैं इसे अकेले कर रहा हूँ।

अविश्वास भरी हंसी सुनाई दी; किसी और ने हंसते हुए कहा, 'क्या तुम मजाक कर रहे हो?'

मैंने सिर हिलाया और बात को अनसुना कर दिया। निराशावादी रवैया उन सभी बातों के खिलाफ था जो मुझे सेना में सिखाई गई थीं, जहाँ शिकायत करना या हार मान लेना कारगर रणनीति नहीं मानी जाती थी। अगर कभी कोई समस्या या चुनौती मेरे सामने आती, तो मुझे उसका समाधान ढूंढना होता था, क्योंकि मुझे परिस्थितियों के अनुसार ढलना और फिर जीवित रहना सिखाया गया था। मैंने अपना बचा हुआ सामान उठाया और उन ताने-बाने को भूलने की पूरी कोशिश की, क्योंकि मैं जानता था कि निराशावादी सोच विनाशकारी और संक्रामक दोनों होती है।

नहीं। कोई मज़ाक नहीं, भाई। मैं सच में ये कर रहा हूँ।

इसके अलावा, मेरे पास फालतू की बातों के लिए समय नहीं था। इतने कम समय में शिखर तक पहुँचने की मेरी योजना यह थी कि मैं सब कुछ तय समय से ज़्यादा तेज़ी से करूँ, बिना ज़्यादा ऊर्जा बर्बाद किए। मैंने बेस कैंप तक तेज़ी से ट्रेकिंग की और सिर्फ़ तीन दिनों में एवरेस्ट की तलहटी तक पहुँच गया। खुंबू आइसफॉल की खतरनाक घाटी से होते हुए कैंप 1 तक पहुँचने के लिए कुछ अनुकूलन चढ़ाई करने के बजाय, मैं सीधे 6,400 मीटर पर स्थित कैंप 2 की ओर बढ़ गया। आमतौर पर इस यात्रा में ज़्यादातर लोगों को ऊँचाई वाले वातावरण में ढलने में एक महीना या उससे भी ज़्यादा समय लगता है। मैं समय और आराम की सुविधा को त्यागकर, खुद को वातावरण के अनुकूल ढालने और जीवित रहने की कोशिश कर रहा था, और जल्द ही अपनी अधीरता की भारी कीमत चुकानी पड़ी।

कैंप 1 को पार करने के बाद, दोनों कैंपों के बीच में फंसकर, मुझे आने वाली शारीरिक कमजोरी के पहले संकेत दिखाई देने लगे। मैं बुरी तरह थक चुका था। मौसम के अनुकूल न हो पाने का असर मुझ पर साफ दिख रहा था, मेरा भारी बैग अब अपना बोझ उठा रहा था, और बर्फीली चढ़ाई पर क्रैम्पोन पहने हर कदम एक बहुत बड़ी मेहनत जैसा लग रहा था। मैं बुरी तरह डिहाइड्रेटेड भी हो गया था। सूरज बहुत तेज था; कई बार तो ऐसा लग रहा था जैसे मैं उसकी गर्मी में पिघल रहा हूँ। पसीने से मेरी आँखों में जलन हो रही थी और मुझे ठीक से दिखाई भी नहीं दे रहा था, लेकिन हर तरफ खतरा मंडरा रहा था।

मैं वेस्टर्न कुम को पार कर रहा था और रास्ता दरारों से भरा हुआ था। हालाँकि मैं सुरक्षा रस्सी से बंधा हुआ था, फिर भी मुझे पता था कि अगर ज़मीन खिसक गई या बर्फीली चोटियों पर बनी सीढ़ियों में से किसी एक से मैं फिसल गया, तो मुझे ढूंढने में कई दिन लग सकते हैं। शारीरिक और भावनात्मक रूप से मैं लगभग टूट चुका था और मेरी आँखों में आँसू भर आए थे; सालों में पहली बार, मेरे मन में आत्मसंदेह घर कर रहा था।

धत् तेरे की, मैं कैंप 2 तक पहुँचने के लिए उतना मजबूत नहीं हूँ। लेकिन मैं कैंप 1 में भी वापस नहीं जाना चाहता।

मुझे पता था कि मुझे अपने अंदर चल रही नकारात्मक सोच को जल्द से जल्द खत्म करना होगा। अतीत में जब भी मैं जीवन-मरण की स्थिति में फंसा था, मैंने सुची का सहारा लेकर अपना ध्यान और दृढ़ संकल्प वापस पाया था। जब भी दुश्मन के लड़ाकू विमानों ने मेरी टुकड़ी को घेर

लिया होता, तो मैं गोलीबारी के दौरान उसके बारे में सोचता था - ये भावनाएं मेरे लिए ऊर्जा का काम करती थीं और मैं खुद को फिर से तैयार करके अपने काम पर ध्यान केंद्रित कर पाता था। अब मैं उसके घर लौटने का इंतजार करने के विचार को प्रेरणा मानकर कैंप 2 में बने आश्रय की ओर आगे बढ़ूंगा। मैंने अपनी जेबों में हाथ डाला और अपना फोन ढूंढकर एक छोटा सा वीडियो संदेश रिकॉर्ड किया।

'देखो जान, मैं बहुत संघर्ष कर रहा हूँ, लेकिन हमेशा की तरह मैं इसे पूरा करके ही रहूँगा...'

मैंने इसे भेजा नहीं; मैं तो बस उस पल को कैद करना चाहता था। फिर मैंने अपनी गलतियों को सुधारने पर काम किया।

चलो, अब इसे करते हैं।

मैंने खुद को फिर से तरोताज़ा करने की कोशिश की और कुछ गहरी साँसें लेने के बाद मेरा दिल फिर से खुशी से भर गया। थोड़ी ही देर में, मेरी हौसलाअफजाई ने मुझे निराशावादी मानसिकता से बाहर निकाल दिया और मुझे अतिरिक्त शक्ति मिल गई। वेस्टर्न कुम के साथ चलना आमतौर पर काफी आसान था, रास्ता काफी समतल था और हालांकि एक-दो जगहें ऐसी थीं जहाँ थोड़ी तकनीकी पर्वतारोहण की आवश्यकता थी, मैं चढ़ाई का अधिकांश हिस्सा बिना ज्यादा तनाव के फिक्स्ड लाइनों के सहारे खुद को खींचते हुए बिता सका, दरारों से बचने के लिए मैंने कुछ लंबे मोड़ लिए। मैंने अपना सामान समेटा और कैंप 2 की ओर बढ़ गया, अपने शरीर को सुरक्षा की ओर धकेलते हुए।

बूम! बूम! बूम! मेरी गति वापस आ गई थी और हर कदम एक उपलब्धि जैसा लग रहा था। बूम! बूम! बूम! हर कदम वेस्टर्न कुम के छोर की ओर एक सकारात्मक प्रेरणा दे रहा था।

जैसा कि मैंने धौलागिरी पर अनुभव किया था, ऊँचाई वाले क्षेत्रों में थकान महसूस होना काफी आसान था, लेकिन इस तरह की गलती करने पर होने वाले गंभीर स्वास्थ्य परिणामों का मैंने अभी तक प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया था। वह क्षण जल्द ही आने वाला था। कैंप 2 में अपना टेंट लगाते-लगाते मैं फिर से अच्छा महसूस कर रहा था, इसलिए मैंने दोपहर का भोजन किया और कुछ शेरपा मित्रों के साथ समय बिताया, फिर डेढ़ सौ मीटर की चढ़ाई करके वापस आ गया।

ऊंचाई पर थोड़ा अनुकूलन करके, मेरी उम्मीद थी कि मुझे उन तेज़ सिरदर्दों से छुटकारा मिल जाएगा जो कभी-कभी अधिक ऊंचाई पर सोते समय मुझे परेशान करते थे। लेकिन मैंने ज़रूरत से ज़्यादा कोशिश कर ली और जब तक मैं आराम करने के लिए तंबू में लेटा, मेरे फेफड़ों से घरघराहट की आवाज़ आ रही थी, जो इस बात का पक्का संकेत था कि मुझे उच्च ऊंचाई फुफ्फुसीय एडिमा (HAPE) हो रहा था, जिसमें फेफड़ों में तरल पदार्थ जमा हो जाता है और एक गंभीर स्थिति बन जाती है जिसमें सीने में घरघराहट और जकड़न होती है, त्वचा नीली पड़ जाती है और दिल ढोल की तरह धड़कता है। इलाज के बिना मेरी मौत की पूरी संभावना थी।

स्लीपिंग बैग में आराम करते हुए, अपने थके हुए फेफड़ों की घरघराहट सुनते हुए, निराशा का दर्द महसूस होना लाज़मी था। मैं मूर्ख था। डेढ़ सौ मीटर की उस अतिरिक्त चढ़ाई ने मुझे तोड़ दिया था। अब हर साँस लेना एक भारी संघर्ष था।

निम्स, तुम्हें पता होना चाहिए था... तुम एक पर्वतारोही और एक डॉक्टर हो! तुम्हें ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के बारे में दुनिया भर का ज्ञान है। फिर भी तुमने ज़्यादा सावधानी क्यों नहीं बरती?

ऊँची चोटियों की बात करें तो, धौलागिरी ने मुझे पहले ही सिखा दिया था कि सफलता और असफलता के बीच एक पतली सी रेखा होती है, ठीक वैसे ही जैसे युद्ध में होती है, लेकिन मैंने भोलेपन से यह मान लिया था कि मेरा सैन्य प्रशिक्षण, साथ ही पहाड़ों में सीखे गए सबक, एवरेस्ट पर किसी भी कठिन निर्णय में मेरा मार्गदर्शन करेंगे। मैं अतिरिक्त दूरी तय करके अपनी सीमाओं को परखना भी चाहता था।

मैं गलत था। युद्ध के दौरान अच्छे और बुरे फैसलों के बीच का अंतर पर्वतारोहण में और भी कम हो जाता है, क्योंकि 8,000 मीटर की चोटियों पर जीवन की चरम स्थितियाँ बेहद नाटकीय होती हैं। एवरेस्ट पर केवल चौबीस घंटे बिताने के बाद, मुझे यह समझ आ रहा था कि नियमों का उल्लंघन करना निश्चित रूप से आपदा का कारण बनता है। शर्मिंदा होकर, मैं चिकित्सा जांच और आराम के लिए बेस कैंप लौट आया ताकि शिखर पर चढ़ने की अपनी योजना पर पुनर्विचार कर सकूँ, लेकिन मैं किसी भी कीमत पर एवरेस्ट को मुझे हराने नहीं देने वाला था।

दुर्भाग्य से, जिस पहले डॉक्टर से मैंने जांच करवाई, उनके विचार कुछ और ही थे। उन्होंने स्टेथोस्कोप से मेरी छाती की घरघराहट सुनते हुए कहा, 'आप वापस ऊपर नहीं जा सकते।' 'आवाज से तो ऐसा लगता है कि यह फेफड़ों में बहुत ज्यादा सूजन है।'

मानव एंटीबायोटिक के रूप में अपने बचपन की सफलता को याद करते हुए, मैंने दूसरी राय लेने का फैसला किया।

उसे क्या पता? मैं कोई दूसरा डॉक्टर ढूंढ लूंगा जिसे समझ हो।

लेकिन अगले पर्वत चिकित्सक का दृष्टिकोण भी उतना ही निराशावादी था। उन्होंने कहा, 'मैं आपको सलाह दूंगा कि आप और ऊपर न चढ़ें। पहला आकलन सही था। आपकी हालत को देखते हुए, आपको ऊपर गंभीर परेशानी हो सकती है।'

मैंने फिर से निदान को नज़रअंदाज़ कर दिया। ये लोग एहतियात बरत रहे हैं। आम अस्पताल में तो यह ठीक है, लेकिन मैं एवरेस्ट बेस कैंप में हूँ। यहाँ हर कोई किसी न किसी तरह से जोखिम उठा रहा है।

मैंने अपना मन बना लिया था।

वे दोनों बेवकूफ गलत हैं।

लेकिन मैं पूरी तरह आश्वस्त होना चाहता था। मेरा एक डॉक्टर मित्र भी बेस कैंप में कहीं ऑपरेशन कर रहा था। मैंने उससे संपर्क किया, इस उम्मीद में कि वह मुझे कोई सामान्य निदान देगा और मुझे चौबीस घंटे के भीतर पर्वतारोहण पर लौटने की अनुमति दे देगा, लेकिन इसके बजाय मुझे दिन की तीसरी और अंतिम चेतावनी दी गई।

'निम्स, यार, तुम्हें पहाड़ से नीचे उतरना होगा। ये पल्मोनरी एडिमा है। तुम लापरवाही नहीं कर सकते।'

धत् तेरे की! अब मुझे अपनी सेहत में सुधार को थोड़ा और गंभीरता से लेना पड़ेगा। मैं एक्स-

रे करवाने और कुछ दिनों के आराम के लिए हेलीकॉप्टर से लुकला वापस गया, और तब मुझे पता चला कि मेरी बीमारी के आगे चलकर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। मैंने ऑनलाइन जितने भी मेडिकल जर्नल पढ़े, उन सभी के अनुसार, HAPE एक ऐसी बीमारी है जो दोबारा हो सकती है और सबसे अच्छा यही होगा कि मैं घर जाकर आराम करूं। अगर इलाज न करवाया जाए तो मेरे फेफड़े फिर से खराब हो जाएंगे, इसलिए अगर मुझे एवरेस्ट पर चढ़ना है तो मुझे पहले से कहीं ज्यादा सावधानी बरतनी होगी, जिससे मेरा आत्मविश्वास कम हो गया, क्योंकि मेरी सेना की छुट्टियां तेजी से खत्म हो रही थीं और पर्वतारोहण का मौसम भी समाप्त होने वाला था।

फिर भी, मैं अपनी स्वास्थ्य समस्या को अपनी योजनाओं को पटरी से उतारने नहीं देने वाला था। ठीक होने के दौरान मैंने अपने मन में सकारात्मक विचार भर लिए। मैंने खुद से कहा कि मैं शिखर तक पहुँच जाऊँगा, कोई समस्या नहीं। केवल सफलता पर ध्यान केंद्रित करके, मैंने खुद को विश्वास दिलाया।

एक और कड़वी सच्चाई का सामना करना पड़ा। एवरेस्ट पर अकेले चढ़ाई करने का जो भी मौका मेरे पास था, वह अब खत्म हो चुका था। अब मुझे एक शेरपा की मदद चाहिए थी, लेकिन शिखर तक पहुंचने का सफर आसान नहीं था। सहायता के लिए किसी को चुनते समय, मैं सबसे कम अनुभवी व्यक्ति को चुनना चाहता था। पहला कारण यह था कि मुझे अभी भी एक गंभीर चुनौती की उम्मीद थी। दूसरा, नेपाली शेरपा एक कम आंका जाने वाला और कम वेतन पाने वाला कर्मचारी था। एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पर्वतारोही हल्का सामान लेकर चलते हैं। वहीं उनके शेरपा और कुली आमतौर पर तीस-चालीस किलो रस्सी, सामान और राशन ढोते हैं, लेकिन उन्हें उनके प्रयासों के लिए बहुत कम वेतन मिलता है और न के बराबर श्रेय। हालांकि, एक बार जब कोई अनुभवहीन शेरपा एवरेस्ट पर चढ़ जाता है, तो उसकी सेवा फीस आसमान छू जाती है, और मैं किसी को वही पैसा कमाने का मौका देना चाहता था।

एक और पाबंदी मैंने खुद पर लगाई थी। हालाँकि मेरे पास एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए ज़रूरी ज्ञान और विशेषज्ञता थी, फिर भी आत्मनिर्भर होना ज़रूरी था: अगर मुझे फिर से HAPE (हाइपरट्रॉफिक एक्वायर्ड एक्सपीरियंस) की समस्या होती, तो मुझे बचाव दल को बुलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती, क्योंकि एक शेरपा मुझे पहाड़ से नीचे उतारने में मदद कर सकता था। इसलिए जब बाद में एवरेस्ट बेस कैंप में मेरी मुलाकात मकालू के एक युवा कुली पासांग शेरपा से हुई, जिसे एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचने का ज़रा भी अनुभव नहीं था, तो मुझे पता चल गया कि वह मेरे इस साहसिक अभियान के लिए एकदम सही व्यक्ति है। पासांग इतना कम तैयार था कि उसके पास सिर्फ़ एक पुराना समिट सूट और फटे-पुराने जूते थे।

'यह बहुत बढ़िया है, निम्स,' उसने कहा और मेरे द्वारा दिए गए गर्म कपड़े, दस्ताने और अन्य सामान पहन लिए। 'अगर मैं तुम्हें शिखर तक पहुंचा दूं, तो मैं अपनी सेवाओं के लिए तीन गुना अधिक शुल्क ले सकूंगा।'

यह जानते हुए कि यह यात्रा हम दोनों के जीवन को हमेशा के लिए बदल देगी, हमने अपनी चढ़ाई शुरू की, हम दोनों ने सबसे अच्छे की उम्मीद की, और सबसे बुरे की किसी भी बात को चुप करा दिया।

*

हम खुंबू आइसफॉल से होते हुए पश्चिमी कुम को पार करते हुए लगातार आगे बढ़ते रहे। हवा तेज़ हो गई थी; हालात बेहद कठिन थे, लेकिन हमारी दो सदस्यीय टीम कैंप 2 से 3 तक पहुँचने में कामयाब रही, और मौसम लगातार बिगड़ता जा रहा था, इसलिए हमने टेंट लगाकर सो लिया। मेरे फेफड़े ठीक थे, मैं शारीरिक रूप से भी ठीक था और HAPE (हाइपरट्रॉफिक एक्वायर्ड पेनिट्रेशन) का मेरा अनुभव अब एक दूर की याद जैसा लग रहा था, हालाँकि मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था। जब आखिरकार उस रात हमने शिखर की ओर बढ़ना शुरू किया, तो मैंने आगे के अभियान पर नज़र रखी – अंधेरे में अंधाधुंध आगे बढ़ना थोड़ा जोखिम भरा लग रहा था, खासकर एवरेस्ट पर मेरे पहले शिखर प्रयास के दौरान। मैं पहले ही मौत के मुंह से बच चुका था, मैं दोबारा ऐसा अनुभव नहीं करना चाहता था।

चोटी नज़र आने पर, मैंने पहाड़ से बंधी हुई रस्सी के सहारे खुद को आगे बढ़ाया और सुबह 4 बजे तक मैं प्रसिद्ध हिलारी स्टेप को पार कर चुका था। यह तकनीकी रूप से बेहद चुनौतीपूर्ण 12 मीटर ऊँचा चट्टानी हिस्सा है, जिसे दक्षिण-पूर्वी मार्ग से दुनिया के सबसे ऊँचे शिखर तक पहुँचने वाले हर पर्वतारोही को पार करना पड़ता है। (2015 के भूकंप में, हिलारी स्टेप का सबसे बड़ा हिस्सा गिरने से इसकी दिशा बदल गई थी, लेकिन लोग इसे आज भी एक महत्वपूर्ण स्थल मानते हैं।) मेरे अंदर उत्साह की लहर दौड़ गई। मैं इसे कर दिखाऊंगा! हमारा समय बिल्कुल सही था; हिमालय के ऊपर सूरज निकलने ही वाला था, लेकिन शिखर पर पहुँचने के बाद, समुद्र तल से 8,848 मीटर ऊपर, जब मैंने कुछ पल सुकून से बिताए, तो पासांग थोड़ा घबराया हुआ लग रहा था। हमारे चारों ओर तेज़ हवाएँ और भी तेज़ हो गई थीं और हम दोनों के पैर थोड़े लड़खड़ाने लगे थे।

‘निम्स, हमें वापस जाना होगा,’ उसने कहा।

लेकिन हम तो अभी-अभी यहाँ पहुँचे हैं!

'हां, लेकिन यह एक खतरनाक समय है। लोग नीचे उतरते समय मर जाते हैं क्योंकि वे बहुत देर तक इंतजार करते हैं और खराब मौसम की चपेट में आ जाते हैं।'

पासांग को एवरेस्ट पर चढ़ने का अनुभव भले ही कम था, लेकिन मुझे पता था कि वह सही कह रहा था। ऐसे कई किस्से सुनने को मिले थे जिनमें लोग अपना मिशन पूरा करने के बाद भी सेल्फी लेने या झंडे फहराने में कीमती समय बर्बाद कर देते थे, जबकि उनका काम सिर्फ आधा ही हुआ होता था। किसी भी चढ़ाई का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है जल्दी और सुरक्षित रूप से नीचे उतरना। यह भी ज्ञात था कि शिखर पर हवा की गति कभी-कभी एक सौ साठ किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच जाती है।

मैंने अपने ऑक्सीजन स्तर की जाँच की। मेरी हालत ठीक थी और मेरी घड़ी के अनुसार सुरक्षित उतरने के लिए पर्याप्त समय था। मैंने मन ही मन सोचा कि पासांग शायद एवरेस्ट के इलाके से अपरिचित होने के कारण अत्यधिक घबरा गया होगा। बेस कैंप लौटना उसकी प्राथमिकता बन गई होगी।

‘सुनो भाई, मैंने यहाँ आने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया, लेकिन मैं मजबूत महसूस

कर रहा हूँ,' मैंने कहा। 'इसलिए मैं सूरज उगने तक हार नहीं मानूंगा।'

नहीं, निम्स। नहीं, नहीं, नहीं!

मैंने पासांग को दृढ़ता से कहा, 'मैं नीचे आ सकता हूँ, कोई समस्या नहीं है,' और उसे जाने की अनुमति दे दी।

उसने कंधे उचकाए और उदास होकर मुँह फेर लिया, लेकिन मैं अकेले इंतज़ार करने में खुश थी। जैसे-जैसे मैं उसे पहाड़ से नीचे उतरते देखती गई, सूरज हिमालय के ऊपर चढ़ता गया, बर्फ से ढकी चोटियों पर नारंगी और गुलाबी रंग की छटा बिखेरता हुआ, मानो नीचे के धुंधले बादलों को जला रहा हो। मेरे पीछे हिमालयी प्रार्थना ध्वज लहरा रहे थे। उस पल, मैं धरती पर सबसे ऊँचाई पर थी; यह मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षण जैसा लगा, और मैंने अपनी आँखों पर ठंडी हवा महसूस करने के लिए चश्मा उतार दिया। नज़ारा उतना ही अद्भुत था जितना मैंने कल्पना की थी और सुबह की रोशनी का इंतज़ार करना सही फैसला था, लेकिन मैं वहाँ ज़्यादा देर नहीं रुकने वाली थी।

इतनी ऊंचाई पर, परिस्थितिजन्य जागरूकता, जो कि विशिष्ट सैन्य जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, मेरे लिए शिखर पर चढ़ने वाले सूट या चढ़ाई के जूतों जितनी ही मूल्यवान थी। मैंने अपने चारों ओर के शानदार नज़ारों पर आखिरी नज़र डाली और बेस कैंप में जश्न मनाने के लिए बीयर पीने की कल्पना करते हुए नीचे उतरना शुरू कर दिया। कुछ दिन पहले ही, HAPE ने मेरी हालत खराब कर दी थी, फिर भी मैं दुनिया के सबसे ऊंचे पहाड़ पर चढ़ने में कामयाब रहा था। मेरा आत्मविश्वास चरम पर था।

जब मैंने नीचे के इलाके में घायल पर्वतारोही को देखा, जिसे एक असफल अभियान में उसके साथियों ने मरने के लिए छोड़ दिया था, तो मुझे एहसास हुआ कि मुझे अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल करना होगा।

*

पर्वतारोही बेहोश थी, या मर चुकी थी, मुझे पहले तो यकीन नहीं था। पास झुककर मैंने तुरंत उसके जीवन के संकेतों की जाँच की। वह एक महिला थी और ऐसा लग रहा था जैसे वह वहीं जम गई हो, हिलने-डुलने में असमर्थ। उसके चश्मे गायब थे और जब मैंने बर्फ में चारों ओर देखा तो उनका कहीं कोई निशान नहीं मिला। शायद ऊंचाई पर होने वाली बीमारी से वह इतनी घबरा गई थी कि घबराहट में उसने चश्मे फेंक दिए हों या हड़बड़ी में कहीं गिर गए हों। शारीरिक रूप से भी वह महिला बुरी तरह घायल थी। अर्धचेतन अवस्था में और मुश्किल से बोल पा रही थी, उसकी नब्ज़ का पता लगाना भी मुश्किल था। मुझे लगा कि अगर कोई उसे जल्दी से उठाकर नीचे नहीं ले गया तो वह बच नहीं पाएगी।

सौभाग्य से, मैं अब भी काफी तंदुरुस्त महसूस कर रहा था – मुझमें इतनी ताकत थी कि मैं उसे कैंप 4 तक खींचकर ले जा सकूँ, जहाँ उसे उम्मीद थी कि उसे वह मदद मिल जाएगी जिसकी उसे सख्त जरूरत थी, लेकिन समय हमारे खिलाफ था। (मैं HAPE के अपने अनुभव के बारे में भी बहुत सचेत था, और इस बात से भी कि मैंने एवरेस्ट पर चढ़ने वाले अधिकांश

पर्वतारोहियों की तरह अनुकूलन के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया था।) अगर सूरज पूरी तरह उगने से पहले मैं उसके लिए चश्मा नहीं ढूंढ पाता, तो महिला को स्नो ब्लाइंडनेस हो सकती थी, जो ऊँचाई पर तेज यूवी किरणों के कारण रेटिना में होने वाली एक दर्दनाक जलन है और आँखों में रेत रगड़ने के समान होती है। मैंने उसके ऑक्सीजन टैंक में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ा दी और उसे जगाने की कोशिश की।

'अरे, तुम ठीक हो जाओगी,' मैंने उसे धीरे से हिलाते हुए चिल्लाकर कहा। 'तुम्हारा नाम क्या है?'

मुझे कुछ मंद-मंद आवाज़ सुनाई दी। वह बात कर रही थी। मैं उसके और करीब झुक गया।

सीमा...

सीमा! यह एक अच्छा संकेत था। अगर मैं उसे बातचीत में उलझाए रख पाती, तो उसकी जान बचाने की थोड़ी बहुत संभावना थी।

'आप कहाँ से हैं?'

'भारत...', उसने फुसफुसाते हुए कहा।

'ठीक है सीमा, मैं तुम्हें घर छोड़ देता हूँ।'

उसने सिर हिलाया। मैंने उसे फिर से कुछ बुदबुदाते हुए सुना, लेकिन मैं यह नहीं समझ पाया कि वह बेहोशी के लक्षण दिखा रही थी या मुझे कुछ बताने की कोशिश कर रही थी। मैंने ऑपरेशनल मोड में आकर कैंप 4 को रेडियो से संदेश भेजा, जहाँ मुझे पता था कि एवरेस्ट एयर क्रू के साथ काम कर रही बचाव टीम आराम कर रही थी, जो कुछ घंटे पहले ही एक ऊँचाई वाले मिशन पर गई थी।

मैंने कहा, 'दोस्तों, मैं निम्स हूँ। यहाँ सीमा नाम की एक महिला फँसी हुई है। क्या आप उसकी मदद कर सकते हैं?'

तुरंत ही एक आवाज़ आई। 'देखो, निम्स, तुम हमें जानती हो, कल रात हमने इस पर्वतारोही को दक्षिण शिखर से बचाया था, और अब हम बुरी तरह फंस गए हैं। क्या तुम उसे खुद कैंप 4 तक नीचे ला सकती हो? हम यहाँ से उसकी मदद कर सकते हैं। अगर हम दोबारा ऊपर गए, तो हममें से एक-दो लोग मर सकते हैं।'

'जी हां, कोई दिक्कत नहीं,' मैंने कहा।

उन परिस्थितियों में, उन लोगों ने सही फैसला लिया था।

एक विवादास्पद सच्चाई यह है: 8,000 मीटर की चोटी पर, 'हर कोई अपने लिए' वाली मानसिकता कभी-कभी दुखद रूप से सच साबित होती है। लोग चढ़ाई करते हैं, लोग ठीक से काम करने में विफल होते हैं, और लोग मर जाते हैं; गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों के जीवन में अक्सर एक ऐसा क्षण आता है जब उनके आसपास मौजूद सभी लोगों के लिए उनकी मृत्यु अपरिहार्य हो जाती है। वे थकावट के कारण दम तोड़ सकते हैं, या यह भी हो सकता है कि HACEFN6 संक्रमण ने उन्हें जकड़ लिया हो और वे ठीक से सोचने-समझने में असमर्थ हों। घबराहट और भ्रम की स्थिति में, वे कभी-कभी अत्यधिक गर्मी के कारण अपने शिखर पर चढ़ने वाले सूट की ज़िप खोल देते हैं। जब भीषण ठंड उनके शरीर को जकड़ लेती है, तो एक दर्दनाक

अंत अपरिहार्य हो जाता है।

मैंने ऐसे लोगों के बारे में भी सुना है जो घर पहुँचने की उम्मीद में अपने समूह से अलग हो जाते हैं। फिर वे पहाड़ की चोटी से बुरी तरह गिर पड़ते हैं। कई बार, ऊँचाई वाले पर्वतारोहण अभियान किसी युद्ध क्षेत्र जैसे लगते हैं। बहुत से पर्वतारोही अपने मरते हुए साथी के साथ रहना चाहते हैं। थके होने या ऑक्सीजन की कमी होने के बावजूद भी पास रहना, दिलासा देना और हिम्मत देना एक स्वाभाविक मानवीय प्रतिक्रिया है, लेकिन वास्तव में यह सबसे बुरा विकल्प है। पहाड़ पर बर्बाद हुआ हर मिनट थके हुए समूह के जीवित रहने की संभावना को कम करता जाता है, और देखते ही देखते एक मौत दो, तीन या उससे भी अधिक हो जाती है। क्योंकि दो की तुलना में एक मौत बेहतर है, इसलिए समूह के लिए सबसे अच्छा उपाय है वहाँ से निकल जाना। यह सुनने में भयानक लग सकता है, लेकिन अगर स्वस्थ व्यक्ति स्वयं घायल को शारीरिक रूप से बचाने में सक्षम नहीं हैं, तो यह समझदारी होगी कि वे पहाड़ से नीचे उतरें और ऐसा करने से पहले रेडियो के माध्यम से मदद के लिए संदेश भेजें, इस उम्मीद में कि (क) कोई मजबूत पर्वतारोही उनके पीछे कहीं से नीचे उतर रहा हो, जो मदद करने के लिए बेहतर स्थिति में हो, या (ख) गाइडों का एक बचाव दल निचले शिविर से ऊपर चढ़कर घायल की सहायता कर सके।

मुझे लगा कि एवरेस्ट पर भी यही हुआ होगा।

कैंप 4 तक पहुंचने के लिए लगभग साढ़े चार सौ मीटर की ऊंचाई से नीचे उतरना पड़ता था और वहां से सीमा की स्थिति का बेहतर आकलन किया जा सकता था क्योंकि हवा कम से कम थोड़ी घनी होती। एवरेस्ट एयर टीम के पास ऑक्सीजन भी होती। अगर वह उस समय चलने में सक्षम होती, या लड़खड़ाते हुए भी, तो पूरी संभावना थी कि मैं उसे बेस कैंप तक ले जा सकूंगा। हालांकि, मुझे जल्दी चलना शुरू करना होगा। सीमा को बर्फ के कारण होने वाली दृष्टिहीनता से बचाना महत्वपूर्ण था और इसके लिए हमें सूरज ज्यादा ऊपर चढ़ने से पहले कैंप 4 तक पहुंचना था।

दूसरा विकल्प यह था कि मैं उसे कैंप 4 के एक तंबू में बचाव दल के हवाले कर दूं, जबकि मैं ऑक्सीजन खत्म होने से पहले बेस कैंप तक उतर जाऊं। लेकिन उसे वहां तक ले जाना एक चुनौती भरा काम था, और जो मैंने योजना बनाई थी वह किसी घायल पर्वतारोही या मेरे लिए सबसे आरामदायक बचाव का तरीका नहीं था, लेकिन यह निश्चित रूप से सबसे तेज़ और सबसे प्रभावी तरीका होता।

पहाड़ पर लगी एक स्थिर रस्सी से लटकती पुरानी रस्सी को खींचकर मैंने सीमा की कमर में कसकर बांध दिया। फिर मैंने जोर लगाकर उसे धीरे-धीरे कैंप 4 की ओर नीचे उतारा। हर बार खींचने पर सीमा दर्द से कराह उठी।

मैंने कंधे के ऊपर से चिल्लाकर कहा, 'मुझे पता है, मुझे पता है। अभी बहुत बुरा लग रहा है। लेकिन मेरी बात मानिए: आपको सुरक्षित वापस लाने का यही सबसे अच्छा तरीका है, और अगर हमने अभी कार्रवाई नहीं की, तो यह संभव नहीं होगा।'

इस प्रयास में लगभग एक घंटा लग गया और दो सौ मीटर तक घसीटने के बाद सीमा खड़ी होने में सक्षम लग रही थी। मैंने उसे ऊपर उठाया और कुछ कदम चलने के लिए प्रोत्साहित

किया, फिर कुछ और कदम, धीरे-धीरे हम आगे बढ़ने लगे। लेकिन यह प्रयास दर्दनाक था।

आखिरकार, कैंप 4 तक पहुंचने में लगभग पच्चीस मीटर बाकी रह गए थे, तभी मुझे एहसास हुआ कि सीमा में अब और आगे बढ़ने की ताकत नहीं बची है। वह बहुत कमजोर हो गई थी। मेरी हालत भी बहुत खराब थी, मैं मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था और गिरने ही वाला था, जो कि कोई आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि मुझे यह दूरी तय करने में केवल 90 मिनट लगे थे। रात भर की चढ़ाई का असर मुझ पर पड़ चुका था और एवरेस्ट पर चढ़ने का जोश खत्म हो गया था। मैं घुटनों के बल गिर पड़ा और मदद के लिए रेडियो पर संदेश भेजा। पास के एक तंबू से शेरपाओं की एक टीम दौड़ी और हम दोनों को खींचकर सुरक्षित स्थान पर ले आई, और बर्फीली हवाओं से बचने के बाद, मैंने बेस कैंप को फोन करने की हिम्मत जुटाई।

'दोस्तों, मैं निम्स हूं। मैं कैंप 4 में सीमा के साथ हूं। उसकी हालत खराब है, लेकिन बचाव दल अब उसकी देखभाल कर रहा है...'

फोन के दूसरी तरफ से एक कर्कश आवाज आई। सीमा की अभियान टीम की एक सदस्य उत्साह से चिल्ला रही थी। पृष्ठभूमि में, मुझे रेडियो के आसपास जमा हुए लोगों की अन्य आवाजें सुनाई दे रही थीं।

'निम्स, यह तो कमाल है! धन्यवाद।'

कुछ देर का सन्नाटा छा गया। 'क्या तुम ठीक हो?'

मैं एक नाजुक मोड़ पर पहुँच गया था। मेरी ऑक्सीजन लगभग खत्म होने वाली थी और अगर मैं ज़्यादा देर तक वहीं रुका रहता तो मेरी मौत की पूरी संभावना थी। यह जानते हुए कि सीमा के पास पर्याप्त ऑक्सीजन है और बचाव दल उसके साथ हैं, मुझे एहसास हुआ कि मेरा काम पूरा हो चुका है।

'दोस्तों, अगर मैं यहाँ और देर तक रहा, तो शायद आपको मुझे भी बचाना पड़ेगा। मैं अब डूब रहा हूँ।'

घंटों बाद, मैं लड़खड़ाते हुए बेस कैंप पहुँचा और गिर पड़ा, तुरंत अपने टेंट में सो गया। जब मैं अगले दिन उठा, तो अच्छी खबर मिली: सीमा को सफलतापूर्वक निकाल लिया गया था और वह जीवित थी, और जैसे ही यह बात टेंटों में फैली, लोग उस अनजान पर्वतारोही के बारे में और जानना चाहते थे जिसने उसे बचाया था। शुभचिंतक, आभारी अभियान नेता और यहाँ तक कि एक-दो परिवार के सदस्य भी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि मैं कौन हूँ।

एक बार मीडिया से एक अनुरोध आया। एक पत्रकार को सूचना मिल गई थी और वह एक खबर के लिए मेरा साक्षात्कार लेना चाहता था, लेकिन एक कुशल पत्रकार होने के नाते, मेरे लिए अपनी पहचान गुप्त रखना बेहद ज़रूरी था – मैंने एसबीएस मुख्यालय में किसी को भी अपनी छुट्टियों की योजना के बारे में नहीं बताया था। हिमालय से बाहर किसी भी अवांछित ध्यान से बचने का मेरा एकमात्र उपाय थोड़ा भावनात्मक दबाव डालना था।

मैंने कहा, 'मैं ब्रिटेन के विशेष बलों का सदस्य हूं, अगर यह कहानी सामने आई तो मेरी नौकरी चली जाएगी। कृपया कुछ मत कहिए।'

मेरा अनुरोध आगे के अधिकारियों तक पहुँचा दिया गया।

सीमा को अकेले बचाने के बाद, मुझे एक अहम सबक मिला: अपनी चढ़ाई के दौरान ऑक्सीजन का इस्तेमाल करके ही उसकी जान बचाई जा सकी थी। इसके बिना, मेरे लिए बचाव कार्य करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा जुटा पाना लगभग नामुमकिन था। इसी वजह से, अब से मैं 8,000 मीटर से भी ऊंचे पर्वतों पर बोतलबंद हवा का इस्तेमाल करके ही चढ़ाई करता था, भले ही पर्वतारोहण जगत के कुछ वर्गों द्वारा इसे उच्च-ऊंचाई पर चढ़ाई का सबसे शुद्ध तरीका न माना जाता हो। लेकिन किसे परवाह थी? कोई भी मुझे यह बताने की स्थिति में नहीं था कि मैं पहाड़ों पर कैसे और क्यों चढ़ूं, ठीक उसी तरह जैसे मुझे दूसरों को निर्देश देने का कोई अधिकार नहीं था।

इसके अलावा, मैंने एवरेस्ट पर चढ़ाई प्रसिद्धि पाने के लिए, या अपने सैन्य साथियों या पर्वतारोहण समुदाय के बीच प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए नहीं की थी। बल्कि, मुझे अपनी उपलब्धियों को गुप्त रखना था, क्योंकि एक पूर्व गोरखा होने के नाते मैंने जल्दबाजी कर दी थी: तकनीकी रूप से, मैं रेजिमेंट का पहला सेवारत सदस्य था जिसने दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत पर चढ़ाई की थी। अगर यह बात किसी अखबार में छप जाती, तो पूरी संभावना थी कि जी200ई परियोजना रद्द हो जाती। मुझे गुमनामी की जरूरत थी और घर लौटने पर, मेरे परिवार और करीबी दोस्तों ने गोपनीयता की शपथ ली थी।

एक हफ्ते तक हर सुबह मैं अखबारों में एवरेस्ट पर अपने बचाव अभियान से जुड़ी कोई भी खबर ढूंढता रहा। जहाँ तक मुझे पता चला, कुछ भी नहीं लिखा गया था – कम से कम, ऐसा कुछ भी नहीं जिसमें मेरा नाम लिया गया हो। मिशन ताकत और चतुराई से पूरा हो चुका था। काठमांडू से लौटने के कुछ ही समय बाद, मैं आराम करने की खुशी में सुची में अपने घर वापस आ गया, इस बात से शुक्रगुजार था कि मेरा राज़ और नौकरी दोनों सुरक्षित थे। कुछ दिनों बाद, मैं फिर से सेना के साथ काम पर लौट आया, जहाँ मैं दरवाज़े तोड़कर बदमाशों को सबक सिखाता था, और अगले पहाड़ पर चढ़ने के दिनों की गिनती करता रहता था।

चंद्रमा की ओर तैरना

मई 2017 बहुत जल्दी आ गया, लेकिन मेरी तैनाती का कार्यक्रम मेरे लिए अनुकूल रहा। मुझे G200E के सदस्य के रूप में पुष्टि मिल गई थी, जहाँ मैं एक टीम प्रशिक्षक के रूप में काम करूँगा। दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने का दूसरा प्रयास फिर से संभव हो गया था, लेकिन इस बार मुझे यात्रा के लिए भारी भरकम बैंक ऋण लेने की आवश्यकता नहीं थी। मैं ब्रिटिश सशस्त्र बलों का सदस्य था, मेरे खर्चों का भुगतान किया जाएगा, और मैं इस अनुभव का भरपूर आनंद लेना चाहता था।

कुछ समय से मेरे मन में एवरेस्ट और उसके पास स्थित ल्होत्से की चोटी पर चढ़ने का विचार था, और फिर दो सप्ताह के भीतर पास की मकालू चोटी पर चढ़ाई करने का। हालांकि तीनों ही पहाड़ 8,000 मीटर से अधिक ऊंचे थे, मुझे लगता था कि मैं लगभग एक सप्ताह में उन पर चढ़ाई कर सकता हूँ, लेकिन कार्यक्रम के अनुसार मुझे G200E से शिखर पर पहुँचने के बाद तुरंत आगे बढ़ना था - कोई गलती नहीं, कोई रुकावट नहीं। इस उत्सव अभियान में लगभग बीस पर्वतारोही शामिल थे, जिनमें गोरखा सैनिक, सैन्य अभिजात वर्ग के एक-दो लोग और कुछ अधिकारी थे, जिनमें से एक अभियान का नेतृत्व कर रहा था।

अगर मैं आखिरकार शिखर पर पहुँच गया, तो मुझे अलग होकर तेज़ी से नीचे उतरना होगा और साउथ कोल (FN7) तक पहुँचना होगा। वहाँ से मैं तेज़ी से आगे बढ़ सकता हूँ, ल्होत्से पर चढ़ाई कर बेस कैंप की ओर जा सकता हूँ। अगर सब कुछ योजना के अनुसार हुआ, तो मैं मकालू पर चढ़ाई शुरू करने से पहले काठमांडू में अपने गोरखा भाइयों के साथ कुछ समय बिताऊँगा।

मैं चुनौती के लिए तैयार था। एवरेस्ट और धौलागिरी की चोटियों पर चढ़ने के मेरे अनुभव ने इस बात को और पुख्ता कर दिया था कि मैं एक कुशल पर्वतारोही हूँ। लेकिन यह सिर्फ शारीरिक शक्ति की बात नहीं थी, मेरी सोच भी बदल गई थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे अंदर उन पर्वतारोहियों से कहीं ज़्यादा जोश है जिनसे मैं मिला था, और मैं अक्सर सोचता था कि क्या मेरी प्रेरणा अलग है। सेना में अपने काम की तरह, पर्वतारोहण भी अहंकार या प्रसिद्धि के बारे में नहीं था। यह सेवा भाव के बारे में था।

अभियानों के दौरान मैं लगातार खुद को गोरखाओं, ब्रिटिश स्पेशल फोर्सेज और यूनाइटेड किंगडम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की याद दिलाता रहता था। मुझे उन्हें गौरवान्वित करना था। मैं किसी भी मिशन में असफल होकर उनकी छवि को धूमिल नहीं करना चाहता था, और अभियानों

के दौरान भी मेरे मन में यही भावना रहती थी। मैं जानता था कि अगर मैं एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर चढ़ सकता हूँ, तो उन सभी संस्थानों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी जिन पर मैंने कभी विश्वास किया था, साथ ही उनमें मेरे साथियों के प्रयासों का भी सम्मान होगा। मैं अपनी सीमाओं को परखना भी चाहता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई धावक सुबह पाँच किलोमीटर दौड़ने निकलता है, लेकिन दस किलोमीटर दौड़ लेता है... क्योंकि वह ऐसा कर सकता है। पहाड़ चढ़ने के लिए ही बने थे। क्या मुझमें उन्हें पार करने का साहस था?

जी200ई अभियान से पहले, मैंने अपने कमांडिंग ऑफिसर से भी इस बारे में बात की थी। मैंने कहा, 'देखिए, मैं वहां रहते हुए एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर चढ़ाई करना चाहता हूं। इसके लिए मुझे छुट्टी लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अभियान के बाद जब बाकी लोग काठमांडू में आराम कर रहे होंगे, तब मैं चढ़ाई कर लूंगा और उनके साथ ही वापस आ जाऊंगा।'

'ऐसा नहीं हो सकता, निम्स,' उसने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा। 'यह बिल्कुल असंभव लगता है।'

उनकी निराशावादी सोच से बेपरवाह होकर, मैंने खुद को चुनौती के लिए तैयार कर लिया। मुझे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना ही था।

हम अप्रैल में नेपाल गए और एवरेस्ट पहुँचने पर, G200E दल को दो टीमों में बाँट दिया गया। मेरा पहला काम शिखर तक पहुँचने के लिए आवश्यक अनुकूलन चरणों में से एक टीम का मार्गदर्शन करना था। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे हुई और अभियान दल को कैंप 1 तक ले गई, फिर पश्चिमी कुम को पार करते हुए कैंप 2 और 3 तक पहुँचाया। वहाँ से हम बेस कैंप लौटेंगे, तब तक सभी शारीरिक रूप से शिखर चढ़ाई के लिए पूरी तरह तैयार हो चुके होंगे।

दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ने के मेरे पहले प्रयास की तुलना में, यह एक रणनीतिक रूप से अधिक समझदारी भरा अभियान लगा और मैंने इसमें काफी सफलता हासिल की। मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया था, लेकिन इसमें यह भी मददगार था कि मेरे नेतृत्व में चल रहे समूह के कुछ सदस्य मजबूत और दृढ़ निश्चयी थे, और उच्च ऊंचाई पर काफी सहजता से काम करने में सक्षम थे। हालांकि, अन्य इतने सुसज्जित नहीं थे और चिंता की बात यह थी कि कुछ पर्वतारोही, जिनमें वरिष्ठ नेता भी शामिल थे, जब हम पहली बार कैंप 1 पहुंचे तब तक थके हुए लग रहे थे। उन्हें अनुकूलन में समय लग रहा था, जिससे मुझे आश्चर्य हुआ कि अगर वे उस सरल अनुकूलन प्रक्रिया को ठीक से नहीं समझ पा रहे थे, तो वे नेतृत्व कैसे कर सकते थे।

यह स्पष्ट था कि कौन से पर्वतारोही तेजी से प्रगति कर रहे थे और कौन पिछड़ रहे थे, इसलिए मैंने सबसे मजबूत पर्वतारोहियों को कैंप 2 और फिर 3 तक ले जाने का फैसला किया, जबकि धीमे चल रहे टीम के सदस्यों को अनुकूलन के लिए एक अतिरिक्त दिन कैंप 1 में आराम करने दिया गया। अपनी-अपनी चढ़ाई पूरी करने के बाद, दोनों टीमों ने पास के नामचे बाज़ार शहर में कुछ दिन आराम किया, इससे पहले कि बेस कैंप में ब्रीफिंग का दिन आया - वह क्षण जब समूहों को दो अभियान इकाइयों में संगठित किया जाना था।

टीम ए को चढ़ाई का नेतृत्व करना था। टीम बी पहले समूह के शिखर पर पहुँचने के बाद अपनी चढ़ाई शुरू करती। लेकिन जब हमारे ऐतिहासिक अभियान के लिए दो दल घोषित किए

गए, तो यह तय किया गया कि धीमे और संघर्षरत नेताओं को पहले भेजा जाए, जिसमें संयोगवश समूह के अधिकारी भी शामिल थे। (मुझे यह थोड़ा अजीब लगा - सैन्य अभिजात वर्ग में मेरे साथ सेवा कर चुके कई अधिकारियों ने अपने जवानों के हितों को अपने हितों से ऊपर रखा था)। इस बीच, अधिकांश मजबूत पर्वतारोहियों को टीम बी के रूप में पीछे भेजा जाना था - जिसमें मैं और दो गोरखा विशेष बल प्रशिक्षक शामिल थे। किसी कारणवश, हमें सबसे पीछे भेज दिया गया था। मैं बहुत नाराज़ था। हमने यह अधिकार अर्जित किया था।

बैठक समाप्त होने पर मैंने पूछा, 'सबसे तेज़ पर्वतारोही अग्रणी दल में क्यों नहीं हैं?' जवाब मिला, 'आपका मिशन, ब्रिटिश सरकार का मिशन, सेवारत पहले गोरखा को शिखर पर पहुंचाना है। लेकिन सबसे शक्तिशाली लोगों को पीछे रखा गया है।'

कमरा एकदम शांत हो गया; किसी के पास कहने को कुछ नहीं था। उनका फैसला राजनीतिक था और यह बेहद स्पष्ट था। टीम ए में कुछ सुस्त नेता थे और उनमें कुछ गोरखा भी शामिल थे। टीम ए के एक सदस्य ने यह कहकर विवाद को खत्म करने की कोशिश की कि अब सभी पूरी तरह से माहौल में ढल चुके हैं और बराबर के मजबूत हैं, लेकिन मुझे यकीन नहीं हुआ।

मैंने कहा, 'मैंने आप सभी को कैंप 1 में अनुकूलन अभ्यास के दौरान देखा था। आप सब बुरी तरह थक चुके थे और तालमेल बिठाने में संघर्ष कर रहे थे। जब आप उनसे धीमे हैं तो सबसे मजबूत सदस्यों का नेतृत्व कैसे कर सकते हैं? अगर कोई बचाव अभियान शुरू हो जाए तो क्या होगा?'

मैं बहुत परेशान था। 'ठीक है, अगर आप राजनीति खेलना चाहते हैं, तो खेलें। यह मेरा मामला नहीं है। आपको शुभकामनाएँ।'

कई दिनों से तनाव चरम पर था, संभवतः इसलिए क्योंकि मिशन लगातार अनिश्चित होता जा रहा था। एवरेस्ट पर मौसम बेहद खराब था। कैंप 2 के ऊपर तेज़ हवाओं ने सब कुछ तहस-नहस कर दिया था और एक सप्ताह के भीतर कई तूफानों के आने की आशंका थी। फिर, शिखर पर चढ़ाई शुरू करने से चौबीस घंटे पहले, यह घोषणा की गई कि कुछ फिक्स्ड रस्सियाँ अभी तक नहीं लगाई गई हैं। रस्सी FN9 का अंतिम हिस्सा लगाने का काम सौंपे गए दल ने दक्षिण-पूर्वी रिज पर स्थित बाल्कनी नामक एक चोटी के पास हार मान ली थी, जो समुद्र तल से 8,400 मीटर ऊपर थी।

मौसम इतना खराब था कि और ऊपर चढ़ना संभव नहीं था, और काम अधूरा रह जाने के कारण G200E पर अचानक खतरा मंडराने लगा। माहौल बेहद निराशाजनक हो गया, खासकर इसलिए क्योंकि 2015 की त्रासदी को देखते हुए यह काम पूरा करने का हमारा दूसरा प्रयास था। अगर चढ़ाई छोड़ने का फैसला लिया जाता, तो शायद हमें दोबारा मौका न मिलता। एक गोरखा होने के नाते, मैं जानता था कि मैं इस बात को बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा कि हम एवरेस्ट पर चढ़ने में असफल रहे, भले ही वह हमारे गृह देश में ही क्यों न हो।

जब मैंने दोबारा पर्वतारोहण का क्रम देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि पहाड़ पर रस्सियों को ठीक करने की ज़िम्मेदारी उठाने वाला मैं अकेला ही था। कई ज़्यादा अनुभवी पर्वतारोही, जिन्होंने उस समय एवरेस्ट पर चढ़ने की योजना बनाई थी, अपना सामान पैक करके घर लौट रहे थे। मैं

सबसे मज़बूत पर्वतारोही था; मेरे पास अनुभव था और अत्यधिक तापमान में काम करने की क्षमता थी, और एक कुशल ऑपरेटर होने के नाते, मुझमें मिशन को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए पर्याप्त दृढ़ता थी। साथ ही, मैंने एक दमदार योद्धा की तरह रास्ता बनाया।

वे और किस पर भरोसा कर सकते थे?

'मैं ऊपर जाकर रस्सियाँ लगा देता हूँ,' मैंने घोषणा की, क्योंकि हमारी फिक्सिंग टीम के बारे में चिंताजनक जानकारी पूरे समूह में फैल गई थी।

मेरे आस-पास के अधिकांश साथियों ने मान लिया था कि मिशन लगभग पूरा हो चुका है और मेरे प्रस्ताव पर वे सुखद रूप से आश्चर्यचकित दिखे, हालांकि जी200ई टीम के सभी सदस्यों को मेरे पर्वतारोहण कौशल के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी थी। यह तथ्य कि मैं पहले ही दो 8,000 मीटर से अधिक ऊँची चोटियों पर चढ़ाई कर चुका था, जिनमें से एक एवरेस्ट थी, अब सर्वविदित था; साथ ही सीमा को बचाने का मेरा कारनामा भी।

इस बीच, सैन्य अभियानों में मेरी भूमिका केवल काम को अंजाम देना थी, बिना किसी सवाल के, और व्यक्तिगत स्वार्थ या राजनीति को हमेशा दरकिनार रखा जाता था। मैंने G200E टीम के साथ भी यही रवैया अपनाया। किसी भी तरह की नकारात्मकता को नजरअंदाज किया गया।

मैंने आगे कहा, 'मुझ पर भरोसा रखो, मैं यह कर सकता हूँ।'

अंततः, G200E के नेताओं ने मेरी योजना से सहमति जताई – कोई वास्तव में इसका विरोध नहीं कर सकता था – और यह तय किया गया कि मैं एक मरम्मत दल का नेतृत्व करूँगा, जिसमें दो विशेष बल के जवान (दोनों गोरखा) और आठ शेरपा गाइड शामिल होंगे। अभियान का कार्यक्रम भी बदल दिया गया। यदि हमारा विपरीत परिस्थितियों में भी रस्सी बांधने का मिशन सफल हो जाता है, तो यह तय किया गया कि अधिकांश पर्वतारोही टीम A में शामिल हो जाएँगे। जब वे चढ़ाई कर रहे होंगे, टीम B बेस कैंप में इंतजार करेगी और पहले समूह के शिखर पर पहुँचने के बाद ही आगे बढ़ेगी।

दबाव बहुत ज़्यादा था, लेकिन मुझे पूरा भरोसा था और धौलागिरी पर सीखी हुई अग्रणी तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए मैं लगातार चढ़ाई करता रहा। हम आराम से कैंप 2 तक पहुँच गए, जहाँ हमने रात बिताई और फिर कैंप 4 की ओर बढ़े। थोड़ी देर आराम करने के बाद, हमने शिखर पर चढ़ाई शुरू की और उदाहरण पेश करने की चाह में, मैंने कैंप 4 से बालकनी तक 450 मीटर की दूरी अकेले ही तय की। मुझे लगा कि मेरे साथियों को यह समझना ज़रूरी है कि मैं शेरपा गाइड से मदद मांगने के बजाय खुद मेहनत करने को तैयार हूँ। ऐसी स्थितियों में ही सम्मान और विश्वसनीयता हासिल की जाती है।

सूरज निकल चुका था। जैसे-जैसे हम दक्षिणी शिखर और बाद में हिलारी स्टेप पर आगे बढ़ रहे थे, मेरे चारों ओर नेपाल और तिब्बत के नज़ारे को देखकर मैं मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह सका। लेकिन मेरे पास रुककर देखने का समय नहीं था। रस्सियाँ बाँधने वाली टीम के नेता के रूप में, मैं जानता था कि अगर हम ये आखिरी कुछ रस्सियाँ नहीं बाँध पाए, तो पूरा अभियान विफल हो जाएगा। संचार के अनुसार, टीम ए तेज़ी से हमारे पीछे स्थित कैंप 4 की ओर बढ़ रही थी। अगर हमें अभी वापस लौटना पड़ा, तो सभी को बेस कैंप के लिए निकलना पड़ेगा, क्योंकि

अभियान के भोजन और ऑक्सीजन का भंडार लगभग खत्म हो चुका था। पूरे मिशन को फिर से आपूर्ति करनी होगी और इसमें समय और काफ़ी मेहनत लगेगी। एवरेस्ट पर चढ़ाई का मौसम समाप्त होने वाला था और मौसम के अनुकूल कोई और अवसर नज़र नहीं आ रहा था, इसलिए जी200ई की सफलता हमारी प्रगति पर निर्भर थी।

सौभाग्य से, मेरी सहनशक्ति कम नहीं हुई थी। शिखर से लगभग दस मीटर पहले, जब लाइन ठीक करने वाले दल के कुछ धीमे चलने वाले लोग मेरे पास पहुँच गए, तो मैंने अकेले अंतिम प्रयास करने से खुद को रोक लिया। मैंने सोचा, 'भाइयों, हम एवरेस्ट पर एक टीम के रूप में चढ़ाई कर रहे हैं।'

जब सब लोग एक साथ आ गए, तो हमने एक-दूसरे के कंधों पर हाथ रखकर आखिरी कदम एक साथ उठाए।

यह इतिहास था। हमने निश्चित रस्सियाँ बिछा दी थीं और रेजिमेंट के तेरह सैनिक अंततः जी200ई के दौरान शिखर तक पहुँचने में सफल रहे। (हमारी रस्सियों ने उस सीज़न के अंत में एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पर्वतारोहियों के लिए भी एक मार्ग प्रदान किया)। उनमें से कुछ जवानों के लिए, यह चढ़ाई एक स्पष्ट लक्ष्य था, एक ऐसी चुनौती जिसे पार नहीं किया जा सकता था। अब वे आगे कहाँ जाएँगे? लेकिन मैं अभी भी उस रोमांच से बहुत दूर था। जब मैंने नीचे फैली पर्वत श्रृंखलाओं को देखा, तो मुझे पता था कि मेरे साहसिक कार्य का अगला चरण मेरा इंतज़ार कर रहा है। एक नई शुरुआत हो चुकी थी।

*

मैं तैयार था। ल्होत्से और फिर एवरेस्ट पर दोबारा चढ़ाई करने के लिए – जहाँ मुझे दूसरी G200E टीम को शिखर तक पहुँचाने में मदद करनी थी, क्योंकि मैं अकेला ऐसा प्रशिक्षक था जिसमें लगातार दो बार शिखर पर चढ़ने की क्षमता थी – मुझे सहायता की आवश्यकता थी। मेरे प्रत्येक शिखर प्रयास के लिए एक शेरपा गाइड को बुलाया गया था और मेरे लिए पहाड़ों में कई ऑक्सीजन सिलेंडर (FN10) वितरित किए गए थे। लेकिन कुछ ही समय बाद सब कुछ गड़बड़ हो गया। जब मैं दिन के अपने दूसरे शिखर के लिए साउथ कोल से निकलने की तैयारी कर रहा था, तभी खबर आई कि ल्होत्से पर भी लाइनें अधूरी हैं। एवरेस्ट पर मौजूद टीम जैसी ही परिस्थितियों का सामना करने के बाद, मरम्मत दल ने कैंप 4 के तुरंत बाद अपना काम अस्थायी रूप से रोक दिया था।

इससे भी बुरी बात यह थी कि जिस शेरपा के साथ मुझे ल्होत्से पर्वत पर चढ़ना था, वह बीमार पड़ गया था और बेस कैंप की ओर उतर रहा था। मैं एक टेंट से दूसरे टेंट में जाकर दूसरे गाइडों को अपने साथ आने के लिए मनाने की कोशिश करता रहा, लेकिन ऐसा लग रहा था कि इतने कम समय में कोई भी शिखर पर दोबारा चढ़ाई करने में असमर्थ था।

मेरा दिल बैठ गया। पहली बार अकेले ल्होत्से पर्वत पर चढ़ना शायद मेरे बस की बात नहीं थी और एक भी गलती एवरेस्ट बेस कैंप में इंतज़ार कर रही टीम बी की उम्मीदों पर पानी फेर सकती थी – उन्हें शिखर तक पहुँचने के लिए मेरी ज़रूरत थी। मैं उन्हें निराश नहीं करना चाहता था। उस

समूह ने जी200 अभियान के साथ एवरेस्ट पर चढ़ने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत की थी। मैंने अपना सामान समेटा और गुस्से से आग बबूला होकर नीचे उतर गया।

जब तक मैं कैंप 2 पहुँचकर रात भर आराम कर पाया, तब तक यह घोषणा हो चुकी थी कि टीम ए शिखर पर पहुँच गई है, मेरे एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने के लगभग अठारह घंटे बाद। मुझे जीत का एहसास हुआ; हमारी मेहनत रंग लाई थी, लेकिन पल भर में ही यह खुशखबरी एक बुरी खबर में तब्दील हो गई, जब यह तय किया गया कि अभियान अब खत्म हो चुका है। चूंकि कई सेवारत गोरखा पहले ही शिखर पर पहुँच चुके थे, इसलिए मिशन पूरा हो चुका था और चढ़ाई रोकने का फैसला किया गया था। बेस कैंप पर पहुँचने का इंतज़ार कर रहे जवान, जिन्होंने अपने सपने को पूरा करने के लिए अपना समय और कुछ मामलों में पैसा भी कुर्बान किया था, घर लौट रहे थे। यह एक बेहद स्वार्थी कदम लगा। जब मैं बाद में टीम बी से मिला, तो वहाँ का नज़ारा दिल दहला देने वाला था। कुछ जवान रो रहे थे।

उन्हें नीचे उतारने का क्या मतलब था? कुछ लोग शायद यह तर्क दें कि, हाँ, काम तो हो ही गया था, तो इतने खतरनाक पहाड़ पर और जानें जोखिम में डालने का क्या औचित्य था? लेकिन वे गोरखा सैनिक, भले ही समूह में सबसे तेज़ न हों, फिर भी उस सीज़न के अंत में एवरेस्ट की चोटी पर सफलतापूर्वक पहुँचने वाले कई पर्वतारोहियों से कहीं अधिक बलवान थे। उन्हें ऊँचाई पर चढ़ाई से जुड़े जोखिमों की भी समझ थी, इसलिए उन्हें ऊपर भेजने में कोई हर्ज नहीं था।

लेकिन इसके नतीजों में मुझे यह भी एहसास हुआ कि अगर सब कुछ योजना के मुताबिक होता – अगर आधिकारिक फिक्सिंग टीम ने अपना काम किया होता, और मूल टीम ए एवरेस्ट की चोटी तक पहुँच जाती – तो टीम बी में मेरी भूमिका भी बेकार हो जाती। मैं भी बाकी लोगों के साथ बेस कैंप में ही फंसा रह जाता।

कुछ दिनों बाद मैंने काठमांडू में अपने गोरखा भाइयों के साथ खूब पार्टी की, लेकिन सफलता की उमंग उन लोगों की कड़वाहट में तब्दील हो गई जो पीछे रह गए थे। वे बहुत नाराज़ थे और मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता था। अभियान का अंत निराशाजनक रहा था। और जैसे-जैसे मैं एक के बाद एक बीयर पीता गया, वही सवाल बार-बार मेरे मन में आता रहा। हाँ, लेकिन क्या तुम इससे भी आगे जा सकते हो, भाई? ल्होत्से पर चढ़ने का मेरा पहला प्रयास तो नाकाम हो गया था, लेकिन अब मुझे पता चल रहा था कि शिखर तक फिक्स्ड लाइनें बिछा दी गई हैं। इसका मतलब था कि एवरेस्ट, फिर ल्होत्से और मकालू पर चढ़ने का मेरा लक्ष्य, जो मैंने पहले से तय किया था, दो हफ़्तों के भीतर पूरा करने का, फिर से शुरू हो गया था, हालाँकि समय बहुत कम था। (और मुझे एवरेस्ट पर एक बार फिर चढ़ना होगा, लेकिन मैंने सोचा, चलो कोई बात नहीं!) मैंने तीनों चोटियों पर अपने रास्ते तय किए, और अनुमान लगाया कि तय समय पर चढ़ाई पूरी करने के लिए मुझे मौसम का साथ चाहिए होगा। मैं सबसे पहले ल्होत्से की चोटी पर चढ़कर एवरेस्ट के कैंप 3 तक पहुँचूँगा। फिर वापस साउथ कोल होते हुए एवरेस्ट पर चढ़ाई करूँगा। इसके बाद, मैं हेलीकॉप्टर से मकालू के बेस कैंप तक जा सकता हूँ।

यह सहनशक्ति की एक बड़ी परीक्षा थी, लेकिन व्यवस्था को लेकर मुझे कोई चिंता नहीं थी: मेरा ऑक्सीजन सिलेंडर पहले से ही तैयार था और पहाड़ों पर चढ़ते हुए मैं सिलेंडरों को आसानी

से ले सकता था। साथ ही, शुरुआती प्रयास के लिए मैंने जिन शेरपाओं को बुक किया था, वे भी चढ़ाई करने के लिए तैयार थे। हाँ, मैं थोड़ा पीछे चल रहा था, लेकिन इससे पहले भी मैं कुछ 8,000 मीटर ऊँची चोटियों पर चढ़ चुका था और मुझे कभी भी आराम की ज़रूरत नहीं पड़ी थी, इसलिए मेरे लिए तेज़ी से आगे बढ़ना संभव था। मुझे बस आत्मविश्वास की ज़रूरत थी।

और फिर विपत्ति आ पड़ी।

आगे क्या हुआ, इस पर तो पूरी किताब लिखी जा सकती है, लेकिन एक-दो दिन बाद एवरेस्ट की तलहटी में पहुँचने पर मैंने देखा कि G200E के कुछ बेकार पड़े सामान के साथ-साथ ज़मीन पर ऑक्सीजन सिलेंडरों का एक ढेर पड़ा था। जब मैंने गौर से देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि बोतलों में भरी हवा मेरी ही थी। एक शेरपा ने गलती से यह मान लिया था कि मैंने अपना सामान पैक करके घर लौटने का फैसला कर लिया है, इसलिए वह किसी कैंप से मेरी कुछ हवा नीचे ले आया था। मैं गुस्से से आग बबूला हो गया। और फिर, ठीक उसी समय जब सबसे बुरा समय था, मेरे स्मार्टफोन में वाइब्रेशन हुई। मेरे भाई कमल का फोन था। जब मैंने फोन उठाया, तो वह गुस्से से चिल्ला रहा था।

'तुम अभी भी ऊपर क्या कर रहे हो?' वह चिल्लाया। 'तुम एवरेस्ट पर दो बार चढ़ चुके हो। पिछले साल तुमने किसी की जान बचाई थी। अब इस साल तुमने एक पूरे अभियान को नाकाम होने से बचाया है। तुम्हारा नाम पहले से ही हर जगह फैल रहा है। लोग तुम्हें जानते हैं... तुम क्या साबित करना चाहते हो?'

पहले तो मैंने समझाने की कोशिश की। मैं कमल को अपने इरादे के बारे में बताना चाहती थी। यकीनन वो समझ जाएगा कि ये सब मेरे या मेरे नाम के बारे में नहीं है। लेकिन समय नहीं था और मेरा भाई सुनने के मूड में नहीं था। ऑक्सीजन सिस्टम टूटने की वजह से पहले ही मैं भावनात्मक उथल-पुथल में फंस चुकी थी, इसलिए आगे किसी भी तरह की परेशानी या परेशानी से बचना ज़रूरी लग रहा था। इसलिए मैंने फोन काट दिया। कमल और उसका उपदेश बाद में भी हो सकता था।

मुझे सोचने के लिए समय चाहिए था। अगली चढ़ाई के लिए मेरे पास उपकरण और ऑक्सीजन सिलेंडर लगभग लाद दिए गए थे, अतिरिक्त हवा के लिए जगह नहीं थी, लेकिन मैंने इस बात से खुद को तसल्ली दी कि पहाड़ के दूसरी ओर दो और शिविरों में मेरे लिए हवा मौजूद है। हालांकि, जैसे ही मैं एवरेस्ट कैंप 2 और फिर ल्होत्से के कैंप 4 पर चढ़ा, यह स्पष्ट हो गया कि लगभग सारी हवा खत्म हो चुकी थी। गुस्से में मैंने तंबुओं की तलाशी ली और ताज़ी गिरी बर्फ में इधर-उधर खोजने लगा, क्योंकि पर्वतीय जीवन की कठोर वास्तविकता मेरे सामने स्पष्ट हो गई थी।

किसी ने इसे चुरा लिया था।

मैं बेहद क्रोधित था। बिना हवा के चढ़ाई करना उन सिद्धांतों के खिलाफ था जो मैंने सीमा के बचाव के बाद अपने लिए तय किए थे। हाँ, मुझमें ल्होत्से, एवरेस्ट और मकालू पर चढ़ने की ताकत तो थी ही, लेकिन अगर मैंने अपने किए वादों को कम आंकना शुरू कर दिया, तो यह प्रक्रिया आदत बन जाएगी और मैं कभी अपने लक्ष्य हासिल नहीं कर पाऊंगा।

यह एक ऐसा सिद्धांत था जिसे मैंने जीवन में लंबे समय से अपनाया था: अगर मैं कभी सुबह उठकर खुद से कहता कि मैं उस दिन तीन सौ पुश-अप्स करूंगा, तो मैं उन्हें पूरे मन से करता था, क्योंकि मेहनत न करना एक वादा तोड़ना होता था, और वादे तोड़ने से असफलता मिलती थी। लेकिन मैं यह भी समझता था कि स्थिति पर गुस्सा करने से कोई फायदा नहीं होगा। सैन्य प्रशिक्षण ने मुझे सिखाया था कि भावनात्मक रूप से मजबूत रहना कितना जरूरी है: किसी नकारात्मक घटना को सकारात्मक ऊर्जा में बदलना ही अपने मुख्य लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखने का एकमात्र तरीका था।

निम्स, हिम्मत रखो। भाई, मजबूत रहो। तुम सबसे अलग हो – इस समस्या का हल जरूर निकालोगे।

गहरी साँसें लेते हुए, मैंने बिगड़ती स्थिति को नए सिरे से समझने की कोशिश की। मैंने कल्पना की कि मेरी ऑक्सीजन किसी बेहतर जगह जा रही है। मैंने खुद को यकीन दिलाया कि सिलेंडर किसी दूसरे पर्वतारोही की जान बचाने के लिए चुराए गए थे। निम्स, तुम्हारी ऑक्सीजन की वजह से कोई बच गया है। भावनात्मक रूप से खुद को संभालकर, मैंने स्थिति के अनुसार खुद को ढाला, अपने कार्यक्रम में थोड़ा बदलाव किया और फिर से साउथ कोल की ओर चल पड़ा। अब मेरी योजना एवरेस्ट की चोटी पर पहले चढ़ने की थी, जो एक तूफानी चुनौती साबित होने वाली थी। फिर मैं ल्होत्से पर चढ़ूंगा - जहाँ मैंने अपने एक दोस्त से कैंप 4 पर मेरे लिए कुछ बोतलबंद हवा पहुँचाने का इंतज़ाम किया था - और अंत में मकालू पर।

मेरे चारों ओर तेज़ हवा चल रही थी और एक पल के लिए मुझे खुद पर शक होने लगा। मैं जो करने जा रहा था वह बहुत बड़ा काम था। लेकिन क्या मैं सफल हो पाऊंगा?

मैंने खुद को संभाला।

हां तुम कर सकते हो।

मैंने एवरेस्ट पर तब चढ़ाई की जब पर्वत अपने सबसे खतरनाक रूप में था – चोटी पर तूफ़ानी हवाएँ चल रही थीं, बर्फ के टुकड़े मुझे गोलियों की तरह लग रहे थे, हालात इतने गंभीर थे कि उस दिन कई अन्य पर्वतारोहियों की जान चली गई। लेकिन तेज़ हवाओं का सामना करते हुए और यह जानते हुए कि मेरी गति मेरी मदद करेगी, मैंने अपने शेरपा के साथ जितनी जल्दी हो सके चढ़ाई की; हम दोनों ठंड में अपनी उंगलियों और पैरों की सुरक्षा को लेकर चिंतित थे, जब हम हिलारी स्टेप पर पैंतालीस मिनट तक इंतज़ार करते रहे, जो शिखर तक जाने वाले पर्वतारोहियों की भीड़ से भरा हुआ था। जब मैं आखिरकार शिखर पर पहुँचा, तो मैं एक नए शेरपा के साथ ल्होत्से की ओर उतरा और कैंप 4 की ओर बढ़ा। शिखर पर पहुँचकर मैंने अपनी घड़ी देखी। मैं दस घंटे पंद्रह मिनट से चढ़ाई कर रहा था। अब केवल मकालू ही बचा था जिस पर चढ़ाई नहीं हुई थी।

स्पष्ट बता दूं: उस समय मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मैंने एवरेस्ट और ल्होत्से पर इतनी जल्दी चढ़ाई करके विश्व रिकॉर्ड तोड़ दिया है। यह मेरा लक्ष्य नहीं था, सिर्फ तीन चोटियों पर चढ़ना ही मेरा उद्देश्य था, लेकिन जब बेस कैंप में मुझे बताया गया कि पिछला सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड बीस घंटे का था, तो मैं दंग रह गया। मैंने अनजाने में सबसे कम दर्ज समय से लगभग दस घंटे

कम कर दिए थे।

एक और रिकॉर्ड बनने की राह पर था। अगर मैं अगले कुछ दिनों में मकालू पर चढ़ाई कर लेता, तो एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू की चोटियों पर सबसे कम समय में पहुंचने का विश्व रिकॉर्ड टूट जाता। तभी मुझे पता चला कि एवरेस्ट पर दो बार, साथ ही ल्होत्से और मकालू पर एक ही पर्वतारोहण सत्र में कोई भी नहीं चढ़ा था। मुझे अपनी संभावनाओं पर पूरा भरोसा था, हालांकि उस समय तक मैंने कभी मकालू पर चढ़ाई नहीं की थी और यह दुनिया का पांचवां सबसे ऊंचा पर्वत था। मेरे अच्छे दोस्त निशाल, जो बेहतरीन हाई-एल्टीट्यूड पायलटों में से एक हैं, द्वारा संचालित हेलीकॉप्टर मुझे अगले बेस कैंप तक ले जाने के लिए तैयार था। मैं अपने लक्ष्य की संभावनाओं को लेकर बेहद उत्साहित था।

लैंडिंग जोन पर पहुँचकर निशाल ने मुझे गले लगाते हुए कहा, 'भाई, तुमने अभी-अभी एक विश्व रिकॉर्ड तोड़ दिया है।'

'हां, और मुझे मकालू में एक और मिल सकता है।'

मैं अपने अगले कदम जल्दी उठाना चाहता था, लेकिन निशाल मेरी उपलब्धियों को सही परिप्रेक्ष्य में रखना चाहता था। उसने कहा, 'दोस्त, तुमने कहा था कि तुम चौदह दिनों में तीनों पहाड़ों पर चढ़ जाओगे। तुम्हारे पास मकालू पर चढ़ने के लिए कुछ दिन बाकी हैं और फिर भी तुम जी200ई टीम के साथ घर वापस जाने वाली फ्लाइट पकड़ सकते हो। क्यों न तुम इस पल का आनंद लो? थोड़ी देर पार्टी करो!'

फिर उन्होंने बताया कि 29 मई आने वाला है, जो हिमालय में एवरेस्ट दिवस के रूप में भी जाना जाता है। यह दिवस 1953 में तेनजिंग नोर्गे शेरपा और सर एडमंड हिलेरी द्वारा एवरेस्ट की पहली चोटी पर पहुंचने की याद में मनाया जाता है।

निशा ने कहा, 'भाई, वहां खूब शराबखोरी और परेड होगी। हर कोई खूब मजे करेगा। तुम्हें भी इसके बारे में सोचना चाहिए।'

मुझे एहसास हुआ कि मैं एवरेस्ट दिवस मना सकता हूँ और फिर भी विश्व रिकॉर्ड के लिए समय निकाल सकता हूँ, इसलिए मैं मान गया। आख़िरकार, मैं छुट्टी पर था। निशाल का हेलीकॉप्टर नामचे बाज़ार में उतरा और मैंने कुछ व्यावसायिक मित्रों के साथ जमकर पार्टी की, शराब पी और नाचा। हालाँकि, इस पूरे समय मेरी नज़र मकालू पर टिकी रही। और निशाल को लगा कि उसके पास एक ऐसी योजना है जिससे मेरा और भी समय बच जाएगा।

‘निम्स, तुम बिल्कुल भी थकी हुई नहीं लग रही हो,’ उसने कहा। ‘क्यों न तुम थोड़ी देर और यहीं रुक जाओ और मैं तुम्हें बेस कैंप के बजाय मकालू स्थित कैंप 2 पर छोड़ दूंगा? कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लगेगा।’

मेरे अनुमान के अनुसार, कैंप 2 तक हेलीकॉप्टर की सवारी का किराया आमतौर पर कई हज़ार पाउंड होता था, जो चौंका देने वाला था। निशाल का प्रस्ताव बेहद उदार था (और अगली सुबह मेरी सवारी के लिए वह होश में था) – लेकिन यह मेरे लिए नहीं था। उसे आश्चर्य हुआ जब मैंने अपना सिर हिला दिया। अगले दिन मकालू पर्वत पर नीचे से ऊपर तक चढ़ाई करके मैं दो विश्व रिकॉर्ड तोड़ देता और अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति की सीमाओं के बारे में बहुत

कुछ सीख लेता। मैं किसी भी कीमत पर शॉर्टकट अपनाने का आरोप नहीं चाहता था। मुझे सब कुछ वैध चाहिए था।

'धन्यवाद, लेकिन बिलकुल नहीं,' मैंने कहा। 'मैं इसे ठीक से करूंगा।'

निशाल ने मुंह फुला लिया। उसके दोस्त भी थोड़े नाराज़ लग रहे थे और मुझे लगा कि मेरे फैसले को उन्होंने बदतमीज़ी या कृतज्ञता की कमी समझ लिया है। जैसे-जैसे घंटे बीतते गए और शराब का नशा बढ़ता गया, उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि मैंने इतना उदार प्रस्ताव ठुकरा दिया। बहस इतनी गरमा गई कि ऐसा लगा जैसे लड़ाई होने ही वाली है। तभी निशाल ने मुझे मनाने की आखिरी कोशिश की।

'लेकिन किसी को पता नहीं चलेगा!' वह चिल्लाया।

मैं करूँगा! बेशक, मैं पूरी दुनिया से झूठ बोल सकता हूँ। मैं यह दिखावा कर सकता हूँ कि मैंने तीनों पहाड़ों पर नीचे से ऊपर तक चढ़ाई कर ली है, लेकिन मैं खुद से झूठ नहीं बोलूँगा, भाई। बिलकुल नहीं। मैं इसे ईमानदारी से करूँगा।'

बीयर के नशे में, हमारे आस-पास के लोग धीरे-धीरे मेरे इरादे समझने लगे। मैंने सबको समझाया कि मुझे आपका यह प्रयास अच्छा लगा, लेकिन मकालू अब सिर्फ एक और चोटी पर चढ़ना या पहाड़ों की मेरी बकेट लिस्ट में एक और उपलब्धि जोड़ना नहीं था। यह हिमालय की चोटियों की हैट्रिक में आखिरी चोटी को सही तरीके से, ईमानदारी के साथ जीतने की बात थी, जो महत्वपूर्ण था क्योंकि यह प्रयास मेरे लिए आत्म-खोज का क्षण था कि अगर मैं अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति एक साहसिक अभियान के विचार में लगा दूं तो मैं वास्तव में क्या हासिल कर सकता हूं।

और मैंने उसे तोड़ दिया।

मकालू के बेस कैंप से चौबीस घंटे बाद, भयानक हैंगओवर के साथ, मैं अपनी छोटी सी टीम के साथ एक ही बार में 8,485 मीटर की चोटी पर चढ़ गया। भारी बर्फबारी, तेज हवाओं और घने बादलों के बीच से रास्ता बनाते हुए मैं शिखर तक पहुंचा। यह अपने आप में एक उपलब्धि थी। उस मौसम में किसी ने भी मकालू पर चढ़ाई नहीं की थी, हालांकि कई टीमों ने कोशिश की थी, लेकिन खतरनाक परिस्थितियों के कारण उन्हें वापस लौटना पड़ा था।

बेस कैंप में सुरक्षित वापस पहुँचने के बाद, मुझे पता चला कि खराब मौसम के कारण नामचे बाज़ार वापस जाने वाली हमारी हेलीकॉप्टर यात्रा रद्द हो गई है। इसके बाद, मैंने अपने शेरपा दल के साथ नेपाल के सबसे कठिन ट्रेकों में से एक को पैदल ही तय किया। हम पूरी रफ्तार से दौड़ते हुए काठमांडू पहुँचे, बीच-बीच में बीयर और व्हिस्की पीने के लिए रुकते रहे, और इस तरह हमने छह दिन की यात्रा अठारह घंटे में पूरी कर ली। केवल एक साथी, हलुंग दोरची शेरपा, मेरे साथ इस रफ्तार से चल पाया और मैंने खुद को मजबूत महसूस किया, अपने युद्ध प्रशिक्षण का सहारा लेकर दर्द को सहते हुए आगे बढ़ा।

मैंने दो विश्व रिकॉर्ड तोड़े थे – एक तो एवरेस्ट और ल्होत्से पर दस घंटे पंद्रह मिनट में चढ़ाई करके और दूसरा एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर पाँच दिनों में चढ़ाई करके। मैं एक ही मौसम में एवरेस्ट पर दो बार, फिर ल्होत्से और मकालू पर चढ़ाई करने वाला पहला व्यक्ति भी था। और

मुझे अभी भी ऐसा महसूस नहीं हुआ था कि मेरा काम पूरा हो गया है।

इंग्लैंड सुरक्षित पहुँचने के बाद, मैं अपने G200E साथियों के साथ घर वापसी की उड़ान में शामिल हुआ और आखिरकार कमल से मिलने गया ताकि उसका हालचाल जान सकूँ। बात करते समय उसकी आवाज़ भर्रा गई। मैं समझ गया कि वह रोने से बचने की कोशिश कर रहा था।

उसने अपना गुस्सा समझाते हुए कहा, 'तुम मेरे भाई हो। मुझे तुम्हारी चिंता थी।'

उसके प्रति मेरे मन में जो भी निराशा थी, वह दूर हो गई थी। 'सुनो: सब ठीक है। लेकिन जब तुमने मुझे फोन किया, तो मैं एक ऐसे दौर से गुज़र रही थी जहाँ मुझे खुद पर शक हो रहा था। और फिर जब तुम्हारे जैसा कोई, जिसका मैं सम्मान करती हूँ, मेरे दिमाग में नकारात्मक ऊर्जा भरने की कोशिश करता है, तो उसे दूर करना मुश्किल हो जाता है। मुझे सकारात्मकता की ज़रूरत थी। इसीलिए मुझे फोन काटना पड़ा।'

‘आपने स्पष्टीकरण क्यों नहीं दिया?’

'मेरे पास समय नहीं था! मेरी ऑक्सीजन में गड़बड़ी हो गई थी, बहुत कुछ चल रहा था और मुझे आप लोगों के सामने खुद को सही ठहराने के बजाय उस पर ध्यान देना था।'

हमारी बातचीत खत्म होते-होते कमल को समझ आ गया था कि मैंने ऐसा क्यों किया था। अब मेरा काम था कि मैं यह पता लगाऊं कि मैंने ऐसा कैसे किया।

लक्ष्य

बहुत सारे सवाल थे।

मेरे पास ऐसा क्या था जो कई अन्य पर्वतारोहियों के पास नहीं था?

मैंने बिना बीच में शारीरिक विश्राम लिए, इतने कम समय में तीन अविश्वसनीय रूप से चुनौतीपूर्ण चोटियों पर चढ़ाई कैसे कर ली?

न जाने क्यों मुझे काठमांडू तक दौड़कर जाने की इच्छा हुई, जबकि मेरे पास आराम से टहलते हुए वापस आने और रास्ते भर पार्टी करने का समय था। मैं आखिर क्या साबित करना चाह रहा था?

शायद इसकी वजह यह थी कि मैं लगातार खुद को चुनौती देने की कोशिश करता रहता था, हालाँकि पर्वतारोहण समुदाय में ये गुण कोई अनोखे नहीं थे। वहीं, मैं कई स्पेशल फोर्सेज के जवानों को जानता था जिन्होंने एवरेस्ट पर चढ़ाई की थी, लेकिन उनमें से कोई भी ल्होत्से और मकालू पर नहीं चढ़ा था। लेकिन मज़े की बात यह थी कि वे सभी चढ़ाई के बाद पूरी तरह थक चुके थे, और उनमें से किसी में भी तुरंत बाद किसी और चोटी पर चढ़ने की हिम्मत नहीं बची थी। किसी कारणवश, मेरे शरीर में लगातार चढ़ाई और उतरने, रस्सियाँ ठीक करने और अभियानों का नेतृत्व करने की क्षमता थी, वो भी बहुत कम आराम के साथ। मेरी ऊर्जा असीमित लगती थी।

मैं न केवल आक्रामक ढंग से चढ़ाई कर रहा था, कमर तक गहरी बर्फ में इतनी आसानी से रास्ता बना रहा था कि अनुभवी शेरपाओं को भी पीछे छोड़ देता था, बल्कि अपने सैन्य प्रशिक्षण के कारण मैं अत्यधिक दबाव में भी तेज़ी से निर्णय लेने में सक्षम था। जोखिम का आकलन करना और उसके अनुसार प्रतिक्रिया देना मेरी आदत बन चुकी थी; मैं बहादुरी और मूर्खता के बीच की बारीक रेखा को समझता था; नकारात्मक परिस्थितियाँ मुझे विचलित नहीं करती थीं, और मैं हर चीज़ का सकारात्मक सोच के साथ सामना करता था। इन गुणों में मुझे ऊँचाई पर चढ़ने की माहिर बनाने की क्षमता थी।

बेशक, मुझसे तकनीकी रूप से बेहतर पर्वतारोही भी थे, और समुद्र तल पर, अन्य पर्वतारोहियों की तुलना में अपनी खूबियों और कमियों को देखते हुए, शायद मैं खुद को एक असमान स्थिति में पाता। लेकिन उनमें से सभी मेरी तरह योजना बनाने और कल्पना करने में सक्षम नहीं थे। 8,000 मीटर से ऊपर, मैं दुनिया के किसी भी पर्वत की चोटी तक पहुँचने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास पा सकता था - चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

मुझे यह भी सूचित किया गया था कि उच्च पर्वतारोहण में मेरे उत्कृष्ट कार्य के लिए महारानी द्वारा मुझे एक सम्मान, एमबीई, प्रदान किया जा रहा है - इसमें जी200ई को बचाना, एवरेस्ट पर सीमा को बचाना और एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर विश्व रिकॉर्ड तोड़ना शामिल था। हालाँकि, मेरी उपलब्धियों की सराहना सभी ने नहीं की थी। जब मेरे रिकॉर्ड घोषित किए गए, तो कई प्रतिष्ठित पर्वतारोहियों ने तुरंत इस बात की ओर इशारा किया कि मैंने ऑक्सीजन का इस्तेमाल किया था। लेकिन मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता: मेरी महत्वाकांक्षाएँ मुख्य रूप से गति पर टिकी थीं। मैं एक पथप्रदर्शक था और मैं आगे बढ़कर नेतृत्व करता था, अपनी राहें खुद तय करता था - यही निम्स का अंदाज़ था।

हालांकि, बात सिर्फ दूसरों से कहीं ज्यादा तेजी से काम करने की नहीं थी। एक तरफ, निम्स के तरीके में मुझे योजना बनानी और नेतृत्व करना पड़ता था। दूसरी तरफ, पहाड़ों पर मुझे हर समय आत्मनिर्भर रहना पड़ता था, और कुछ कठिन अनुभवों से मुझे अपनी ताकत और कमजोरियों का एहसास हुआ; इसलिए मैंने उनका इस तरह से इस्तेमाल किया कि मैं ज्यादातर समय मुसीबतों से बच सका। मैंने ऊँचाई पर किसी को बचाया था, लेकिन मुझे यह सोचकर घिन आती थी कि किसी को अपना मिशन छोड़कर मेरी मदद करनी पड़े। इससे बेहतर तो मैं मर जाता।

जहां तक मेरा सवाल था, डेथ ज़ोन में चढ़ाई करते समय कोई तय नियम नहीं थे। हर कोई अलग-अलग तरीके से काम करता था और मैंने इस बात की शिकायत नहीं की थी कि उन्हीं आलोचकों में से कुछ ने मेरे नक्शेकदम पर चलकर या मेरे शिखर तक पहुंचने के कुछ घंटों बाद ही मेरे द्वारा निर्धारित रास्तों का इस्तेमाल करके खुद शिखर पर चढ़ाई की थी, लेकिन उनका घमंड फिर भी परेशान करने वाला था, इसलिए मैंने इसे प्रेरणादायक बनाने की कोशिश की। मैंने इसे ऊर्जा के रूप में इस्तेमाल किया और हिमालय में अपनी चढ़ाई के बाद के उत्साह में, मैंने अपने कौशल को और निखारने का फैसला किया। अगर मैं दुनिया के तीन सबसे ऊंचे पहाड़ों पर पांच दिनों में चढ़ाई कर सकता था, तो शायद मुझमें पांच सबसे ऊंची चोटियों पर भी उतने ही प्रभावशाली समय में चढ़ाई करने की क्षमता थी: एवरेस्ट, के2, कंचनजंगा, ल्होत्से और मकालू, मान लीजिए अस्सी दिनों में? यह विचार हफ्तों तक मेरे मन में घूमता रहा जब तक कि मैंने इस पर अमल करने का फैसला नहीं कर लिया।

मुझे पता था कि मुश्किलें तो आएंगी ही। घर लौटने पर मुझे एहसास हुआ कि इतने बड़े प्रोजेक्ट के लिए ज़रूरी छुट्टी मिलने की संभावना बहुत कम है, लेकिन फिर भी मैंने कोशिश करने का फैसला किया। जब मुझसे अनुरोध किया गया, तो मैंने अपनी बात मनवाने की पूरी कोशिश की। मैंने वरिष्ठ अधिकारी को युद्ध के दौरान और युद्ध के बाहर अपने शानदार रिकॉर्ड और पर्वतारोहण में बढ़ती विशेषज्ञता की याद दिलाई। मैंने G200E के साथ अपने काम का भी ज़िक्र किया। और यह भी कि मैंने उन विश्व रिकॉर्डों के साथ SBS का नाम और भी बुलंद किया था?

मेरे वरिष्ठ अधिकारी ने अभियान योजना पर संदेह भरी नजर डाली। मुझे पता चल गया था कि नकारात्मक प्रतिक्रिया आने वाली है।

'के2 पर चढ़ाई, निम्स? वहां हर चार में से एक व्यक्ति की मौत हो जाती है। कंचनजंगा पर तो

यह आंकड़ा हर सात में से एक है,' उन्होंने कहा। 'यह बहुत बड़ा प्रोजेक्ट है। और ऐसा नहीं है कि आप यहां सिर्फ एक पहाड़ पर चढ़ रहे हैं। आपको ग्यारह या बारह हफ्तों में एक के बाद एक कई पहाड़ों पर चढ़ना है। क्या यह संभव भी है?'

मैंने उसकी साहसिक भावना को जगाने की कोशिश की। मैंने कहा, 'जब मैं गोरखा था, तब मैं वास्तव में स्पेशल फोर्सेज में शामिल होना चाहता था। पैसे या नाम के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि मैं सर्वश्रेष्ठ लोगों के बीच काम करना चाहता था। जब बाकी सबने हार मान ली थी, तब मैंने जी200ई पर निशाना साधा था। उसके बाद मैंने एसबीएस का नाम रोशन किया। अब मैं यही करने की कोशिश करना चाहता हूं।'

अधिकारी ने सिर हिलाया। उन्होंने समझाया कि इतनी छुट्टी मंजूर करना नामुमकिन है। यह बहुत जोखिम भरा है। साथ ही, अगर यह बात पता चल जाए कि स्पेशल फोर्सेज का कोई जवान पाकिस्तान और चीन की सीमा पर स्थित के2 पर्वत पर चढ़ रहा है, तो इससे आतंकवादी हमला हो सकता है। 'यह मुमकिन ही नहीं है, निम्स,' उन्होंने कहा।

मैं निराश महसूस कर रहा था, लेकिन मैं अपने सपने को छोड़ने वाला नहीं था और अभियान की उम्मीदों को लेकर महीनों तक मेरा मनमुटाव चलता रहा। कुछ दिनों मुझे लगा कि उच्च कमान शायद नरम पड़ रही है। दूसरे दिनों उनका विरोध बढ़ता ही गया, अंततः मैंने फैसला किया कि मैं खुद ही इस मामले को अपने हाथ में लूंगा।

'बस, अब हो गया,' मैंने सोचा। 'मैं नौकरी छोड़ रहा हूँ।'

मुझे आज़ादी का एहसास हुआ। उस समय मेरी उम्र पैंतीस वर्ष थी और मैं जानता था कि सैन्य सेवा से इस्तीफा देकर मैं खुद को एक नई चुनौती का सामना करने का मौका दूंगा, जिसमें मैं बड़े और साहसिक कदम उठा सकूंगा। तो अस्सी दिनों में पाँच सबसे ऊँची चोटियों पर चढ़ने के बजाय, चौदह डेथ ज़ोन पर्वतों पर सबसे कम समय में चढ़ाई करने से मुझे क्या रोक रहा था? मुझे ज़्यादा बाधाएँ नज़र नहीं आ रही थीं। बस राजनीति या पैसा। या शायद हिमस्खलन, या कोई गहरी खाई, अगर मैं बहुत बदकिस्मत हुआ तो।

गोरखाओं के खून में निडरता कूट-कूटकर भरी थी, इसलिए अन्नपूर्णा पर्वत पर हिमस्खलन से मेरी जान जाने की पूरी संभावना थी, जैसा कि दर्जनों अन्य लोगों के साथ हो चुका था, फिर भी मैं इस बारे में ज्यादा चिंता नहीं कर रहा था। वैसे, चौदह डेथ ज़ोन चोटियों पर चढ़ाई से जुड़े खतरे सहने योग्य थे: मैंने खराब मौसम और गहरी बर्फ में काम करना सीख लिया था; मैं बिना किसी डर के प्रभावी ढंग से काम कर सकता था। आखिर कायर होने से बेहतर है मर जाना। साथ ही, तीस की उम्र में संन्यास लेने का विचार मुझे भा रहा था। अस्सी साल की उम्र तक, जब मैं खुद की देखभाल करने में असमर्थ हो जाता, तब तक काम करते रहना मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। मैं पूरी ऊर्जा के साथ संन्यास लेना चाहता था।

हालांकि, इस अभियान के राजनीतिक और आर्थिक पहलू बिल्कुल अलग कहानी थे। कागजी कार्रवाई और परमिट के लिए आवेदन करने पड़ते, खासकर चीनी और तिब्बती अधिकारियों से, जिन्होंने 2019 के पूरे पर्वतारोहण सत्र के लिए शिशपंगमा पर्वत श्रृंखला को बंद कर दिया था। फिर खर्चों की बात आती है। डेथ ज़ोन की सभी पर्वत चोटियों पर चढ़ाई करने के लिए कम से

कम 750,000 पाउंड की आवश्यकता थी, शायद इससे भी अधिक, इसलिए मुझे कई प्रायोजकों से संपर्क करना पड़ा, साथ ही वैकल्पिक वित्तपोषण विकल्पों की भी तलाश करनी पड़ी। लेकिन फिलहाल, सैद्धांतिक रूप से, मेरा मुख्य मिशन इतना रोमांचक था कि मैं सेना छोड़ने के बारे में सोच रहा था। अगर मुझे विश्वास था कि चौदह 8,000 मीटर ऊंची चोटियों पर एक के बाद एक चढ़ाई करने का मेरा लक्ष्य हासिल किया जा सकता है, तो यह हासिल किया जा सकता था।

मेरे प्रशिक्षण और युद्ध के अनुभव के हर पहलू ने मुझे यही सिखाया था। गोरखाओं के साथ सेवा करते हुए, मुझे लगातार अपने आरामदायक माहौल से बाहर निकलकर अत्यधिक पीड़ा के क्षणों का सामना करना पड़ा था। अंततः मानसिक शक्ति शारीरिक शक्ति से अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हुई। इसी प्रकार, ब्रिटिश स्पेशल फोर्सेज में, जहाँ मेरे प्रशिक्षण ने मुझे सिखाया था कि मैं अपने द्वारा पहले से निर्धारित किसी भी मनोवैज्ञानिक सीमा को कैसे पार कर सकता हूँ। ऊँचाई वाले अभियानों की एक श्रृंखला की योजना बनाना चुनौतीपूर्ण था, लेकिन पहाड़ों में अपने काम के दौरान, मैंने पर्वतारोहण समुदाय में कई संपर्क बना लिए थे। मेरे पास इसे सफल बनाने के लिए कौशल और संपर्क दोनों थे।

एक दोपहर घर पर मैंने अपना लैपटॉप खोला, यह जानने की उम्मीद में कि इस तरह के अभियान में कितना समय लग सकता है। इंटरनेट पर सरसरी नज़र डालने पर पता चला कि लगभग चालीस अन्य पर्वतारोही चौदह 8,000 मीटर ऊँची चोटियों पर चढ़ाई कर चुके थे। बेशक, वर्तमान विश्व रिकॉर्ड धारक किम चांग-हो का नाम भी था, जिन्होंने 2013 में सात साल, दस महीने और छह दिन का समय लिया था। पोलैंड के जेरज़ी कुकुज़्का भी उनसे ज़्यादा पीछे नहीं थे, जिन्होंने 1987 में सात साल, ग्यारह महीने और चौदह दिन का समय लिया था। हालांकि, वे दिग्गज इतालवी पर्वतारोही रेनहोल्ड मेसनर के बाद सभी 8,000 मीटर ऊँची चोटियों पर चढ़ाई करने वाले दूसरे पर्वतारोही थे, जिन्होंने 1986 में असंभव माने जाने वाले शिखर को तोड़ दिया था।

तो, प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागी अपेक्षाकृत कम थे, लेकिन प्रभावशाली थे, और औसतन, कुछ वर्षों का समय ही सबसे संभावित लग रहा था। जिस तरह से मैंने पाँच दिनों में एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर चढ़ाई की थी - और साथ ही दो सप्ताह में धौलागिरी पर भी - उसे देखते हुए, मेरे लिए इससे भी कम समय में चढ़ाई करना संभव था। बस सवाल यह था कि कितना कम समय में।

मैंने व्यावहारिक अनुमान लगाया। ठीक है, तो कोई फंडिंग नहीं है। पैसे जुटाने में थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन अगर मैं शुरुआती अभियानों के लिए नेपाल में ही रहूँ, तो सब ठीक रहेगा। साथ ही, वहाँ मेरे बहुत सारे संपर्क हैं।

मैंने उन पहाड़ों की सूची बनाई जिन पर मुझे चढ़ना था: अन्नपूर्णा, धौलागिरी, कंचनजंगा, एवरेस्ट, ल्होत्से, मकालू और मनास्लु। . .

पाकिस्तान में स्थिति बिलकुल अलग होगी। पर्वतीय आधार शिविरों के बीच की यात्रा लंबी होती है और मौसम का पूर्वानुमान लगाना बेहद मुश्किल होता है।

नांगा पर्वत, गाशेरब्रुम प्रथम और द्वितीय, के2, ब्रॉड पीक...

लेकिन तिब्बत में कागजी कार्रवाई और परमिट प्राप्त करने में आपको अधिक समय लग सकता है।

चो ओयू, और शीशपंगमा...

मैंने इससे पहले सिर्फ चार पहाड़ ही चढ़े हैं... तो सात महीने कैसे रहेंगे? इतने समय में चौदहों पहाड़ चढ़ जाएंगे, कुछ हफ़्ते कम या ज़्यादा हो सकते हैं।

विश्व रिकॉर्ड से सात साल कम करने का बुनियादी लक्ष्य महत्वाकांक्षी था, लेकिन मैं जल्द ही इस विचार से सहमत हो गया। मूल उद्देश्य था मौसम चाहे जैसा भी हो, निम्स शैली में जितनी जल्दी हो सके चढ़ाई करना। लेकिन इसके पीछे एक से अधिक प्रेरणाएँ थीं। हाँ, मैं अपने लिए पहले से निर्धारित सभी शारीरिक और भावनात्मक सीमाओं को पार करना चाहता था, लेकिन मेरा गृह देश नेपाल जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों का सामना कर रहा था। क्षेत्र में बाढ़ और पिघलते ग्लेशियरों के बारे में दुनिया को जागरूक करना भी एक प्राथमिकता थी, साथ ही पर्वतीय समुदायों में रहने और काम करने वाले लोगों की दुर्दशा पर प्रकाश डालना भी।

लेकिन सबसे बढ़कर, मुझे नियमों को तोड़ देने का विचार बहुत पसंद था। अगर मैं बच्चों और बड़ों, दोनों को यह दिखा सकूँ कि इंसान क्या हासिल कर सकता है, तो मेरी ये बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाएँ दूसरों को भी बड़ा सोचने के लिए प्रेरित कर सकती हैं; खुद को उन तरीकों से आगे बढ़ाने के लिए जो पहले अकल्पनीय माने जाते थे। साथ ही, इससे यह भी अच्छा था कि मैं दुनिया को एक ऐसी अनोखी कहानी दे सकूँ जिसे सब याद रखें।

मैंने अपने इस महान मिशन को एक नाम दिया – प्रोजेक्ट पॉसिबल। फिर मैंने एक रणनीति तैयार की, ताकि संदेह करने वालों का सामना करने के लिए मैं तैयार हो सकूं।

*

एसबीएस छोड़ने के समय एक चिंताजनक बात मनोवैज्ञानिक सुरक्षा थी। यह बात विडंबनापूर्ण लग रही थी क्योंकि मैंने हर गश्त या जबरन वसूली अभियान के दौरान अपनी जान जोखिम में डाली थी, लेकिन सोलह वर्षों तक ब्रिटिश सेना ही मेरा सब कुछ थी। उन्होंने मुझे बताया था कि मुझे कहाँ और कब रहना है, और उन्होंने ही मुझे घर और एक नियमित दिनचर्या प्रदान की थी। हाँ, नौकरी खतरनाक और बहुत तनावपूर्ण थी, लेकिन इसमें कुछ सुकून देने वाली परिचितताएँ भी थीं, यहाँ तक कि युद्ध के दौरान भी, जहाँ मुझे एक ढाँचा, लक्ष्य और वफादारी प्राप्त थी। कभी-कभी, जब मैं अपनी विदाई की योजना बना रहा था, तो मुझे चिंता होती थी कि क्या मैंने बदले में महारानी और राजशाही के लिए पर्याप्त काम किया है।

स्पेशल फोर्सेज से इस्तीफा देने का दूसरा चिंताजनक पहलू मेरी पेंशन थी। यह मेरे जीवन को बदलने वाली एक बड़ी रकम थी और इसे पाने के लिए मुझे बस कुछ ही साल और सेवा करनी थी। अभी छोड़ने का मतलब था सब कुछ खो देना, जो एक चिंता की बात थी और एक वित्तीय तनाव था जिसे मुझे आगे चलकर संभालना पड़ता।

अपनी शंकाओं को दरकिनार करते हुए, 19 मार्च 2018 को रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट पर

लॉग इन करके मैंने अपना इस्तीफा दे दिया। मेरा नोटिस पीरियड एक साल का था और शुरू में स्क्वाड्रन के कुछ साथियों ने मेरा मन बदलने की कोशिश की; उच्च कमान ने मुझे शीत-मौसम युद्ध प्रशिक्षक के पद पर पदोन्नत भी कर दिया, एक विषय विशेषज्ञ (एसएमई) के रूप में, जहाँ मेरी भूमिका अन्य ऑपरेटरों को पहाड़ चढ़ना, ऊँचाई पर कठोर परिस्थितियों में जीवित रहना और चुनौतीपूर्ण इलाकों में स्कीइंग करना सिखाने की थी। यह एक प्रतिष्ठित जिम्मेदारी थी। इसका मतलब था कि मुझे स्क्वाड्रन में सर्वश्रेष्ठ पर्वतारोही माना जाता था।

लेकिन प्रचार के लिए दबाव बनाना काफी नहीं था। मुझसे फिर अपने इस कदम से जुड़ी व्यावहारिक चुनौतियों पर विचार करने को कहा गया और यह तर्क दिया गया कि इस्तीफा देकर मैं उस तरह की आर्थिक सुरक्षा खो दूंगा जो वास्तविक दुनिया में अधिकांश लोगों को आकर्षित करती। लेकिन मैं उन लोगों जैसा नहीं था; वास्तविक दुनिया के बारे में मेरा नज़रिया अलग था। मेरा पालन-पोषण नेपाल में एक गरीब बच्चे के रूप में हुआ था। अगर सचमुच ज़रूरत पड़ती, तो बाकी जीवन तंबू में गुजारने में मुझे कोई परेशानी नहीं होती। हालांकि, सबसे बड़ा आश्चर्य तब हुआ जब एसएएस को मेरे इस्तीफे की योजना के बारे में पता चला और उन्होंने मुझे अपने अड्डे पर एक बैठक के लिए आमंत्रित किया। तब एक अधिकारी ने मुझसे पूछा कि क्या मैंने कभी रेजिमेंट बदलने पर विचार किया है।

मेरे रिकॉर्ड देखते हुए उन्होंने कहा, 'निम्स, जी200ई और एमबीई के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। पहाड़ों पर आपकी खूबियां तो हम जानते ही हैं। अगर आप एसएएस में शामिल होते हैं, तो हम आपका पूरा ख्याल रखेंगे। हम आपको बेहतर अवसर देंगे, जिससे आपको और आपके परिवार को फायदा होगा।'

फिर उसने मुझे एक बड़ा लालच दिया। उसने मुझे एक प्रतिष्ठित, एक वर्षीय पर्वतारोहण कार्यक्रम में जगह दिलाने का वादा किया, जिसमें मैं पूरी तरह से ऊँचाई पर काम करने पर ध्यान केंद्रित कर सकूँगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मुझे उपकरण और यात्रा के लिए बजट भी दिया जाएगा। यह एक सपनों जैसा अवसर था, लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल था, स्पेशल फोर्सेज के दो विभागों के बीच आना-जाना मुझे विश्वासघात जैसा लगता था, जैसे किसी स्थानीय प्रतिद्वंद्वी फुटबॉल टीम में शामिल होने के लिए अपनी एक टीम को छोड़ देना। मैं किसी भी कीमत पर एसबीएस के जवानों को इस तरह निराश नहीं करना चाहता था।

अंततः मैंने कहा, 'मैं सचमुच बहुत आभारी हूँ कि आप लोगों ने मुझमें कुछ देखा। और मुझे ये अवसर देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद... लेकिन मैंने कभी जनरल बनने या पैसे के लिए स्पेशल फोर्सेस में भर्ती नहीं हुआ। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना मुझे अच्छा लगता है और वैसे भी, मैं टीम नहीं बदल सकता था।'

उनका जवाब संक्षिप्त और तीखा था। एसएएस कमांडर ने कहा, 'तुम वफादार हो, जो प्रशंसनीय है। लेकिन तुम बिलकुल पागल हो।'

मैंने कंधे उचकाकर मुलाकात के लिए धन्यवाद दिया, लेकिन मैं दुविधा में था। बैरक से निकलते समय, यह सोचना मुश्किल था कि क्या मैंने गलत फैसला लिया है। अगर मैं यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेता, तो मैं एसएएस और एसबीएस दोनों में सेवा देने वाला पहला ऑपरेटर होता।

मुझे बहुत सम्मान मिलता। अगले कुछ दिनों तक मैं अपने फैसले पर संदेह करता रहा, वहीं सुची ने हेरेफोर्ड में अपने लिए उपयुक्त नौकरी के अवसरों की ऑनलाइन खोज शुरू कर दी। अंत में, मैं अपनी मूल योजना पर अडिग रहा: मैं ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ना चाहता था।

मेरे दोस्त और परिवार वाले भी उतने ही असमंजस में थे। उनके लिए, यह उनके करियर में हो रहे उन घटनाक्रमों की लंबी कड़ी में एक और घटना थी, जिन्हें वे समझ से परे मानते थे। मेरे भाई जल्द ही मुझ पर एहसानफरामोशी का आरोप लगाने लगे। उनका कहना था कि अगर उन्होंने मेरी पढ़ाई के लिए चितवन में पैसे न भेजे होते, तो मैं अंग्रेज़ी न सीख पाता। अंग्रेज़ी के बिना, ब्रिटिश सेना में भर्ती होना तो लगभग नामुमकिन था। यह सब सच था, मैं उनका बहुत ऋणी था, और तभी कमल ने मुझे अलग ही मूड में फोन किया। वह मेरी योजनाओं को समझ नहीं पा रहा था।

'भाई, हर कोई स्पेशल फोर्सेज में जाना चाहता है,' उसने कहा। 'तुम वहाँ हो, लेकिन तुम इससे मुँह मोड़ रहे हो। तुमने दस साल युद्ध में बिताए और अब तुम शीत युद्ध प्रशिक्षक के रूप में कमान संभाल रहे हो। तुम्हें युद्ध में अपनी उंगलियाँ, पैर की उंगलियाँ और आँखें गंवाए बिना अच्छी पेंशन मिलेगी, लेकिन इतनी मेहनत के बाद, तुम सब कुछ छोड़ जाओगे? ये क्या बकवास है?'

'कमल, यह मेरे बारे में नहीं है,' मैंने कहा। 'यह तुम्हारे बारे में भी नहीं है, न ही परिवार के बारे में। हम एक विशाल वैश्विक समुदाय का एक छोटा सा हिस्सा हैं और मेरे पास इसे करने के लिए ज्यादा समय नहीं है – मेरी उम्र बढ़ती जा रही है। लेकिन अगर मैं अभी कुछ बदलाव ला सकता हूँ और दुनिया को दिखा सकता हूँ कि ऊँचाई पर क्या किया जा सकता है, तो यह सार्थक होगा।'

हमने दो महीने तक दोबारा बात नहीं की।

मेरे पारिवारिक जीवन में आर्थिक ज़िम्मेदारी भी बहुत थी। नेपाल में कुछ परिवारों का मानना था कि अगर माता-पिता कभी दिवालिया हो जाएं या बुढ़ापे में खुद की देखभाल करने में असमर्थ हो जाएं, तो सबसे छोटे बेटे को ही उनकी देखभाल करनी चाहिए। माँ और पिताजी को पैसों की बहुत ज़रूरत थी, और कमल और गंगा ने यथासंभव उनकी मदद की थी, लेकिन अब उन्हें अपने परिवारों की भी देखभाल करनी थी। गोरखा सेना में शामिल होने के बाद से, मैं हर महीने अपने माता-पिता को अपनी तनख्वाह का एक हिस्सा भेजता था क्योंकि वे ही मेरी दुनिया थे, लेकिन हाल ही में माँ बहुत बीमार हो गई थीं।

उन्हें हृदय रोग था और एक समय ऐसा भी आया जब उन्हें स्टेंट लगवाने के लिए सर्जरी करानी पड़ी। इसके बाद गुर्दे खराब हो गए और माँ को अक्सर इलाज के लिए अस्पताल जाना पड़ता था, अंततः उन्हें स्थायी रूप से काठमांडू के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया। (चितवन में कोई उपयुक्त क्लिनिक नहीं था।) मेरे पिताजी, जो आधे लकवाग्रस्त थे, शहर में उनसे मिलने नहीं आ पाते थे और मेरा सबसे बड़ा लक्ष्य उन्हें फिर से एक ही घर में साथ लाना था, लेकिन प्रोजेक्ट पॉसिबल के शुरू होने के कारण, यह सब कुछ समय के लिए रुकने वाला था।

जब मैंने उन्हें यह खबर सुनाई, तो पहले तो वे परेशान हो गए। हम धौलागिरी के इतने करीब रहते थे कि बेस कैंप जाते और आते समय हमारे गाँव से गुजरने वाले पर्वतारोहियों से अक्सर हमारी बातचीत हो जाती थी। कभी-कभी ऊपर जाते समय गुजरने वाले समूहों की संख्या वापसी

यात्रा के दौरान काफी कम हो जाती थी, और माँ को एक घटना याद है जब उनकी मुलाकात स्थानीय चाय की दुकान में दो पर्वतारोहियों से हुई। वे रो रहे थे। जब उन्होंने बताया कि उनके कुछ दोस्त पहाड़ पर मारे गए हैं, तो उन्हें यह खबर सुनकर बहुत दुख हुआ।

कई साल बाद, 2014 और 2015 में एवरेस्ट पर हिमस्खलन के दौरान इतने सारे लोगों की दुखद मौत के बारे में सुनकर, मेरे पर्वतारोहण के विचार से ही वह भयभीत हो जाती थी। जब भी मैं उसे अपने फोन पर किसी अभियान का वीडियो दिखाता, वह सिहर उठती थी। खुंबू आइसफॉल में एक दरार वाली सीढ़ी पर चढ़ते हुए मेरी तस्वीरें तो मानो उसे और भी बेचैन कर देती थीं। माँ जानना चाहती थी कि मेरी नई योजना क्या है।

'तो, माँ, आपको दुनिया के चौदह सबसे बड़े पहाड़ों के बारे में पता है?'

उसने सिर हिलाया। 'उनमें से कुछ।'

माँ ने कुछ नाम गिनाए। एवरेस्ट, धौलागिरी। और हाँ, अन्नपूर्णा भी। 'लेकिन इसका तुमसे क्या लेना-देना है?'

वह चिंतित थी। क्या उसका सबसे छोटा बेटा अपना मानसिक संतुलन खो रहा था?

'ओह, निर्मल,' उसने कहा। 'क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि हम बहुत बीमार हैं और हमारी देखभाल करना इतना बोझ है? मुझे लगता है कि तुम यह इसलिए कर रहे हो क्योंकि तुम आत्महत्या करना चाहते हो।'

'यह बढ़िया है, माँ,' मैंने कहा। 'मैं यह करके रहूँगी, मैं दुनिया को दिखाऊँगी कि मैं क्या कर सकती हूँ – हम सब क्या कर सकते हैं, अगर हम किसी चीज़ को करने की ठान लें। और मैं पहले से ज़्यादा मज़बूत होकर लौटूँगी। मैं एक अलग निम्स बनूँगी।'

वह मुस्कुराई। 'तुम वैसे भी हमारी बात नहीं सुनते, इसलिए मुझे पता है कि तुम वही करोगे जो हम कहेंगे, लेकिन हमारी दुआएं तुम्हारे साथ हैं।'

हालांकि, मेरे परिवार की चिंताएँ ही एकमात्र भावनात्मक बाधा नहीं थीं। जब भी मैं प्रोजेक्ट पॉसिबल के बारे में बात करता, दोस्त हँसते; साथी ऑपरेटर मज़ाक उड़ाते। यह ठीक ही था, लक्ष्य कठिन, यहाँ तक कि अवास्तविक भी माना जाता था, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि इससे पहले किसी ने भी ऐसा कुछ हासिल नहीं किया था। लेकिन फिर, अंतरिक्ष यात्रा और चार मिनट में एक मील दौड़ना, दोनों को भी उनके साकार होने से पहले असंभव माना जाता था। बीसवीं सदी की शुरुआत में, किसी के चाँद पर कदम रखने का विचार एक ऐसी कल्पना थी जिसे बच्चे केवल जूल्स वर्न के उपन्यासों में ही पढ़ते थे। अगर किसी ने युवा नील आर्मस्ट्रांग को, जो उस समय महानता की दहलीज पर खड़ा एक परीक्षण पायलट था, बताया होता कि उसका सपना पूरा नहीं हो सकता, तो क्या वह सुनता? बिलकुल नहीं।

बेशक, असफल होने की संभावना थी, जैसा कि चंद्रमा पर उतरने के दौरान हुआ था। निश्चित रूप से, रास्ते में मेरी जान जाने की संभावना बहुत कम थी। गड़बड़ी होने के बाद, लोग या तो मुझ पर हंसेंगे, या कहेंगे, 'मैंने उसे पहले ही चेतावनी दी थी।' लेकिन कम से कम मैं यह सोचते हुए नहीं मरूंगा कि 'काश ऐसा होता?'

और अगर मैं ऐसा कर पाया तो... फिर क्या होगा?

सबसे बड़ा दांव

रक्षा मंत्रालय द्वारा मेरा एक साल का नोटिस स्वीकार होते ही, मैंने दो योजनाएँ शुरू कर दीं। पहली योजना थी प्रोजेक्ट पॉसिबल के लिए अपनी ऑपरेशनल टीम को संगठित करना। मैंने नेपाली पर्वतारोहियों की एक टीम बनाई, जिनके बारे में मुझे पूरा भरोसा था कि वे चौदह चोटियों पर लगभग एक साल तक मेरा साथ देने में सक्षम होंगे। मैंने पिछले पाँच पर्वतारोहण सत्रों की मौसम रिपोर्टों के आधार पर यह तय किया कि किन पहाड़ों पर कब चढ़ाई करनी है।

प्रत्येक पर्वत की स्थलाकृतिक स्थितियों का आकलन करने के बाद, मैंने प्रोजेक्ट पॉसिबल को तीन चरणों में विभाजित करने का निर्णय लिया। पहला चरण नेपाल में होना था और मेरी योजना अप्रैल और मई के दौरान अन्नपूर्णा, धौलागिरी, कंचनजंगा, एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर्वतों पर चढ़ाई करने की थी। इसके बाद जुलाई में पाकिस्तान के नंगा परबत, गाशेरब्रुम प्रथम और द्वितीय, के2 और ब्रॉड पीक पर चढ़ाई का कार्यक्रम था। अंत में, मेरा उद्देश्य शरद ऋतु में मनास्लू पर्वत पर चढ़ाई के लिए नेपाल लौटना था, और फिर तिब्बत जाकर चो ओयु और शिशपंगमा पर्वतों पर चढ़ाई करना था। प्रत्येक पर्वत पर चढ़ाई के लिए आवश्यक परमिट प्राप्त करने हेतु कुछ कानूनी प्रक्रियाएँ आवश्यक थीं, लेकिन चीन और तिब्बत में यह प्रक्रिया विशेष रूप से जटिल होने वाली थी, क्योंकि शिशपंगमा पर्वत पर चढ़ाई 2019 तक बंद रहने की संभावना थी। मैंने इस समस्या के बारे में बाद में सोचने का निर्णय लिया।

मिशन की तैयारी करना मेरा पसंदीदा काम था, यह मेरे सैन्य जीवन का एक अभिन्न अंग रहा था, लेकिन संगठन प्रक्रिया का दूसरा हिस्सा मेरे पेशेवर कौशल से उतना मेल नहीं खाता था: मुझे एक परिचालन निधि जुटानी थी, जो एक चुनौतीपूर्ण कार्य था क्योंकि ऊँचाई वाले पहाड़ों पर चढ़ाई करना लंबे समय से एक महंगा खेल रहा है। अकेले 2019 में एवरेस्ट पर चढ़ाई की लागत 40,000 डॉलर से 150,000 डॉलर के बीच हो सकती थी और प्रोजेक्ट पॉसिबल को पूरा करने के लिए शुरुआती वित्तीय अनुमान बहुत ही डरावने थे - बिना मदद के मैं इस तरह का नकद भंडार जुटा ही नहीं सकता था।

मुझे पता चला था कि इस तरह की परियोजनाओं के लिए धन जुटाने के लिए मुझे कई प्रायोजन समझौतों पर निर्भर रहना होगा, जिनमें कंपनियां मेरी यात्रा का खर्च वहन करेंगी और बदले में जब भी मैं चौदह चोटियों में से किसी एक पर विजय प्राप्त करूंगा, उन्हें प्रचार और ब्रांडिंग के अवसर मिलेंगे। कुछ अतिरिक्त आय गाइड टूर से भी आएगी, और मेरा लक्ष्य था कि मैं

अनुभवी पर्वतारोहियों को प्रत्येक चरण के एक पर्वत की चोटी पर ले जाऊं, इस मामले में अन्नपूर्णा, नंगा पर्वत और मनास्लू।

काम अथक था। 2018 में चौदह अभियानों की योजना बनाते समय, मेरा एक मित्र वित्तीय सहायता जुटाने में लगा हुआ था। अपनी सैन्य जिम्मेदारियों के बीच, मैं बैठकों, योजना सत्रों और ट्रेन यात्राओं में खुद को पूरी तरह थका देता था, सप्ताह के सातों दिन लगातार काम करता रहता था। मानसिक रूप से, रसद संबंधी प्रयास उतने ही कठिन थे जितने कि चयन अभियान के दौरान थे। लेकिन ब्रेकोन बीकन्स की उन सुबहों की तरह, मैं हर दिन एक सकारात्मक सोच के साथ शुरुआत करता था: मैं यह कर सकता हूँ। मिशन में आने वाली लगभग हर समस्या का मैं समाधान निकाल लूँगा। मैं दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ चुका हूँ। अभी मेरे रास्ते में बस धन की कमी है। बस निकल पड़ो और कमाल कर दिखाओ।

जिस प्रकार गोरखाओं में शामिल होना, चयन परीक्षा उत्तीर्ण करना और एवरेस्ट पर चढ़ना मेरे लिए व्यक्तिगत देवताओं के समान थे, मेरे लिए प्रेरणा के स्रोत थे, उसी प्रकार धन जुटाना मेरे लिए एक नया और शक्तिशाली आदर्श बन गया। मैंने उन्हें अपना सब कुछ समर्पित कर दिया।

मेरी अगली ज़िम्मेदारी नकदी जुटाने की प्रक्रिया में मदद करना थी और एक व्यापारिक साझेदार – एक गुमनाम सहयोगी – के साथ मिलकर हमने निवेश के लिए कई संपर्कों से संपर्क किया। मैं जानता था कि प्रोजेक्ट पॉसिबल को एक आकर्षक प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत करने के लिए, मिशन के बारे में कुछ साहसिक बयान देना महत्वपूर्ण था, कुछ ऐसा जो सुर्खियाँ बटोरें और लोगों को चर्चा करने पर मजबूर कर दे।

विश्व रिकॉर्ड तोड़ने की अपनी सफलता से उत्साहित होकर, मैंने और भी नए रिकॉर्ड बनाने का इरादा ज़ाहिर किया। पहला रिकॉर्ड ज़ाहिर तौर पर चौदह 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर चढ़ने की गति से संबंधित था, और मुझे पूरा विश्वास था कि एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर अपना व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन तोड़ना संभव है। (और इसके साथ ही एवरेस्ट के शिखर से ल्होत्से के शिखर तक पहुँचने का सबसे तेज़ समय का रिकॉर्ड भी तोड़ना संभव था।) लेकिन मैंने यह भी बताया कि मेरा इरादा पाकिस्तान की 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर चढ़ने का विश्व का सबसे तेज़ समय का रिकॉर्ड तोड़ने के साथ-साथ दुनिया की पाँच सबसे ऊँची चोटियों - कंचनजंगा, एवरेस्ट, ल्होत्से, मकालू और के2 - पर चढ़ने में लगने वाली गति का रिकॉर्ड तोड़ने का भी था।

मेरी महत्वाकांक्षाओं पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया - शायद लोगों को लगा कि मैं मजाक कर रहा हूं - और कई महीनों तक बैठकों और फोन कॉलों के सिलसिले में व्यस्त रहने के बाद, मुझे एक करारा झटका लगा।

मेरे सहयोगी ने उदास होकर कहा, 'निम्स, हमने तो बस नाममात्र का पैसा जुटाया है। और हालात अच्छे नहीं लग रहे हैं।'

वह सही था, बैंक में कुछ भी नहीं था और पहला चरण तो पहले से ही नाकाम लग रहा था। मैं मुश्किल में था। या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा। मैंने तुरंत अपनी रणनीति बदल दी और धन जुटाने का काम खुद संभालने का फैसला किया क्योंकि दिनचर्या और भी व्यस्त हो गई थी। ज़्यादातर सुबह मैं 4 बजे उठता, कुछ घंटे सोशल मीडिया पर काम करता और फिर दक्षिण तट से

लंदन जाने वाली सुबह 7 बजे की ट्रेन पकड़ने के लिए भागता। आमतौर पर मैं दिन में लगभग चार या पाँच मीटिंग करता, जिनमें मुझे झूठे वादे और सीधे-सीधे अस्वीकृतियाँ मिलती थीं। कभी-कभार जब मेरा काम आधी रात से पहले खत्म हो जाता, तो मैं अपना कंप्यूटर खोलकर कई फॉलो-अप ईमेल लिखता और फिर इंस्टाग्राम या फेसबुक पर एक और सेशन के साथ दिन खत्म करता।

उस समय मुझे तकनीकी जानकारी बहुत कम थी। प्रोजेक्ट पॉसिबल से संबंधित कुछ पोस्ट तैयार करने, उनमें प्रासंगिक लिंक और हैशटैग जोड़ने में ही कभी-कभी मुझे पूरे दो घंटे लग जाते थे। काम बोझिल लगता था, और कई बार मैं अपनी निराशा ऑनलाइन व्यक्त करता था:

> प्रोजेक्ट पॉसिबल: 14/7 के लिए फंड जुटाने के अभियान में आज एक और संघर्ष का दिन है। फंड जुटाने का यह सफर मेरे लिए बेहद मुश्किल रहा है, और यह मेरा विशेषज्ञता का क्षेत्र भी नहीं है। मैं जिससे भी संपर्क करता हूँ, वे कहते हैं, 'निम्स, अगले साल क्यों नहीं? अगर हम इसे अगले साल करेंगे, तो हमारे पास फंड जुटाने के लिए पर्याप्त समय होगा।' मेरा जवाब हमेशा एक ही होता है: अगले साल करने की बात कहकर हम आसान रास्ता चुन रहे हैं।

कुछ महीनों तक आर्थिक सहायता के नाम पर कुछ भी नहीं आया। 2019 की शुरुआत तक, समय कम होता जा रहा था और मैं किसी भी संभावित प्रायोजक को अपनी क्षमताओं के बारे में आश्वस्त नहीं कर पा रहा था। अक्सर बैठकें "धन्यवाद, लेकिन नहीं" कहकर टाल दी जाती थीं। उनका तर्क था कि मैं जो करना चाहता हूँ, वह मानवीय रूप से संभव नहीं है और कुछ लोगों ने तो मेरी योजनाओं का मज़ाक भी उड़ाया। मैं मुश्किल दौर से गुज़र रहा था। सेना छोड़ने के बाद मेरी आमदनी कम हो गई थी, लेकिन घर में तंगी के बावजूद सुची ने मेरा साथ दिया। उन्होंने कभी भी मुझ पर भावनात्मक दबाव नहीं डाला, जबकि मेरे सारे प्रयास एक ऐसे प्रोजेक्ट में लग रहे थे जिससे घर में कोई आमदनी नहीं हो रही थी – कम से कम थोड़े समय के लिए तो नहीं। मुझे राहत की सांस लेने का मौका मिला, इसके लिए मैं उनका आभारी था।

प्रोजेक्ट पॉसिबल के वित्तीय संगठन में मेरी बदलती भूमिका के परिणाम समस्याग्रस्त थे, लेकिन संभालने योग्य थे। काम ने मुझे थका दिया और अंतहीन कार्यों की सूची से ध्यान हटाना बहुत मुश्किल हो गया। मानसिक रूप से मैं थोड़ा परेशान महसूस कर रहा था, लेकिन सुची से अपने तनाव के बारे में बात करने के बजाय, यह जताना आसान लग रहा था कि सब कुछ ठीक चल रहा है। मैं अपनी तनावग्रस्त ऊर्जा उसे देना बिल्कुल नहीं चाहता था, इसलिए मैं सुबह एक या दो बजे चुपके से बिस्तर से उठकर उसके सोते समय किसी और ईमेल या पत्र पर काम करने लगता था।

मेरे लिए गति धीमी करना असंभव था, क्योंकि मेरे अंदर इस मिशन के प्रति अपार लगन थी। साथ ही, छोड़ने का ख्याल भी मेरे मन में कभी नहीं आया, क्योंकि मैं संभावित निवेशकों या प्रायोजकों को अनजाने में कोई नकारात्मक संदेश नहीं देना चाहता था।

दूसरों में विश्वास जगाने के लिए, यह ज़रूरी था कि मैं खुद पर विश्वास बनाए रखूँ। लेकिन कई बार यह बेहद कठिन काम साबित होता था।

*

प्रोजेक्ट पॉसिबल के लिए पर्याप्त धनराशि जुटाने के सभी प्रयास विफल रहे और मैं एक ऐसे मोड़ पर पहुँच गया था जहाँ मुझे या तो मिशन छोड़ना था या आगे बढ़ना था। कुछ समय बाद आशा की किरण जगी। एसबीएस के एक मित्र के माध्यम से, मेरी मुलाकात एक इच्छुक व्यापारिक साझेदार से हुई। वह मेरे जुनून को समझ गया और उसने तुरंत योजना निधि में 20,000 पाउंड देने का वादा किया; बाद में मैंने एक कॉर्पोरेट कार्यक्रम में भाषण दिया और दस हज़ार पाउंड और कमा लिए। यह तो समुद्र में एक बूंद के बराबर था, क्योंकि मुझे लगभग साढ़े सात लाख पाउंड जुटाने थे, लेकिन यह पैसा कुछ प्रगति का प्रतीक था।

वहीं से, एलीट हिमालयन एडवेंचर्स ने प्रोजेक्ट पॉसिबल के दौरान निजी ग्राहकों को मेरे साथ अन्नपूर्णा पर्वतारोहण में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया और मैंने एक गोफंडमी पेज बनाया, इंस्टाग्राम पर दैनिक अपडेट और लोगों के बीच चर्चा के माध्यम से अपने फॉलोअर्स और दानदाताओं को बढ़ाया। सेना के एक अन्य मित्र, एंट मिडलटन ने भी 25,000 पाउंड का दान दिया। वह पहले गोरखा रेजिमेंट के प्रबल समर्थक थे और हमने एक ही विशिष्ट स्क्वाड्रन में साथ-साथ सेवा की थी।

लेकिन फिर भी यह काफी नहीं था। पहले चरण की शुरुआत सुनिश्चित करने के लिए मुझे एक बड़ा और कष्टदायक बलिदान देना पड़ा: मुझे घर को दोबारा गिरवी रखना पड़ा और यही एकमात्र रास्ता था, क्योंकि मेरी सारी निजी बचत इस मिशन में लग चुकी थी। जबकि सेना से सेवानिवृत्त मेरे दोस्तों ने अपनी आमदनी और बचत से दो-तीन घर खरीद लिए थे और वे अच्छी जिंदगी जी रहे थे, मैंने अपनी बाकी सारी रकम पर्वतारोहण में लगा दी थी। यह एक ऐसा खर्च था जिसका लंबे समय में लाभ मिलना तय था, लेकिन अल्पकाल में यह एक महंगा सौदा साबित हुआ।

बहरहाल, दोबारा गिरवी रखना जोखिम भरा था, लेकिन मुझे पता था कि अगर मैं प्रोजेक्ट पॉसिबल को अंजाम दे पाता, तो सफलता के बाद मिलने वाले व्यावसायिक लाभ से मेरे लिए लिए गए किसी भी ऋण को चुकाने में मदद मिलेगी। मैं गाइड के तौर पर अच्छी फीस वसूलने की उम्मीद कर सकता था, और यह भी संभव था कि मैं स्पेशल फोर्सेज के अपने एक-दो दोस्तों की तरह आकर्षक आफ्टर-डिनर स्पीकर्स के दौर में शामिल हो जाऊं। हालांकि, असफलता के परिणाम बहुत गंभीर थे। अगर मैं तय समय में चौदहों चोटियों पर चढ़ाई नहीं कर पाता, तो लोग मुझे बड़बोला समझकर नज़रअंदाज़ कर देते और इसके बाद करियर में होने वाली संभावित तरक्की में भी देरी हो सकती थी।

पहले तो मैंने दोस्तों से मज़ाक में कहा था कि अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं बाकी ज़िंदगी तंबू में गुज़ार सकता हूँ... लेकिन मैं सच में ऐसा नहीं चाहता था। एक और कड़वी सच्चाई मेरे सामने आ गई थी। अगर मैं अपने मिशन से सही-सलामत वापस नहीं लौटा, तो मेरी नाकामी का सारा

आर्थिक बोझ सुची और उसके परिवार पर आ जाएगा। इस जोखिम भरे कदम को उठाने के लिए मुझे उसकी सहमति की ज़रूरत थी।

मुझे पूरा विश्वास था कि वह मेरा साथ देगी। सुची हमेशा से समझती थी कि मैंने देश की रक्षा के लिए सैन्य स्तर पर कितना शारीरिक और भावनात्मक बलिदान दिया है। वह यह भी जानती थी कि प्रोजेक्ट पॉसिबल अभी का मिशन था, क्योंकि हाल ही में युद्ध में शामिल होने के कारण मैं शारीरिक रूप से इतना फिट और मजबूत था कि काम पूरा कर सकूँ। अगले साल या यहाँ तक कि पाँच साल तक इंतज़ार करने से मेरे जीवित रहने और सफल होने की संभावना कम हो जाती। युद्ध में काम करने के बाद मैं मानसिक रूप से भी बहुत अच्छी स्थिति में था। मैंने सेवा के दौरान कुछ भयानक चीज़ें देखी थीं, क्रूरता और हिंसा के ऐसे कृत्य जिन्हें मैं कभी-कभी भूलना चाहता था, लेकिन मैं मानसिक रूप से स्थिर था और ज़्यादातर मामलों में, संघर्ष की भयावहता मुझ पर कोई असर नहीं डाल पाई थी।

मुझे लगता है कि एसबीएस से मेरी सेवानिवृत्ति का निर्णय स्वयं का था और मेरे पास एक ऐसा प्रोजेक्ट था जिसमें मैं अपना पूरा ध्यान लगा सकता था, इससे मुझे मदद मिली। कई जवानों को मजबूरन छोड़ना पड़ा, या तो चोट के कारण या इसलिए कि वे अब ऐसे काम को करने में सक्षम नहीं थे जिसमें अत्यंत एकाग्रता की आवश्यकता होती है। कई ऑपरेटर भावनात्मक रूप से टूट जाने के कारण स्क्वाड्रन से बाहर हो गए। ऐसे लोगों के लिए, एक नया जीवन खोजना - प्रतिबद्धता, एकता और उत्साह से भरा - युद्ध जितना ही चुनौतीपूर्ण हो सकता है। मैं भाग्यशाली था। मैंने नौकरी इसलिए छोड़ी क्योंकि मुझे एक नया जुनून सवार हो गया था और चौदह चोटियों पर चढ़ने के विचार ने मुझे हर दिन काम करने का एक मकसद दिया। बाद में, मैं उन लोगों के साथ एक मजबूत मित्रता बनाने में सक्षम रहा जिन्हें मैंने अपने साथ इस यात्रा में शामिल होने के लिए चुना था।

मैंने प्रकृति की उपचार शक्ति को भी समझा। बाहर रहना, ऊँचाई पर चढ़ाई करना, ऐसे वातावरण में जहाँ जाति, धर्म, रंग या लिंग का कोई भेदभाव नहीं होता, बहुत अच्छा लगता था। केवल मनुष्य ही भेदभाव करते हैं, पहाड़ निष्पक्ष होते हैं। वहाँ कोई भेदभाव नहीं होता। जब भी मेरे दोस्तों ने मुझसे अपनी गंभीर भावनात्मक समस्याओं के बारे में बात की, तो मैं उन्हें पहाड़ों पर ले गया। पहाड़ किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे अच्छी चिकित्सा का साधन थे। जब आप चढ़ाई की रस्सी और क्रैम्पोन के सहारे प्रकृति से जुड़े होते हैं, तो जीवन बहुत सरल लगता है।

इसलिए मैंने अपना अहंकार त्याग कर सुची से पूछ लिया।

मैंने कहा, 'मैंने इस सपने को अपना सब कुछ दे दिया है। इस प्रोजेक्ट के बिना मैं वो इंसान नहीं होता जो आज हूँ। अगर सबसे बुरा भी हुआ और मैं चौदह पहाड़ों पर चढ़ाई पूरी नहीं कर पाया, तो भी हम बाद में पर्वतारोहण कंपनी से अपना गुजारा चला सकते हैं। हम हर मुश्किल का सामना कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि अगर हम अब तक जीवन में जो कुछ भी हासिल किया है, सब कुछ खो दें और हमें फिर से शुरुआत करनी पड़े, तो भी हम ठीक रहेंगे।'

मैंने उसे जिन हालातों से गुज़ारा था, जैसे कि कई सालों तक विदेश में एक खतरनाक नौकरी में काम करना, या पहाड़ों पर चढ़ने के लिए जल्दी नौकरी छोड़ देना और भारी पेंशन ठुकरा देना,

इन सब के बाद यह एक बड़ा जोखिम भरा कदम था। लेकिन मेरे पास कोई और विकल्प नहीं बचा था। एक बड़े कर्ज़ के लिए अपने घर को गिरवी रखना ही मेरे लिए एकमात्र रास्ता था।

उसने मुझे सख्ती से देखा। 'ठीक है, निम्स,' उसने कहा। 'लेकिन तुम्हारा जवाब सही होना चाहिए।'

यह जानकर मुझे बहुत तसल्ली मिली कि सुची को अब भी मुझ पर भरोसा है और प्रोजेक्ट पॉसिबल पर भी। उन्होंने मुझसे कहा कि उन्हें ज़रा भी शक नहीं है कि एक बार मिशन शुरू हो जाने पर मैं उसमें ज़रूर कामयाब हो जाऊँगी, लेकिन आर्थिक नुकसान को लेकर उन्हें थोड़ी चिंता ज़रूर थी। मैं लंबे समय से जानती थी कि उनमें एक ऐसी शक्ति थी जो बहुत कम लोगों में होती है, न केवल एक पत्नी के रूप में, बल्कि एक महिला के रूप में भी, और मैं इसके लिए उनकी आभारी थी। वह मेरे सपने के लिए सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार थीं।

अजीब बात है, मेरे लिए यह बलिदान उतना कष्टदायक नहीं था। मैंने अपना पूरा सैन्य जीवन भावनात्मक रूप से चरम सीमा पर ही बिताया था, इसलिए घर खोने का ख्याल भी एक तरह का मानसिक तनाव था, जिसे मैं आसानी से संभाल सकता था। मेरी सोच यही थी कि अगर सबसे बुरा भी हुआ, तो मैं जीविका कमाने का कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा। मुझे अनिश्चितता के बीच संघर्ष करने से डर नहीं लगता था, लेकिन सुची के लिए स्थिति बिल्कुल अलग थी, और वह फिर भी जोखिम उठाने को तैयार थी।

राहत बहुत बड़ी थी।

*

धन जुटाने के अभियान के दौरान एक-दो बार ऐसा क्षण आया जब मैं लगभग टूट ही गया था।

फरवरी में, प्रोजेक्ट पॉसिबल की शुरुआत से महज़ एक महीना पहले, और अंतहीन, निष्फल बैठकों, ट्रेन यात्राओं और फ़ोन कॉलों के एक और व्यस्त सप्ताह के बाद, मैं एक दोपहर एम3 हाईवे से होते हुए पूल स्थित अपने घर वापस जा रहा था। मेरा दिमाग संख्याओं, बिलों और अनुबंधों से भरा हुआ था। घर पर मौजूद 65,000 पाउंड की इक्विटी निकाल ली गई थी, हालाँकि मैंने 2019 में पर्वतारोहण और गाइडिंग के दौरान घरेलू बिलों का भुगतान करने के लिए पर्याप्त नकदी बचाकर रखी थी। बाकी की रकम प्रोजेक्ट पॉसिबल में लगाई जा रही थी और धीरे-धीरे हम प्रगति कर रहे थे, उड़ानें बुक कर रहे थे, परमिट हासिल कर रहे थे, और मिशन शुरू करने के लिए आवश्यक सभी उपकरण और सामग्री इकट्ठा कर रहे थे।

लेकिन फिर भी मैं तनाव में थी। अपने करीबी लोगों के अलावा किसी से भी समर्थन न मिलने से मैं पूरी तरह टूट चुकी थी। आखिर कोई मेरा साथ क्यों नहीं दे रहा था? वहीं दूसरी ओर, नेपाली परंपराओं का बोझ मेरे ऊपर ईंटों से लदे बोझ की तरह लटका हुआ था। अगर मैं अपना काम पूरा नहीं कर पाई तो मेरे माता-पिता का क्या होगा? एक पल के लिए, जब आगे सड़क पर ब्रेक लाइट और इंडिकेटर टिमटिमा रहे थे, मैं पूरी तरह से अभिभूत हो गई। मेरी आँखों में आँसू भर आए।

हे भगवान, निम्स, तुम अपने साथ ऐसा क्यों कर रहे हो? अपने सभी प्रियजनों के साथ ऐसा

क्यों कर रहे हो?

अपने विचारों को व्यवस्थित करने के लिए एक किनारे पर गाड़ी रोकते हुए, मुझे याद आया कि अगर मैं असंभव को हासिल कर लूं तो क्या-क्या हो सकता है।

पहला बिंदु: प्रोजेक्ट पॉसिबल सिर्फ मेरे बारे में नहीं था। यह हमेशा से मेरी सच्चाई रही है। हाँ, सारा दबाव मेरे कंधों पर था और महत्वाकांक्षा, कड़ी मेहनत, और अंत में मिलने वाला सारा इनाम भी निस्संदेह मेरा ही होता। लेकिन मुझे अपने उद्देश्यों को याद रखना था। मैं मानवता को दिखा रहा था कि अगर कोई व्यक्ति किसी असंभव से दिखने वाले लक्ष्य को पाने के लिए अपना मन और शरीर लगा दे तो क्या हासिल किया जा सकता है – और यह एक बड़ी बात थी। नेपाली पर्वतारोहण समुदाय को बीसवीं सदी के बड़े हिस्से में विश्व में सर्वश्रेष्ठ के रूप में फिर से स्थापित करना भी महत्वपूर्ण था। फिर जलवायु परिवर्तन के बारे में भी बयान देने थे। अंत में, मैं एक विशेष बल का सैनिक था। युद्ध के दौरान और युद्ध के बाहर, एसबीएस की छवि को एक विशिष्ट टुकड़ी के रूप में स्थापित करना भी एक और प्रेरक शक्ति थी।

दूसरा बिंदु: प्रोजेक्ट पॉसिबल कभी भी सिर्फ मेरे बारे में नहीं था।

मैंने अपनी आँखें पोंछ लीं।

चलो इसे जल्द से जल्द खत्म करते हैं।

जैसा कि मैंने युद्ध में सीखा था, हर बाधा या दुश्मन एक नई चुनौती थी जिसे समझना और पार करना था। मुझे अपने नए वातावरण में ढलना और जीवित रहना था, जैसा कि मैंने चयन प्रक्रिया के दौरान, युद्ध क्षेत्रों में लड़ते हुए और दुनिया के सबसे ऊंचे पहाड़ पर चढ़ते हुए किया था। नए सिरे से शुरुआत करते हुए, मैं अगले कुछ हफ्तों तक आगे बढ़ता रहा, संभावित समर्थकों की अस्वीकृतियों को सहते हुए, उन लोगों को समझाने की कोशिश करता रहा जो मेरे लक्ष्य की क्षमता को नहीं समझ पा रहे थे।

कई बार इनकार हुआ। हम उस योजना पर पैसा क्यों खर्च करें जो नाकाम होने वाली है? कुछ लोगों को चिंता थी कि कहीं वे मुझे किसी बुरे अंजाम की ओर न धकेल रहे हों। अगर हम नामुमकिन को मुमकिन बना दें और निम्स की मौत हो जाए, तो क्या हम भी इसके लिए कुछ हद तक ज़िम्मेदार होंगे? यह बहुत निराशाजनक था, लेकिन इसने मुझे और भी दृढ़ बना दिया। मिशन शुरू होते ही मैं अपनी बातों से नहीं, बल्कि अपने कामों से सबको गलत साबित कर दूंगा।

खुशकिस्मती से, मेरी बात सुनने वाले सभी लोग इतने निराशावादी नहीं थे। मैंने सुना कि ब्रिटेन के नेपाली समुदाय और सेवानिवृत्त गोरखाओं के एक समूह ने प्रोजेक्ट पॉसिबल के लिए धन जुटाने का अभियान चलाया था। पेंशनभोगी और पूर्व सैनिक 5, 10 और 20 पाउंड की नकद राशि दान कर रहे थे, और यह भाव मेरे लिए बेहद प्रेरणादायक था। जैसे-जैसे मेरी पहली चढ़ाई की उलटी गिनती नज़दीक आती गई, मैंने विभिन्न स्रोतों से कुल मिलाकर लगभग 115,000 पाउंड जमा कर लिए थे। यह राशि परियोजना के पहले चरण के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त थी, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि हर अगली चढ़ाई के साथ और अधिक रुचि दिखाई देगी। जैसे-जैसे प्रायोजक, मीडिया और पर्वतारोहण समुदाय मेरी प्रगति को देखते रहे, मुझे लगा कि संदेह करने वाले जल्द ही हरकत में आ जाएँगे और उनके पैसे भी आने लगेंगे।

आत्मविश्वास और गति के बल पर, मैंने अपने जीवन के सबसे महत्वाकांक्षी अभियान के लिए खुद को तैयार किया।

सम्मान कमाया जाता है

कार्यक्रम में अन्नपूर्णा को पहले अभियान के रूप में न चुनने के कई कारण थे। सबसे पहले, दुनिया के दसवें सबसे ऊंचे पर्वत अन्नपूर्णा ने सबसे खतरनाक पर्वत होने की खौफनाक प्रतिष्ठा हासिल कर ली थी। 2019 की शुरुआत तक, वहां कुल मिलाकर लगभग 60 पर्वतारोहियों की मौत हो चुकी थी और उच्च-ऊंचाई वाले पर्वतारोहण में संभवतः इसकी जीवित रहने की दर सबसे कम थी, जहां इसे आजमाने का साहस करने वाले 38 प्रतिशत पर्वतारोही मारे गए थे। अधिकांश खतरा अन्नपूर्णा की अस्थिरता के कारण था; यह एक हिमनदी युद्धक्षेत्र था, जहां हिमस्खलन का खतरा बना रहता था, जो बर्फ, चट्टान और टूटी हुई बर्फ की दीवारों को उन लोगों पर गिरा देता था जो गलत समय पर गलत जगह पर खड़े होने के लिए दुर्भाग्यशाली होते थे। पर्वत पर अदृश्य दरारें भी फैली हुई थीं और कई लोग जमीन में छिपी दरार में फिसलने के बाद अनजाने में अपनी जान गंवा बैठे थे।

इस बीच, हिमालय के उस हिस्से का मौसम अप्रत्याशित था, पल भर में बदल जाता था, और हालात इतने खराब हो सकते थे कि 2014 में एक हिमपात में लगभग तैंतालीस लोग मारे गए, जिनमें इक्कीस पर्वतारोही शामिल थे। यह लंबे समय से ज्ञात है कि जब अन्नपूर्णा में भयंकर तूफान आते थे, तो एक दुर्गम चोटी अचानक अभेद्य हो जाती थी।

इस क्षेत्र में कम चुनौतीपूर्ण पर्वतारोहण से शुरुआत करने के कई अवसर थे, लेकिन अन्नपूर्णा ने मुझे अपनी अभियान टीम का आकलन करने का मौका दिया। किसी भी 8,000 मीटर से ऊँची चोटी पर चढ़ने के लिए एक अनुभवी पर्वतारोही को एक सहायक दल की आवश्यकता होती है, और चूंकि हमें चौदह चोटियों पर कई रस्सियाँ खुद ही लगानी थीं, इसलिए मैं प्रत्येक पर्वत के लिए सही संख्या में पर्वतारोही साथियों के साथ काम करना चाहता था। उदाहरण के लिए, यदि मैं सबसे ऊपर तक रस्सियाँ लगाने वाली टीम का नेतृत्व कर रहा होता, और हम पर्वत पर एकमात्र अभियान दल होते, तो मुझे कई साथियों की आवश्यकता होती। हालांकि, कुछ पर्वतों पर जहाँ मैं इलाके से परिचित था और रस्सियाँ शिखर तक पहले से ही लगी हुई थीं, मुझे केवल एक ही पर्वतारोही साथी की आवश्यकता होती, जैसे कि एवरेस्ट पर।

मेरी टीम कितनी कारगर साबित हो सकती है, यह जानना बेहद ज़रूरी था – और मुझे यह जल्द से जल्द पता लगाना था। हालाँकि 2018 में मैंने जिन लोगों को इकट्ठा किया था, उनमें से हर कोई अनुभवी गाइड था और कई 8,000 मीटर ऊँची चोटियों पर चढ़ाई कर चुका था, फिर

भी लगातार चौदह चोटियों पर चढ़ाई करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। युद्ध के मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया था कि किसी व्यक्ति का असली चरित्र तभी सामने आता है जब वह जीवन-मरण की स्थिति में हो, और यह अक्सर गोलीबारी में ही सामने आता है। हाल ही में प्रशिक्षण पूरी कर चुके गोरखा या रॉयल मरीन कमांडो ने भले ही प्रशिक्षण आसानी से पूरा कर लिया हो, लेकिन उनकी असली युद्ध क्षमता का आकलन तब तक नहीं किया जा सकता था जब तक कि सचमुच गोलियाँ और बम न बरसने लगें।

पर्वतारोहण की दृष्टि से, अन्नपूर्णा एक तरह की लड़ाई थी। हम फिक्स्ड लाइनें बिछा रहे थे, काम बेहद मुश्किल होने वाला था, और हर पड़ाव पर मौत का खतरा मंडरा रहा था – यह हम सबके लिए लगभग एक आदर्श परीक्षा थी। मार्ग बिछाने वाली टीम के लिए शिखर तक पहुंचना आसान नहीं था; उस फिक्स्ड लाइन टीम का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति पर काम को अंजाम देने का भारी दबाव था।

मुझे यह जानना ज़रूरी था कि किन लोगों पर मैं भरोसा कर सकता हूँ कि वे खतरनाक परिस्थितियों में भी अपना आपा नहीं खोएँगे; मैं समूह में मौजूद किसी भी कमज़ोरी या खामी का भी पता लगाना चाहता था, यदि कोई हो तो। मेरे साथ शामिल हुए कुछ गाइड पहले से ही पहाड़ पर मेरे दोस्त या सहयोगी थे, जैसे मिंगमा डेविड, लकपा डेंडी शेरपा और हलुंग दोरची शेरपा।

मिंगमा दोरजे खत्री के भतीजे थे और मेरी उनसे पहली मुलाकात 2014 में काठमांडू में हुई थी, उसी साल हुई खुंबू हिमपात त्रासदी के कुछ समय बाद। दोस्तों से मैंने सुना था कि वे एक प्रभावशाली पर्वतारोही थे जिन्होंने एवरेस्ट, ल्होत्से, मकालू और के2 पर्वत फतह किए थे। वे दुबले-पतले थे, लगभग चौवन किलो (पूरा वज़न) के, लेकिन मिंगमा की मांसपेशियां मजबूत थीं। अभियानों के दौरान जब भी मेरी उनसे मुलाकात हुई, वे मुझे हमेशा सबसे मजबूत गाइडों में से एक लगे जिन्हें मैंने कभी देखा था। और सभी ने मिंगमा के उच्च-ऊंचाई वाले बचाव अभियानों की कहानियां सुनी थीं - उन्होंने धौलागिरी, मकालू और एवरेस्ट पर लोगों की जान बचाई थी।

मुझे पता था कि मिंगमा मेरे साथ आना चाहेंगे, क्योंकि 2016 में एवरेस्ट पर मेरी पहली सफल चढ़ाई के दौरान उनसे मेरी मुलाकात हुई थी। मैं पासांग के साथ शिखर की ओर बढ़ रहा था। इस बीच, मिंगमा एवरेस्ट एयर टीम का समर्थन कर रहे थे, जिनसे मैं लुकला हवाई अड्डे पर मिला था, और उन्होंने हमें तब देखा जब हम कैंप 4 की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। उस दिन एवरेस्ट पर तेज़ हवाओं ने सबको परेशान कर दिया था, और जब पासांग और मैंने बचाव के लिए एक अस्थायी बर्फ का आश्रय खोदा, तो मैंने मिंगमा और एक अन्य शेरपा को पास में ही तंबू लगाते देखा। उन्होंने हाथ हिलाकर हमें बुलाया।

'निम्सदाई, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' मिंगमा ने कहा। 'हमने सुना था कि तुम HAPE से बीमार हो?'

नेपाली में 'दाई' शब्द का अर्थ 'भाई' होता है।

'हां, मेरी हालत खराब थी, लेकिन अब मैंने खुद को संभाल लिया है,' मैंने हंसते हुए कहा। 'मुझे बस कुछ समय के लिए आराम की जरूरत थी। अब मैं पूरी तरह से तैयार हूं।'

ढलते सूरज की रोशनी में मेरी ओर घूरते चेहरों को मैंने देखा। मिंगमा शायद यह सोच रही थी

कि मैं साहसी हूँ या फिर मौत को दावत दे रही हूँ।

आखिरकार, उसने बोलना शुरू किया। 'निम्स, तुम्हें पता है, हमारा काम पर्वतारोही को शिखर तक पहुँचाना है। हम किसी भी पहाड़ पर किसी का भी पीछा कर सकते हैं।'

उन्होंने पासांग की ओर इशारा करते हुए कहा, 'तुम्हारा शेरपा अनुभवी नहीं है, इसलिए...'

इसलिए?

'मैं तुम्हारा पीछा करूँगा, निम्सदाई। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'

मैं दुविधा में था। HAPE के साथ हुई मेरी दुर्घटना का मतलब था कि अकेले शिखर तक पहुँचने का मेरा लक्ष्य पहले ही टूट चुका था; एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए मुझे पासांग की ज़रूरत थी। लेकिन यह भी ज़रूरी था कि मैं पहाड़ पर किसी अन्य अभियान के लिए बोझ न बनूँ, और मेरे फेफड़ों के फिर से खराब होने के विचार से मैं इतना परेशान था कि ऊँचाई पर बचाए जाने का तनाव मुझे थोड़ा बेचैन कर रहा था। फिर भी, मिंगमा का दयालु समर्थन विचार करने लायक था। विनम्रता महसूस करते हुए, मैं उनके तंबू में आराम से बैठ गया, और तब तक इंतज़ार करता रहा जब तक हवाएँ इतनी शांत न हो जाएँ कि चढ़ाई फिर से शुरू की जा सके। मिंगमा एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे; पर्वतारोहण जगत में एक कुशल प्रशिक्षक के समान। और वह मेरे साथ टीम बनाना चाहते थे?

उनके इस भाव ने मुझे पूरी तरह से अभिभूत कर दिया था। हालांकि मैंने अंततः उनकी सहायता को ठुकरा दिया और पासांग के साथ एवरेस्ट पर चढ़ाई की, लेकिन मैं जानता था कि मिंगमा बिल्कुल वैसा ही व्यक्ति था जिसके साथ मैं भविष्य में काम करना पसंद करूंगा - वह मजबूत और निडर था।

लेकिन उनके अच्छे संपर्क भी थे और वे गेसमैन तमांग को प्रोजेक्ट पॉसिबल परिवार में शामिल करना चाहते थे। तमांग एक मजबूत, लेकिन अपेक्षाकृत अनुभवहीन पर्वतारोही थे, कम से कम डेथ ज़ोन की चोटियों के मामले में। मिंगमा की तरह वे भी एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू की चोटियों पर जा चुके थे, हालांकि उतनी बार नहीं; उन्हें हिमस्खलन बचाव और उच्च ऊंचाई वाले पर्वतीय बचाव का प्रशिक्षण भी प्राप्त था।

जब मिंगमा ने पहली बार गेसमैन का जिक्र किया, तो उसने वादा किया, 'वह एक अच्छा आदमी है, एक बैल की तरह है। उसने सही पाठ्यक्रम पूरे किए हैं। आप उस पर भरोसा कर सकते हैं।'

भले ही मिंगमा का रिज्यूमे पूरी तरह से विश्वसनीय न हो, फिर भी उसकी बात पर पूरा भरोसा किया जा सकता था। लेकिन मिंगमा और गेसमैन के पास सिर्फ शारीरिक शक्ति ही नहीं थी, बल्कि वे सकारात्मक सोच वाले भी थे। मैंने तय किया था कि मिशन में शामिल होने वाले हर व्यक्ति का नज़रिया आशावादी होना चाहिए। मुझे ऐसे लोग चाहिए थे जो जुनून के लिए पर्वतारोहण करते हों, न कि पैसे या शोहरत के लिए। (हालाँकि उन्हें काम के लिए अच्छा-खासा वेतन मिलने वाला था।) सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हें नेपाली पर्वतारोहण समुदाय पर गर्व होना चाहिए।

प्रोजेक्ट पॉसिबल शेरपा संस्कृति को सुर्खियों में लाने का मेरा एक प्रयास था, क्योंकि

पर्वतारोहण उद्योग में लंबे समय से उनके वीरतापूर्ण कार्यों को नजरअंदाज किया जा रहा था। मेरा मानना था कि 8,000 मीटर से ऊपर की कई सफल पर्वतारोहण यात्राओं में शेरपा ही मुख्य प्रेरक शक्ति रहे हैं, और हर मुश्किल भरी यात्रा को शेरपाओं के एक मजबूत सहयोग नेटवर्क ने ही आगे बढ़ाया है, जिन्होंने हर तरह का कठिन काम किया है। आपके विचार से एवरेस्ट पर रस्सियां किसने लगाईं? और भारी उपकरण और सामान को इतनी लंबी दूरी तक किसने ढोया, जबकि उनके ग्राहक अपेक्षाकृत आसानी से घूम रहे थे?

उन्होंने अन्य, अधिक विशिष्ट भूमिकाएँ भी निभाईं। उदाहरण के लिए, एवरेस्ट पर, 'आइस डॉक्टर्स' नामक शेरपाओं की एक टुकड़ी ने खुंबू हिमपात की सैकड़ों दरारों पर सीढ़ियाँ और मार्गदर्शक रस्सियाँ लगाईं। आम तौर पर, इन सभी को वेतन मिलता था, लेकिन अभियान की कुल लागत के मुकाबले उनकी फीस बहुत कम थी। उनके काम के बिना, अधिकांश चढ़ाई असफल हो जातीं; अपेक्षाकृत अनुभवहीन पर्वतारोही मारे जाते। शेरपा गाइड वर्षों से असंभव को संभव कर रहे थे, हालाँकि उनके काम को अक्सर सराहा नहीं जाता था।

पहाड़ों की राजनीति वाला वो रवैया मुझे बेहद परेशान करता था। जब मैंने पहली बार 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर चढ़ना शुरू किया था, तो मैं बेहतरीन पर्वतारोहियों को डेथ ज़ोन की चोटियों पर चढ़ते हुए देखकर बहुत प्रभावित हुआ था, और उनकी उपलब्धियों को पर्वतारोहण वेबसाइटों और पत्रिकाओं में हमेशा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता था। फिर मैंने उस पर्वतारोही का साथ देने वाले लोगों के नाम खोजने शुरू किए – असली हीरो। आखिर, वे ज़्यादा भार उठा रहे थे, ज़्यादा रस्सियाँ ठीक कर रहे थे; वे बाकी सभी से कहीं ज़्यादा मेहनत कर रहे थे, लेकिन किसी ने कभी उनका नाम नहीं लिया।

सम्मान में असमानता ने मुझे बहुत परेशान किया, और हालांकि यह एक वेतनभोगी नौकरी थी, लेकिन शेरपा का काम बेहद खतरनाक था। प्रोजेक्ट पॉसिबल के माध्यम से मैं नेपाल के पर्वतारोहियों के कौशल को उजागर करना चाहता था, लेकिन इसके लिए मेरी टीम में ऐसे लोग होने चाहिए थे जिनकी विचारधारा मुझसे मिलती-जुलती हो। मुझे भेड़चाल चलने वाले या सिर्फ मेरे पीछे चलने वाले लोग नहीं चाहिए थे। मुझे विचारकों का एक समूह चाहिए था।

हालांकि, एक पदानुक्रम था। शुरुआत से ही मैंने यह स्पष्ट कर दिया था कि टीम का नेतृत्व करना, दबाव में निर्णय लेना और पहाड़ पर, सैन्य अभिजात वर्ग में और शीत युद्ध विशेषज्ञ के रूप में काम करते हुए सीखे गए सभी कौशलों का उपयोग करना मेरी ज़िम्मेदारी होगी। इनमें से कुछ कौशल और प्रक्रियाएं प्रोजेक्ट पॉसिबल में भी काम आएंगी। विशेष बलों में, प्रत्येक टीम कुशल योद्धाओं से बनी होती थी। मेरा लक्ष्य एक ऐसा पर्वतारोहण समूह बनाना था जिसमें समान कार्यशैली हो। बेशक, मैं टीम लीडर था, लेकिन बाकी लोग विशेषज्ञ पर्वतारोही के रूप में काम करेंगे; उनमें से प्रत्येक के पास विशेषज्ञतापूर्ण कौशल थे और वे अत्यधिक तनावपूर्ण परिस्थितियों में अपना बचाव करने में सक्षम थे।

मैं चाहता था कि हम घोर एकता के साथ, सबसे कठिन बर्फ और सबसे खराब मौसम में भी चौदह चोटियों की ओर अग्रसर हों। मैं चाहता था कि हम विशिष्ट बनें - उच्च-ऊंचाई वाले पर्वतारोहण के विशेष बलों के रूप में पहचाने जाएं। और फिर, मैं चाहता था कि यह सम्मान पूरे

शेरपा समुदाय पर सकारात्मक रूप से चमके।

कई मायनों में, मैं अन्नपूर्णा पर्वत पर होने वाले यूके स्पेशल फोर्सेज सिलेक्शन के हाई-एल्टीट्यूड समकक्ष का संचालन कर रहा था। प्रोजेक्ट पॉसिबल के संचालकों को मजबूत, सक्षम और भावनात्मक रूप से सकारात्मक होना आवश्यक था - मेरे साथ जुड़ने वाले सभी जवानों ने अपनी क्षमता साबित कर दी थी, लेकिन हमारी पहली चढ़ाई में सिलेक्शन के सभी सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्से एक साथ शामिल थे।

मैं अलग-अलग लोगों में अलग-अलग खूबियाँ तलाश रहा था और मैंने अभियान को दो समूहों में बाँटने का इरादा किया था। मुख्य दल में मिंगमा, गेसमैन, गेलजेन शेरपा और लकपा डेंडी शेरपा शामिल होंगे। वहीं, सोनम शेरपा, हलुंग दोरची शेरपा, रमेश गुरुंग और मिंगमा के भाई कासांग शेरपा का एक द्वितीयक समूह आवश्यकता पड़ने पर सहायता प्रदान करने के लिए मौजूद रहेगा। एक अन्य सहयोगी, दावा शेरपा, यात्रा के दौरान मेरी सभी अभियान योजनाओं की जाँच करने के लिए तैनात थे।

मुझे व्यवस्था से खुशी थी; टीम में सभी लोग दिलचस्प थे। गेलजेन शेरपा को शुरू में अन्नपूर्णा पर हमारी टीम के हिस्से के रूप में रस्सियों को ठीक करने का काम सौंपा गया था, लेकिन उन्होंने प्रोजेक्ट पॉसिबल की पूरी अवधि के लिए साथ रहने की पेशकश की। मुझे वह बहुत पसंद आया; उनका जोश चरम पर था। गेलजेन नाचते थे; वे मुस्कुराते थे। ऐसा लगता था कि कोई भी बात उन्हें परेशान या विचलित नहीं करती थी, और जब हम अन्नपूर्णा के बेस कैंप में खुद को तैयार कर रहे थे और धौलागिरी के लिए अपनी बुनियादी संरचना की योजना बना रहे थे, तो मैंने देखा कि हमारे बीच एक साझा सोच विकसित हो रही थी। टीम ने खूब मेहनत की और खूब मौज-मस्ती भी की, और अगर मेहनत बहुत कठिन लगने लगती थी, जैसा कि पहाड़ों पर अक्सर होता था, तो कोई शिकायत नहीं करता था।

जब भी मैंने अन्नपूर्णा के लिए अपनी योजना में थोड़ा-बहुत बदलाव किया, तो बाकी सबने कहा, 'चलो इसे करते हैं!' हर विचार को परखा गया और किसी भी बात को सिरे से खारिज नहीं किया गया, मानो हर कोई 'ना' कहना भूल गया हो। इसमें हमारी टीम भावना का भी बड़ा योगदान था, लेकिन कई साथियों ने एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर मेरे पिछले प्रयासों के बारे में सुना था। मैंने उनका सम्मान अर्जित कर लिया था और वे मेरा सम्मान अर्जित करने की प्रक्रिया में थे। पहले चरण को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए हमें ठीक इसी मानसिकता की आवश्यकता थी।

सहायता दल में, सोनम शेरपा को शिखर पर चढ़ाई के दौरान रसद संबंधी सभी कार्यों की देखरेख करने के साथ-साथ 'भुगतान किए गए' अभियानों के दौरान हमारे ग्राहकों की देखभाल करने के लिए नियुक्त किया गया था। इन अभियानों में विशेषज्ञ पर्वतारोहियों को शिखर तक पहुंचाया जाता था, जैसा कि अन्नपूर्णा, जुलाई में नांगा परबत और सितंबर में मनास्लू पर्वत पर होता था। पर्वत पर रहते हुए, सोनम रस्सियाँ लगाने में हमारी मदद करते थे और पीछे से पूरे अभियान पर नज़र रखते थे। वे ऊपर से हमारे रेडियो कॉल का जवाब देते थे और यह सुनिश्चित करते थे कि बेस कैंप और उसके आसपास अभियान सुचारू रूप से चल रहा है।

अगर मौसम में कोई अप्रत्याशित बदलाव आने वाला होता, तो सोनम हमारे लिए शुरुआती चेतावनी प्रणाली का काम करता। अगर मिशन में कोई गड़बड़ी होती, तो उसे हेलीकॉप्टर बचाव जैसी ज़रूरी सहायता का इंतज़ाम करना पड़ता। उसके साथ सहायता दल में लक्पा डेंडी शेरपा भी था, जो एक पर्वतारोही था और जिसने 2017 में G200E पर रस्सियाँ ठीक करने में मेरी मदद की थी। शिखर पर चढ़ाई वाले दिन, हमने मिलकर चौबीस किलोमीटर रस्सी एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचाई थी। देखने से लगता है कि वह अकेले ही पहाड़ उठा सकता है।

हालांकि दोनों टीमें मजबूत और अनुभवी थीं, लेकिन उनके कौशल का सही प्रबंधन करना महत्वपूर्ण था। हालांकि टीम के सभी सदस्य कई 8,000 मीटर से ऊंची चोटियों पर चढ़ चुके थे, लेकिन गाशेरब्रुम I और II, K2 और ब्रॉड पीक जैसी कुछ चोटियाँ हम सभी के लिए बिल्कुल नया अनुभव होने वाली थीं – उस समय तक मैंने खुद केवल चार 8,000 मीटर से ऊंची चोटियों पर ही चढ़ाई की थी। लेकिन इन चोटियों पर सफलतापूर्वक चढ़ाई करके, प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम का प्रत्येक सदस्य अपने अनुभव और प्रतिष्ठा को बढ़ाएगा; वे भविष्य में डेथ ज़ोन की चोटियों पर चढ़ाई करने वाली किसी भी अभियान टीम के लिए अधिक मांग वाले गाइड बन जाएंगे।

इतने दृढ़ निश्चयी समूह का नेतृत्व करने के लिए मुझे सैन्य सेवा के दौरान अर्जित सभी नेतृत्व कौशल की आवश्यकता होगी, हालांकि G200E के अनुभवों से मुझे यह भी सीखने को मिला था कि नेतृत्व कैसे नहीं करना चाहिए। मैं किसी भी कीमत पर अंतिम क्षण में लोगों को निराश नहीं करना चाहता था। मनोबल ऊंचा रखना बेहद ज़रूरी था, खासकर तब जब अस्तित्व एक बड़ा मुद्दा बन जाए।

यह काम संतुलन बनाए रखने वाला था, लेकिन मेरा इरादा था कि मैं अपने परिचालन ढांचे को दिल से मजबूत बनाऊं। जब हम कंचनजंगा जैसे अपरिचित पहाड़ों पर चढ़ाई कर रहे थे, तो मिंगमा और गेसमैन जैसे लोगों के पास अनुभव की कमी थी, और मेरे पास भी, जिससे सभी का आत्मविश्वास डगमगा सकता था। लेकिन साथ ही, हमारी कार्यशैली – एक दृढ़ इच्छाशक्ति और महत्वाकांक्षा; हमारा सौहार्द – प्रोजेक्ट पॉसिबल को शिखर तक ले जाएगा और वापस लाएगा। मैं यह भी समझता था कि जोश के साथ नेतृत्व करने के लिए, मुझे अपने आसपास के लोगों से अधिक ताकत से चढ़ाई करनी होगी, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं।

पिछली यात्राओं में, मैंने पूरी ताकत से काम किया था, लगातार आगे बढ़ते हुए, जब तक कि समूह के बाकी पर्वतारोही मेरी राह में एक बिंदु की तरह दिखने लगे थे। इस तरह के प्रयास के दो नकारात्मक परिणाम हुए: (1) मुझे अक्सर कड़ाके की ठंड में एक-दो घंटे इंतजार करना पड़ता था, जब तक कि बाकी लोग मेरे साथ न आ जाएं। (2) मेरी अचानक तेज़ गति बाकी सभी के लिए मनोबल गिराने वाली होती थी। कल्पना कीजिए कि आप किसी गंभीर एथलीट के साथ मैराथन दौड़ रहे हैं। उन्हें दूर तक दौड़ते हुए देखना काफी निराशाजनक होता है। लेकिन अगर वही एथलीट अपने साथियों के साथ बना रहता है, और उन्हें पहले की तुलना में थोड़ा तेज दौड़ने के लिए प्रेरित करता है, तो उसकी उपस्थिति प्रेरणादायक हो सकती है। यह सभी को उस गति से आगे ले जाता है जिसकी उन्होंने पहले कल्पना भी नहीं की थी।

मैंने भी यही रवैया अपनाने का निश्चय किया। जब मुझे लगता कि इससे टीम को फायदा हो

सकता है, तो मैं गति बढ़ा देता, लेकिन जब सहायता की आवश्यकता होती, तो मैं गति कम कर देता। परिणामस्वरूप, हम हमेशा एक समूह के रूप में शिखर पर पहुँचेंगे।

यदि 2019 के अंत तक, हर कोई इतना गर्व महसूस करे कि वह कह सके कि वह सफल प्रोजेक्ट पॉसिबल मिशन का एक अभिन्न हिस्सा था, तो मेरा काम पूरा हो जाएगा।

*

जब मैं आखिरकार 28 मार्च 2019 को अन्नपूर्णा के बेस कैंप पर पहुँचा, तो हर तरफ संदेह करने वाले लोग थे, और जब मैं दुनिया के सबसे खतरनाक पर्वत की तलहटी में स्थित उस छोटी सी चौकी से खुद को तैयार कर रहा था, तो लगभग हर किसी का रवैया उपेक्षापूर्ण प्रतीत हुआ। अनुभवी पर्वतारोहियों और मंझे हुए गाइडों का एक दल वहाँ पहुँचा था; उनमें से कुछ लोग प्रोजेक्ट पॉसिबल और सात महीने से भी कम समय में चौदह चोटियों पर विजय प्राप्त करने की मेरी योजनाओं के बारे में जानते थे। जिन्होंने नहीं सुना था, उन्हें गपशप सुनाई गई; फिर उन्होंने सोशल मीडिया पर मेरी पोस्ट देखीं और हँसे। यह कल्पना करना मुश्किल नहीं था कि वे क्या सोच रहे थे। ठीक है, श्रीमान पर्वतारोही। आप कुछ बहुत ही प्रभावशाली पहाड़ों पर चढ़ चुके हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि वास्तव में 8,000 मीटर की सभी चोटियों पर चढ़ने का क्या मतलब है?

मैंने नकारात्मक विचारों को नजरअंदाज कर दिया और खुद से कहा कि यह सिर्फ एक भटकाव है।

पर्वतारोहण समुदाय ने शायद असंभव को संभव कर दिखाने के मेरे दृढ़ संकल्प को गलत समझा होगा, लेकिन साथ ही, मैं उस अवास्तविक माहौल को भी समझ रहा था। किम चांग-हो को यही उपलब्धि हासिल करने में लगभग आठ साल लगे थे, इसलिए अगर मैं अपने मिशन को सरल शब्दों में कहूँ, तो ऐसा था मानो मैंने एलियुड किपचोगे के 2018 के मैराथन विश्व रिकॉर्ड (दो घंटे, एक मिनट और उनतालीस सेकंड) को तोड़ने का लक्ष्य घोषित किया हो। लेकिन पहले से ही अविश्वसनीय समय में एक-दो सेकंड कम करने के बजाय, मैंने 26.2 मील की दूरी लगभग दस मिनट में तय करने का वादा किया था।

कई पर्वतारोहियों के लिए, प्रोजेक्ट पॉसिबल शायद एक पागलपन भरी कल्पना जैसा लगा होगा। कुछ लोगों ने मुझ पर अति महत्वाकांक्षी होने का आरोप लगाया; उन्हें आश्चर्य हुआ कि मैं अपनी योजनाओं का ढिंढोरा क्यों पीट रहा था, जबकि मैं इस मिशन को गुप्त रूप से, बाहरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किए बिना भी अंजाम दे सकता था। शुक्र है, मुझे प्रोत्साहित करने वाले समर्थक भी थे, और कभी-कभी मुझे इंस्टाग्राम पर उत्साहवर्धक संदेश पढ़ने को मिलते थे, या किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने का मौका मिलता था जो इस विचार से प्रेरित था।

मुझे उनकी सकारात्मकता के हर अंश की आवश्यकता होगी।

अपनी पहली रस्सी चढ़ाई शुरू करने से लगभग एक दिन पहले, टीम ने एक पूजा की। यह एक नेपाली अनुष्ठान था, जो एक लामा (आध्यात्मिक नेता) की देखरेख में किया जाता था, जिसमें समूह ने पर्वत देवताओं से प्रार्थना की। जुनिपर की पत्तियों को जलाया गया; चावल फेंके

गए और प्रार्थना झंडों का एक स्तंभ खड़ा किया गया। यह आशा की गई थी कि वही देवता हमें शिखर तक सुरक्षित मार्ग प्रदान करेंगे, और हिमस्खलन या खाई में गिरने के प्रकोप से बचाएंगे।

हालांकि मैं किसी एक ईश्वर के प्रति समर्पित नहीं थी, फिर भी प्रार्थना की शक्ति में मेरा विश्वास था। मुझे अकेले में प्रकृति से जुड़ना भी अच्छा लगता था और पूजा समाप्त होने के बाद, मैं समूह से अलग होकर अन्नपूर्णा की चोटी को निहारने लगी। आकाश चमकीला नीला था; घने बादल ऊपरी किनारों पर मंडरा रहे थे, लेकिन मैं सामने खड़ी चट्टान और बर्फ की विशाल दीवार से एकांत में लीन थी। मानो मैं पर्वत से अनुमति मांगना चाहती थी।

ठीक है, क्या मैं कर सकता हूँ? या नहीं कर सकता?

देखते और इंतजार करते हुए, मुझे उम्मीद की किरण दिखाई दी।

उस समय मुझे जो बात सबसे ज़्यादा परेशान कर रही थी, वह थी मेरी शारीरिक तैयारी की कमी। सेना छोड़ने और पिछले एक साल में लगातार बैठकों और चंदा इकट्ठा करने के प्रयासों के कारण, मैं अपने शरीर को उस तरह के दबाव से नहीं गुज़ार पाया था, जैसा मैंने सेवा के दौरान झेला था, हालाँकि मैं अब भी काफी फिट था। युद्ध के दौरान और उसके बाहर, एक विशिष्ट सैनिक के रूप में मुझे हमेशा कड़ी कसरत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था और मुझे हर दिन ताकत बढ़ाने के कई अवसर मिलते थे, चाहे युद्ध में हो या प्रशिक्षण के माध्यम से। लेकिन नागरिक जीवन में आने के बाद, जहाँ मेरी प्राथमिकताएँ प्रोजेक्ट पॉसिबल की रसद योजना और कभी-कभार अभियान का मार्गदर्शन करने पर केंद्रित हो गई थीं, मैं पिछली चढ़ाइयों के दौरान जितना चुस्त था, उतना अब नहीं था।

प्रोजेक्ट पॉसिबल के लिए खुद को तैयार करने का जब भी मौका मिला, मैंने उसका पूरा फायदा उठाया। अन्नपूर्णा के बेस कैंप जाते समय, मैंने दाना गाँव में ताकत और फिटनेस बढ़ाने के लिए पत्थर उठाए। इसके बाद मैंने बीस किलोमीटर की दौड़ लगाई। हालाँकि यह आदर्श तैयारी नहीं थी, और लगभग चार महीनों में यह पहला मौका था जब मुझे इसके लिए समय मिला, लेकिन मुझे पता था कि एक बार लाइन ठीक करने का काम शुरू हो जाए, तो मैं और भी मजबूत हो जाऊँगा।

मुझे ऐसा होना ही था। हमारा रास्ता बेहद चुनौतीपूर्ण था: अन्नपूर्णा के उत्तरी भाग पर एक सीधी रेखा, एक ऐसी कठिन चढ़ाई जिसे पहली बार 1950 में फ्रांसीसी पर्वतारोही मौरिस हर्ज़ोग ने पार किया था। लेकिन 2 अप्रैल को अभियान शुरू करने का फैसला करने के बाद, रस्सियाँ बिछाने वाली टीम के रूप में, मैं मिंगमा और गेलजेन के साथ-साथ अन्य अभियान दलों के कुछ अन्य शेरपा गाइडों के साथ आत्मविश्वास से आगे बढ़ा; हम अपने मिशन के पहले चरण को पूरा करने के लिए उत्सुक थे, जो कि शिविर 1 और 2 तक रस्सियाँ बिछाना था।

ऊपर चढ़ने का रास्ता बेहद कठिन था। शुरुआत में, रास्ता बर्फ से ढके चट्टानों के मैदान से होकर गुजरा, जिसे पर्वतारोही आसानी से पार कर सकता था, लेकिन उसके बाद, रास्ता खतरनाक हो गया। ज़मीन गहरी दरारों से भरी हुई थी - कुछ दिखाई दे रही थीं, कुछ मोटी बर्फ की चादर के नीचे छिपी हुई थीं, और एक गलत कदम पर्वतारोही को मौत के मुंह में धकेल सकता था; इसलिए यह ज़रूरी था कि हम सभी रस्सियों से बंधे हों। अगर कोई बर्फ में फिसल जाता, तो

बाकी पर्वतारोहियों का एक साथ मिलकर सहारा देने से उम्मीद थी कि उसका गिरना रुक जाएगा।

कुछ ही देर में हम बेस कैंप से काफी ऊपर पहुँच गए, लेकिन मौसम और भी बिगड़ गया था। जैसे ही हमने रस्सियों और फिक्स्ड लाइनों को बांधा, तेज़ हवा हमारे चारों ओर ज़ोरों से चलने लगी। बर्फ़ जल्द ही कमर तक गहरी जम गई और काम करना मुश्किल हो गया, लेकिन सबसे आगे रहने वाले व्यक्ति के तौर पर, मेरा काम था कि मैं बाकी टीम के सदस्यों को साथ लेकर चलूँ। मैं अपने पैर ऊँचे उठाकर और बूट मज़बूती से जमाकर, ध्यान केंद्रित करते हुए, बाकी लोगों को अपने पीछे आने में मदद करता था, और साथ ही आने वाले हिमस्खलन की आहट पर भी नज़र रखता था। वैसे भी, अगर मुझे पहले से कोई चेतावनी मिल जाती, तो मैं अपना रास्ता नहीं बदल पाता। हर कदम पर मैं खुद को याद दिलाता था: मैं मज़बूत हूँ; इसमें कोई शक नहीं कि मैं आखिरकार शिखर पर पहुँच जाऊँगा, लेकिन हिमस्खलन ईश्वर की एक अनियंत्रित आपदा है जिसके लिए कोई भी पूरी तरह से तैयार नहीं हो सकता।

मुझे अपने बूटों के नीचे बर्फ के कुचलने की आवाज और फेफड़ों में ऑक्सीजन की बर्फीली जलन महसूस हुई और मैं धीरे-धीरे, लेकिन लगातार ऊपर चढ़ता रहा।

चरम सीमा की सामान्यता

घंटों की कड़ी मेहनत के बाद, घुटनों तक गहरी बर्फ में किलोमीटर दर किलोमीटर रास्ता बनाते हुए, प्रोजेक्ट पॉसिबल की टीम कैंप 2 में पहुँची। हमने खड़ी चट्टानों और टीलों को पार किया था, और रास्ते में कई दरारों से भी गुज़रे थे। सच में, बहुत मेहनत लगी थी, लेकिन फिक्स्ड रस्सियाँ लग जाने से हम शिखर पर चढ़ाई के लिए लगभग तैयार थे – चाहे वो कभी भी हो। अभी बहुत कुछ चढ़ना बाकी था, लेकिन थकान के बावजूद, सभी का मनोबल ऊंचा था, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि तेज़ हवाएँ थम गई थीं और पहाड़ काफी शांत लग रहा था। सूरज ढल रहा था; समूह नाच रहा था और मज़ाक कर रहा था, जबकि तले हुए चिकन और चावल की खुशबू पूरे कैंप में फैल रही थी।

फिर हमारे ऊपर कहीं से बिजली कड़कने जैसी एक तेज आवाज आई।

अरे नहीं । । ।

वही जानी-पहचानी एड्रेनालाईन की लहर दौड़ उठी, एक ऐसी संवेदी चेतावनी जिसे मैंने पहले केवल गोलीबारी या विस्फोटित बम से ही जोड़ा था, लेकिन इस बार दुश्मन कहीं बड़ा और संभावित रूप से अधिक विनाशकारी था। हिमस्खलन! और यह एक बहुत बड़ा हिमस्खलन था। अन्नपूर्णा के उत्तरी भाग का एक बड़ा हिस्सा टूटकर अलग हो गया था और सफेद हिमस्खलन अनियंत्रित गति से पहाड़ से नीचे आ रहा था। एक पल के लिए मैं प्रतिक्रिया करने में असमर्थ, जैसे लकवाग्रस्त हो गया था, क्योंकि जो होने वाला था उसकी भयावहता ने मेरे तंत्रिका तंत्र को झकझोर दिया था। हिमस्खलन के रास्ते में आने वाली हर चीज़ कुचल जाने के खतरे में थी। और हम हिमस्खलन के रास्ते में ही थे। इससे बचने का कोई रास्ता नहीं था।

कदम!

जैसे ही मैंने छिपने की जगह ढूंढनी शुरू की, मुझे एहसास हुआ कि मिंगमा और सोनम भी डर से जम गई थीं। यह दृश्य सुनामी के बाद अक्सर दिखाई जाने वाली सीसीटीवी फुटेज जैसा था, जिसमें सदमे में आए राहगीर क्षितिज पर आती हुई ज्वार की लहर को घूरते रहते हैं, मानो भागने में असमर्थ हों। जब तक उनकी लड़ने या भागने की प्रवृत्ति जागृत होती है, तब तक अक्सर बहुत देर हो चुकी होती है – वे बच नहीं पाते। अब एक उतना ही भयानक भाग्य हमारी ओर बढ़ रहा था।

'धत् तेरे की, हम जा रहे हैं!' मैंने चिल्लाकर कहा। 'सब लोग आश्रयों में चले जाओ!'

मुझे अक्सर बताया जाता था कि हिमस्खलन की स्थिति में किसी न किसी प्रकार की सुरक्षा का सहारा लेना हमेशा सबसे अच्छा होता है, यहाँ तक कि एक तंबू जैसी मामूली चीज़ भी काम आ सकती है। खैर, कुछ न होने से तो बेहतर था। सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर, मैं पास के एक तंबू की ओर दौड़ा और उसमें घुस गया। सोनम और मिंगमा मेरे पीछे-पीछे अंदर घुस गईं और दरवाज़ा बंद कर दिया। प्रभाव के लिए खुद को तैयार करते हुए, हम कंधे से कंधा मिलाकर एक साथ दुबक गए, हिमस्खलन की गर्जना और तेज़ होती जा रही थी और हमारे चारों ओर ज़मीन कांप रही थी। इस अफरा-तफरी से बचना असंभव लग रहा था। यह महसूस करते हुए कि एक बार दब जाने के बाद हमें जल्दी से तंबू से बाहर निकलना पड़ सकता है, मैंने बाकी लोगों को निर्देश चिल्लाकर दिए।

'मिंगमा, अपना चाकू ले आओ। सोनम, तंबू के खंभों का सहारा लेकर खड़ी हो जाओ और खुद को संभालो।'

लेकिन सोनम टूटा हुआ लग रहा था। वह पर्वत देवताओं से प्रार्थना कर रहा था। मुझे फिर से डर की एक लहर दौड़ गई। धिक्कार है, यह बहुत बुरा है।

एक पल के लिए मन में उम्मीद जगी। सोनम, उम्मीद है तुम्हारी प्रार्थना काम आएगी। और फिर न जाने कितनी बर्फ पूरी ताकत से हम पर गिरी, जैसे ठोक रही हो और तंबू को फाड़ रही हो। कई सेकंड तक कपड़ा और फाइबरग्लास बिना टूटे ही खिंचते और मरोड़ते रहे। मुझे लगा जैसे किसी भी पल हम पहाड़ से नीचे गिर जाएंगे, एक-दूसरे पर लुढ़कते हुए, तभी अचानक, अप्रत्याशित रूप से, सब कुछ फिर से शांत हो गया। सन्नाटा छा गया; फिर मुझे घबराहट भरी सांसों की आवाज सुनाई दी। हम बच गए थे।

'सोनम, क्या तुम ठीक हो?' मैंने उसे करीब खींचते हुए और धीरे से हिलाते हुए पूछा।

उसने सिर हिलाया और उन दयालु देवताओं को धन्यवाद कहा जिन्होंने हमारी जान बचाई थी। हमारे चारों ओर पहाड़ पर अजीब सी शांति छाई हुई थी और जब मैं कैंप 2 के मलबे का जायजा लेने और अपने सामान की जाँच करने के लिए तंबू से बाहर निकला, तो यह स्पष्ट हो गया कि हम भाग्यशाली थे। उस भीषण घटना का केवल अंतिम भाग ही हम तक पहुँचा था और कोई घायल नहीं हुआ था, कुछ भी नष्ट नहीं हुआ था, लेकिन रस्सियों को ठीक करने में हमारी मदद करने के लिए तैनात स्थानीय शेरपाओं में बेचैनी का माहौल था। उनके अनुसार, कुछ दिन पहले की हमारी पूजा सफल नहीं हुई थी और उनके देवता नाराज़ थे।

जैसे-जैसे दिन का उजाला ढल रहा था, वे डरते-डरते बेस कैंप की ओर वापस चल पड़े और कैंप 3 और 4 तक रस्सियों को जोड़ने का हमारा लक्ष्य पहले से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया, लेकिन कम से कम हम अभी भी जीवित थे। अंधेरे में अपने विकल्पों पर विचार करते हुए, मुझे लगा कि हमारा सामान्य मार्ग, जिस पर सबसे पहले हर्ज़ोग चढ़े थे, अब बहुत जोखिम भरा था। हर कदम हिमस्खलन को न्योता दे रहा था और अगर हममें से कोई एक भी फिसल गया या कोई और हिमस्खलन हुआ तो पूरी टीम मौत के मुंह में समा सकती थी।

अगर शिखर पर चढ़ाई के दौरान कुछ गड़बड़ हो जाती है, या बाद में यह असुरक्षित साबित होता है, तो लोग मुझे ही दोषी ठहराएंगे... कोई वैकल्पिक मार्ग होना चाहिए।

मैंने अन्नपूर्णा की चोटी की ओर देखा और एक बार फिर वही सवाल पूछा।

ठीक है, क्या मैं कर सकता हूँ? या नहीं कर सकता?

फिर मैं बाकी लोगों के साथ रात के खाने के लिए शामिल हो गया, इस उम्मीद में कि शायद अब से पहाड़ अधिक दयालु व्यवहार करेगा।

*

मैं सूर्योदय के साथ जागा – और मेरे पास एक योजना थी।

अभियान की सूची में मैंने कैमरे के कुछ उपकरण पैक किए थे, और काफी समय से मैं प्रोजेक्ट पॉसिबल के दौरान एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर जाते हुए खूब सारी वीडियो बनाना चाहता था। मेरा लक्ष्य था कि चढ़ाई के दौरान जितना हो सके उतना वीडियो बनाऊं, अपनी टीम के बाकी सदस्यों को कैमरा चलाने का निर्देश दूं, और जब यह संभव न हो, तो मैं उनमें से किसी एक से अपनी वीडियो बनाने को कहूं। हालांकि मुझे फिल्म बनाने का लगभग कोई अनुभव नहीं था, फिर भी मुझे पूरा भरोसा था कि मैं बहुत सारी रोमांचक सामग्री कैप्चर कर सकता हूं। आखिरकार, मैं एक डॉक्यूमेंट्री बनाकर या शायद एक-दो लाइव थिएटर टॉक देकर अपने अभियानों को दुनिया के सामने दिखाना चाहता था – लेकिन मैं उन सभी संदेहियों को भी चुप कराना चाहता था जो अभियान पूरा होने के बाद ज़रूर उठेंगे। जब भी कोई हमारे जैसे प्रयास को अंजाम देता है, तो ट्रोल के लिए परिणामों की आलोचना करना बहुत आसान हो जाता है, जब तक कि उन परिणामों को फुटेज के व्यापक संग्रह से समर्थित न किया जाए।

फिर भी मामला पेचीदा था। कुछ लोग अब भी मानते थे कि 1969 में चंद्रमा पर उतरना फर्जी था; इंटरनेट तरह-तरह की साजिशों और 'सबूतों' से भरा पड़ा था, इसलिए मैं किसी भी कीमत पर खुद को बढ़ा-चढ़ाकर बताने या अपनी उपलब्धियों को झूठा साबित करने के आरोपों के घेरे में नहीं लाना चाहता था। मेरा इरादा था कि मैं जितना हो सके उतना फुटेज लेकर घर लौटूं और संपादन और सोशल मीडिया पर काम करने में मदद के लिए सागर और अलीत गुरुंग को अपने साथ ले आया। उन्होंने प्रोजेक्ट पॉसिबल पर इतना भरोसा दिखाया था कि दोनों ने ब्रिटेन में अपनी नौकरी छोड़कर हमारे साथ जुड़ने का फैसला किया था।

अपने चंदा जुटाने के अभियान के दौरान, मैंने कई प्रोडक्शन कंपनियों से कंटेंट के अधिकार खरीदने के बारे में भी बात की थी। मैंने पूरे मिशन के लिए एक कैमरा क्रू को साथ ले जाने का सुझाव भी दिया, लेकिन कोई भी इसके लिए उत्सुक नहीं दिखा और सबका रवैया नकारात्मक था। सबकी राय यही थी कि इस आदमी के पास अपने प्रोजेक्ट के लिए पैसे नहीं हैं। वह इसे पूरा नहीं कर पाएगा। तो हम उसके फिल्मांकन के लिए बजट क्यों निकालें? अन्नपूर्णा पहुँचने से पहले के उन तनावपूर्ण महीनों में जिन लोगों से मेरी मुलाकात हुई, उनमें से कई लोगों को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूँ वह संभव है।

मैंने सोचा, 'अगर उन्हें इसमें दिलचस्पी नहीं है, तो मैं इसे खुद ही कर लूंगा।'

पहले दिन बेस कैंप से चढ़ाई शुरू करने से पहले, मैंने टीम के सभी सदस्यों को हेडकैम बांट दिए थे। एक हैंडहेल्ड डिजिटल कैमरा भी तैयार रखा था। लेकिन मेरे फिल्मांकन उपकरणों में

सबसे रोमांचक उपकरण एक ड्रोन था, और घर पर इसकी जाँच करने के बाद, मैं इसकी सामरिक क्षमता से प्रभावित हो गया था। बेशक, चढ़ाई के दौरान हवाई शॉट्स फिल्माने और अपने आसपास के विशाल परिदृश्य को कैद करने के लिए यह बहुत अच्छा होता - चट्टान और बर्फ के विशाल विस्तार के सामने हम चींटियों जैसे दिखते। लेकिन यह एक उपयोगी टोही उपकरण भी था और जब हम अन्नपूर्णा के हिमस्खलन से तबाह इलाके में अपने सबसे अच्छे मार्ग की योजना बना रहे थे, तो मेरे मन में एक विचार आया।

जिस तरह ब्रिटिश सेना युद्धक्षेत्र की सामरिक समझ को बेहतर बनाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल करती थी, उसी तरह मैं भी अन्नपूर्णा के ऊपर एक ड्रोन उड़ाकर कैंप 3 तक पहुंचने का सबसे सुरक्षित रास्ता तलाश सकूंगा। मिंगमा और सोनम के साथ, हमने ड्रोन को बर्फीली चोटियों की एक श्रृंखला के ऊपर मंडराते हुए, फोन पर कैप्चर किए गए फुटेज का आकलन किया और एक नई रणनीति बनाई। और आखिरकार, हमें वह रास्ता मिल गया!

हमारे ठीक ऊपर कुछ सौ मीटर तक फैली एक लंबी खड़ी पहाड़ी श्रृंखला दिखाई देने लगी। बर्फ से ढकी, दूर से देखने पर यह एक नुकीली, कोणीय नाक की चोटी जैसी लग रही थी और मैंने इसे कुख्यात डच रिब के रूप में पहचान लिया, जो बर्फ और पाउडर से बनी एक पतली धार जैसी थी। इसे यह नाम इसलिए मिला क्योंकि मूल रूप से 1977 में हॉलैंड के पर्वतारोहियों की एक टीम और नौ शेरपाओं ने इस पर चढ़ाई की थी। तब से बहुत कम लोगों ने इस पर चढ़ने का प्रयास किया है, शायद इसलिए कि यह रास्ता बहुत ही चुनौतीपूर्ण दिखता था, लेकिन स्थिति को देखते हुए, नाक की चोटी पर ऊपर की ओर बढ़ने के लिए पर्याप्त जगह बची थी।

यह काम चुनौतीपूर्ण होगा, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि इस पर चढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति बेहद जोखिम में होगा, और यदि कोई पर्वतारोही ठोस चट्टान और बर्फ पर फिसल जाता है तो नीचे तक की उसकी लंबी और दर्दनाक यात्रा को रोकने के लिए कुछ भी नहीं होगा।

लेकिन खतरा सिर्फ इतना ही नहीं था। ड्रोन फुटेज देखते हुए मुझे एहसास हुआ कि डच रिब तक पहुँचने के लिए हमें पहले बर्फ के एक सुनसान इलाके से होकर गुजरना होगा – जो हिमस्खलन का एक और संभावित क्षेत्र है। लेकिन एक बार जब हम चोटी पर पहुँच जाते, तो पहाड़ पर ऊपर से गिरने वाले किसी भी हिमस्खलन के प्रभाव से हम सुरक्षित हो जाते, और मेरा अनुमान था कि डच रिब इतनी पतली और झुकी हुई है कि ऊपर से आने वाला कोई भी मलबा हम तक पहुँचने से पहले दोनों तरफ गिर जाएगा। हमारी एकमात्र समस्या यह थी कि चढ़ाई बेहद कठिन होने वाली थी।

जब मैं उसी दिन बाद में बेस कैंप लौटा और इंतज़ार कर रहे अभियानों को अपनी योजना बताई, तो मुझे बताया गया कि डच रिब पर जाना मना है। एक शेरपा, जो अन्नपूर्णा का सालों का अनुभवी गाइड था, ने तुरंत इस विचार को खारिज कर दिया। उसने कहा, 'सालों से किसी ने भी उस रास्ते पर चढ़ाई नहीं की है। यह बहुत कठिन है।'

इस प्रतिक्रिया ने मुझे थोड़ा विचलित कर दिया।

‘धत् तेरे की, शायद यह बहुत बड़ा जोखिम साबित होने वाला है?’ मैंने सोचा। ‘लेकिन मेरे पास और क्या विकल्प है?’

मेरी सैन्य ट्रेनिंग ने मेरे अंदर सकारात्मकता की भावना पैदा कर दी थी, जहाँ मेरा काम अक्सर बिना शिकायत किए या बेतुके बहाने बनाए, मुश्किल समस्याओं के रचनात्मक समाधान खोजना होता था। मैंने डच रिब ड्रोन फुटेज का एक बार फिर आकलन किया और उस सिद्धांत को व्यवहार में लाने का फैसला किया, यह सोचते हुए कि 'क्या फर्क पड़ता है?' फिर मैं बिना सोचे-समझे आगे बढ़ गया। वैसे भी, मैं किसी को यह नहीं कह रहा था कि उन्हें मेरी योजना का पालन करना ही होगा। रस्सी बांधने वाली टीम के नेता के रूप में, मैं उन्हें केवल एक विकल्प दे रहा था और यह उन पर निर्भर था कि वे इसे स्वीकार करें या नहीं। लेकिन कुछ दिनों बाद, गेलजेन के साथ धीरे-धीरे पहाड़ी की चोटी पर चढ़ते हुए - बर्फ में धंसते हुए रस्सियाँ बांधते और मजबूती से पकड़े रहने के कारण मेरे पैर लड़खड़ा रहे थे - मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मेरा शेरपा दोस्त आखिरकार सही नहीं था।

डच रिब पर पूरा दिन बिताने के बाद, काम काफी कठिन था और जैसे-जैसे रोशनी कम होती जा रही थी, मैं कैंप 2 और 3 के बीच फंस गया। अंधेरे में इतनी खतरनाक ढलान पर आगे बढ़ना जोखिम भरा लग रहा था, लेकिन कैंप 2 तक वापस जाकर आराम करना भी एक तरह से हार मान लेना था – क्योंकि अगले दिन हमें वही प्रक्रिया दोहरानी पड़ती और कोई खास प्रगति भी नहीं होती। और ऊपर जाने के लिए हमें रात भर वहीं रुकना पड़ा, इसलिए हमने लगभग तीस लंगरों की मदद से अपने तंबू को नाव के अगले हिस्से पर गाड़ दिया। गेलजेन और मैं एक ऐसी गहरी खाई के ऊपर आराम कर रहे थे, जहाँ अगर हम दोनों में से कोई भी सोते समय करवट बदल लेता तो निश्चित रूप से मौत हो जाती।

हालांकि, यह हमारी सबसे बड़ी समस्या नहीं थी। जब हमने उस सुबह कैंप 3 के लिए निकलने का फैसला किया था, तो मैंने शुरू में सोचा था कि हम एक ही बार में कैंप 3 तक पहुँचकर वापस कैंप 2 तक आ जाएँगे। उस समय स्लीपिंग बैग या खाने-पीने का सामान पैक करना समझदारी भरा नहीं लगा; हल्का सामान लेकर चलना ज़्यादा समझदारी भरा लगा, इसलिए हमारा खाना और जेटबॉयल स्टोव कैंप 2 पर ही रह गए। इससे भी बुरा यह था कि सामान अगले दिन तक हम तक पहुँचने वाला नहीं था। डच रिब की खुली सतह पर टेंट लगाकर हम जल्द ही ठंड से काँपने लगे। हम दोनों को ज़बरदस्त भूख लग रही थी और पानी की कमी भी तेज़ी से बढ़ रही थी, और अब हमारा प्रोजेक्ट पॉसिबल खतरे में था।

मुझे एहसास हुआ कि कैंप 3 तक न पहुँच पाने की वजह से मिशन को रद्द करना पड़ सकता था। अगर तुरंत कोई प्रगति नहीं हुई, तो हम कई दिनों तक एक ही जगह फंसे रह जाते, जहाँ बार-बार कैंप 2 लौटकर डच रिब के मध्य बिंदु तक चढ़ाई करना अंततः हमें हार मानने पर मजबूर कर देता। मैं गोरखाओं और ब्रिटिश सैन्य अभिजात वर्ग दोनों के प्रति अपने गौरव से भी बंधा हुआ था, और पीछे हटकर अपनी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने का मुझे कोई अधिकार नहीं था।

मैंने पहाड़ पर मौजूद सभी लोगों से सहायता के लिए रेडियो पर संपर्क किया।

'हे दोस्तों, हम इससे आगे नहीं जा सकते,' मैंने समझाया। 'अगर हम अभी कैंप 2 पर वापस आ गए, तो हम आगे नहीं बढ़ पाएंगे और शिखर पर बिल्कुल भी नहीं पहुंच पाएंगे, इसलिए मैं यहीं रुकूंगा और आगे बढ़ने का फैसला करूंगा। लेकिन... हमारे पास खाना नहीं है। क्या कोई

चूल्हा और कुछ नूडल्स ला सकता है?'

मेरी कॉल का कोई जवाब नहीं मिला। लेकिन फिर भी मेरा पीछे हटने का मन नहीं था। वैसे भी, युद्ध में असुविधा के दौर से मैं परिचित था, जहाँ मुझे भोजन और पानी की कमी के बावजूद संघर्ष में काम करना पड़ता था।

मैंने गेलजेन से चुनौती भरे लहजे में कहा, 'हम यहीं डटे रहेंगे।'

लेकिन जैसे ही हम अपने असुविधाजनक परिवेश में स्थिर हुए, इस डर से कि हवा का एक तेज़ झोंका हमें पहाड़ी की चोटी से उड़ा ले जाएगा, रेडियो में कर्कश ध्वनि सुनाई दी। तभी कर्कश ध्वनि के बीच से एक आवाज़ आई।

'निम्सदाई, अगर कैंप 2 से कोई खाना और पानी नहीं लाता है, तो मैं बेस कैंप से तुम्हारे लिए कुछ ले आऊंगा।'

यह कौन है?

'यह गेसमैन है।'

गेसमैन?

गेलजेन मुस्कुराया। मिंगमा की सिफारिश पर गेसमैन टीम के सबसे कम अनुभवी पर्वतारोही के रूप में आया था। हालांकि उसने कुछ ही डेथ ज़ोन चोटियों पर चढ़ाई की थी, फिर भी वह डच रिब पर सामान लेकर चढ़ाई करने की पेशकश कर रहा था, जबकि अन्नपूर्णा के अन्य कहीं अधिक अनुभवी गाइडों और पर्वतारोहियों ने मेरी मदद की गुहार को अनसुना कर दिया था। यह एक बहुत बड़ी बात थी।

'नहीं भाई,' मैंने कहा। 'हम ठीक हैं, लेकिन धन्यवाद। हम टिके रह सकते हैं।'

मुझे खुशी हुई। गेसमैन का प्रस्ताव आश्वस्त करने वाला और प्रेरणादायक दोनों था। मैं तुरंत समझ गया कि अगर प्रोजेक्ट पॉसिबल का सबसे कम योग्य पर्वतारोही भी सबसे अनुभवी पर्वतारोही की तरह ही निडर और विपरीत परिस्थितियों के प्रति समर्पित हो सकता है, तो मुझे अपनी नई स्पेशल फोर्सेज मिल गई है। हम पहले से ही अत्यधिक ऊंचाई पर चढ़ने वाले विशिष्ट पर्वतारोही बन चुके थे।

जहां तक मेरा सवाल है, चयन प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी।

*

डच रिब पर आगे बढ़ते हुए और कैंप 3 तक फिक्स्ड लाइनें बिछाने के बाद, हम बेस कैंप लौट आए और अभियान दल तथा साथ चल रहे शेरपाओं को शिखर पर चढ़ाई के लिए तैयार किया। एक योजना बनाई गई: मैं मिंगमा के साथ आगे-आगे चलूंगा, अपने ग्राहकों से पूरे एक दिन पहले चढ़ाई करूंगा, जिन्हें सोनम शिविरों के माध्यम से रास्ता दिखाएगा, और वे सभी बर्फ में हमारे पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे। फिक्स्ड लाइनें बिछाने वाली टीम का इरादा कैंप 2 तक पहुंचने और रात वहीं बिताने का था। एक दिन बाद, हम डच रिब पर चढ़ाई करेंगे और कैंप 3 पर आराम करने के बाद कैंप 4 तक लाइनें बिछाएंगे, जहां से हम पहाड़ पर लाइनें बांधते हुए गहरी बर्फ में पूरा दिन रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ेंगे।

अगर सब कुछ योजना के मुताबिक रहा, तो हमारी अभियान टीम, और उस दिन अन्नपूर्णा पर चढ़ने वाली अन्य टीमें, संभवतः आखिरी रस्सियाँ बिछाए जाने के कुछ ही समय बाद कैंप 4 पर हमसे मिलेंगी। तब हम एक समूह के रूप में शिखर तक चढ़ाई कर सकेंगे।

यह मिशन का पहला शिखर अभियान था; मैं इसके लिए तैयार था, लेकिन रस्सियाँ लगाने का मतलब था कि मुझे अपनी पीठ पर काफी वजन लेकर चलना था। मैं आमतौर पर अपने बैकपैक में लगभग बीस या तीस किलो वजन रखता था, हालाँकि इस वजन का अधिकांश हिस्सा रस्सी का था। मुझे गहरी बर्फ में रास्ता बनाना था, इसलिए मेहनत बहुत ज्यादा होनी तय थी, लेकिन जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए और रस्सियाँ लगाते गए, बोझ हल्का होता गया, यहाँ तक कि अंत में मेरे पास लगभग दस किलो ही रह गया। मैं अपने साथ खाने-पीने का सामान भी बहुत कम रखता था।

मैंने कभी एनर्जी जेल, सप्लीमेंट या स्नैक्स नहीं लिए; पहाड़ पर मैं जो कुछ भी खाता था, वह मेरे मूड पर निर्भर करता था और अक्सर मैं अंडे वाले चावल और सूखे चिकन से ही काम चला लेता था। मुझे पहले से पैक किए गए खाने से कोई लेना-देना नहीं था – यह बहुत असुविधाजनक था। जहाँ तक पानी की बात है, शिखर तक पहुँचने के लिए मुझे ज़्यादा पानी की ज़रूरत नहीं पड़ती थी और मैं अक्सर अपना पानी दूसरे पर्वतारोहियों के लिए बचा कर रखता था। एक सैनिक होने के नाते, मेरा शरीर बहुत कम पानी में काम करने का आदी हो गया था, लेकिन पहाड़ पर मैं हमेशा अपने साथ एक लीटर का थर्मस रखता था। मेरी तरकीब यह थी कि मैं एक कप में बर्फ भर लेता था और उसे अपने थर्मस से थोड़े से गर्म पानी से पिघला लेता था। आमतौर पर शिखर तक पहुँचने के लिए इतना ही काफी होता था।

इस सारे सामान से मेरी गति थोड़ी धीमी हो सकती थी, लेकिन ज़्यादा नहीं। दो दिन लगातार मेहनत करने के बाद, हम कैंप 4 पर कुछ घंटों के लिए आराम कर पाए, क्योंकि बाकी दल भी हमारे पास पहुँच गए थे। मैं थका हुआ था, लेकिन मुझमें अभी भी बहुत ऊर्जा बची थी। अपने टेंट में आराम करते हुए अचानक मेरे मन में एक विचार आया। मैं बिना ऑक्सीजन के चढ़ाई करना चाहता था। बिना ईंधन के 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर चढ़ना लंबे समय से पर्वतारोहण का सबसे शुद्ध रूप माना जाता रहा है।

जब रेनहोल्ड मेसनर और उनके साथी पर्वतारोही पीटर हाबेलर ने 1978 में बिना ऑक्सीजन के दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ाई की, तो इसे एक अविश्वसनीय उपलब्धि माना गया, यहाँ तक कि कई लोगों ने तो यह भी दावा किया कि ऐसा हुआ ही नहीं था। उनके अनुसार, बिना ऑक्सीजन के कोई पर्वतारोही दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर नहीं पहुँच सकता था। संदेह करने वालों को चुप कराने के लिए, मेसनर ने इस कारनामे को दोहराया, इस बार एवरेस्ट के तिब्बती हिस्से से अकेले चढ़ाई की। सभी के अनुसार, उनकी चढ़ाई बेहद कष्टदायक थी, लेकिन कम से कम उन्होंने इसे पूरा तो कर लिया।

2016 में मैंने खुद से वादा किया था कि मैं हर हाल में ऑक्सीजन के साथ 8,000 मीटर से ऊंची चोटियों पर चढ़ाई करूंगा। एवरेस्ट की उस पहली यात्रा ने मुझे दिखाया था कि पहाड़ पर बीमार व्यक्ति की मदद करते समय अतिरिक्त हवा की आपूर्ति कितनी ज़रूरी होती है, और

प्रोजेक्ट पॉसिबल के दौरान मुझे कम से कम एक और ऐसे पर्वतारोही से मिलने की पूरी संभावना थी जो किसी कारणवश बीमार हो गया हो। अगर मैं उस समय सहायता नहीं कर पाता, तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाता। लेकिन कुछ और जिम्मेदारियां भी थीं, जैसे कि मैं अपने कुछ क्लाइंट्स की टीम को शिखर तक ले जाने वाला था। अगर उनमें से कोई गंभीर रूप से बीमार पड़ जाता या घायल हो जाता, तो ऑक्सीजन के बिना उस पर्वतारोही को बेस कैंप तक सुरक्षित वापस लाने की मेरी संभावना बहुत कम हो जाती।

फिर भी, इन सब के बावजूद, मुझे व्यक्तिगत जोखिम उठाने का मन हुआ। (मेरे पास ऑक्सीजन थी, अगर किसी और को ज़रूरत हो तो)। अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है कि ऊँचाई ने मेरे दिमाग पर बुरा असर डाला था। मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा था और खून में ऑक्सीजन की कमी ने मुझे अपने प्रतिस्पर्धी स्वभाव को अपनाने पर मजबूर कर दिया था। वही जोश जिसने मुझे किशोरावस्था में चितवन में आधी रात को ट्रेनिंग रन लगाने के लिए प्रेरित किया था, या यूके स्पेशल फोर्सेज सिलेक्शन की तैयारी के दौरान मेडस्टोन तक भारी बोझ ढोने के लिए, अब मुझे अन्नपूर्णा पर जोखिम उठाने के लिए उकसा रहा था, और यह सब सिर्फ इसलिए क्योंकि एक दूसरे पर्वतारोही ने मेरी प्रतिष्ठा को चुनौती दी थी।

यह सब लगभग एक सप्ताह पहले शुरू हुआ था। रस्सियों को ठीक करने के प्रयासों के बीच जब मैं आराम कर रहा था, स्टीफन - एक अन्य अभियान दल का यूरोपीय पर्वतारोही - ने 8,000 मीटर की चोटियों पर मेरे द्वारा ऑक्सीजन के उपयोग के बारे में कुछ टिप्पणियाँ कीं। वह बेहद फिट व्यक्ति था, एक अल्ट्रा-मैराथन धावक था, और उसे इस बात पर गर्व था। 'इस शरीर के साथ मैं ऑक्सीजन के बिना भी विशाल पहाड़ों पर चढ़ सकता हूँ,' उसने हमारी पहली मुलाकात में ही घोषणा की थी।

‘वाह, भाई,’ मैंने कहा। ‘हम सभी के अपने-अपने तरीके से पर्वतारोहण करने के अपने-अपने कारण होते हैं।’

मैं वह टिप्पणी जल्द ही भूल गया, लेकिन यह जल्दी ही स्पष्ट हो गया कि स्टीफन टीम प्लेयर नहीं था। उसने अपनी टीम के शेरपा गाइडों की तरह रस्सी ठीक करने में मदद करने की पेशकश नहीं की। आराम करना, चाय पीना और बातें करना ही उसका स्वभाव था। कुछ दिनों बाद, जब मैं मिंगमा, सोनम, गेलजेन और गेसमैन के साथ पार्टी कर रहा था, स्टीफन एक बार फिर वहाँ से गुजरा। पहाड़ पर मौजूद अलग-अलग समूहों को एकजुट करने की कोशिश में, मैंने उसे आवाज़ दी और उसे बीयर की बोतल देने की पेशकश की। लेकिन स्टीफन ने मना कर दिया।

‘नहीं यार, मैं पहाड़ पर चढ़ रहा हूँ,’ उसने कड़े स्वर में कहा।

'हां, हम सब पहाड़ पर चढ़ रहे हैं।'

लेकिन आप ऑक्सीजन का इस्तेमाल कर रहे हैं।

बस, यही चुनौती थी। पर्वतारोहण समुदाय में प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम द्वारा उच्च ऊंचाई पर हवा के उपयोग को लेकर काफी हंगामा हो रहा था और इससे मुझे थोड़ी झुंझलाहट हो रही थी।

‘हां, लेकिन कैंप 4 के बाद ही,’ मैंने कहा। ‘और आपको हमारी तरह कैंप 3 तक पहुंचने के लिए कोई मुश्किल राह नहीं बनानी पड़ी है, इसलिए अपने अहंकार को शांत कर लीजिए।’

इसके बारे में और कुछ नहीं कहा गया, लेकिन जैसे ही शिखर पर चढ़ाई शुरू हुई, मेरी प्रतिस्पर्धा की भावना जाग उठी। सभी पर्वतारोहियों को कैंप 3 पर इकट्ठा होने का एक संक्षिप्त समय मिला था। मेरी टीम कैंप 4 तक रस्सियाँ लगाने में पूरा दिन बिताने वाली थी। बाकी सभी आराम कर रहे थे और देखने से लग रहा था कि उनमें से कई को इसकी सख्त जरूरत थी, खासकर स्टीफन को। कुछ घंटे पहले, मैंने देखा था कि उसकी अभियान टीम, नीचे के परिदृश्य में छोटे-छोटे बिंदुओं की तरह, डच रिब पर चढ़ने के लिए कड़ी मेहनत कर रही थी और जब वे आखिरकार लड़खड़ाते हुए हमारे आश्रयों की ओर पहुँचे, तो स्टीफन ने खून की उल्टी कर दी थी। उसका शरीर बुरी तरह कमजोर हो रहा था; मुझे उस पर तरस आया।

अगर वह मेरा क्लाइंट होता, तो हममें से किसी एक को उसे इलाज के लिए नीचे ले जाना पड़ता। पूरी संभावना थी कि हम स्टीफन के शीघ्र स्वस्थ होने की संभावना को अधिकतम करने के लिए ऑक्सीजन का इस्तेमाल करते। लेकिन वह हार मानने को तैयार नहीं था; उसने घोषणा की कि वह अभी भी चढ़ाई करने के लिए पूरी तरह से फिट है।

चौबीस घंटे बाद, कैंप 4 में, मुझे अपना विचार आया। एक चढ़ाई, बिना ऑक्सीजन के: आलोचकों की बोलती बंद।

हालात निश्चित रूप से मेरे पक्ष में थे। यह हमारे कार्यक्रम का पहला अभियान था। मैं काफी मजबूत महसूस कर रहा था और चूंकि अन्नपूर्णा का शिखर 8,091 मीटर की ऊंचाई पर स्थित था और मृत्यु क्षेत्र में ही आता था, इसलिए बिना हवा के चढ़ाई करने का विचार मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। लेकिन जब मैंने अपने टेंट में मिंगमा को अपनी योजना बताई, तो उसने सिर हिला दिया। उसे चिंता थी कि अगर मैं अपनी सामान्य गति से आगे नहीं बढ़ पाया तो अभियान की गति धीमी पड़ सकती है।

'हमें तुम्हारी आक्रामकता की जरूरत है, निम्सदाई,' उसने कहा।

मैंने तर्क का सहारा लेने की कोशिश की। 'मैं पूरे अभियान में आगे से नेतृत्व करता रहा हूं। मुझे पता है कि मैं ऑक्सीजन के बिना किसी भी पहाड़ पर चढ़ सकता हूं।'

मुझे पता था कि उसके पीछे हटने की संभावना बहुत कम थी, लेकिन फिर भी मैं आगे बढ़ा। 'यार, बस इन घटिया लोगों और उनकी राय के लिए, मुझे बिना हवा के चढ़ने दो।'

वह हँसा। 'नहीं, निम्सदाई!'

मिंगमा की राय मेरे लिए महत्वपूर्ण थी। उनके चाचा, दोरजे, नेपाली पर्वतारोहण जगत में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे और उन्होंने अपने परिवार के पर्वतारोहियों के साथ अपना ज्ञान साझा किया था। मिंगमा तब से स्वयं एक बेहद कुशल गाइड बन चुके थे और शेरपा ऑफ द ईयर बनने की राह पर थे - जो इस अत्यंत प्रतिष्ठित पेशे में किसी को भी मिलने वाला सर्वोच्च सम्मान है।

मुझे पता था कि मिंगमा भी सही कह रहा था, और उसकी दृढ़ राय ने मुझे उस आदर्श की याद दिला दी जो मैंने बचपन में गोरखा सेना में भर्ती होने की उम्मीद में संजोया था: आपको किसी को कुछ भी साबित करने की ज़रूरत नहीं है। फिर मैंने खुद से यह वादा किया था कि 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर हमेशा पेट्रोल साथ रखूंगा। इसे तोड़ने से बुरी आदतें लग

सकती हैं। बुरी आदतें असफलता का कारण बन सकती हैं।

और इसलिए मैं पीछे हट गया।

मेरे पास ध्यान भटकने का समय नहीं था। लड़ाई के दौरान प्रभावी ढंग से काम करने के लिए, गर्मी, बेचैनी, भूख, पानी की कमी और भावनात्मक उथल-पुथल जैसी किसी भी पीड़ा को नज़रअंदाज़ करना ज़रूरी था, और मैंने अन्नपूर्णा पर भी यही रवैया अपनाया। मैं समझ गया था कि शिखर तक पहुँचने का अंतिम चरण बेहद कठिन होगा, भले ही हमारे पास हवा की सुविधा हो। लगभग 1,000 मीटर की दूरी बाकी थी और रास्ते के कुछ हिस्से में मुझे कमर तक ऊँची बर्फ की चादर को काटकर रास्ता बनाना था, हालाँकि ढलान इतनी हल्की थी कि हमें फिक्स्ड लाइनों की ज़रूरत नहीं थी। शिखर से ठीक पहले, मुझे एक बर्फीली चट्टान पर खड़ी चढ़ाई भी करनी थी, जिसके बाद एक मुश्किल और फिसलन भरी चट्टान का अंतिम हिस्सा पार करना था। रात 9 बजे जब टीम कैंप 4 से रवाना हुई, तो मुझे एहसास हुआ कि मेरी रूट फिक्सिंग टीम के ज़्यादातर सदस्य अब अपने निजी ग्राहकों को व्यक्तिगत रूप से गाइड कर रहे थे, और आगे का काम बहुत कठिन और चुनौतीपूर्ण होने वाला था। हालात देखकर लग रहा था कि बर्फ में आगे बढ़ने के लिए सिर्फ़ मिंगमा और मैं ही बचे थे। यह महसूस करते हुए कि हमारे पास पर्याप्त लोग नहीं हैं, मैंने अपने गाइडों को अपने करीब बुला लिया।

मैंने कहा, 'दोस्तों, हर कोई दस मिनट तक आगे-आगे चलेगा। अगर हो सके तो बीस मिनट तक। जितनी भी ऊर्जा बची हो, उसका इस्तेमाल करो। जब टीम का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति बहुत थक जाए, तो उसे रुककर एक तरफ खड़े हो जाना चाहिए और लाइन के अंत में शामिल होने का इंतजार करना चाहिए। फिर दूसरा व्यक्ति लगभग दस मिनट के लिए आगे-आगे चलने की जिम्मेदारी संभालेगा। इससे हमारी गति बनी रहेगी।'

स्पष्ट परिचालन योजना तैयार होने के बाद, हमने रस्सी बिछाई और लगभग पूरे मार्ग पर मार्ग प्रशस्त किया। हममें से प्रत्येक बारी-बारी से आगे बढ़ता रहा, जब तक कि अन्नपूर्णा की चोटी अंततः दिखाई नहीं देने लगी। हम जानते थे कि अन्य अभियान दल भी हमारे पीछे आ रहे थे और वे शिखर तक पहुंचने के लिए हम पर निर्भर थे, लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि मैं यह काम बखूबी कर लूंगा।

धौलागिरी की चढ़ाई के बाद मुझे एहसास हुआ कि मेरा आत्मविश्वास लगभग 8,000 मीटर की ऊंचाई पर ही पनपने लगता है – जहाँ दूसरे लोग हार मानने लगते हैं, वहीं मैं जोश से भर उठता था। ज़मीन पर मेरा पूरा नियंत्रण होता था; आत्मसंदेह और डर, जो कभी-कभी किसी को निराश कर देते हैं, मुझ पर हावी नहीं हो पाते थे। मैं शायद ही कभी खुद से पूछता था, 'क्या मैं सच में यह कर सकता हूँ?' और अगर कभी मेरे आत्मविश्वास में ज़रा सा भी संदेह आता, तो मैं अपने नए ईश्वर को याद कर लेता: दुनिया को यह साबित करना कि कल्पना ही सबसे बड़ी शक्ति है।

पिछली यात्राओं के दौरान, शिखर से कुछ मीटर पहले ही उपलब्धि का उत्साह उमड़ पड़ता था, उन कुछ मिनटों में जब हर पर्वतारोही को लगता था कि सबसे कठिन दौर पूरा हो चुका है और अंतिम पड़ाव बस पहुँच ही गए हैं। लेकिन अन्नपूर्णा के शिखर पर, अजीब तरह से, कोई

जल्दबाजी नहीं थी, कोई भावुकता नहीं थी। सिवाय इस एहसास के कि मैं भाग्यशाली था कि ज़िंदा बच गया – उस शक्तिशाली हिमस्खलन से हमारा सामना बाल-बाल बच गया था। लेकिन अन्नपूर्णा जैसी जोखिम भरी चढ़ाई करने वाले किसी भी पर्वतारोही को 8,000 मीटर से ऊपर आवश्यक अन्य गुणों – शक्ति, सहनशीलता, टीम भावना और आशावादी मानसिकता – के साथ-साथ भाग्य की भी भरपूर आवश्यकता होती है। वातावरण बेकाबू और क्रूर था, लेकिन दोपहर 3:30 बजे, हम उसके ऊपर पहुँच चुके थे।

मैंने नीचे के दृश्य को निहारने में कुछ पल बिताए, बादलों से घिरी हिमालय की नुकीली चोटियाँ हमारे सामने फैली हुई थीं। मेरी जगह से धौलागिरी साफ़ दिखाई दे रही थी। दाना कहीं उसकी छाया में थी – मैंने अपने घर में ही सफलता हासिल कर ली थी।

शायद अन्य अभियानों में मुझे जो उत्साह का अनुभव हुआ था, वह मेरे चारों ओर फैली विशाल चुनौतियों के कारण फीका पड़ रहा था। मुझे पता था कि मेरा कार्यभार बहुत अधिक होने वाला है।

और मुझे वो सारा पैसा मिलेगा कहाँ से?

लेकिन सूची में पहला शिखर पार हो चुका था, और मैं अडिग रहा। मैंने घर पर अपने प्रायोजकों को धन्यवाद का एक छोटा सा संदेश रिकॉर्ड किया और धन जुटाने के लिए एक और अपील की। पूछने में कोई हर्ज नहीं था - और मैं सचमुच बेताब था।

तारीख थी 23 अप्रैल 2019। घड़ी की टिक-टिक शुरू हो चुकी थी और पूरी दुनिया देख रही थी। मेरी दौड़ शुरू हो चुकी थी।

बचाव!

निम्स! निम्सदाई!

अन्नपूर्णा पर्वत पर स्थित कैंप 4 में चीख-पुकार की आवाज़ से मेरी नींद खुली। स्लीपिंग बैग में दुबकते ही दिन भर की घटनाएँ मेरे दिमाग में ताज़ा हो गईं। पिछले कुछ हफ़्तों से मैं मुश्किल से सो पाया था और अन्नपूर्णा की चोटी पर पहुँचने के बाद मेरी ताकत कम होती जा रही थी। मैं दर्द से कराह रहा था; मेरे पैरों और पीठ में बहुत दर्द था, और चोटी पर पहुँचने के कुछ ही देर बाद, मिंगमा, गेसमैन और मैं कैंप 4 की ओर बढ़ते हुए थककर चूर हो गए और अपने टेंटों में जा गिरे। लेकिन हमारे आसपास एक नया नाटक चल रहा था। एक शेरपा कैंप में अलग-अलग समूहों के बीच घूम रहा था। वह घबराया हुआ था।

'निम्स, मैंने अपने मुवक्किल को वहीं छोड़ दिया है,' उसने घबराते हुए कहा। 'वह अभी भी ऊपर ही है। उसकी ऑक्सीजन खत्म हो गई और मेरी भी कम हो रही थी, इसलिए मैंने उसे अपना ऑक्सीजन सिलेंडर दे दिया ताकि जब तक मैं उसके लिए मदद न जुटा लूँ, तब तक वह चलता रहे, लेकिन मुझे नहीं पता कि बहुत देर हो चुकी है या नहीं। मुझे यह भी नहीं पता कि वह कहाँ है...'

मुझे वह व्यक्ति याद आ गया जिसके बारे में वह बात कर रहा था - 48 वर्षीय मलेशियाई डॉक्टर चिन वुई किन, जो एक अनुभवी पर्वतारोही भी थे। जब हमारी टीम ने पूजा की, तो डॉ. चिन कुछ देर के लिए हमारे साथ शामिल हुए थे। हमने साथ में पेय पिया था और मुझे याद है कि जब हम पूजा कर रहे थे तो वह हमें देख रहे थे और मुस्कुरा रहे थे। हमने नृत्य भी किया था और सेल्फी भी ली थीं। मैंने उन दोनों को शिखर पर भी देखा था और वे थोड़े थके हुए लग रहे थे, लेकिन उनकी सेहत ठीक-ठाक थी, हालांकि मैंने उन्हें जल्दी निकलने की चेतावनी दी थी।

जब वे तस्वीरें लेने के लिए इधर-उधर रुके हुए थे, तब मैंने कहा, 'दोस्तों, जितनी जल्दी हो सके नीचे उतर चलते हैं। फिर हम जश्न मनाएंगे।' अगर हमें पता होता कि उनकी हवा कम हो रही है, तो मैं उन्हें सिलेंडर दे देता, कोई दिक्कत नहीं होती। शायद गाइड ने यह नहीं सोचा था कि डॉ. चिन को चोटी पर चढ़ने में परेशानी हो सकती है। शायद उसने अपने क्लाइंट की क्षमताओं का गलत अनुमान लगाया था। चाहे जो भी हो, उसका अनुमान गलत निकला।

शेरपा ने कहा, 'मुझे लगता है कि वह मर गया होगा। वह बहुत थका हुआ है। निम्स, क्या तुम मदद कर सकते हो?'

मैंने सिर हिलाया। डॉ. चिन को पीछे छोड़ने का ख्याल इतना परेशान करने वाला था कि सोचना भी मुश्किल था, लेकिन एवरेस्ट पर अपनी पहली चढ़ाई के बाद मुझे ऐसी स्थिति का अनुभव था, इसलिए उस समय पहाड़ पर खोज और बचाव अभियान चलाने के लिए शायद मैं ही सबसे ताकतवर और योग्य व्यक्ति था। डॉ. चिन को बचाना एक बहुत बड़ा जोखिम था, लेकिन मैं एक शर्त पर इसके लिए तैयार था: मुझे अतिरिक्त ऑक्सीजन की ज़रूरत होगी। मेरी टीम के पास ऑक्सीजन कम हो रही थी और घायल व्यक्ति को ढूंढने और फिर उसे वहां से निकालने के लिए हम तीनों की ज़रूरत होगी, चाहे वह कहीं भी हो।

मैंने कहा, 'मुझे वहां जाकर खोज और बचाव अभियान चलाने में खुशी होगी। लेकिन हमें बीमा कंपनी से ऑक्सीजन सिलेंडर यहां मंगवाने के लिए पैसे चाहिए होंगे ताकि हम उस तक पहुंच सकें।'

शेरपा ने मुझे खाली निगाहों से देखा।

मैंने कहा, 'सुनो। पहली बात तो यह है कि मुझे नहीं पता कि वह आदमी ज़िंदा है या नहीं। दूसरी बात यह है कि मैं बिना हवा के डॉ. चिन को ढूंढने के लिए पहाड़ पर नहीं जा सकता। इससे मेरी पूरी टीम खतरे में पड़ जाएगी, और मैं यह जोखिम उठाने को तैयार नहीं हूँ, खासकर तब जब हो सकता है कि वह पहले ही मर चुका हो।'

बेस कैंप को फोन किया गया, लेकिन सुबह 6 बजे तक भी हमारी मदद के लिए कोई जवाब नहीं मिला। मुझे पता था कि अब किसी भी तरह की कोशिश करना नामुमकिन था, क्योंकि हमारे पास खोज करने के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं थी, लेकिन मैं डॉ. चिन को ढूंढने की उम्मीद अभी छोड़ने वाला नहीं था। शायद उन्हें ढूंढने का कोई दूसरा तरीका हो? मैंने फिर से ड्रोन उठाया और सुबह की धूप में उसे गर्म करके हवा में उड़ाने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि शायद ऊपर के इलाके में ड्रोन उड़ाते हुए हमें घायल व्यक्ति दिख जाए – अगर वह किसी चट्टान से नीचे न गिर गया हो। लेकिन इंजन चालू नहीं हुआ। मैंने फिर कोशिश की – कोई फायदा नहीं हुआ। हमारी योजना धराशायी हो गई थी।

बीमा कंपनी से आखिरी बार फोन करके यह पुष्टि करने के बाद कि उन्होंने अपना रुख नहीं बदला है, मैं उदास मन से बेस कैंप की ओर उतरा। मुझे लग रहा था कि अन्नपूर्णा ने एक और जान ले ली है और मैं खुद भी सुरक्षित निकलना चाहता था। जब हम नीचे पहुंचे तब तक रात के करीब 10 बज चुके थे। मैं शारीरिक और मानसिक रूप से बुरी तरह थक चुका था, हालांकि इतना भी नहीं कि सुबह तीन बजे तक व्हिस्की न पी सकूं। मैं अपने अंदर उमड़ रही भारी भावनाओं को दूर करने की कोशिश कर रहा था: मुझे यह सोचकर बहुत बुरा लग रहा था कि एक आदमी पीछे छूट गया है। उसके परिवार पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा, लेकिन यह मुझे यह भी याद दिला रहा था कि एक दिन मैं भी उसी स्थिति में फंस सकता हूं।

आखिरकार, लौट रहे अन्य पर्वतारोहियों की आवाज़ सुनते-सुनते मुझे नींद आ गई, जबकि ऊपर पहाड़ पर शायद एक आदमी मर चुका था, या अकेले ही मर रहा था। लेकिन कई घंटों बाद, जब मैं धीरे-धीरे जागा, तो वही नाटक फिर से शुरू हो गया। मिंगमा मेरा नाम पुकार रही थी।

ये क्या बकवास है?

‘निम्सदाई! डॉ. चिन, उन्होंने उसे देख लिया है... वह जीवित है!’

मैंने हेलीकॉप्टर के घूमते ब्लेडों की धड़-धड़-धड़ की आवाज़ सुनी। खोज और बचाव अभियान चलाने के लिए एक हेलीकॉप्टर को बुलाया गया था।

'क्या आपको यकीन है?'

मिंगमा ने सिर हिलाया। जी हाँ, भाई।

'ठीक है, चलो उस पर नज़र रखते हैं। हम उस हेलीकॉप्टर को उसकी स्थिति तक ले जाएंगे और मैं एक बचाव दल तैयार रखूंगा।'

मैंने जल्दी से अपने कपड़े पहने और मिशन की योजना बनाने लगा। मैंने सोशल मीडिया पर मदद के लिए एक अपील भी भेजी, जिसमें मैंने स्थिति का संक्षिप्त विवरण दिया ताकि हमारे अभियान का अनुसरण करने वाला कोई भी व्यक्ति हमारी सहायता कर सके।

चिन वुई किन अभी भी अन्नपूर्णा पर जीवित है (मदद करें)
आवश्यक कार्रवाई: उनकी बीमा कंपनी द्वारा बचाव कार्य को अधिकृत करना।
अनुरोध: क्या मीडिया जगत में प्रभावशाली कोई व्यक्ति हमारी मदद कर सकता है?
वर्तमान स्थिति: मेरी टीम बेस कैंप में हेलीकॉप्टर सहायता (छह ऑक्सीजन सिलेंडर लाने के लिए) की प्रतीक्षा कर रही है, लेकिन यह तभी संभव हो पाएगा जब बचाव दल बचाव कार्य को अधिकृत कर दे।
आइए एक जान बचाएं।

मैंने अपना सामान इकट्ठा किया और हेलीकॉप्टर में चढ़ गया, जो बाद में डॉ. चिन के आखिरी ज्ञात स्थान के ऊपर चक्कर लगा रहा था। वहाँ! एक आदमी, चमकीले लाल रंग के शिखर सूट में बर्फ पर फंसा हुआ था, जिसका शरीर हवाओं से बुरी तरह हिल रहा था, वह हमें हाथ हिला रहा था।

‘हाँ, वो चिन है!’ मैंने पायलट को चिल्लाकर कहा। ‘हमें वहाँ उतरना होगा।’

मेरे पास मदद करने के अलावा कोई चारा नहीं था। अगर मैं उसकी जगह होता, तो भावनात्मक उथल-पुथल असहनीय होती और ऊपर से आते हुए मैंने उसके विचारों और भावनाओं की कल्पना की। मुझे लगा, "मैं एक हेलीकॉप्टर देख रहा हूँ। मैं उन्हें हाथ हिला रहा हूँ और वे भी जवाब में हाथ हिला रहे हैं... मैं बच गया!" फिर झूठी उम्मीद में डूब जाना, ऐसे बचाव का इंतज़ार करना जो शायद कभी न आए, एक क्रूर अंत जैसा लगा।

हालांकि अन्नपूर्णा की चोटी पर चढ़ाई के दौरान मेरी शारीरिक हालत बहुत खराब हो चुकी थी और मेरी दूसरी टीम धौलागिरी में मेरा इंतज़ार कर रही थी, जिन्होंने कैंप 2 तक की लाइनें पहले ही बिछा दी थीं, फिर भी मेरे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। सबसे बड़ी निराशा की बात यह थी कि प्रोजेक्ट पॉसिबल अब खतरे में था। धौलागिरी पर मौसम का अनुकूल समय तेज़ी से खत्म हो रहा था; एक भयंकर तूफान आ रहा था और अगर मैं कुछ दिनों के भीतर चोटी पर नहीं पहुँच पाया, तो मेरा पूरा कार्यक्रम गड़बड़ा सकता था। सूची में से केवल एक पर्वत पर चढ़ाई पूरी होने

के साथ, निर्धारित समय में पहले चरण को पूरा करने की संभावना बहुत कम हो जाती।

जब हम गेसमैन, मिंगमा और गेलजेन को जानकारी देने के लिए शिविर में वापस लौटे, तो मैंने उन्हें अपने मिशन की योजना बताई। डॉ. चिन की पत्नी ने कथित तौर पर बचाव अभियान के लिए स्वयं धन जुटाया था और ऑक्सीजन हमारे पास भेजी जा रही थी। (प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम ने हमारे श्रम के लिए कोई शुल्क नहीं लिया।)

मैंने कहा, 'हम उसे वहाँ नहीं छोड़ सकते। यह एक कठिन पहाड़ है, लेकिन मुझे लगता है कि हम सब मिलकर उसे बचा सकते हैं। मैंने युद्ध में कभी किसी को पीछे नहीं छोड़ा। मैं पहाड़ पर भी ऐसा नहीं करने वाला।'

डॉ. चिन के ठिकाने पर सीधे उतरना बहुत जोखिम भरा था। इसके बजाय, हम सबने हार्नेस पहन लिए और एक-एक करके खुद को हेलीकॉप्टर से एक रस्सी से बांध लिया, जिसे 'लॉन्ग लाइन' कहते हैं। यह प्रयास डरावना था, और बचावकर्मी को ज़मीन से ऊपर उठते समय रस्सी के तनाव को महसूस करते हुए धैर्य बनाए रखना पड़ता था। जैसे ही हेलीकॉप्टर मुझे आसमान में खींच ले गया, यह अनुभूति तीव्र थी। हवा मेरे चेहरे पर ज़ोर से टकरा रही थी। हालांकि मैंने चश्मा और फेस मास्क पहन रखा था, फिर भी ठंड से ऐसा लग रहा था जैसे मेरी त्वचा जल रही हो और हेलीकॉप्टर की गति और ऊपर घूमते हुए ब्लेडों की तेज़ आवाज़ से मेरे आस-पास के पहाड़ों का नज़ारा धुंधला हो गया।

मैं डर को अपने रास्ते से भटकने नहीं दे सकता था; सवारी का आनंद लेना ज़रूरी था। पाँच मिनट तक मैं बर्फ और चट्टानों के विशाल विस्तार से सैकड़ों फीट ऊपर खतरनाक तरीके से लटका रहा, जब तक कि पायलट ने उतरने के लिए उपयुक्त जगह नहीं खोज ली।

अपनी विशिष्ट सैन्य सेवा के दौरान, मुझे अक्सर मिशन को अंजाम देने के लिए तेज़ गति से चलती नावों या दुश्मन के ठिकानों पर रस्सी के सहारे उतरना पड़ता था। युद्ध के दौरान यह प्रक्रिया नियमित हो गई थी, लेकिन दुनिया के सबसे खतरनाक पहाड़ पर उतरना एक बिल्कुल नया अनुभव था, हालांकि मैं इस बात से आश्वस्त था कि इस बार मुझ पर कोई गोली नहीं चला रहा था। एक बार जब हम सभी एक-एक करके ज़मीन पर पहुँच गए, तो हम तेज़ी से आगे बढ़े और डॉ. चिन के ठिकाने तक का रास्ता बेहद कठिन था।

कुछ दिन पहले, जब हम आगे बढ़ते हुए शिविरों के बीच लाइनें बिछा रहे थे, तब हमें अपने ड्रॉप ज़ोन से उस जगह तक पहुँचने में लगभग अठारह घंटे लग गए थे जहाँ डॉ. चिन बेहाल पड़े थे। लेकिन एड्रेनालाईन से भरे होने के कारण, हम बहुत तेज़ गति से आगे बढ़े, मानो पर्वतारोही उसैन बोल्ट की टीम हों, हमारे फेफड़े हवा के लिए संघर्ष कर रहे थे, जब तक कि सफेद बर्फ पर लेटे हुए डॉ. चिन नज़र नहीं आ गए। हमने वही दूरी चार घंटे में तय कर ली थी, लेकिन मुझे डर था कि हमारी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी। डॉ. चिन की हालत बहुत खराब थी। जब हम उनके चारों ओर जमा हुए तो उनकी ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखी, हालाँकि वे जीवित प्रतीत हो रहे थे। उनकी आँखें हिल रही थीं, इसलिए मैंने उनके कंधों को हिलाया। अगर हमें उन्हें सुरक्षित निकालना था तो मुझे उनसे बात करनी ही थी।

'हे, डॉ. चिन!' मैंने चिल्लाकर कहा। 'आप ठीक हो जाएंगे।'

मैंने उसकी जांच की। वह मौत के करीब लग रहा था। वह आदमी लगभग छत्तीस घंटे से फंसा हुआ था और शारीरिक रूप से बहुत दयनीय हालत में था। उसका एक हाथ पूरी तरह से ठंड से जम गया था; डॉ. चिन का चेहरा भी ठंड से बुरी तरह झुलस गया था, साथ ही जूते के नीचे दोनों पैर भी। मुझे पता था कि अगर हम उसे अस्पताल ले भी गए, तो ये चोटें उसके जीवन को बदल देंगी। फिर भी, उसकी हरकतों में कुछ ऐसा था जिससे मुझे लगा कि उसने हार नहीं मानी है। डॉ. चिन बात करने की कोशिश कर रहे थे और जब मैंने उनकी चेतना का स्तर जांचा, तो ऐसा लग रहा था कि वह अपनी जान बचाने के लिए जी-जान से लड़ रहे हैं।

'हे डॉक्टर चिन, यहाँ कितने लोग हैं?' मैंने चिल्लाते हुए अपना कान उनके मुँह से सटा दिया ताकि मैं उनके अस्पष्ट उत्तर सुन सकूँ।

'चार।'

चार! डॉ. चिन किसी तरह टिके हुए थे।

'तुम बहुत अच्छा कर रहे हो, भाई। क्या तुम पी सकते हो?'

'पानी । । ।'

मैंने सावधानी से एक पानी की बोतल उसके होठों से लगाई, जबकि बाकी लोग उसे सावधानीपूर्वक एक बचाव वाहन में बिठा रहे थे।

समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था। पहाड़ों की चोटियों के पीछे अंधेरा छा रहा था और चूंकि बचाव हेलीकॉप्टर अंधेरे में हमें वहां से नहीं ले जा सकता था, इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण था कि हम डॉ. चिन को जल्द से जल्द एक उपयुक्त आश्रय स्थल पर ले जाएं, जहां हम कम से कम अगली सुबह हेलीकॉप्टर के आने तक उन्हें जीवित और गर्म रखने का प्रयास कर सकें।

हम पहाड़ से नीचे उतरते हुए कैंप 4 में अपने तंबू में पहुँचे, जहाँ हमने घायल को यथासंभव होश में रखने की कोशिश की। हमने उसके शरीर को रगड़कर रक्त संचार बढ़ाने का प्रयास किया। एक बार तो मैंने उसके पैरों की चोट का जायजा लेने और उसकी उंगलियों को गर्म करने के लिए उसका एक जूता उतारने की कोशिश भी की, लेकिन दोनों जूते उतारना नामुमकिन था। भीषण ठंड के कारण कपड़ा डॉ. चिन की त्वचा से चिपक कर जम गया था और चाकू से भी जूते उतारना असंभव था। पहले उसके शरीर को पिघलना ज़रूरी था।

कई बार मुझे उन्हें बचाने का पूरा भरोसा होता था। कभी-कभी, अगर मुझे लगता कि डॉ. चिन बेहोशी की ओर बढ़ रहे हैं, तो मैं उन्हें जगाने की कोशिश करता। 'अब हिम्मत रखो, दोस्त। तुम ज़िंदा रह सकते हो।' वे कराहते हुए जवाब देते।

लेकिन कुछ ऐसे क्षण भी आए जब वह नजरों से ओझल होता हुआ प्रतीत हुआ और मुझे बचाव अभियान चलाने के हमारे निर्णय पर संदेह होने लगा।

'धिक्कार है, क्या हमने यहाँ आकर सही किया?' मैंने मिंगमा से कहा। 'वह मर सकता है और हमारी जान जोखिम में डालने का कोई फायदा नहीं होगा।'

डॉ. चिन से बात करते ही मुझे पता चल गया कि वे दर्द में हैं। हर सांस के साथ उनके फेफड़े घरघरा रहे थे और उनकी सहनशक्ति मानो खत्म होती जा रही थी। यह एक ऐसा संकेत था जिसे मैंने घायल सैनिकों का इलाज करते समय अपने अनुभव से पहचाना था। इतने लंबे समय तक

अकेले जीवन के लिए संघर्ष करने वाले व्यक्ति को अक्सर CASEVAC टीम के आने पर मानसिक शांति का एक क्षण मिल जाता था। केवल अपनी जान बचाने के बजाय, घायल व्यक्ति अपना जीवन बचावकर्मी के हाथों में सौंप सकता था। जिम्मेदारी बदल गई थी; जीवन दूसरों के प्रयासों पर निर्भर हो गया था।

इस स्थिति में हमारे आगमन और आश्रय ने डॉ. चिन को कुछ राहत प्रदान की थी, लेकिन यह एक खतरनाक समय था। पल भर के लिए ही सही, डॉ. चिन ने थोड़ा आराम किया, और इतनी ही देर में एक पर्वतारोही की जान चली गई।

लेकिन हम भी थक चुके थे। चौबीस घंटे पहले अन्नपूर्णा की चोटी पर चढ़ने की वजह से हम सभी को थकान महसूस हो रही थी। अगले दिन हम डॉ. चिन के ठिकाने की ओर तेज़ी से बढ़े थे और अब, सुबह-सुबह, डॉ. चिन को गर्म रखने की कोशिश करते हुए, मुझे नींद आ गई, जब तक कि...

धड़ाम! मुझे खुले हाथ की तेज मार महसूस हुई। मिंगमा ने मेरे पैरों पर थप्पड़ मारा था।

'जाग जाओ, निम्सदाई!' वह चिल्लाया। 'जाग जाओ!'

मैं चौंक गया। मुझे पता था कि थकान मुझे फिर से जकड़ लेगी, इसलिए मैंने अपने गालों पर एक-एक थप्पड़ मारकर खुद को और भी ऊर्जावान बनाया। गेसमैन और गेलजेन ने भी ऐसा ही किया। हम सब बस जागते रहने की कोशिश कर रहे थे, तभी किसी को यह विचार आया कि हमें एक-दूसरे पर चिल्लाना और चीखना चाहिए। यह पागलपन जैसा लग सकता था, हम सब एक तंबू में ठसाठस भरे हुए थे, जोर-जोर से चिल्ला रहे थे, एक बीमार आदमी के चारों ओर जमा थे, इस उम्मीद में कि हमारे शरीर की गर्मी उसे जीवित रख सके। लेकिन चूंकि हम बेहद मुश्किल हालात में थे, इसलिए हमने स्वाभाविक रूप से ऐसे कदम उठाए। सो जाना डॉ. चिन के लिए निश्चित रूप से अंत होता।

हालांकि, टीम को कुछ अन्य बातों का भी ध्यान रखना था: हेलीकॉप्टर हमें सुबह 6 बजे कैंप 3 से लेने वाला था और समय पर पहुंचना बेहद जरूरी था। अगर हम बहुत जल्दी पहुंच जाते, तो डॉ. चिन को वहीं रुकना पड़ता, उनका शरीर हवा और ठंड के संपर्क में आ जाता; अगर हम देर से पहुंचते, तो अस्पताल जाने में देरी हो सकती थी, जो ऐसे समय में काफी महंगा साबित हो सकता था जब हर मिनट मायने रखता हो।

घड़ी पर नज़र डालते ही मुझे एहसास हुआ कि सूर्योदय होने में अब बस कुछ ही घंटे बचे हैं। सूर्योदय का समय आते ही हम डॉ. चिन को अपने साथ घसीटते हुए पहाड़ से नीचे उतरने लगे। थोड़ी ही देर में एक हेलीकॉप्टर हमारे ऊपर मंडराने लगा। हमने डॉ. चिन को रस्सी से बांध दिया और उन्हें इलाज के लिए काठमांडू ले जाया गया।

नेपाल में इस तरह के आपातकालीन निकासी अभियान अक्सर होते रहते हैं, लेकिन कभी-कभी इसमें एक चाल भी चलनी पड़ती थी। वित्तीय कारणों से, खोज और बचाव दल को आमतौर पर खुद ही नीचे उतरना पड़ता था, क्योंकि पर्वतारोहियों को एक-एक करके लंबी रस्सी से पहाड़ पर बार-बार ऊपर-नीचे ले जाना महंगा पड़ता था। बचाव दल के लिए हेलीकॉप्टर को चार बार घुमाने से बिल में हजारों डॉलर का इजाफा हो सकता था। लेकिन इस बार मुझे पहाड़ से

नीचे वापस जाने के लिए अगली सवारी की पेशकश की गई।

मैंने कहा, 'अभी नहीं। कृपया पहले मेरी पूरी टीम को ले जाइए। फिर मेरे पास आइएगा। मैं आखिरी आदमी होऊंगा।'

मैं समझ गया था कि अगर मुझे हेलीकॉप्टर से तुरंत निकाल लिया जाता, तो बाकी लोगों को लेने के लिए हेलीकॉप्टर का वापस आना लगभग नामुमकिन था – हेलीकॉप्टर की सवारी बहुत महंगी पड़ती। लेकिन अगर मैं प्राथमिक घायल व्यक्ति को बचाकर पहाड़ पर ही रहता, तो डॉ. चिन की जान बचाने के लिए मैंने जो कड़ी मेहनत की थी, उसके बाद वे मुझे छोड़ नहीं सकते थे। नेपाल में मेरी प्रतिष्ठा और संपर्कों ने भी मुझे एक हद तक ताकत दी थी। वे मुझसे पंगा नहीं ले सकते थे। इसलिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे मेरी अभियान टीम के साथ कोई चालबाज़ी न कर सकें, घायल व्यक्ति के आने के तुरंत बाद मिंगमा, गेलजेन और गेसमैन को बेस कैंप पहुँचा दिया गया।

जब मुझे आखिरकार काठमांडू के उस अस्पताल के हेलीपैड पर उतारा गया जहाँ डॉ. चिन का इलाज चल रहा था, तब तक उनके बचाव की खबर फैल चुकी थी। उनकी पत्नी उनसे मिलने आ चुकी थीं, साथ ही कैमरामैन और पत्रकारों की भीड़ भी थी, जिन्होंने हेलीकॉप्टर से उतरते ही मुझे घेर लिया। जब मैं श्रीमती चिन से गहन चिकित्सा इकाई में मिली, तो वह राहत महसूस कर रही थीं, लेकिन भावुक भी थीं।

उन्होंने कहा, 'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ। डॉक्टरों को यकीन नहीं है कि वह बच पाएगा या नहीं।'

मैंने कहा, 'वह जीना चाहता है। वह पिछले छत्तीस घंटों से संघर्ष कर रहा है। हमने उसकी मदद के लिए हर संभव प्रयास किया।'

मुझे उन्हें फिर से मिलाने की खुशी थी, लेकिन इस बचाव अभियान ने मुझे ऊँचाई पर चढ़ाई और मृत्यु की वास्तविकता पर संक्षेप में विचार करने के लिए मजबूर कर दिया। यह एक बार फिर इस बात की याद दिलाता है कि 8,000 मीटर से ऊपर का जीवन क्रूर और अप्रत्याशित हो सकता है, हालांकि जब भी कोई डॉ. चिन जैसे अभियान में शामिल होता है, तो वे आम तौर पर पर्वतीय रोमांच के खतरों को समझते हैं। ऊँचाई की बीमारी से पीड़ित होना, या गंभीर चोट लगना, जब भी होता था, तो शायद ही कभी बहुत बड़ा झटका लगता था - और अन्नपूर्णा पर ऐसा अक्सर होता था।

लेकिन जब मुझे बुढ़ापे के कारण धीरे-धीरे और कष्टपूर्वक मरने या किसी अभियान या मिशन के दौरान मृत्यु को चुनने का विकल्प दिया गया, तो मेरी भावनाएँ स्पष्ट थीं: मैं निश्चित रूप से दूसरा विकल्प चुनूँगा। मुझे पहाड़ पर मरने से डर नहीं था; मैं चुपचाप दुनिया से विदा होने के बजाय शान से अपनी जान गंवाना पसंद करूँगा।

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या डॉ. चिन भी यही मानते थे।

*

काठमांडू में अपना काम खत्म करके जब हमने धौलागिरी के बेस कैंप जाने की योजना बनाई, तो

मैं गुस्से से उबल रहा था। मुझे इस बात पर गुस्सा आ रहा था कि पहाड़ पर डॉ. चिन के साथ कैसा बर्ताव किया गया था। लेकिन धौलागिरी पर मेरा इंतज़ार कर रहे प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम के सदस्यों - लक्पा डेंडी, रमेश गुरुंग और कासांग तेनज़ी - के प्रति भी मेरे मन में गहरी निराशा पनप रही थी।

पहाड़ पर देर से पहुँचने के कारण चढ़ाई का सबसे अच्छा मौका हाथ से निकल गया और अब भयंकर मौसम ने तबाही मचा दी थी। भारी बर्फबारी से हमारी फिक्स्ड रस्सियाँ दब गई थीं और ऐसा लग रहा था कि हम उन्हें ढूँढ नहीं पाएँगे। इस बीच, पहाड़ के ऊँचे शिविरों में लगे हमारे तंबू तेज़ हवाओं से तहस-नहस हो गए थे। कुछ आश्रय स्थल तो पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुके थे। जब मैं गेसमैन, मिंगमा और गेलजेन के साथ हेलीकॉप्टर से बेस कैंप पहुँचा, तो वहाँ मेरी टीम का मनोबल भी उतना ही गिरा हुआ था। हमारा सारा सामान भी खत्म हो चुका था। हम बुरी तरह फँस गए थे।

धौलागिरी पर चढ़ाई के महत्व को मैं जल्दी समझ गया था, लेकिन प्रोजेक्ट पॉसिबल की टीम के सदस्यों के बीच बढ़ती एकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी। मैंने यह जान लिया था कि किसी अभियान दल का आयोजन करना युद्ध में सैनिकों के समूह को संगठित करने से अलग नहीं था: उन्हें उद्देश्य और प्रेरणा की आवश्यकता थी, लेकिन भोजन और आराम भी उतना ही ज़रूरी था। आराम और पुनर्प्राप्ति के बिना, इस बात की पूरी संभावना थी कि कोई व्यक्ति या पूरी टीम युद्ध की गर्मी में असफल हो जाए। इसलिए मैंने साथियों से कहा कि हम पहाड़ से पीछे हट रहे हैं ताकि फिर से एकजुट हो सकें। थोड़ी शराब पीना और नाचना जायज़ था, और हम पोखरा के लिए रवाना हो गए, जहाँ हमने एक सप्ताह तक पार्टी की; हमने कुछ मोटरबाइक भी किराए पर लीं और एक दोपहर खेतों में तेज़ गति से चक्कर लगाए।

हमारा मनोबल बढ़ा और थोड़े समय के आराम और तरोताजगी का हमें भरपूर फायदा मिला। 12 मई को, हमने शाम 5:30 बजे धौलागिरी की चोटी पर विजय प्राप्त की। हम लगातार बीस घंटे तक 70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाओं और घने बादलों से जूझते रहे, बर्फ की गहरी पहाड़ियों को खोदते हुए कुछ-कुछ मीटर चढ़ते रहे। अधिकांश काम अल्पाइन शैली में किया गया, जहाँ हम ज्यादातर बिना फिक्स्ड लाइनों के काम करते रहे, केवल किसी विशेष रूप से तकनीकी रिज या चट्टानी सतह पर ही इसका इस्तेमाल किया गया। यह प्रयास बेहद थकाने वाला था। यह निश्चित रूप से सुरक्षित नहीं था, लेकिन मुझे पता था कि मैं इस बहादुर और अत्यधिक कुशल टीम का नेतृत्व करते हुए इस भीषण मौसम में भी डगमगा सकता हूँ। जब भी हवा कुछ पलों के लिए भी थमती हुई लगती, टीम पूरी गति से आगे बढ़ती और अगले तूफान के आने से पहले जितनी जल्दी हो सके चढ़ाई करती। फिर हम तूफान का सामना करते, खुद को तब तक तैयार रखते जब तक कि दोबारा ऊपर चढ़ने का समय न आ जाए।

शिकायत की कोई गुंजाइश नहीं थी। मैं जानता था कि दुख में डूबे रहना या डर को अपने विचारों में हावी होने देना मददगार नहीं होगा। जब भी टीम आराम करती, मैं उन्हें केवल पाँच मिनट बैठने देता था, और समय समाप्त होते ही, मैं सबसे पहले खड़ा होता और फिर आगे बढ़ता। मुझे लगता था कि उदाहरण पेश करके नेतृत्व करना ही सबसे अच्छा है। लेकिन हालांकि

मैं तेजी से आगे बढ़ने के लिए उत्सुक था, मैं अपने साथियों की जान जोखिम में नहीं डालना चाहता था। जब रमेश को ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के कारण अस्वस्थ महसूस होने लगा, तो मैंने उसे सुरक्षित स्थान पर नीचे उतरने के लिए कहा।

लेकिन कासांग को भी काफी संघर्ष करना पड़ा था। हालांकि उसे 8,000 मीटर से ऊंची चोटियों पर चढ़ने का कुछ अनुभव था, पर वह अपने बड़े भाई मिंगमा जितना शारीरिक रूप से फुर्तीला नहीं था और भारी परिश्रम के कारण वह कमजोर पड़ता दिख रहा था। उसे दांत में तेज दर्द भी हो रहा था और जैसे-जैसे हम मृत्यु क्षेत्र की ओर बढ़ते गए, उसकी हालत बिगड़ती चली गई। कई बार तो शिखर तक पहुंचने के संघर्ष में मिंगमा को उसे सहारा देना पड़ा। मैं चिंतित था।

कासांग अपने भाई जितना ताकतवर नहीं है। क्या वह कामयाब हो पाएगा?

तभी मुझे एक भयानक एहसास हुआ: अगर दोनों भाई-बहन हिमस्खलन की चपेट में आ जाते या एक साथ किसी खाई में गिर जाते, तो परिवार के कमाने वाले एक ही झटके में हमेशा के लिए खत्म हो जाते। अजीब बात यह थी कि कासांग ने भी कुछ ऐसा ही अंत सोचा था। जब हम आखिरकार शिखर पर पहुँचे, तो उसने मेरी पीठ थपथपाई।

उन्होंने कहा, 'शायद दोनों भाइयों का एक ही समय में पहाड़ पर होना ठीक नहीं है। अगर कुछ गड़बड़ हो जाती है, तो परिवार की देखभाल कौन करेगा?'

मैंने कासांग को गले लगाया। 'मैं वादा करता हूँ कि हम साथ मिलकर घर पहुँचेंगे, भाई।'

फिर मैंने टीम को तेजी से नीचे की ओर ले गया।

उतरते समय कई बार हालात हम सबको काबू से बाहर करने वाले थे; पहाड़ का मिजाज लगातार बिगड़ता जा रहा था और हवा इतनी तेज़ चल रही थी कि कई बार कुछ दिखना नामुमकिन हो जाता था। सुरक्षात्मक चश्मे पहने होने के बावजूद मेरी आँखों में जलन हो रही थी, लेकिन जैसे-जैसे हम बेस कैंप की ओर बढ़ते गए, मुझे एक बदलाव का एहसास हुआ: गेसमैन ने अन्नपूर्णा पर मुझे दिखाया था कि हम एक विशिष्ट इकाई हैं। लेकिन प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम ने अब एक अनोखा बंधन भी खोज लिया था – हमारे बीच गहरी वफादारी विकसित हो गई थी क्योंकि हमारे सामने जो चुनौतियाँ थीं वे बहुत बड़ी थीं।

मुझे पता था कि खोज और बचाव अभियान के दबाव में मिंगमा और गेलजेन जैसे लोगों पर भरोसा किया जा सकता है। लक्पा डेंडी ने जी200ई पर अपने काम के दौरान अपनी दृढ़ता साबित कर दी थी। धौलागिरी की खतरनाक परिस्थितियों से बच निकलने ने हम सबको और भी करीब ला दिया था। समूह ने मेरा साथ दिया और मैंने उनका। एसबीएस की तरह, हम उत्कृष्टता की निरंतर खोज में लगे हुए थे।

अगर हमें कंचनजंगा में जीवित रहना है, तो हमें उस बंधन के हर एक हिस्से को मजबूती से थामे रखने की जरूरत होगी।

अंधेरे में

समुद्र तल से 8,586 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कंचनजंगा विश्व का तीसरा सबसे ऊंचा पर्वत है, लेकिन यह पहले चरण का संभवतः सबसे कठिन अभियान भी था। अन्नपूर्णा की भयावह मृत्यु दर को देखते हुए यह बात थोड़ी अजीब लग सकती है, लेकिन कंचनजंगा अपनी बेहद कठिन चढ़ाई के लिए प्रसिद्ध था; बहुत कम लोगों में इसके शिखर तक पहुंचने का साहस, भाग्य या शक्ति होती थी क्योंकि कैंप 4 से शिखर तक की चढ़ाई - जो समुद्र तल से 7,750 मीटर ऊपर स्थित था - बेहद कष्टदायक थी। हालांकि चढ़ाई के लिए केवल लगभग एक हजार मीटर की ऊंचाई ही बची थी, लेकिन तय की जाने वाली दूरी बहुत लंबी थी, जबकि गहरी बर्फ अक्सर कंचनजंगा के शिखर की ओर जाने वाले रास्ते को अवरुद्ध कर देती थी।

अंतिम चोटी तक पहुँचने के बाद, पर्वतारोही को भयंकर हवाओं और कड़ाके की ठंड का सामना करना पड़ता था। ऑक्सीजन का स्तर गिरकर 33 प्रतिशत हो जाता था और इलाका बेहद मुश्किल भरा होता था – ढीली चट्टानों, बर्फ से ढके पत्थरों और आँखों को चौंधिया देने वाली बर्फ की बौछारों का एक अथाह जाल। मनोवैज्ञानिक रूप से यह रास्ता कभी न खत्म होने वाला लगता था, शिखर हमेशा के लिए पहुँच से बाहर लगता था, और कई लोग शिखर तक पहुँचने से पहले ही घर लौट जाते थे। औसतन हर मौसम में लगभग तीन सौ लोग एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक चढ़ाई करते हैं; कंचनजंगा पर यह संख्या लगभग पच्चीस रही।

मुझे चुनौती से घबराहट नहीं हुई। हमने बेहद मुश्किल परिस्थितियों में पहले दो पहाड़ों को बहुत कम समय में पार कर लिया था, इसलिए मुझे पता था कि हम कंचनजंगा पर भी चढ़ाई कर सकते हैं, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि टीम के सभी सदस्य थके हुए थे। धौलागिरी पर पांच दिन बिताने, रस्सियों को ठीक करने और भारी बर्फबारी में दबी रस्सियों को निकालने के साथ-साथ तीस किलो का सामान पीठ पर ढोने के कारण हम बुरी तरह थक चुके थे। 14 मई को जब हम कंचनजंगा के बेस कैंप पहुंचे, तो टीम ने कुछ देर आराम किया और पास के एक गांव से खरीदा हुआ तला हुआ चिकन खाकर अगले चौबीस घंटों के लिए अपनी रणनीति तैयार की।

हमें तेज़ी से आगे बढ़ना था, एक ही बार में शिखर तक पहुँच जाना था, न कि सामान्य अभियानों की तरह कैंप 1, 2, 3 और 4 में एक-एक दिन आराम करना था। ढिलाई नहीं करनी थी। हमारी यह तीव्र कार्यगति मजबूरी थी: हम पहले से ही ऊँचाई के अनुकूल हो चुके थे और ऊर्जा का स्तर घटता जा रहा था, इसलिए रुककर आराम करने से हम असफल हो जाते। मैं तो

वहीं सो जाता; गेसमैन और मिंगमा भी मेरे साथ चढ़ाई में शामिल हो रहे थे और वे भी थक रहे थे।

हम पूरे जोश के साथ निकले, अपनी रफ्तार बढ़ाते हुए घाटी से होते हुए कैंप 1 की ओर तेजी से चढ़ाई करने लगे, जिससे हमारी हृदय गति बढ़ गई और हमारा शरीर हरकत में आ गया। नीचे, बर्फ से ढका इलाका छिपी हुई दरारों से भरा हुआ था। ऊपर, निचली ढलानें हिमस्खलन और चट्टानों के गिरने के लिए कुख्यात थीं, जो अनजान पर्वतारोहियों पर गिर सकती थीं, हालांकि मौसम ने खतरे को और बढ़ा दिया था।

हमारे आस-पास कई बड़े-बड़े पत्थर जम कर एक साथ जम गए थे, लेकिन दिन के समय सूरज काफी ऊपर होने के कारण, पिघलती हुई बर्फ से हिमस्खलन जैसी छोटी-सी आपदा आने का खतरा था। बारी-बारी से पहरेदारी करते हुए, हममें से एक ऊपर की पहाड़ियों पर संभावित बमबारी की निगरानी करता, जबकि बाकी दो लोग निकटतम आश्रय स्थल की ओर दौड़ पड़ते। अगर कोई 'चट्टान!' चिल्लाता, तो पूरा समूह तुरंत छिपने के लिए कूद पड़ता।

शुरुआत में, हमारी त्वरित रणनीति कारगर साबित हुई; हमारे ऊर्जा स्तर उच्च थे।

मैंने जोश में चिल्लाते हुए कहा, 'हम इस पहाड़ पर जितनी जल्दी हो सके चढ़ेंगे, भाइयों! जब सांस फूलने लगे तो नींद नहीं आती!'

शाम 5 बजे तक हम कैंप 1 पर अपने समिट सूट की ज़िप बंद कर रहे थे। पहाड़ पर पहले से मौजूद अभियान दल अपने-अपने शिखर अभियान में पूरी तरह से जुट चुके थे और शाम 7 बजे तक उनमें से कई लोग कैंप 4 से निकल चुके थे। (एवरेस्ट पर, जिसकी कैंप 4 से शिखर तक की ऊंचाई के हिसाब से सबसे लंबी चढ़ाई है, पर्वतारोही आमतौर पर रात 9 बजे के आसपास निकलते हैं।) ढलती रोशनी में, मैंने देखा कि उनकी हेडलाइटें हमारे ऊपर काफी ऊंचाई पर टिमटिमा रही थीं, जिससे मुझे थोड़ी चिंता हुई। हाई कैंप और शिखर के बीच की दूरी चुनौतीपूर्ण लग रही थी।

मुझे पता था कि अगर हमें समय पर शिखर तक पहुंचना है तो हमें तेज़ी से आगे बढ़ना होगा, लेकिन जब मैंने देखा कि गेसमैन पीछे छूट रहा है तो मेरा आत्मविश्वास कम होने लगा। वह काफी देर से मिंगमा और मेरे द्वारा तय की गई गति को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा था, क्योंकि हम फिक्स्ड लाइनों के सहारे आगे बढ़ रहे थे। हालांकि शिखर की ओर बढ़ते हुए मैं खुद को मजबूत महसूस कर रहा था, लेकिन गेसमैन के हमारे साथ आने का इंतजार करने का विचार थोड़ा बेचैन करने वाला था।

यात्री को साथ ले जाने में हमेशा जोखिम रहता था। कंचनजंगा जैसे खतरनाक पर्वत से सुरक्षित वापस लौटने की हमारी संभावना बहुत कम हो जाती अगर हम शिखर पर चढ़ने के सुरक्षित समय (यानी पर्वत पर चढ़ाई करके सुरक्षित घर लौटने के समय) से चूक जाते। यह भी संभव था कि उतरते समय हम फंस जाते, अंधेरे में ऊपर या नीचे जाने में असमर्थ होते, अगर मौसम बिगड़ जाता और हम शिविरों के बीच फंस जाते, हालांकि हमने रात भर रुकने का इरादा नहीं किया था।

पहाड़ पर एक ही बार में चढ़कर उतरने की योजना के तहत, हम अपने साथ केवल आवश्यक

उपकरण जैसे ऑक्सीजन, आपातकालीन रस्सी, भोजन और कुछ निजी सामान ही ले जा रहे थे। हमारा लक्ष्य था कि हम लगातार आगे बढ़ते रहें, हर पल सांस लेने के लिए रुकते समय जागते रहने के लिए संघर्ष करते रहें, यह जानते हुए कि अगर हमने रफ्तार धीमी की तो मौत हमें जकड़ सकती है।

मैंने कहा, 'दोस्तों, जब भी हम काठमांडू में पार्टी करते हैं, तो सुबह छह बजे तक नाचने में हमें कोई परेशानी नहीं होती। यह तो बस मौज-मस्ती है, और हम इसे आसानी से कर लेते हैं। लेकिन कंचनजंगा पर चढ़ाई करना एक दुर्लभ उपलब्धि है, हम सभी को इसका इनाम मिलेगा, और अगर हम सफल हुए तो यह हमारी जिंदगी बदल सकता है। हमें आराम करने की जरूरत नहीं है।'

असल तरकीब यह थी कि एक दर्दनाक अनुभव को मनोवैज्ञानिक रूप से फिर से परिभाषित किया जाए। इस भावनात्मक बदलाव ने हमें जल्दी ही दूरी तय करने में मदद की, लेकिन शारीरिक रूप से हम काफी कष्ट झेल रहे थे।

उस समय मेरे अपेक्षाकृत सीमित पर्वतीय अभियानों के दौरान, कई बार पहाड़ों पर मंडरा रही किसी आपदा का आभास हो जाता था, ठीक उसी तरह जैसे युद्ध के दौरान मुझे अक्सर आने वाली मुसीबत का अंदाज़ा लग जाता था। सैन्य दौरों पर काम ज़्यादातर जाना-पहचाना ही होता था; एक सैनिक पूरी तरह से ध्यान केंद्रित किए बिना भी काफी सतर्क और सक्रिय रह सकता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति राजमार्ग पर गाड़ी चलाते समय बातचीत कर सकता है। अगर आगे कोई खतरा मंडराता हुआ दिखाई देता, तब भी सतर्क रहकर प्रतिक्रिया देना, गति धीमी करना या यहाँ तक कि रास्ता बदलना भी संभव था।

ठीक इसी तरह, एक सैनिक अपने आस-पास की चहल-पहल को देखकर ही समझ जाता था कि हालात बिगड़ने वाले हैं। कुछ रेगिस्तानी चौकियों पर, अगर स्थानीय लोग अचानक पास के दरवाजों और गलियों में गायब हो जाते थे, तो समझ लीजिए कि युद्ध शुरू होने वाला है।

जैसे-जैसे हम कंचनजंगा पर कैंप 3 और उससे आगे बढ़ते गए, मुझे वही जानी-पहचानी घबराहट और रोमांच का अनुभव हुआ। कुछ गड़बड़ होने वाली थी। मुझे इसका पहला आभास तब हुआ जब मैंने एक खड़ी, बर्फीली ढलान पर चढ़ते हुए अपने ठीक ऊपर एक पर्वतारोही को देखा; उस रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए पूरी ताकत लगानी पड़ी, लेकिन हम लगातार आगे बढ़ रहे थे, भले ही गेसमैन काफी दूर निकल चुका था।

आगे चल रहा चिली का रहने वाला व्यक्ति संघर्ष कर रहा था। वह बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था और अगर हमें शिखर पर समय रहते पहुँचकर वापस लौटना था, तो हमें उसे जल्दी से पीछे छोड़ना पड़ता। दूर से देखने पर वह थका हुआ लग रहा था और समझ गया था कि वह अभियान पूरा करने की स्थिति में नहीं है। उसके लिए वापस लौट जाना ही समझदारी भरा विकल्प था, लेकिन वह फिर भी आगे बढ़ता रहा।

मुझे बहुत सहानुभूति हुई। 8,000 मीटर से ऊँची चोटी पर चढ़ने वाले हर व्यक्ति का एक लक्ष्य होता है – एक उद्देश्य। कुछ लोग अनुभवी पर्वतारोही होते हैं जो शौक के तौर पर खुद को बेहतर बनाना चाहते हैं। दूसरों की निजी महत्वाकांक्षाएँ होती हैं: शायद वे किसी चैरिटी के लिए धन जुटा रहे हों; कई लोग PTSD जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से उबरने के लिए या

कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से ठीक होने का जश्न मनाने के लिए पर्वतारोहण अभियान का उपयोग करते हैं; कुछ लोग व्यक्तिगत रिकॉर्ड बनाने या किसी व्यापक उपलब्धि को हासिल करने के लिए दृढ़ संकल्पित होते हैं।

बेस कैंप में मुझे पता चला था कि चिली का पर्वतारोही - रोड्रिगो विवान्को नाम का एक व्यक्ति - बिल्कुल दूसरी श्रेणी में आता था। जाहिर है, उसके देश का कोई भी व्यक्ति आज तक कंचनजंगा की चोटी पर नहीं पहुंचा था, फिर भी उसी दिन दो चिली के पर्वतारोही यह कारनामा करने की कोशिश कर रहे थे। रोड्रिगो बिना ऑक्सीजन के चढ़ाई कर रहा था; उसका साथी पर्वतारोही गैस के साथ बादलों में उससे थोड़ा ऊपर दिखाई दे रहा था। यह एहसास कि वह अपने देश का दूसरा पर्वतारोही बनने वाला है, मनोवैज्ञानिक रूप से उसके लिए काफी मुश्किल रहा होगा, भले ही वह बोतलबंद हवा का इस्तेमाल नहीं कर रहा था।

जब आखिरकार हमारी मुलाकात लाइन पर हुई, तो मैंने रोड्रिगो की धीमी चाल और थकी हुई साँसों को देखा। वह बुरी तरह थक चुका था; उसके लिए सबसे सुरक्षित विकल्प नीचे उतरना ही था।

मैंने कहा, 'भाई, देखो, अब बहुत देर हो चुकी है। शिखर सम्मेलन अभी काफी दूर है, इसलिए तुम्हें इस बारे में बहुत सावधान रहने की जरूरत है।'

उसने सिर हिलाया, लेकिन आगे बढ़ने के लिए दृढ़ संकल्पित लग रहा था। 'नहीं, मैं चढ़ूंगा। मैं चढ़ूंगा!'

मैंने कहा, 'यह तुम्हारा फैसला है। लेकिन मैं यह कह रहा हूं कि तुम्हारी रफ्तार बहुत धीमी है, और शिखर अभी भी बहुत दूर है।'

रोड्रिगो को मजबूर करना मेरा काम नहीं था। अगर वह मेरे अभियान दल का सदस्य होता, तो मैं उसे सुरक्षित नीचे उतरने का आदेश देता, या अगर वह मेरा कोई ग्राहक होता, तो मैं उसे गाइड के साथ बेस कैंप तक ले जाता। लेकिन मैं उसे केवल सलाह दे सकता था और रोड्रिगो ने मेरी मदद को ठुकरा दिया था। मुझे आने वाले खतरे का आभास हो गया; मेरा ध्यान और भी सतर्क हो गया। एक पल के लिए, मैंने अपने आसपास की छोटी-छोटी बातों का जायजा लिया।

शारीरिक रूप से, रोड्रिगो की हालत बहुत खराब थी। वह किस मोड़ पर टूटेगा: ऊपर चढ़ते समय, या नीचे गिरते समय?

अगर ऐसा हुआ तो क्या हम रोड्रिगो को बचाने के लिए काफी मजबूत होंगे? शायद। गेसमैन की हालत खराब है, लेकिन हम तीनों मिलकर इसे संभाल लेंगे।

क्या हम पहले कंचनजंगा की चोटी पर पहुँच सकते हैं और ज़रूरत पड़ने पर वापसी में रोड्रिगो को साथ ले सकते हैं? मैं खुद को तरोताज़ा महसूस कर रहा हूँ, चोटी नज़दीक है, तो... हाँ।

मैं जल्दी ही यह सीख रहा था कि किसी भी पर्वतारोही के लिए सबसे बड़ी चुनौती आत्म-जागरूकता होती है; पहाड़ पर किसी के लिए भी खुद से, अपनी सच्चाई से भागना या छिपना असंभव है। उस समय मेरी पहली प्रवृत्ति रोड्रिगो को वापस मोड़ने की थी, लेकिन जैसे ही उसने आगे बढ़ने का फैसला सुनाया, मैंने अपनी दूसरी प्रवृत्ति पर ध्यान केंद्रित किया: अपने मिशन पर ध्यान देना।

मुझे सात महीनों में चौदह पर्वत चढ़ने हैं। यह सूची में अगला पर्वत है।

मेरा पहला कदम यह पता लगाना था कि ऐसा कैसे हो सकता है।

सौभाग्य से, मैं खुद को एक इंसान और एक पर्वतारोही के रूप में, अपनी सच्चाइयों को समझता था। मैं जानता था कि रोड्रिगो का इंतज़ार करना, उसके ठीक होने और जल्दी करने की उम्मीद करना, मेरे बस की बात नहीं थी। अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए किसी के पीछे-पीछे चलना, इस उम्मीद में कि वह रास्ता दे देगा, कभी भी मेरा तरीका नहीं रहा था, और इस बात की संभावना बहुत कम थी कि रोड्रिगो हमें रास्ता देने के लिए थोड़ी देर के लिए अपनी रस्सी छोड़ देगा। वह पूरी तरह थक चुका था। इसके बजाय, मिंगमा और मैंने दोनों ने रस्सी से अपना क्लिप अलग कर दिया। हम चिली के पर्वतारोही से जितनी जल्दी हो सके आगे बढ़े, सुबह की पहली रोशनी में अपनी तीव्र चढ़ाई जारी रखी; लेकिन रोड्रिगो को रास्ता देना ऊँचाई पर किए जाने वाले कई दांव-पेचों की शुरुआत मात्र थी।

पहाड़ पर रस्सियों के सहारे ऊपर-नीचे आने-जाने वाले लोगों की भीड़ लगी हुई थी। शिखर की ओर बढ़ रहे पर्वतारोहियों में ज़बरदस्त उत्साह झलक रहा था, लेकिन निचले शिविरों की ओर उतर रहे पर्वतारोहियों में एक अलग ही ऊर्जा थी। उनमें से कई थके-हारे थे; कुछ तनावग्रस्त दिख रहे थे। कुछ पर्वतारोही तो शिखर तक पहुँचने के रास्ते में बुरी तरह थक चुके थे और मानो मौत और जीवन के बीच झूल रहे हों। सबसे बुरी हालत एक भारतीय पर्वतारोही की थी, जो अपने शेरपा के साथ एक चट्टान के किनारे धंस गया था, मानो ऊपर या नीचे जाने में असमर्थ हो, और एक भयानक वास्तविकता का सामना कर रहा था। कंचनजंगा ने उनकी सच्चाई को उजागर कर दिया था।

*

हम 15 मई को दोपहर में शिखर पर पहुँचे। मिंगमा को गले लगाते हुए, मैंने उत्साह से बादलों की ओर चिल्लाया और अपने बैग में हाथ डाला - तस्वीरें लेनी थीं और झंडे निकालने थे। पहले झंडे पर प्रोजेक्ट पॉसिबल का लोगो था; दूसरे पर स्पेशल बोट सर्विस का बैज छपा हुआ था।

मैंने रेजिमेंट का आदर्श वाक्य दोहराते हुए चिल्लाकर कहा, 'बस यही है! ताकत और चतुराई से, एकमात्र, एसबीएस!'

हमारी जगह से एवरेस्ट, मकालू और ल्होत्से की चोटियाँ साफ़ दिखाई दे रही थीं, जो पहले चरण के आखिरी तीन पड़ाव थे। दूर कहीं नेपाल की चीन और भारत से सीमा को अलग करने वाली रेखाएँ भी दिख रही थीं। यह वही सुनहरा दिन था जिसका मैंने लंबे समय से सपना देखा था और ऊपर नीला आसमान छाया हुआ था, लेकिन समय तेज़ी से बीत रहा था। जब मैंने अपनी घड़ी देखी तो दिन की रोशनी के कुछ ही घंटे बचे थे, हालाँकि थका हुआ गेसमैन आखिरकार, शुक्र है, हमारे साथ आ गया था। लेकिन नीचे पटरियों पर हमारा क्या हाल होने वाला था, कौन जानता था? घर की लंबी पैदल यात्रा शुरू करने का समय आ गया था। मैं पहले से ही पूरी तरह तैयार था और किसी भी मुसीबत का सामना करने के लिए बेताब था, मुझे लगभग उम्मीद थी कि मुझे टूटे हुए रोड्रिगो को उठाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाना पड़ेगा।

लगभग तुरंत ही एक भयावह दृश्य हमारे सामने आ गया। जिस भारतीय पर्वतारोही को हमने पहले देखा था, और उसका गाइड, अभी भी हमसे पचास मीटर नीचे फंसे हुए थे, हिलने-डुलने में असमर्थ और उस तरह के मृत्यु चक्र में फँसे हुए थे जो कभी-कभी ऊँचाई पर होता है: एक जानी-पहचानी कहानी जिसमें एक लाचार पर्वतारोही और उसका या उसकी मजबूत साथी शामिल होते हैं, जहाँ बीमार को बड़ी मुश्किल से सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया जाता है, लेकिन बहुत देर तक वहीं रहने के कारण, स्वस्थ व्यक्ति भी उतनी ही खतरनाक स्थिति में पहुँच जाता है। बचने की कोई शक्ति न होने के कारण, वे सभी मर जाते हैं। यहाँ फिर वही हुआ, और अब पर्वतारोही और गाइड दोनों कंचनजंगा पर फँस गए थे।

मैंने उन्हें जगाने की कोशिश की। मैंने पूछा, 'क्या समस्या है?' पर्वतारोही पर ऊंचाई की बीमारी का भयानक हमला हावी होता दिख रहा था।

शेरपा ने सिर हिलाया। “उसकी ऑक्सीजन खत्म हो गई है। मेरी भी सांसें रुक गई हैं। अब यह आदमी नीचे नहीं जा सकता और जाहिर है मैं उसे यहाँ छोड़ भी नहीं सकता, इसलिए मैं उसे अपने साथ चलने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन वह हिल भी नहीं रहा। उसे लगता है कि अगला कदम उसका आखिरी कदम होगा।”

मेरी आंखों के सामने एक धीमी गति से चलती हुई कार दुर्घटना घटित हो रही थी।

‘शिखर पर पहुंचने से पहले हम आपसे यहीं मिले थे और आपने कोई प्रगति नहीं की है?’

नहीं भाई। यह आदमी एक कदम भी नहीं चल सकता।

मैंने पर्वतारोही की ओर देखा। 'तुम्हारा नाम क्या है, दोस्त?'

गाइड ने धीमी आवाज़ में कहा, 'उसका नाम बिप्लब है। उसने बोलना बंद कर दिया है।'

जब मैंने उसकी जाँच की, तो बिप्लब सौभाग्य से होश में था, लेकिन यह बताना मुश्किल था कि वह HAPE या HACE से पीड़ित था। उसका शेरपा भी बुरी हालत में लग रहा था, हालाँकि वह कम से कम खड़ा हो सकता था और एक पैर दूसरे के आगे रख सकता था, भले ही बहुत धीरे-धीरे।

मैं उन दोनों को इतनी नाजुक हालत में नहीं छोड़ सकता था। वे खुद को बचा नहीं सकते थे, इसलिए मिंगमा, गेसमैन और मेरी ज़िम्मेदारी थी कि हम दोनों को नीचे उतारें। हालांकि, तेज़ी से काम करना बेहद ज़रूरी था। शायद थोड़ी ऑक्सीजन बिप्लब को चलने-फिरने में मदद कर दे, लेकिन हम सभी जानते थे कि अगर वह कम से कम कैंप 4 तक नहीं उतर पाया, तो उसकी मौत निश्चित थी। चिंता की बात यह थी कि हमारी सबसे बड़ी चुनौती शारीरिक नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक लग रही थी। बिप्लब डर से कांप रहा था।

मैंने चिल्लाते हुए उसे उठने में मदद की, 'हम तुम्हें घर ले जाएंगे।'

हम तुरंत आपातकालीन निकासी केंद्र में चले गए। मिंगमा ने स्वेच्छा से अपना ऑक्सीजन सिलेंडर बिप्लब को दे दिया। हवा बेहद कम होने के कारण, इसके असर से बिप्लब के शरीर को कई घंटों तक काफी कमजोरी महसूस होती, लेकिन फिलहाल मिंगमा इतना मजबूत था कि वह थोड़े स्थिर शेरपा को सहारा दे सके, जो धीरे-धीरे अपने पैरों पर खड़ा हो रहा था।

मैंने सुझाव दिया, 'चलो अपनी गति का इस्तेमाल करते हैं। इन लोगों के ठीक होने का

एकमात्र तरीका यही है कि वे नीचे उतरें। ऑक्सीजन हम सभी के लिए सबसे बड़ी दवा है।'

मैंने सहायता के लिए बेस कैंप को रेडियो से संदेश भेजा। मैंने कहा, 'दोस्तों, मैं निम्स हूँ। यहाँ दो पर्वतारोही फँसे हुए हैं और हमने उन्हें अपनी ईंधन दे दी है। हम बचाव अभियान चलाने जा रहे हैं, लेकिन हमें और हवा की ज़रूरत है। क्या कैंप 4 से कोई हमारी मदद कर सकता है?'

मेरे संचार तंत्र में गड़बड़ हुई। एक आवाज ने चिल्लाते हुए कहा, 'हां, हम मदद करेंगे। तीन शेरपा ऑक्सीजन लेकर आपकी ओर आ रहे हैं।'

मैं बिप्लब का हालचाल जानने के लिए उसके पास गया और उससे पूछा कि क्या वह सैटेलाइट फोन पर किसी से बात करना चाहेगा। हालांकि समय कम था, लेकिन मुझे पता था कि सकारात्मकता की एक खुराक उसे इस लंबी और कठिन चढ़ाई के दौरान काफी मददगार साबित होगी।

उन्होंने कहा, 'मेरी पत्नी।'

कुछ देर बाद, बिछड़े हुए पति-पत्नी का फोन फिर से लग गया। ऐसा लग रहा था कि उनका पूरा परिवार एक मोबाइल के आसपास इकट्ठा हो गया था और बिप्लब हंस रहा था। उसे वह प्रेरणा और सकारात्मकता मिल गई थी जो पहाड़ से सुरक्षित नीचे उतरने के लिए बहुत ज़रूरी थी। राहत और उम्मीद का एहसास हुआ। एक पल के लिए मुझे लगा कि हम ठीक हो जाएंगे।

लेकिन मैं गलत था।

मिंगमा और मैंने बिप्लब की बांहें पकड़ीं, गेसमैन ने उसके पैर पकड़े और हमने उसे अपनी सुरक्षा रस्सी से बांध दिया। साथ मिलकर हमने कैंप 4 की ओर भारी और कष्टदायक चढ़ाई शुरू की, लेकिन चूंकि यह एक अप्रत्याशित बचाव अभियान था और हमारे पास हमारा सामान्य सामान नहीं था, इसलिए हमें तात्कालिक उपाय अपनाने पड़े। इस तरह के बचाव अभियान में, आमतौर पर घायल व्यक्ति को स्ट्रेचर पर ले जाया जाता है, जिसमें एक व्यक्ति आगे रहता है, जबकि स्ट्रेचर के पीछे वाले हिस्से को उठाने वाले लोग ब्रेक का काम करते हैं। अन्य उपलब्ध लोग घायल व्यक्ति को संतुलित करने और उसे ले जाने में मदद करते हैं।

हालांकि, यह आपातकालीन निकासी अभियान बिल्कुल अलग था। इलाका चट्टान, बर्फ और हिम का एक चुनौतीपूर्ण मिश्रण था, और काम धीमा था - हमें टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुजरना पड़ रहा था, जिसके लिए हमें व्यवस्थित रहना आवश्यक था, खासकर उतरते समय रस्सी से जुड़े विभिन्न तकनीकी कौशलों का उपयोग करते हुए। हम दोनों अर्ध-चेतन अवस्था में घायल व्यक्ति के भार को ढोते और उठाते रहे।

बचाव कार्य शुरू करने के कुछ ही क्षण बाद, मैंने महसूस किया कि एक और पर्वतारोही रस्सी के सहारे हमारी ओर आ रहा था, लेकिन वह नीचे जाने के बजाय ऊपर की ओर जा रहा था। क्या वह मदद के लिए आ रहा था? जो भी था, वह अकेला ही काम कर रहा था और इस काम के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं लग रहा था – उसकी हर हरकत मुश्किल से हो रही थी और रस्सी को पकड़े रहना भी उसके लिए बेहद तनावपूर्ण लग रहा था। तभी मैंने शिखर पर चढ़ने वाला सूट पहचाना। यह रोड्रिगो था! वह अभी भी शिखर की ओर बढ़ रहा था और मुझे डर का एहसास हुआ। चूंकि दोपहर का समय था, इसलिए अंधेरे में अकेले कंचनजंगा की चोटी तक पहुंचना और

सुरक्षित नीचे उतरना उसके लिए नामुमकिन था।

जैसे ही वह करीब आया, मैंने उसे फिर से पकड़ लिया। 'देखो भाई, तुम्हें अभी नीचे जाना होगा। लगभग दो बज चुके हैं।'

लेकिन रोड्रिगो अब भी सुनने को तैयार नहीं था। उसका शरीर भले ही कमजोर हो रहा था, लेकिन उसका दृढ़ संकल्प अटूट प्रतीत होता था।

'नहीं, यह शिखर सम्मेलन मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है,' उसने चिल्लाकर कहा।

'हां भाई, लेकिन अगर तुम चले जाओगे तो अगले साल आकर शिखर पर चढ़ सकते हो। तुम बहुत ही धीमे हो, अगर वापस नहीं लौटे तो जल्द ही मर जाओगे।'

रोड्रिगो ने लाइन पर मुझसे आगे निकलने की कोशिश की। मैंने शिखर पर पहुंचने की तीव्र इच्छा के स्पष्ट लक्षण पहचान लिए, यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति किसी भी 8,000 मीटर ऊंचे पहाड़ की चोटी पर पहुंचने के लिए इतना जुनूनी हो जाता है कि वह मिशन के दूसरे हिस्से को पूरा करने के महत्व को भूल जाता है: घर वापस लौटना। मुझे लगा कि रोड्रिगो भी ऊंचाई के कारण विचलित हो गया था। ऑक्सीजन के बिना, उसका दिमाग शायद पहाड़ के निचले हिस्से में चढ़ाई कर रहे पर्वतारोही की तरह किसी भी महत्वपूर्ण जानकारी को आसानी से संसाधित करने में असमर्थ था।

कुछ मामलों में, जब किसी परियोजना का अंत नज़दीक होता है, तो उसे पूरा करने की अटूट इच्छाशक्ति अत्यंत आवश्यक होती है। लंदन मैराथन के दौरान, अक्सर धावकों को फिनिशिंग लाइन से दो सौ मीटर पहले गिरते हुए देखा जाता है। उनमें से कुछ हार मान लेते हैं, लेकिन अधिकांश किसी न किसी तरह अपना पदक हासिल कर लेते हैं – वे लड़खड़ाते हैं, रेंगते हैं, या किसी अन्य धावक का सहारा लेते हैं। समुद्र तल पर एक थका हुआ व्यक्ति अंतिम प्रयास कर सकता है; उसकी मृत्यु नहीं होगी। लेकिन 8,000 मीटर से ऊपर, बिना सोचे-समझे फिनिशिंग लाइन की ओर बढ़ना बेहद खतरनाक होता है, क्योंकि मैराथन के लिहाज़ से शिखर तक पहुँचना 13.1 मील दौड़ने के बराबर है। अभी भी 13.1 मील की दूरी बाकी है। शिखर तो केवल आधा रास्ता है, और मुसीबत आने पर मदद मांगना बहुत मुश्किल होता है। रोड्रिगो ने यही चुनाव किया था, चाहे ऊंचाई की बीमारी के कारण, या फिर पूरी तरह से सचेत होकर – यह केवल वही जान सकता था – और कंचनजंगा का शिखर उसके लिए मृत्यु या गौरव का क्षण था।

जैसे ही वह आगे बढ़ा, मैंने उसे आवाज़ दी, 'देखो भाई, मैं तुम्हें अभी यहाँ से उतरने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। कृपया बहुत सावधान रहना – यह तुम्हारी जान का सवाल है।'

फिर मैंने रेडियो उठाया और कैंप 4 पर फोन किया, जहाँ मुझे पता था कि रोड्रिगो के अभियान संचालक और कैंप सहायक इंतज़ार कर रहे होंगे। यह उनकी ज़िम्मेदारी थी, मेरी नहीं। मैंने दो बार पूरी कोशिश की थी कि वह इस आत्मघाती मिशन से पीछे हट जाए। अब उनकी बारी थी।

अराजकता के समय में

इंतज़ार करने का समय नहीं था। बिप्लब मौत के बेहद करीब थे, इसलिए हम जितनी जल्दी हो सके शिखर से नीचे उतरने लगे। बीच-बीच में बिप्लब की हल्की सी कराह सुनाई देती थी। यह अच्छी खबर थी: कम से कम बिप्लब तो ज़िंदा थे। बुरी खबर यह थी कि हमें उन्हें शिखर के पथरीले मैदान से उठाकर ले जाना पड़ा, जहाँ सबसे मुश्किल काम था, और बिप्लब को कई चोटें लग रही थीं। लेकिन उन्हें ले जाने का कोई और कारगर तरीका नहीं था।

अपने सैन्य करियर के दौरान, मैंने कई CASEVAC अभ्यास किए थे जहाँ मैंने सीखा था कि गति अत्यंत महत्वपूर्ण है। गंभीर रूप से घायल सैनिक को जीवनरक्षक चिकित्सा उपचार के लिए ले जाते समय, रास्ते में लगने वाले कुछ अतिरिक्त कट और खरोंच को मामूली नुकसान माना जाता था, क्योंकि इसका विकल्प अतिरिक्त समय और सावधानी बरतना था, जिसके दौरान घायल सैनिक का खून बह सकता था। बिप्लब भी लगभग ऐसी ही स्थिति में था और वहाँ न तो कोमलता दिखाने का समय था और न ही मरीज़ के प्रति नरम व्यवहार करने का। मौसम की भी चिंता थी और जैसे-जैसे सूरज ढलता गया, पहाड़ धीरे-धीरे हमारी आत्मा को अपने वश में कर लेता।

अराजक परिस्थितियों में अजीबोगरीब बातें इंसान के दिमाग में बस जाती हैं। मुझे याद है उस दिन कंचनजंगा पर सब कुछ एकदम साफ था और चारों तरफ नीला आसमान छाया हुआ था। जब भी मैं अपने आसपास या नीचे की रेखा को देखता, तो नज़ारा किसी पोस्टकार्ड की तस्वीर जैसा या नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका में छपी हवाई तस्वीरों जैसा लगता था। एक घंटा बीत चुका था, घर लौटने का रास्ता नीचे साफ दिखाई दे रहा था और दूर से कैंप 4 भी दिख रहा था, लेकिन अपनी मौजूदा रफ्तार को देखते हुए मैंने अंदाज़ा लगाया कि हमें लगभग छह घंटे लगेंगे। मैंने प्रार्थना की कि बिप्लब इतनी देर तक हिम्मत बनाए रखे, लेकिन वह तेज़ी से बिगड़ती स्थिति का सिर्फ एक हिस्सा था।

गेसमैन की हालत कैसी थी? मिंगमा को ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के लक्षण कब महसूस होने लगे? मदद कहां थी?

लगभग 8,400 मीटर की ऊंचाई पर, जब मैं उतरने की योजना बना रहा था और उम्मीद से अपने सहायकों और वादा किए गए ऑक्सीजन सिलेंडरों की प्रतीक्षा कर रहा था, तभी मैंने देखा कि एक और पर्वतारोही हमसे आगे बर्फ में धंस गया है। दूर से देखने पर वह ठीक लग रहा था,

उसकी निगाहें सामने पहाड़ों पर टिकी हुई थीं। शायद वह आसपास के नज़ारे का आनंद ले रहा था? लेकिन जैसे ही मैं उसके करीब पहुंचा, मैंने उसके चेहरे पर वही भयानक भय और दहशत का भाव देखा जो मैंने लगभग एक घंटे पहले बिप्लब में देखा था।

मैंने उस आदमी का कंधा हिलाया। 'अरे, क्या तुम ठीक हो?'

'हाँ, मैं ठीक हूँ,' उसने अपना परिचय कुंतल के रूप में देते हुए कहा, मानो पहाड़ पर यह एक आम दोपहर हो। लेकिन कुंतल की नज़रें मुझसे नहीं मिलीं; वह मानो उस नज़ारे में खो गया था। तभी मुझे भयानक सच्चाई का एहसास हुआ। धिक्कार है, मुझे लगता है उसे बर्फ़ की वजह से दिखाई नहीं देता।

मैंने उसकी हालत का जायजा लेते हुए कहा, 'तुम यहाँ क्यों रुके हो?' जब मैंने कुंतल के ऑक्सीजन सिलेंडर पर नजर डाली, तो वह खाली था।

'मैं नीचे नहीं उतर सकता। मेरा गाइड मुझे छोड़कर चला गया है। मेरी टीम भी मुझे छोड़कर चली गई है।' वह अंत के प्रति पूरी तरह से समर्पित लग रहा था। उसकी आवाज़ अजीब तरह से शांत थी। 'मुझे लगता है मैं मरने वाला हूँ।'

मैंने उदास मन से मिंगमा और गेसमैन की ओर देखा। क्या सच में यही सब दोबारा हो रहा था? कुंतल के लिए ज़िम्मेदार अभियान दल ने शायद यह तय कर लिया था कि उसके पर्वतारोहण के दिन समाप्त हो गए हैं और उसे बचाया नहीं जा सकता। वे उसके बिना ही नीचे उतर गए होंगे और अब हमें एक कठिन, नैतिक रूप से बोझिल निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पड़ा।

क्या हमें कुंतल को भी मरने के लिए छोड़ देना चाहिए? या फिर इस बेहद जोखिम भरे बचाव अभियान में एक और व्यक्ति को शामिल करके हम अपने घायलों की जान को और खतरे में डाल दें?

मेरे लिए तो इस मामले में बहस की गुंजाइश बहुत कम थी: मिशनों पर मुझे यही सिखाया गया था कि किसी भी ऑपरेटर को पीछे न छोड़ें। ऊँचाई वाले अभियानों के दौरान नियम बेशक बहुत अलग होते थे, लेकिन मेरा रवैया पक्का हो चुका था, और यही वजह थी कि मैं शुरू से ही ऑक्सीजन का इस्तेमाल करता था।

मैंने कहा, 'चलो इस आदमी को भी नीचे उतार लेते हैं।'

मैंने अपना मास्क खोला और कुंतल के चेहरे पर लगा दिया, 2016 में एवरेस्ट पर सीमा को बचाने के बाद मैंने खुद से जो वादा किया था, उसके लिए मैं आभारी था। हालांकि चढ़ाई के अंतिम चरणों में मैं बोतलबंद हवा का इस्तेमाल कर रहा था, लेकिन ऑक्सीजन की अचानक कमी से मेरे महत्वपूर्ण अंगों को कोई झटका नहीं लगा। मेरे फेफड़ों से हवा नहीं निकली; डेथ ज़ोन की चढ़ाई की शारीरिक वास्तविकता के बावजूद मेरी हृदय गति में कोई खास उछाल नहीं आया। इसके बजाय, मुझे पता था कि अधिक ऊंचाई पर मेरी हालत धीरे-धीरे बिगड़ेगी, लेकिन मुझे अपने शरीर पर भरोसा था कि वह अगले कुछ घंटों तक इस मुश्किल दौर का सामना कर लेगा, तब तक नीचे से बचाव दल शायद पहुंच चुका होगा।

मुझे याद आया कि मैं पहले भी एवरेस्ट पर HAPE के सहारे कई घंटों तक जीवित रह चुका

था, इसलिए मुझे यकीन था कि मैं बच सकता हूँ। एक हफ्ते बाद दोबारा चढ़ाई करने के लिए जल्दी ठीक हो जाने से मुझे उम्मीद मिली, लेकिन कंचनजंगा पर जीवित रहने की मेरी घटती संभावनाएँ मुझे बेचैन कर रही थीं। जब मैंने एवरेस्ट पर सीमा को बचाया था, तो मुझे उसकी मूल स्थिति से कैंप 4 तक पहुँचने में लगभग एक घंटा ही लगा था, लेकिन ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि मेरे पास ऑक्सीजन थी।

छह लोग कंचनजंगा से भागने की कोशिश कर रहे थे; तीन लोग बुरी तरह घायल हो गए थे, और बाकी बचे लोग, हालांकि शारीरिक रूप से चलने-फिरने में सक्षम थे, उन्होंने समूह के घायलों को अपनी ऑक्सीजन दे दी थी। अब कैंप 4 तक पहुँचने में हमें बहुत अधिक समय लगने वाला था। मुझे लगा कि अगर जल्द ही मदद नहीं पहुँची, तो हममें से कम से कम एक की मौत होने की पूरी संभावना थी।

और वे पर्वतारोही कहाँ थे जिन्हें मदद करनी थी?

मैंने फिर से मदद के लिए पुकारा। एक आवाज़ ने मुझे चिंता न करने को कहा और भरोसा दिलाया कि मदद आ रही है और सब कुछ ठीक है। क्या यह वही व्यक्ति था? रेडियो की अस्पष्ट आवाज़ के कारण मैं निश्चित नहीं हो सका। लेकिन जब मैंने ढलती रोशनी में कैंप 4 की ओर देखा, तो वहाँ कोई हलचल नहीं थी। शायद हमारी बचाव टीम किसी तंबू में इकट्ठा होकर अपने मिशन की योजना बना रही थी। अगर ऐसा था, तो उन्हें जल्दी करना होगा, क्योंकि हमारे संसाधन तेज़ी से कम होते जा रहे थे और हम पर लगातार हमले हो रहे थे।

धीमी गति से चल रहे बचाव अभियान को फिर से शुरू करने के एक घंटे बाद, गेसमैन की ताकत क्षीण हो गई थी। तीन हफ्ते पहले अन्नपूर्णा पर्वत पर डॉ. चिन के बचाव के दौरान उसके पैर की उंगलियों में पहले ही फ्रॉस्टबाइट हो गया था और उसके पैर फिर से झनझना रहे थे - यह इस बात का स्पष्ट संकेत था कि ठंड उसके शरीर पर फिर से अपना असर दिखा रही थी। एक पल के लिए मैं भी उसके व्यवहार को देखकर चिंतित हो गया। जब मैंने समूह की ओर मुड़कर देखा, तो मैंने पाया कि गेसमैन ने कुंतल का चश्मा छीन लिया था और अपनी उंगली उसकी आंखों की ओर कर रहा था।

क्या कुंतल की मृत्यु हो गई थी? या गेसमैन को एचएसीई (HACE) हो गया था?

'भाई! ये क्या बकवास है?'

गेसमैन ने गुस्से से चिल्लाते हुए कहा, 'वह झूठ बोल रहा है। वह आदमी देख सकता है। देखो!'

उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया, मानो घायल के चेहरे पर थप्पड़ मारने की तैयारी कर रहा हो। कुंतल सहम गया। फिर वह दोबारा सहम गया। जाहिर तौर पर गेसमैन ने कुंतल को एक-दो बार खतरे के क्षणों में प्रतिक्रिया करते हुए देखा था – लेकिन एक अंधा व्यक्ति बिना देखे जोखिम भरा कदम उठाने से पहले कैसे हिचकिचा सकता है? जब मैंने कुंतल के ऊपर झुककर वही परीक्षण दोहराया, तो हर बार छूने और धकेलने पर वह और भी सहम गया।

गेसमैन सही थे!

मैं आह भरी। अगर कुंतल ने अपनी बर्फ़ की वजह से होने वाली दृष्टिहीनता के बारे में सच बता

दिया होता, तो हम कहीं ज़्यादा तेज़ी से आगे बढ़ सकते थे और ज़्यादा दूरी तय कर सकते थे। लेकिन डर ने उसे झूठ बोलने पर मजबूर कर दिया था। कुंतल चाहता था कि हम उसके लिए सारा मुश्किल काम कर दें, क्योंकि वह खुद करने से बहुत डरा हुआ था। अब वह बेबस था; वह बिल्कुल भी ठीक से सोच नहीं पा रहा था और मेरा गुस्सा फूट पड़ा। मैंने कुंतल को उसके पर्वतारोहण सूट की हुडी से पकड़ा और उसे अपनी ओर खींच लिया।

'ये क्या बकवास है यार?' मैंने चिल्लाकर कहा। 'सुनो, हम तीनों तुम्हारी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं, तुम्हें मुर्दा की तरह ढो रहे हैं। और तुम बर्फ से अंधा होने का नाटक कर रहे हो। क्यों?'

लेकिन कुंतल जवाब देने के लिए बहुत कमजोर था। हताश होकर गेसमैन ने उसके कंधों को पकड़ा और उसे उठाकर हम पहाड़ पर छाए घने अंधेरे में आगे बढ़ने लगे। इतने सारे लोगों की जान दांव पर लगी थी, इसलिए मेरे पास गुस्से में समय बर्बाद करने की ऊर्जा नहीं थी। मेरा गुस्सा जल्दी ही शांत हो गया।

*

ऐसा लग रहा था मानो हमें छोड़ दिया गया हो। कोई आने वाला नहीं दिख रहा था।

मैंने कैंप 4, या बेस कैंप, को सौ से ज़्यादा बार रेडियो से संपर्क किया होगा और हर बार संपर्क होने पर मेरी निराशा बढ़ती ही गई। लेकिन बढ़ती हुई निराशा के बावजूद, मैंने शांत रहने की पूरी कोशिश की और खुद को यकीन दिलाया कि मदद आ रही है। ऑक्सीजन आ रही है।

मुझे पता था कि नीचे तंबुओं में कम से कम पचास लोग सो रहे थे। उनमें से लगभग सभी ने उसी दिन कंचनजंगा की चोटी पर चढ़ाई की थी और बचाव दल को हमारी स्थिति तक पहुँचने में लगभग दो घंटे ही लगते। उनमें अनुभवी पर्वतारोही और एकल पर्वतारोही भी शामिल थे। कुछ ऐसे लोग थे जिनसे मैं बात कर सकता था या बेस कैंप में उनके साथ समय बिता सकता था, और कुछ ऐसे भी थे जिनकी अत्यधिक ऊँचाई पर प्रतिष्ठा निर्विवाद थी।

यकीनन उन सभी पर्वतारोहियों में से एक छोटा समूह मदद करने के लिए इच्छुक होगा?

हर रेडियो कॉल के साथ बेचैनी बढ़ती गई। घंटे बीतते गए, हमारी स्थिति और भी विकट होती चली गई, फिर भी हर बार रेडियो पर वही जवाब मिलता रहा।

'कोई मदद के लिए आ रहा है, निम्स।'

'वे आ रहे हैं, भाई।'

अब ज्यादा देर नहीं बची है...

लेकिन जहाँ तक मुझे पता चला, कैंप 4 से कोई निकला ही नहीं था, सिवाय उस मूर्ख के जिसने बिना टॉर्च के चढ़ाई की हो। नीचे से कोई रोशनी दिखाई नहीं दे रही थी।

रात के करीब 8 बज रहे थे। मेरी घड़ी के हिसाब से हम बचाव अभियान में कई घंटों से लगे हुए थे। शुक्र है, मौसम काफी शांत था और हवा भी बहुत कम चल रही थी, लेकिन फिर भी कड़ाके की ठंड थी। गेसमैन, मिंगमा और मेरे पास जीवित रहने के लिए ज़रूरी कौशल तो थे, लेकिन चिंता की बात यह थी कि हमने घायलों को जो ऑक्सीजन दी थी, वह कम हो रही थी

और नीचे से मदद न मिलने के कारण हमारा मनोबल गिरता जा रहा था।

ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के तनाव से कुंतल बुरी तरह कमजोर हो गया था और संवाद करने में असमर्थ लग रहा था; बिप्लब की हालत भी बिगड़ती जा रही थी। फिर, पंद्रह मिनट भी नहीं बीते थे कि जब हम धीरे-धीरे सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ने लगे, तो चट्टान और बर्फ पर धीरे-धीरे पैर रखते हुए उसे नीचे उतारते समय मैंने उसके शरीर में कुछ बदलाव देखा। उसकी दर्द भरी कराहें बंद हो गई थीं; हर हरकत पर होने वाली सहज, मांसपेशियों की ऐंठन गायब हो गई थी।

बिप्लब की मौत हो चुकी थी।

मैंने बेताबी से उसके स्वास्थ्य की जाँच की। 'काश, मेरी सारी मेहनत व्यर्थ न जाए,' मैंने आह भरी।

लेकिन बिप्लब की नब्ज़ नहीं चल रही थी, वो साँस नहीं ले रहा था। मैंने उसकी आँखों में उंगली भी मारी, जो आमतौर पर गंभीर रूप से घायल व्यक्ति में प्रतिक्रिया जगा देती है, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। जब मैंने उसकी ऑक्सीजन सिलेंडर पर नज़र डाली, तो मुझे भयानक सच्चाई का एहसास हुआ। बिप्लब की हवा आखिरकार खत्म हो गई थी और उसका शरीर तुरंत जवाब दे गया था। शारीरिक स्थिति में तेज़ी से गिरावट को देखते हुए, मेरा अनुमान था कि शिखर पर चढ़ाई से पहले के हफ्तों में कंचनजंगा के निचले शिविरों में बार-बार आने-जाने के दौरान उसका वातावरण ठीक से अनुकूलित नहीं हो पाया था।

'मुझे माफ करना भाई, हमने अपनी तरफ से हर संभव कोशिश की,' मैंने उदास होकर कहा और उसकी आंखों के चारों ओर हुड नीचे खींच दिया।

मैंने कैंप 4 की रोशनी को गुस्से से देखा। मदद आने की बात पूरी तरह से झूठी थी और सहायता के लिए की गई हर गुहार को नज़रअंदाज़ कर दिया गया था – लेकिन क्यों? मुझे धोखा महसूस हुआ।

मैंने सोचा, 'लोग बड़े बुरे होते हैं यार।'

पहाड़ ने मुझे मेरी असलियत दिखा दी – चढ़ाई के दौरान भी और उतरते समय भी, जब मैंने अपनी छोटी सी टुकड़ी को ज़िंदा रखने के लिए संघर्ष किया। मैं गर्व से अपना सिर ऊंचा कर सकता था। लेकिन समुदाय में जिन लोगों का मैं कभी सम्मान करता था, उनके बारे में एक दर्दनाक सच्चाई भी सामने आ गई – पर्वतारोही अपने तंबुओं में सो रहे थे, जबकि उनके ठीक ऊपर एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। वे लोग जो बार-बार कहते रहे थे कि मदद आ रही है।

उनकी सच्चाई से बचना नामुमकिन होगा।

*

गेस्मान ने भयभीत होकर मेरी ओर देखा। उसकी फ्रॉस्टबाइट का दर्द बढ़ता जा रहा था और अब ऐसा लग रहा था मानो वह मुश्किल से चल पा रहा हो। उसे नीचे जाना ही था। पहले तो उसने विरोध किया और कहा कि वह हम सबके साथ लड़ना चाहता है, लेकिन अगर वह नीचे के शिविरों में नहीं उतरता तो इस बात की पूरी संभावना थी कि मिंगमा और मुझे एक और घायल व्यक्ति का सामना करना पड़ेगा। हम जोखिम नहीं उठा सकते थे। गेस्मान अंधेरे में चला गया, जबकि

समूह ने बिप्लब को विदाई दी और उससे माफी मांगी, उसे पहाड़ पर छोड़कर। उसे और देर तक ले जाने से हमारी भागने की गति धीमी हो जाती।

अपनी स्थिति का आकलन करते हुए, मैंने अनुमान लगाया कि हम आम तौर पर सुरक्षा से लगभग आधे घंटे की दूरी पर थे, लेकिन यह तभी संभव था जब हम सभी तेज़ी से चलने की स्थिति में होते। अब केवल दो अक्षम व्यक्तियों की देखभाल करनी थी, इसलिए यात्रा में शायद कुछ घंटे, या उससे भी अधिक, कष्टदायक होने वाले थे, लेकिन प्रयास करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। लगभग एक हज़ार मीटर की ऊंचाई से नीचे उतरने के बाद, बिप्लब का शेरपा अब अधिक आसानी से चल-फिर सकता था। मिंगमा और मैंने मिलकर कुंतल को खींचा; भारी सामान उठाने के दौरान मैंने गाइड को प्रोत्साहित किया, लेकिन मिंगमा भी थकने लगा था। उसमें ऊंचाई की बीमारी के शुरुआती लक्षण दिखाई दे रहे थे और जब हम अगली बार सांस लेने के लिए रुके, तो मुझे लगा कि कुछ गड़बड़ है।

'भाई, मुझे अपने पैरों, चेहरे, जबड़े में कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है,' उसने कहा। 'मुझे लगता है मुझे नीचे जाना होगा। शायद यह एचएसीई है। अगर मैं यहाँ ज़्यादा देर रहा तो तुम्हें एक और मरीज़ की चिंता करनी पड़ेगी।'

मिंगमा अब तक का सबसे मज़बूत शेरपा गाइड था जिसे मैं जानता था। वह बहाने बनाने वाला या आसान रास्ता ढूंढने वाला नहीं था। लेकिन वह इतना अनुभवी भी था कि अपनी सीमा को पहचान सके, और उस सीमा को पार करना निश्चित रूप से मौत के बराबर होता। हालांकि मैं पहाड़ पर एक गंभीर रूप से घायल पर्वतारोही और एक शेरपा के साथ अकेला होता, फिर भी मैं मिशन में अपने किसी साथी को खोने के बारे में सोच भी नहीं सकता था।

हालात और भी बदतर हो गए जब रेडियो पर खबर आई कि पहाड़ पर एक और पर्वतारोही लापता हो गया है। बेस कैंप से कर्कश आवाज आई, 'अगर आप उसे देखें तो उसे जरूर नीचे ले आएं।' मैंने दूर कैंप 4 की टिमटिमाती रोशनी को गुस्से से देखा। फिर भी कोई हमारी तरफ नहीं आ रहा था। मिंगमा को गले लगाकर मैंने उसे विदा कर दिया।

मैंने उसके पीछे चिल्लाते हुए कहा, 'और नीचे मौजूद बाकी लोगों को भी बताओ कि क्या हो रहा है।'

मैं क्या कर रहा था? क्या मैं वाकई इस बचाव अभियान को अंजाम देने के लिए सबसे सही स्थिति में था? सबसे पहले तो, मेरे पास ऑक्सीजन नहीं थी। चौबीस घंटे से ज़्यादा समय से पहाड़ पर रहने के कारण मैं शारीरिक रूप से पूरी तरह टूट चुका था, खासकर धौलागिरी पर उन पाँच कठिन दिनों के बाद, जहाँ मुझे ज़रा भी आराम नहीं मिला था – मेरा अनुमान है कि उस दौरान मुझे कुल नौ घंटे की ही नींद आई थी। मेरी हर मांसपेशी मुझे रुकने के लिए कह रही थी। मैं कुंतल का भार ढोता हुआ दो घंटे और आगे बढ़ता रहा, बीच-बीच में शेरपा मेरी मदद के लिए आता रहा, जब तक कि आखिरकार मैं उस शारीरिक मोड़ पर नहीं पहुँच गया जो कभी-कभी बचाव अभियान के दौरान आ जाता है।

पहला विकल्प यह था कि मैं बचाव दल के साथ रुक जाऊं, इस उम्मीद में कि जल्द ही मदद और ऑक्सीजन पहुंच जाएगी, हालांकि नीचे तंबुओं में कोई हलचल नहीं थी, इसलिए सबसे

संभावित परिणाम यही था कि हम सब ठंड और हवा की कमी से मर जाएंगे। दूसरा विकल्प यह था कि मैं कुंतल को वहीं छोड़ दूं और तेजी से कैंप 4 की ओर जाऊं, जिसमें मुझे पंद्रह मिनट लगेंगे, जहां मैं बचाव दल से उसे बचाने की गुहार लगा सकूं। मुझे पता था कि जब तक मैं नीचे पहुंचूंगा, तब तक काफी लोग आराम कर चुके होंगे; कई पर्वतारोही सुबह कंचनजंगा की चोटी पर पहुंचने के बावजूद भी इस मिशन को अंजाम देने के लिए काफी मजबूत थे। अगर मैं उन्हें जगा पाता, तो कुंतल और गाइड के बचने की पूरी संभावना थी। मैंने दूसरा विकल्प चुना।

मैंने कहा, 'सुनो, ऑक्सीजन बहुत कम होने वाली है। अगर कुंतल बिप्लब जैसा हुआ, तो हम उसे जल्द ही खो देंगे। लेकिन कैंप 4 में कुछ लोग हैं जो मेरी बात सुनेंगे – वे उसकी मदद के लिए आएंगे। या तो तुम उसके साथ यहीं रहो, या मेरे साथ चलो। फैसला तुम्हारा है।'

जैसे ही मैंने नीचे उतरना शुरू किया, शेरपा मेरे पीछे-पीछे पूरे रास्ते आता रहा। हम दोनों को पूरा भरोसा था कि हम कुंतल की जान बचा लेंगे, तभी अचानक मेरे सामने एक अजीब सा दृश्य प्रकट हुआ। मुझसे पचास गज से भी कम दूरी पर एक बूढ़ा आदमी बर्फ में इधर-उधर भटक रहा था। वह अस्त-व्यस्त और बेचैन सा दिख रहा था; उसकी दाढ़ी बर्फ से जमी हुई थी और उसने एक चमकदार शिखर सूट पहना हुआ था जो हमारी टॉर्च की रोशनी को लेजर किरणों की तरह परावर्तित कर रहा था।

पहले तो मुझे लगा कि शायद ऊंचाई के असर से मेरी सोचने-समझने की क्षमता बिगड़ गई है। क्या एचएसीई (HACE) का असर शुरू हो गया था? नहीं, मुझे जल्दी ही एहसास हुआ कि मैं जिसे देख रहा था वह दूसरा लापता पर्वतारोही था, जिसका नाम बाद में रमेश रे पता चला, और उसके पीछे एक राहत भरी तस्वीर थी। आखिरकार, घंटों के इंतजार के बाद, दूर नीचे हेडलाइट्स टिमटिमा रही थीं। एक बचाव दल को भेजा जा चुका था। हम लापता पर्वतारोही की ओर दौड़े, उसे तब तक थामे रहे जब तक कि चमकते हुए धब्बे इंसानों में नहीं बदल गए, और फिर वे लोग चिल्लाती हुई आवाजों में बदल गए।

जब हम सब इकट्ठा हुए तो मैंने कहा, 'इस आदमी को मार गिराना होगा। इसे पकड़ने के लिए तुम मुझसे बेहतर स्थिति में हो। और दूसरा आदमी, कुंतल, उधर है।'

मैंने उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ हमने घायल व्यक्ति को थोड़ी सी ऑक्सीजन देकर छोड़ा था। 'वह ज्यादा दूर नहीं है। उसे थोड़ी हवा दो और जाकर उसे बचाओ।'

मिशन पूरा हो गया। बिप्लब पहाड़ में खो गया होगा, लेकिन कम से कम उसका गाइड और कुंतल जल्द ही सुरक्षित होंगे। उम्मीद है कि दूसरा पर्वतारोही भी ठीक होगा। रात करीब एक बजे कैंप में उतरते हुए, मैंने मिंगमा और गेसमैन का टेंट ढूंढा और अंदर घुस गया। ठंड से बचने के लिए मैंने स्लीपिंग बैग को अपने चारों ओर लपेट लिया, लेकिन आराम करना नामुमकिन लग रहा था। मुझे इस बात पर बहुत गुस्सा आ रहा था कि हमारी मदद की गुहार को अनसुना कर दिया गया था। रेडियो संचार पर हमसे बार-बार झूठ क्यों बोला गया?

उन लोगों के साथ ज़्यादा देर रुकने का ख्याल ही मुझे हतोत्साहित कर रहा था और मुझे पता था कि जब वे जागेंगे तो मैं उनमें से किसी से भी आँखें मिलाकर बात नहीं कर पाऊँगी। मैंने चाय बनाई और चुपचाप बैठी रही जब तक पहाड़ से जाने का समय नहीं हो गया।

*

मैंने अपने बैग में नए मोजे ढूंढे और अपना सामान पैक किया। मैं गेसमैन और मिंगमा को जगाने जा रहा था, और फिर मैं बेस कैंप की ओर उतरने वाला था, गुजरते हुए पर्वतारोहियों के इशारों को अनसुना करते हुए, मेरे पास आने वाले किसी भी व्यक्ति की निगाहों से बचते हुए। लेकिन सबसे पहले मैं सुची को फोन करने वाला था।

बिप्लब की मौत ने मुझे तोड़ दिया था।

मैंने इंग्लैंड स्थित अपने घर पर फोन लगाया। उसे तुरंत समझ आ गया कि कुछ गड़बड़ है, क्योंकि मैं पहाड़ों से उसे बहुत कम ही फोन करता था। 'निम्स, क्या बात है?' उसने कहा। उसकी आवाज़ में डर साफ सुनाई दे रहा था।

मैंने आंसू रोकते हुए कहा, 'मैं असफल हो गई। मैं असफल हो गई।'

मैंने वो कहानी दोबारा सुनाई, मेरा दुख गुस्से में बदल गया। 'यहाँ ऊपर चढ़ने वाले लोग सिर्फ़ अपने बारे में सोच रहे थे। वे खुद को बहादुर कहते हैं, डींगें मारते हैं कि वे इस पहाड़ और उस पहाड़ पर चढ़ सकते हैं... लेकिन अब वे कहाँ हैं? अगर उनमें से कोई एक भी थोड़ी सी हवा ऊपर ले आता, तो हम सब ठीक होते। वो आदमी ज़िंदा बच जाता।'

सुची ने मेरी परेशानी कम करने की कोशिश की, लेकिन मैं इतना उत्तेजित था कि उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था और मिंगमा और गेसमैन को जगाने के बाद मेरा मूड और भी खराब हो गया। पता चला कि रोड्रिगो भी मर चुका था।

बचाव अभियान के दौरान, शिखर और कैंप 4 के बीच फंसे होने के कारण, मैं कंचनजंगा की चोटी को नहीं देख पा रहा था, लेकिन मिंगमा को खबर मिल गई थी कि थोड़ी नीचे से चिलीवासी की हेड टॉर्च दिखाई दे रही थी। वह टॉर्च पूरी रात ऊपर टिमटिमाती रही, बिना हिले-डुले, जब तक कि आखिरकार उसकी बैटरी खत्म नहीं हो गई। उसका शरीर अब पहाड़ पर बिताए गए उन भयानक चौबीस घंटों की एक जमी हुई याद दिला रहा था।

कम से कम कुंतल को बचा लिया गया था और वह काठमांडू के अस्पताल जा रहा था – कम से कम मुझे तो यही लगा था। कंचनजंगा के शिविरों से नीचे उतरते समय, एक हेलीकॉप्टर ऊपर से गुजरा। वह पहाड़ पर ऊपर किसी उपयुक्त पिक-अप पॉइंट की ओर उड़ रहा था, और मुझे लगा कि कुंतल उसमें सवार होगा।

मुझे राहत मिली, खुशी हुई कि हमारी मेहनत व्यर्थ नहीं गई; मैं सबको बचाने के लिए पूरी तरह दृढ़ थी। लेकिन जब मैं पहाड़ की तलहटी पर पहुँची, तो मुझे बताया गया कि हेलीकॉप्टर केवल रमेश राय को लेकर आया था। हमारे आस-पास के लोगों से जो जानकारी मिली, उससे पता चला कि कुंतल को वहीं छोड़ दिया गया था जहाँ हमने उसे रखा था, जबकि बचाव दल उसके बहुत करीब था और वे आसानी से उस तक पहुँच सकते थे।

मुझे यह सोचकर बहुत बुरा लगा कि बेचारा शायद अभी भी पहाड़ पर ही होगा और ऑक्सीजन के बिना उसका बचना नामुमकिन था। मैंने मिंगमा और गेसमैन पर जमकर गुस्सा निकाला।

'ये लोग! सोशल मीडिया पर तो वाहवाही बटोर लेते हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर काम नहीं

करते। मुझे इनसे घिन आती है। जब मुसीबत आई, तब ये कहाँ थे? मैं आपको बताता हूँ: अपने तंबुओं में छिपे हुए थे!'

युद्ध ने मुझे मृत्यु से निपटने के बारे में दो बातें सिखाईं। मैं समझ गया था कि सैनिक युद्ध में इसलिए मरते हैं क्योंकि वे किसी उद्देश्य के लिए लड़ रहे होते हैं। (ठीक उसी तरह, पर्वतारोही ऊँचाई पर इसलिए मरते हैं क्योंकि वे कठोर वातावरण में अपनी सहनशक्ति का परीक्षण कर रहे होते हैं।) लेकिन कभी-कभी मौत मूर्खतापूर्ण या टाली जा सकने वाली घटनाओं में भी हो जाती है, और युद्ध क्षेत्र में काम करने वाले पुरुष और महिलाएं गलती से अपने ही साथियों की गोलीबारी में मारे जाते हैं।

पहाड़ों में संकटग्रस्त पर्वतारोहियों की मौत इसलिए हो गई क्योंकि वे या उनके आसपास के लोग बिगड़ती परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए तैयार नहीं थे। ये स्थितियाँ कुछ हद तक दर्दनाक थीं, लेकिन समझ में आने वाली थीं - ये आमतौर पर मानवीय त्रुटि या दुर्घटनाओं के कारण होती थीं। लेकिन बिप्लब और कुंतल की मौत पूरी तरह से अस्वीकार्य थी, क्योंकि उनकी मौत उनकी अपनी मर्ज़ी से हुई थी। कोई हमारी मदद करने की कोशिश कर सकता था। उन्हें बचाया जा सकता था।

और मुझे अब भी समझ नहीं आया कि बचाव दल क्यों नहीं आया।

जहां तक मेरा सवाल था, कोई बहाना नहीं था। दोनों भारतीय पर्वतारोहियों के मामले में, हमारे नीचे सो रहे कुछ लोग अगर चाहते तो कार्रवाई कर सकते थे। शिखर पर पहुंचने के बाद, उन अभियानों को कुछ घंटों का आराम मिल गया था। वे कई दिनों तक धीरे-धीरे, एक-एक शिविर करके पहाड़ पर चढ़े थे, इसलिए उन्हें बेहतर आराम मिला था, जबकि मैं लगातार पांच रातों तक मुश्किल से सोया था और फिर एक ही बार में कंचनजंगा पर चढ़ाई कर ली थी। फिर भी, बचाव कार्य मुझे ही करना पड़ा।

निर्देशित अभियानों के संचालन के अपने अनुभव से मैं यह भी जानता था कि चाहे ग्राहक शिखर तक पहुँचने के लिए कितने भी दृढ़ निश्चयी क्यों न हों, उनके जीवन को सर्वोपरि रखना अत्यंत आवश्यक है। ऐसी परिस्थितियों में, उन्हें वास्तविकता से अवगत कराना या उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाना मेरा कर्तव्य था। लेकिन दूसरों के लिए ऐसा नहीं था, और जैसा कि मुझे कठिन अनुभवों से पता चल रहा था, उच्च पर्वतारोहण की दुनिया क्रूर और जोखिम भरी थी।

जब हम पहले चरण की आखिरी तीन चोटियों - एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू - के लिए एवरेस्ट बेस कैंप की ओर उड़ान भर रहे थे, तब मेरे लिए सबसे ज़रूरी काम पर ध्यान केंद्रित करना था। हाँ, तीन लोग मारे गए थे, लेकिन मेरा प्राथमिक मिशन अभी भी कायम था।

मुझे कंचनजंगा की बुरी यादों को बहुत पीछे छोड़ना पड़ा।

शिखर बुखार

अंततः, मेरी महत्वाकांक्षाओं पर होने वाले मज़ाक और व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ थोड़ी कम होने लगी थीं। फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर मेरे अभियानों को लगातार अधिक ध्यान मिल रहा था, और संभावित निवेशकों की संख्या भी बढ़ रही थी, लेकिन मैं अपनी सतर्कता कम नहीं कर सकता था। हालाँकि एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू मेरे लिए घर जैसे थे क्योंकि मैंने एक साल पहले ही उन पर विश्व रिकॉर्ड बनाया था, लेकिन इनमें से किसी को भी हल्के में नहीं लिया जा सकता था। हर 8,000 मीटर से अधिक ऊँचाई वाली चोटी एक चुनौती थी और मुझे इस बात से चिढ़ होती थी कि लोग हाल ही में दुनिया के सबसे ऊँचे पर्वत को लेकर थोड़े उदासीन हो गए थे।

नहीं, एवरेस्ट अन्नपूर्णा, कंचनजंगा या के2 जितना खतरनाक नहीं था। और हाँ, कई कम कुशल पर्वतारोही भी शिखर तक पहुँच गए थे, रास्ते में उनकी मदद करने वाले बेहतरीन शेरपाओं की बदौलत, लेकिन यह सफर आसान नहीं था। अगर मौसम साफ और शांत होता, तो बिना ज्यादा तनाव के शिखर तक पहुँचना संभव था, लेकिन अगर ऊपरी शिविरों में हालात बिगड़ जाते और सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता? तो फिर बचने की संभावना बहुत कम हो जाती थी। लोग मर जाते थे।

यह पहाड़ शुरू से ही मौत का जाल था। अभियान दल बेस कैंप में अपने तंबुओं में आराम करते समय ही बिखर जाते थे और हिमस्खलन अक्सर पहाड़ से नीचे आते हुए रास्ते में सब कुछ तबाह कर देते थे, जैसा कि 2014 और 2015 की उन त्रासदियों ने साबित कर दिया था। एक बार चढ़ाई शुरू होने के बाद, खुंबू हिमपात, जो बेस कैंप को कैंप 1 से अलग करता था, उतना ही खतरनाक था और अपने दरारदार सेरैक के लिए कुख्यात हो गया था जो ग्लेशियर के प्रतिदिन तीन या चार फीट खिसकने के साथ हिलते-डुलते रहते थे।

वहाँ का नज़ारा बेहद खूबसूरत था, मानो किसी साइंस फिक्शन फिल्म का कोई अलौकिक ग्रह हो, लेकिन उसकी चमकती हुई ज़मीन धोखे से भरी थी। पहाड़ से टूटकर गिरते बर्फ के टुकड़े के रास्ते में खड़े होने से कई पर्वतारोही मारे गए थे या गंभीर रूप से घायल हो गए थे। हालाँकि मुझे वहाँ से चढ़ाई करने का जोखिम पसंद था, लेकिन आइसफॉल एक खतरनाक जगह थी – वहाँ असुरक्षित महसूस करना लाज़मी था। और यह सब तब था जब पर्वतारोही ने चोटी से जुड़ी चुनौतियों, जैसे कि हिलारी स्टेप, और फिर सुरक्षा तक वापस उतरने की थका देने वाली चढ़ाई का सामना भी नहीं किया था। एवरेस्ट कोई मज़ाक नहीं था।

फिर भी, इन स्पष्ट जोखिमों के बावजूद, पहाड़ की छवि खराब होती जा रही थी। जब मैंने प्रोजेक्ट पॉसिबल के दौरान दोबारा इस पर चढ़ाई करने की कोशिश की, तब तक लोग लंबे समय से शिकायत कर रहे थे कि यह ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ने का बहुत कम अनुभव रखने वाले अति-धनी पर्वतारोहियों के लिए एक खेल का मैदान मात्र है। पर्वतारोहियों के पुराने दिग्गज, वे लोग जिन्होंने तीस-चालीस साल पहले एवरेस्ट फतह किया था, उनका तर्क था कि कई पर्वतारोही अपने गाइडों और शेरपाओं पर बहुत अधिक निर्भर रहते हैं और शिखर तक पहुंचने के लायक नहीं हैं।

अन्य आलोचकों ने नेपाली सरकार की ओर इशारा करते हुए एवरेस्ट पर चढ़ाई से जुड़े खर्चों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि पर्वतारोहण परमिट बहुत सस्ते थे और कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कुशल हो या नहीं, पैसे देकर प्रवेश पा सकता था; हालांकि, प्रवेश पाने की लागत अभी भी अधिकांश लोगों की पहुंच से बाहर थी। 2019 में पर्वतारोहण के परमिट की कीमत लगभग 10,000 डॉलर थी और यह कीमत पर्वतारोही द्वारा आवश्यक सामान, भोजन और आवास की बुकिंग या गाइड नियुक्त करने से पहले की थी।

खर्चों की परवाह किए बिना, एवरेस्ट पर अत्यधिक भीड़ हो गई थी। हिलारी स्टेप तक जाने वाला किनारा कभी-कभी किसी शहर के चौराहे जैसा लगता था, क्योंकि दर्जनों लोग फिक्स्ड रस्सियों पर मंडराते रहते थे, या तो पृथ्वी के सबसे ऊंचे शिखर पर पहुंचने के अपने गौरवशाली क्षण की प्रतीक्षा कर रहे होते थे, या सुरक्षित रूप से नीचे उतरने की कोशिश में एक और कदम बढ़ा रहे होते थे। यह सबके लिए निराशाजनक अनुभव बन गया था। अन्य पर्वतारोहियों के आगे निकलने का इंतजार करने के कारण, कुछ पर्वतारोही शिखर तक पहुंचने के अपने अवसर से वंचित रह जाते थे। या इससे भी बुरा, उन्हें इतनी देर हो जाती थी कि जैसे-जैसे दिन ढलता जाता, उनका नीचे उतरना और भी खतरनाक होता जाता था। इस लगातार भागदौड़ के कारण, शिखर पर अस्थिर वातावरण होना आम बात थी।

एवरेस्ट के इर्द-गिर्द चल रही पर्वतारोहण की राजनीति के प्रति मेरा रवैया यही था कि मैं यथासंभव नकारात्मकता को नज़रअंदाज़ करूँ। जहाँ तक मेरा सवाल था, यह अब भी पृथ्वी का सबसे ऊँचा शिखर था और इसका सम्मान किया जाना चाहिए, हालाँकि कुछ शिकायतें जायज़ थीं। भीड़भाड़ निश्चित रूप से एक बड़ी समस्या थी, लेकिन इससे निपटने के तरीके थे। अगर शिखर की ओर जाने वाली कतार में भीड़ होती, तो कोई साहसी पर्वतारोही हमेशा दूसरा रास्ता चुन सकता था, और कई पुराने रास्ते थे जिन्हें खोजा जा सकता था या फिर से खोला जा सकता था।

मैंने गौर किया था कि जब भी लोग असफल होते थे, चाहे वे शिखर तक न पहुँच पाएँ या थकान या ऊँचाई पर होने वाली बीमारी के कारण वापस लौटना पड़े, तो वे अक्सर अपने बहाने उन लोगों पर रटने लगते थे जो उस समय उनके साथ पर्वतारोहण कर रहे थे – उनके गाइड, साथी पर्वतारोही, या यहाँ तक कि एवरेस्ट के प्रबंधन के लिए ज़िम्मेदार लोग भी। यह बात मुझे बहुत परेशान करती थी। जीवन में मुझे हमेशा अपनी गलती स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। अगर कभी किसी सैन्य अभियान में मुझसे कोई गलती हो जाती, तो मैं अपने साथियों को बता देता। अपनी कमियों को उजागर करके मैं उनमें सुधार कर पाता था और मैं

कभी भी यह बहाना नहीं बनाता था कि भीड़भाड़ के कारण पहाड़ पर चढ़ना असंभव है। मैं योजना बनाता और शिखर तक पहुँचने के लिए कोई दूसरा रास्ता खोज लेता।

मेरे विचार से, इससे भी बड़ा मुद्दा हिमालय की बिगड़ती पर्यावरणीय स्थिति थी। 2015 में, नेपाल के पर्वतारोहण संघ के प्रमुख, आंग शेरिंग ने घोषणा की कि अभियानों द्वारा छोड़े गए मानव मल-मूत्र से गंभीर स्वास्थ्य खतरा पैदा हो सकता है; पर्वत की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए, बीमारियों का फैलना एक गंभीर चिंता का विषय था। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव भी उतने ही चिंताजनक थे, जो लगातार स्पष्ट और परेशान करने वाले होते जा रहे थे। नेपाल एक तृतीय-विश्व देश था और विकास तो हो रहा था, लेकिन धीमी गति से, इसलिए यह अभी भी उन संसाधनों से वंचित था जो कहीं अधिक धनी देशों के पास थे।

हिमालय इसकी सबसे बड़ी संपत्ति थी। इससे पर्यटन के रूप में भारी आय होती थी। यहाँ के विनम्र और दयालु लोगों का स्वभाव भी इसकी खूबसूरती को बढ़ाता था, लेकिन वैश्विक तापमान में वृद्धि के प्रभावों से यह समुदाय जूझ रहा था। मौसम विज्ञानियों के लिए यह स्पष्ट था कि हिमपात का स्तर काफी कम हो गया था। पहाड़ अब मौसम में पहले ही पिघल जाते थे, और इस पिघलती बर्फ के कारण पूरे क्षेत्र में बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएं होने लगी थीं।

जब मैंने 2014 में अमा डबलाम की चोटी पर चढ़ाई की थी, तब कैंप 1 से बर्फ इकट्ठा करना और उसे पिघलाकर पीने और खाना पकाने के लिए इस्तेमाल करना संभव था। बोतलबंद पानी की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन जब मैं 2018 में लौटा, तो बर्फ का नामोनिशान नहीं था और हमें ऊंचे कैंपों तक भारी मात्रा में पानी ढोना पड़ा, जिससे हमारे कंधों पर बोझ कई किलो बढ़ गया। 2019 में धौलागिरी पर चढ़ाई करते समय भी मैंने ऐसे ही बदलाव देखे, और जब मैंने चोटी की ओर देखा, तो ग्लेशियर लगभग गायब हो चुका था। यह दृश्य दिल दहला देने वाला था।

एक साल बाद, जब मैं पहले चरण के अंतिम तीन पर्वतों पर चढ़ाई के लिए खुद को तैयार कर रहा था, तब मुझे एहसास हुआ कि प्रोजेक्ट पॉसिबल ने मुझे जलवायु परिवर्तन पर खुलकर बोलने का मंच प्रदान कर दिया है, एक ऐसा मुकाम जिसे मैंने अपने विचार की घोषणा करते समय हासिल करने की उम्मीद की थी। लोग अब मेरी प्रगति पर नजर रख रहे थे। मुझे सोशल मीडिया पर एक-दो पोस्ट करके, जिनमें से प्रत्येक में मेरी चिंताओं का जिक्र हो, दुनिया भर में हो रहे नुकसान के बारे में उन्हें सचेत करने की जरूरत थी।

उस समय, ऐसा लग रहा था मानो मैं अंधेरे में ही चिल्ला रहा हूँ। हालाँकि सोशल मीडिया पर मेरे फॉलोअर्स की संख्या बढ़ रही थी और हजारों में पहुँच चुकी थी, फिर भी यह संख्या बहुत बड़ी नहीं थी – मिशन के अंतिम चरणों में लाखों फॉलोअर्स जुड़ने में अभी कुछ महीने बाकी थे। इन आंकड़ों के बावजूद, मैं यह साबित कर रहा था कि थोड़ी सी कल्पनाशीलता और अथक प्रयास से लोग उन कार्यों को भी अंजाम दे सकते हैं जिन्हें दुनिया ने असंभव मान लिया था।

मैंने 2012 में अपना पहला पर्वतारोहण किया था और सात साल बाद ही, मैं सात महीनों में चौदह 8,000 मीटर से अधिक ऊँची चोटियों पर चढ़ाई करने के लक्ष्य की ओर अग्रसर था। मैंने सबको यह साबित कर दिया था कि जीवन में बड़ा बदलाव लाने के लिए कभी देर नहीं होती। और अगर मैं इस तरह का प्रोजेक्ट पूरा कर सकता हूँ और दुनिया को दिखा सकता हूँ कि दूरगामी

परिणामों के लिए सकारात्मक सोच ही काफी है, तो इससे पृथ्वी पर पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की संभावनाओं के बारे में क्या पता चलेगा? जलवायु परिवर्तन पर मेरी टिप्पणियों पर लोगों की प्रतिक्रिया देखकर मैं विनम्र महसूस कर रहा था, लेकिन साथ ही मेरा हौसला भी बढ़ा।

ऑनलाइन बातचीत करने वाले लोगों में बच्चे, किशोर और युवा शामिल थे, जो अपने जीवन के पहले बड़े फैसले लेने वाले थे, जैसे कि किसे वोट देना है या करियर के कौन से विकल्प चुनने हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो पहली बार पहाड़ पर चढ़ने की सोच रहे थे – ऐसे लोग जो हिमालय और पर्यावरण के भविष्य से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे। मैं उन्हें दिखाना चाहता था कि ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दुनिया में क्या हो रहा है, अच्छा और बुरा दोनों।

मैंने पहले ही तय कर लिया था कि मेरे प्रयास घर के पास से ही शुरू होने चाहिए। मैंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमारे मिशन यथासंभव पर्यावरण के अनुकूल हों; मैं अभियान का नेता था, इसलिए बदलाव लाने की शक्ति मेरे पास थी। हम पहाड़ पर जो कुछ भी ले जाते थे, उसे वापस अपने साथ लाते थे, जिसमें ऑक्सीजन सिलेंडर भी शामिल थे, जो हिमालय की चोटियों पर बिखरे हुए प्रतीत होते थे। चढ़ाई से पहले अपने साथियों को जानकारी देते समय, मैं हमेशा अपनी बात स्पष्ट रूप से रखता था।

मैंने उनसे कहा, 'हाँ, आप प्रकृति के प्रति प्रेम के कारण यहाँ आते हैं, लेकिन अगर आप इसका सम्मान नहीं करते, तो मेरे अभियान में आपकी कोई जगह नहीं है। अगर आप नियमों का पालन नहीं करते, तो आप अपना पैसा लेकर जा सकते हैं।' कुल मिलाकर, मेरे पर्वतारोहण अभियानों में शामिल अधिकांश लोग पर्यावरण के प्रति प्रेम रखते थे। उन्हें मेरे नियमों का पालन करवाना ज़्यादा मुश्किल नहीं था।

जैसा कि मैं अक्सर लोगों से कहता था, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव सार्वभौमिक है। बहुत लंबे समय से हम सभी अपने घरों को ही अपना एकमात्र घर मानते आ रहे हैं, लेकिन यह बिल्कुल सच नहीं है। हम घर के अंदर छिपने के लिए नहीं बने हैं; हम खुले में रहने वाले प्राणी हैं, और हमें अपने शहरों और कस्बों के आसपास के व्यापक पर्यावरण में अपना पैसा और ध्यान लगाना चाहिए, क्योंकि जब प्रकृति अपना कहर बरपाती है, तो उसे कोई नहीं रोक सकता। मैंने नेपाल के गांवों को भूस्खलन और बाढ़ से तबाह होते देखा है। दूर से देखने पर तबाही किसी बमबारी के बाद के मंजर जैसी लग रही थी।

पूरे 2018 में, कैलिफ़ोर्निया में भीषण जंगल की आग ने तबाही मचा दी, जिससे लगभग 20 लाख एकड़ ज़मीन जलकर राख हो गई; ठीक एक साल बाद ऑस्ट्रेलिया में भी ऐसी ही पर्यावरणीय आपदा आई। लोगों का ध्यान इस ओर जाने के लिए क्या करना होगा? इतिहास के इस मोड़ पर मानवता के सामने सबसे बड़ी समस्या हमारी दीर्घकालिक सोच की अक्षमता है। हमारा ग्रह अत्यधिक आबादी वाला है, और हम आने वाले दिनों, हफ्तों और महीनों की चिंता करते हैं, लेकिन जब बीस या तीस साल बाद हमारे पर्यावरण के स्वास्थ्य के बारे में सोचने की बात आती है, तो हम अक्सर उदासीन हो जाते हैं। शायद यह प्रक्रिया इतनी भयावह है कि इस पर विचार करना भी मुश्किल है; यह निश्चित रूप से सोचने पर मजबूर कर देती है।

मुझे एहसास हुआ कि प्रोजेक्ट पॉसिबल के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य की ओर ध्यान

आकर्षित करने का सबसे अच्छा तरीका इसे ज़ोर-शोर से प्रचारित करना था। और फिर प्रकृति और मनुष्य के बीच कुछ संघर्षों को उजागर करने का अवसर उम्मीद से कहीं पहले मिल गया।

*

मैं एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर चढ़ाई का अपना गति विश्व रिकॉर्ड तोड़ने के लिए उत्सुक था। 2017 में, मैंने एवरेस्ट की चोटी से ल्होत्से तक का सफर दस घंटे पंद्रह मिनट में तय किया था। जी200ई टीम के साथ अपनी यात्रा के अंत तक, मैंने तीनों पर्वतों पर पाँच दिनों में चढ़ाई कर ली थी। लेकिन प्रोजेक्ट पॉसिबल अभियान के लिए एवरेस्ट बेस कैंप जाते समय, मैंने फैसला किया कि शायद मैं उस समय को 50 प्रतिशत तक कम कर सकता हूँ। मुझे अपनी मानसिक और शारीरिक क्षमताओं पर पूरा भरोसा था और यद्यपि वे पर्वत बेहद चुनौतीपूर्ण थे, मैं उनसे काफी हद तक परिचित हो चुका था, फिर भी मैं उनके खतरों का सम्मान करता था।

2017 में जी200ई के दौरान गोरखाओं की मदद करने वाले गाइडों में से एक, लक्पा डेंडी के साथ, मैंने 22 मई को एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाले अन्य अभियानों की तुलना में थोड़ा देर से प्रस्थान किया। जैसे ही हम हिलारी स्टेप से आगे बढ़े, ऊपर आसमान में भोर की किरणें फूट रही थीं, तभी मैंने आगे कैमरों की फ्लैश चमकती और हेड टॉर्च की टिमटिमाहट देखी। आगे कुछ समूह थे और वे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, इतनी दूर चढ़ाई करने की मेहनत से थक चुके थे, लेकिन हम जल्द ही उनसे आगे निकलकर शिखर पर पहुँच गए। कैंप 4 से तीन घंटे की चढ़ाई के बाद जब हम वहाँ पहुँचे, तो नज़ारा अद्भुत था।

हिमालय के ऊपर सुबह का सूरज उग रहा था और जैसे ही एक-दो और पर्वतारोही चोटी पर हमारे साथ शामिल हुए, हम सब फिर से ऊर्जावान हो गए; जो लोग कुछ ही पल पहले लाइन में खड़े थके हुए लग रहे थे, वे अचानक जोश से भर उठे। ऐसा लग रहा था मानो नए सूरज ने हम सबको कड़ाके की ठंड में भी उद्देश्य और आशावाद की एक नई ऊर्जा दे दी हो। काश मैं सारा दिन इस रोशनी का आनंद ले पाता। तभी मुझे लगा कि कोई मेरे शिखर पर चढ़ने वाले सूट को खींच रहा है। यह लक्पा था।

'भाई, हमें चलना चाहिए,' उसने कहा। 'अगर तुम वो रिकॉर्ड तोड़ना चाहते हो, तो हमें अभी मुड़ना होगा।'

मैंने सिर हिलाया और चोटी से नीचे उतरने से पहले कुछ तस्वीरें खींचीं, लेकिन कुछ ही मीटर आगे बढ़ते ही मुझे एक अफरा-तफरी का मंजर देखने को मिला। हिलेरी स्टेप से दूर जाने वाली पतली सी चोटी पर लोगों की एक लंबी कतार लगी हुई थी और पहले तो ऐसा लगा कि कुछ दर्जन लोग हमारी तरफ बढ़ रहे हैं। फिर मुझे एहसास हुआ कि भीड़ बहुत बड़ी थी, और शायद करीब डेढ़ सौ पर्वतारोही फिक्स्ड लाइन पर ठसाठस भरे हुए थे, और समूह दोनों दिशाओं में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। हमने सावधानी से रस्सी से नीचे उतरने की कोशिश की, रास्ते में मिलने वाले हर व्यक्ति से हालचाल पूछते हुए, लेकिन मुझे जल्दी ही घबराहट का माहौल बढ़ता हुआ महसूस हुआ।

मुझे दिख रहा था कि कुछ लोग गुस्से में थे। उन्होंने एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए बहुत सारा पैसा,

समय और मेहनत लगाई थी और उनकी प्रगति अचानक रुक गई थी, जैसे किसी राजमार्ग पर गाड़ियों की लंबी कतार लग जाने से ट्रैफिक रुक जाता है। मुझे डर था कि कुछ पर्वतारोही अपनी जान और अपने आसपास के लोगों की सुरक्षा को गंभीर खतरे में डाल रहे थे, क्योंकि ऑक्सीजन का स्तर खतरनाक रूप से कम होने से पहले ही उन्होंने नीचे उतरने का फैसला नहीं किया था।

अन्य लोग तेज़ी से बिगड़ती स्थिति को लेकर चिंतित थे: मैंने एक व्यक्ति को शिकायत करते सुना कि उसके पैर की उंगलियां और हाथ की उंगलियां ठंड से जमने लगी हैं, और हिलेरी स्टेप से दूर जाने वाली चट्टान किसी भी अभियान दल के लिए एक खतरनाक जगह थी, खासकर अगर वे उन तेज़ हवाओं के संपर्क में आ रहे हों जो अक्सर ऊंचे शिविरों के ऊपर पहाड़ पर चलती थीं। रिज पर आगे बढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति के सामने दोनों ओर खतरे थे: बाईं ओर 2,400 मीटर की गहरी खाई थी और दाईं ओर 3,000 मीटर की। इतनी ऊंचाई से गिरने वाला पर्वतारोही वापस नहीं आ सकता था।

मुझे सबसे ज़्यादा चिंता उन पर्वतारोहियों की थी जो उस अफरा-तफरी में खो गए थे; वे डरे हुए थे और भावनात्मक रूप से बुरी तरह घबराए हुए थे। मैंने अक्सर सोचा था कि ऊँचाई पर घबराहट और डूबने की स्थिति में स्थिति कुछ-कुछ एक जैसी ही होती है। समुद्र के बीच में, जब किसी को लगता है कि वह डूबने वाला है, तो वह सहारा पाने के लिए किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति को पकड़ लेता है, यहाँ तक कि अपने प्रियजनों को भी। वे छटपटाते हैं और घबरा जाते हैं, अक्सर बचने की बेताब कोशिश में अपने सबसे नज़दीकी व्यक्ति को भी अपने साथ नीचे खींच लेते हैं। 8,000 मीटर से ऊपर की ऊँचाई पर मानसिक घबराहट भी कुछ ऐसी ही होती है, और लोग घबराकर लापरवाह फैसले लेते हैं, जिससे अक्सर उनके आसपास के पर्वतारोहियों की सुरक्षा प्रभावित होती है।

विभिन्न समूहों में शिखर पर पहुंचने का उत्साह और चिंता बढ़ती जा रही थी, और मुझे लग रहा था कि एवरेस्ट पर माहौल चरम सीमा पर पहुंच रहा है। मेरे आस-पास लोग बहस कर रहे थे; कोई न कोई अपना आपा खो बैठा था या लापरवाही भरा कदम उठाने वाला था। चूंकि उस साल एवरेस्ट पर पहले ही कई जानें जा चुकी थीं, इसलिए मैंने महसूस किया कि अगर मरने वालों की संख्या और नहीं बढ़ानी है तो कुछ बड़ा कदम उठाना जरूरी है।

मैं एक छोटी सी चट्टान पर चढ़ गया जहाँ से कतार दिखाई दे रही थी। नीचे का नज़ारा भयानक था और जब मैंने कतार में आगे-पीछे चल रहे लोगों को रास्ता दिखाने की कोशिश की, तो भीड़ में बहुत कम लोग मेरी बात सुन रहे थे। दोनों लेन के वाहन अपना रास्ता पहले से तय करने का दावा कर रहे थे और कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। हर कुछ मिनटों में टक्करें हो रही थीं; एक के बाद एक हो रही अफरा-तफरी और ओवरटेकिंग की कोशिशों से ऐसा लग रहा था मानो किसी के भी सुरक्षा रस्सी से गिरने का खतरा हो। बीच-बीच में, तेज़ी से नीचे उतर रहे लोग अपने से धीमे चल रहे लोगों पर आक्रामक ढंग से चिल्ला रहे थे।

'पांच मीटर चढ़ने में तुम्हें आधा घंटा लग जाता है,' एक पर्वतारोही ने अपने आगे चल रहे एक व्यक्ति पर चिल्लाते हुए कहा, जो स्पष्ट रूप से सबसे ऊपर संघर्ष कर रहा था। 'अगर तुम हमें जाने दोगे, तो सब कुछ साफ़ हो जाएगा।' मैंने देखा कि एक शेरपा, अराजकता को भांपते हुए,

अपने साथियों से उनकी सेहत को लेकर चिंतित होकर वापस लौटने की विनती कर रहा था। कुछ अनिच्छा से मान गए। कुछ ने उसकी बात अनसुनी कर दी। हर तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी।

मुझे अधिकार प्रदर्शित करना था।

जब कोई और मदद के लिए आगे नहीं आया, तो मैंने भीड़ को व्यवस्थित करना शुरू कर दिया। हालाँकि, इस तरह का साहसिक कदम उठाने में सबसे बड़ी समस्या पर्वतारोहण समुदाय था: यह दबंग पुरुषों और महिलाओं से भरा हुआ था, ठीक वैसे ही लोग जो विशेष बलों में भर्ती होते हैं। मैंने सेवा के दौरान सीखा था कि ऐसे लोगों के साथ काम करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि खुद को उन सबसे बड़ा और बेहतर दिखाया जाए। लेकिन मैं यह भी जानता था कि जीवन-मरण की स्थितियों में, जहाँ आपस में जुड़े समूहों और व्यक्तियों का प्रबंधन सफलता की कुंजी होता है, नियंत्रण रखने पर शामिल लोग बात मानने लगते हैं। कोई भी मरना नहीं चाहता था।

सबसे पहले, मैंने उन पर्वतारोहियों को आगे जाने दिया जो सबसे लंबे समय से इंतज़ार कर रहे थे। कई मायनों में, मेरी भूमिका एक ट्रैफिक पुलिसकर्मी से मिलती-जुलती थी, लेकिन कारों की जगह मैं पर्वतारोहियों को आगे जाने का इशारा कर रहा था। उनमें से कुछ इतने थके हुए थे कि ऐसा लग रहा था मानो वे ऊँचाई पर चढ़ाई के लिए ज़रूरी बुनियादी कौशल भूल गए हों। ऊँचाई की बीमारी ने उन्हें जकड़ लिया था। कभी-कभी, मैं उन शेरपाओं से बात करता जो उन पर्वतारोहियों का मार्गदर्शन कर रहे थे जो साफ़ तौर पर संघर्ष कर रहे थे, यह देखने के लिए कि क्या वे आगे बढ़ सकते हैं। अगर वे नहीं बढ़ सकते थे, तो मैं गाइडों को उन्हें नीचे भेजने का सुझाव देता था।

अंत में, मैं लगभग दो घंटे तक हिलेरी स्टेप के नीचे ही रुका रहा। हर आकलन के साथ, मुझे पता चल रहा था कि अपना विश्व रिकॉर्ड तोड़ने की मेरी संभावना कम होती जा रही है, लेकिन जब भीड़ छंट गई, तो लगभग 90 प्रतिशत लोग या तो समय रहते शिखर पर पहुँच चुके थे या फिर पहाड़ी की चोटी से होते हुए कैंप 4 की ओर नीचे उतर रहे थे। अब मुझे भी यही करना था और ल्होत्से की ओर बढ़ना ही मेरा मुख्य लक्ष्य था।

अगर मुझे एवरेस्ट और ल्होत्से पर चढ़ाई का अपना विश्व रिकॉर्ड तोड़ना था, तो मेरा अनुमान था कि मैं कम से कम तीन घंटे पीछे चल रहा हूँ, फिर भी मुझे ज़्यादा चिंता नहीं थी। अगर मैं अपने पिछले समय से एक घंटा कम कर पाता, तो भी मैं अपना वादा पूरा कर लेता, हालाँकि थकान तो ज़रूर हावी होती। ल्होत्से एक खड़ी चढ़ाई थी और फिक्स्ड लाइन के सहारे खुद को खींचना एक चुनौती थी – लंबे समय तक मेरे पैरों की जांघों और पिंडलियों में जलन होती रही, जैसे ही मैं एक पैर के आगे दूसरा पैर रखता था। अपनी मांसपेशियों को थकने से बचाने के लिए, मैंने तकनीक बदल दी और पहाड़ पर केकड़े की तरह अगल-बगल से चढ़ने लगा, ताकि मेरा सारा ज़ोर पैरों की इलियोटिबिअल बैंड्स पर केंद्रित हो।

ल्होत्से पर्वतमाला की चढ़ाई में सुंदरता और क्रूरता दोनों ही देखने को मिलीं। शिखर तक जाने वाली संकरी घाटी, जिसे कौलॉयर कहते हैं, काली चट्टानों से घिरी हुई थी जो सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। सामने बादलों से ढका विशाल एवरेस्ट खड़ा था, और कैंप 4 की ओर उतरते

लोगों की एक कतार अभी भी दिखाई दे रही थी। लेकिन साथ ही कई अप्रिय संकेत भी थे जो यह दर्शाते थे कि ऊँचाई पर जीवन कठोर और निर्मम हो सकता है। रास्ते में मुझे कम से कम तीन शव मिले, जिनमें सबसे विचलित करने वाला एक व्यक्ति था जिसने चमकीले पीले रंग का शिखर सूट पहना हुआ था, और उसका जबड़ा एक विकृत मुस्कान में जकड़ा हुआ था। जाहिर है, वह वहाँ वर्षों से फंसा हुआ था।

जब मैंने दस घंटे पंद्रह मिनट में शिखर पर पहुंचकर अपना चक्कर पूरा किया, जो 2017 के मेरे रिकॉर्ड के बराबर था, तो मैंने उस तस्वीर को प्रेरणा मानकर खुद को फिर से तैयार किया। अगर तुमने सावधानी नहीं बरती, तो तुम्हारा भी यही हाल हो सकता है, भाई। अभी बहुत मेहनत करनी बाकी थी।

मैं हेलीकॉप्टर से बेस कैंप पहुँचकर मकालू की चढ़ाई जल्दी पूरी करने में कामयाब रहा। वहाँ पहुँचने के बाद मैंने कुछ घंटों का आराम किया और फिर गेलजेन के साथ शिखर की ओर चल पड़ा। रस्सियाँ पहले से ही लगी हुई थीं, बर्फ़ की परत पतली थी और हम तेज़ी से और हल्के-फुल्के होकर अठारह घंटे में 24 मई को शिखर पर पहुँच गए। मिशन का पहला चरण वादे के मुताबिक पूरा हो गया था। और मैंने दो विश्व रिकॉर्डों में से एक को तोड़ दिया था: मैंने एवरेस्ट के शिखर से ल्होत्से और फिर मकालू के शिखर तक की चढ़ाई अड़तालीस घंटे और तीस मिनट में पूरी कर ली, और 2017 के अपने रिकॉर्ड को तोड़ दिया।

अफसोस की बात है कि एवरेस्ट पर हुई मेरी देरी ने मुझे एवरेस्ट शिखर से ल्होत्से शिखर तक पहुंचने में लगे समय को बेहतर बनाने से रोक दिया। लेकिन बड़ा लक्ष्य अभी भी बाकी था। प्रोजेक्ट पॉसिबल का पहला चरण इकत्तीस दिनों में पूरा हो गया था और मैं इस प्रयास से बहुत उत्साहित था।

क्या अब कोई मुझ पर शक कर सकता है?

एक पर्वत की राजनीति

हिलेरी स्टेप के नीचे का दृश्य अभी भी मेरे दिमाग में गूंज रहा था। वहाँ का माहौल बेहद भयावह था, मानो कोई बड़ी आपदा आ गई हो। क्या आजकल लोगों को समझ आता है कि एवरेस्ट पर चढ़ना कितना मुश्किल होता है? चौबीस घंटे पहले, मैंने इंतज़ार कर रहे पर्वतारोहियों की तस्वीर देखी थी। फिर मैंने फेसबुक और इंस्टाग्राम पर लॉग इन किया और तस्वीरें अपलोड कीं, उस समय मुझे आने वाले राजनीतिक संकट का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था।

देखते ही देखते, हिलेरी स्टेप के नीचे पतली पहाड़ी पर जमा हुए डेढ़ सौ पर्वतारोहियों की मेरी तस्वीर पूरी दुनिया में वायरल हो गई। सोशल मीडिया पर मुझे लगातार क्लिक और लाइक मिलते रहे, और हालांकि लोगों का ध्यान उस सुबह की अफरा-तफरी पर केंद्रित था, लेकिन तस्वीर की गुणवत्ता ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई।

जैसा कि ऊँचाई पर चढ़ने वाला कोई भी पर्वतारोही गवाही देगा, 8,000 मीटर से ऊपर एक ठीक-ठाक तस्वीर लेना मुश्किल होता है। ऊँचाई का शरीर और दिमाग पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों के कारण, दस्ताने उतारना, जेब में कैमरा ढूँढ़ना और फिर फ़ोटो खींचना जैसी छोटी-छोटी चीज़ें भी बेहद थका देने वाली हो सकती हैं। अगर कोई पोर्ट्रेट चाहता है, तो सेल्फी लेने के लिए कैमरा उठाना भी अपने आप में एक चुनौती हो सकती है, और बहुत कम शेरपा कुशल फ़ोटोग्राफ़र होते थे। अगर पर्वतारोही भाग्यशाली न हो, तो डेथ ज़ोन अभियानों से वापस आने वाली कई तस्वीरें धुंधली या आउट ऑफ़ फ़ोकस होती हैं। लेकिन मैं भाग्यशाली था।

प्रोजेक्ट पॉसिबल का पहला चरण सफलतापूर्वक पूरा होने के बाद, मकालू के बेस कैंप से निकलने का इंतज़ार करते हुए, मैं अपने लैपटॉप पर स्क्रॉल कर रहा था और संभावित निवेशकों और प्रायोजकों को ईमेल भेजकर उन्हें याद दिला रहा था कि मैं अपने मिशन को पूरा करने की राह पर तेज़ी से आगे बढ़ रहा हूँ। तभी मेरे एक दोस्त, जो पेशेवर फोटोग्राफर था, ने मुझे एक सुझाव दिया। क्या होगा अगर मैं एवरेस्ट की तस्वीर बेच दूँ? बहुत से लोग उस पर कमेंट कर रहे थे; कई लोग उसे अपने दोस्तों के साथ शेयर कर रहे थे, और एक-दो पर्वतारोहियों ने तो उसकी एक कॉपी भी माँगी थी। क्या यह अतिरिक्त धन जुटाने का एक कारगर तरीका हो सकता है?

मैंने ऑनलाइन विज्ञापन दिया, कुछ सीमित प्रतियों पर हस्ताक्षर करने की पेशकश की और कीमत तीन सौ पाउंड रखी। मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं था कि मुझे कितना मुनाफा होगा, लेकिन मैं दूसरे चरण के वित्तपोषण में आई कमी को पूरा करने के लिए उत्सुक था। मुझे हर

संभव मदद की ज़रूरत थी।

नेपाल में रहते हुए मैंने जो बातें सीखीं, उनमें से एक यह थी कि एवरेस्ट से खूब पैसा कमाया जाता है। जहाँ पैसा होता है, वहाँ राजनीति भी होती है। और जब भी राजनीति आती है, मुसीबतें तो आती ही हैं। जाहिर है, कई लोगों ने नेपाल सरकार से मेरी हिलेरी स्टेप वाली तस्वीर को सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के बारे में शिकायत दर्ज कराई थी और मुझ पर देश को बदनाम करने का आरोप लगाया था, जो सरासर झूठ था – सच्चाई तो यह थी कि सौ से भी ज़्यादा लोग एक साथ पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे, और सभी तीन दिनों के बेहद कम समय में मौसम के अनुकूल रहते हुए चोटी पर पहुँचने की उम्मीद कर रहे थे।

(दिलचस्प बात यह है कि कुछ शिकायतें उन लोगों से आईं जो एलीट हिमालयन एडवेंचर्स की प्रतिद्वंद्वी गाइडिंग कंपनियों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए थे। उनमें से कुछ ने तो सरकार से मुझे हिमालय में पर्वतारोहण करने से प्रतिबंधित करने का भी अनुरोध किया, जिससे मुझे प्रोजेक्ट पॉसिबल को पूरा करने में बाधा आती।)

जब अधिकारियों को पता चला कि मैं उसी तस्वीर से कुछ अतिरिक्त पैसे कमाने की उम्मीद कर रहा था, तो उन्होंने मुझे बैठक के लिए बुलाया, लेकिन तब तक राज़ खुल चुका था। बेस कैंप छोड़ने के बाद, उस तस्वीर पर इंस्टाग्राम पर 4,000 टिप्पणियाँ आ चुकी थीं और वह अखबारों और वेबसाइटों पर छाई हुई थी, लेकिन हिलेरी स्टेप के नीचे जो कुछ हुआ था, उसका एक गलत संस्करण फैल रहा था और कई लोगों के मन में मेरी तस्वीर को एक आम घटना के रूप में गलत समझा जा रहा था। अचानक जनता पहाड़ पर चढ़ने वाले पर्वतारोहियों की संख्या सीमित करने की मांग करने लगी।

इसका कड़ा विरोध हुआ। सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने इसकी प्रामाणिकता पर संदेह जताया। उनका दावा था कि मैंने पहाड़ और पर्यावरण से जुड़ी राजनीति की ओर ध्यान आकर्षित करने या अपने मिशन को प्रचारित करने के लिए यह तस्वीर बनाई है, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी थी। पर्वतारोहण समुदाय के प्रमुख लोग भी गुस्से में प्रतिक्रिया दे रहे थे।

नेपाली टाइम्स में, मेरे एक अच्छे मित्र और पर्वतारोही कर्मा तेनजिंग - जिन्होंने मेरे एवरेस्ट पर चढ़ाई करने से एक सप्ताह पहले ही एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की थी - बता रहे थे कि उनकी चढ़ाई के दौरान पहाड़ कितना शांत था। उन्होंने खाली पर्वत श्रृंखला की एक तस्वीर भी पोस्ट की थी और सही तर्क दिया था कि मेरा अनुभव एक मौसम में एक बार होने वाली घटना थी। (हालांकि, जब जोखिम इतने अधिक थे, तो एक मौसम में एक बार होना भी कुछ ज्यादा ही था।)

उन्होंने 'माउंट एवरेस्ट पर ज्यादातर दिनों में इतनी भीड़ नहीं होती' शीर्षक वाले एक लेख में शिकायत करते हुए कहा, 'इसे दुनिया भर में शिखर पर होने वाली एक रोजमर्रा की घटना के रूप में चित्रित किया गया है।'

लेकिन कर्मा का गुस्सा मुझ पर नहीं था; ऐसा लग रहा था कि वह मेरी वायरल तस्वीर पर हुई जल्दबाजी वाली प्रतिक्रिया से निराश थे, जिसमें मैंने दावा किया था कि एवरेस्ट पर चढ़ने वाले लोगों की वार्षिक संख्या सीमित होनी चाहिए। बाद में उन्होंने ट्विटर पर इस प्रतिबंध का विरोध किया:

> गैर-पर्वतारोहियों को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने की होड़ के बारे में राय देते देखना अजीब लगता है। नहीं, पर्वतारोहियों की संख्या सीमित मत कीजिए! ये 'असली' पर्वतारोही हैं जिन्होंने कड़ी मेहनत की है, योग्य हैं और अभी भी पर्वतारोही बने हुए हैं। शिखर पर चढ़ने के लिए केवल 3-4 दिन ही मिलते हैं, इसलिए यह हर साल होगा। मेरा मानना है कि आपको तभी अपनी राय देनी चाहिए जब आप पहाड़ों में रहे हों और जानलेवा खुंबू हिमपात पर चढ़ाई की हो, जहां गिरती बर्फ से बचने की पूरी कोशिश की हो, घंटों तक जुमार की ताकत से कैंप 3 तक पहुंचे हों और फिर कैंप 4 तक पहुंचे हों जहां हवा में ऑक्सीजन न के बराबर हो। अंत में शिखर पर पहुंचे हों, 12 घंटे की कठिन चढ़ाई (3 दिन बिना सोए और लगातार चलते हुए) के बाद बुरी तरह थके हुए हों, पोषण के लिए सिर्फ चॉकलेट बार खाए हों। उसके बाद, बेस कैंप तक 2 दिन पैदल चलकर पहुंचे हों, हर कदम का हिसाब रखते हुए, कहीं फिसलकर गिर न जाएं। तभी मैं आपकी राय सुनूंगा। पी.एस.: 15 और 16 तारीख को बहुत कम पर्वतारोही होने के बावजूद, कैंप 4 और उससे ऊपर के क्षेत्रों में लोगों की जान गई। अंत में, शिखर तक की चढ़ाई तस्वीरों में दिखने वाले आसान या सुगम रास्ते जैसी नहीं होती। #मूर्खता

मैं उनकी बात से असहमत नहीं हो सकता था। जब मैं आखिरकार काठमांडू लौटा, तो मुझे पर्यटन विभाग के प्रतिनिधियों सहित कई चिंतित राजनेताओं से मिलने का निमंत्रण मिला। वे जानना चाहते थे कि मैंने क्या अनुभव किया और मैंने अपनी तस्वीर बेचने का फैसला क्यों किया। इससे मुझे गुस्सा आया। पिछले दिन, मैंने गूगल इमेजेज़ पर खोजबीन की, यह देखने के लिए कि क्या अन्य लोगों ने भी इसी तरह की तस्वीर ली है, चाहे वह उस शिखर चढ़ाई के दौरान की हो या किसी अन्य वर्ष की। दर्जनों तस्वीरें थीं। अपनी मुलाकात के समय तक, मैं थोड़ा अपमानित महसूस कर रहा था। आखिर वे मुझे ही क्यों निशाना बना रहे हैं? मैं अपने लैपटॉप पर एक पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन और एवरेस्ट पर लगी लंबी कतारों को दर्शाने वाली पुरानी तस्वीरों की एक गैलरी लेकर पहुंचा था।

जब हम बातचीत करने के लिए बैठे, तो मैंने पूछा, 'क्या इसलिए कि मैं कुछ अलग करने की कोशिश कर रहा हूँ?' उन्होंने जवाब दिया, 'अब तक तो मैं इन पहाड़ों की तस्वीरें ठीक उसी तरह खींच रहा हूँ जैसा मैंने कहा था। मैं अपने काम के ज़रिए शेरपाओं पर फिर से ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ। तो फिर आप मुझे दुश्मन क्यों मान रहे हैं? इस तरह की तस्वीर खींचने वाला मैं पहला व्यक्ति नहीं हूँ। बस संयोग से मेरी ही तस्वीर ने सबका ध्यान खींचा है।'

मैंने मेज के चारों ओर एक-दो लोगों को सहमति में सिर हिलाते हुए सुना। किसी ने बताया कि मेरी तस्वीर ऑनलाइन बेचने के संबंध में कई शिकायतें दर्ज की गई हैं, और एवरेस्ट पर क्या हो रहा है, इसकी तह तक जाना उनका काम है।

'जी हाँ, ठीक है,' मैंने कहा, 'लेकिन चलिए मुद्दे पर आते हैं: कतार तो लगी हुई है। अगर आप कह रहे हैं कि यह बुरी स्थिति है, तो हम इसके बारे में कुछ क्यों नहीं करते? क्या आप इसे यूँ ही

छिपाते रहेंगे? या, अब जब सबको इसके बारे में पता चल गया है, तो क्या आप इसे ठीक करेंगे? इस स्थिति से लोगों की जान जा सकती है। यह कई सालों से ऐसा ही है, लेकिन इसे इतना भयावह होने की ज़रूरत नहीं है। शायद बदलाव लाने का समय अब आ गया है।'

मुझे चिंता थी कि एवरेस्ट पर भीड़भाड़ की समस्या को हल करने के लिए उनका पहला सुझाव शायद वित्तीय समायोजन से जुड़ा हो। ऑनलाइन कई लोगों ने सुझाव दिया था कि परमिट की कीमत बढ़ाकर भीड़भाड़ की समस्या का समाधान किया जा सकता है। उनका तर्क था कि अगर कीमत बहुत बढ़ गई, तो एवरेस्ट जाने वाले लोगों की संख्या कम हो जाएगी। इस बीच, सरकार उन साहसी यात्रियों से सालाना उतना ही मुनाफा कमा सकती है जिनके पास चढ़ाई करने के लिए पैसा और दृढ़ संकल्प है। लेकिन मुझे इस बात से बहुत गुस्सा आया कि नेपाल और उससे बाहर के कुछ लोग एवरेस्ट को केवल बहुत अमीर लोगों के लिए उपलब्ध विलासिता की वस्तु बनाना चाहते हैं।

मैंने कहा, 'आप जो भी फैसला लें, कृपया एवरेस्ट पर चढ़ने की लागत न बढ़ाएं। प्रकृति की कीमत नहीं लगाई जानी चाहिए। पहाड़ तो सभी के आनंद के लिए हैं।'

फिर मैंने समझाया कि बेशक, पर्वतारोहण करने वालों और उनके समय पर कुछ प्रतिबंध लगाने के पक्ष में तर्क दिया जा सकता है, लेकिन ये प्रतिबंध निष्पक्ष होने चाहिए। उदाहरण के लिए, योग्यता प्रणाली बनाकर इस समस्या का आसानी से समाधान किया जा सकता है। गोरखा चयन की तरह, इस प्रक्रिया को इस तरह से तैयार किया जाएगा कि योग्य लोगों को अयोग्य लोगों से अलग किया जा सके।

उदाहरण के लिए, यदि कोई पर्वतारोही यह साबित कर दे कि उसने मनास्लू या चो ओयू जैसी 8,000 मीटर से अधिक ऊँची चोटियों पर सफलतापूर्वक चढ़ाई कर ली है, तभी वह एवरेस्ट पर चढ़ाई करने की अनुमति के लिए आवेदन कर सकता है। (या शायद वह नेपाल में 6,000 और 7,000 मीटर ऊँची चोटियों की एक श्रृंखला पर चढ़ाई कर सकता है, जिससे स्थानीय समुदाय को अधिक आय प्राप्त होगी।) एवरेस्ट चढ़ाई कैलेंडर में बदलाव करना भी भविष्य में मददगार साबित हो सकता है।

2019 में मुझे जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा, उसका कारण यह था कि एवरेस्ट पर रस्सियाँ पर्वतारोहण के मौसम में बहुत देर से लगाई गई थीं, और इसके चलते शिखर पर चढ़ने के लिए इंतजार कर रहे पर्वतारोहियों की लंबी कतार लग गई थी। रस्सियाँ लगने के बाद, सभी पर्वतारोही एक ही समय पर बेस कैंप से चढ़ाई करने लगे, जिससे हिलेरी स्टेप के नीचे मैंने जो जाम देखा था, वह स्थिति उत्पन्न हो गई। इस रसद संबंधी समस्या का समाधान करने से भीड़भाड़ कम करने में भी मदद मिलेगी।

'क्यों न हम एवरेस्ट पर चढ़ाई के लिए निर्धारित लाइनों को एक महीने पहले, अप्रैल में ही ठीक कर दें, जब सीज़न शुरू होता है? ताकि जब लोग वहां पहुंचें तो उनके पास शिखर पर चढ़ने के लिए अपनी पसंद का समय चुनने के लिए पूरा एक महीना हो।'

टेबल पर बैठे लोगों ने सिर हिलाकर मेरी बात मान ली और कहा कि मेरे सुझावों पर विचार किया जाएगा। उन पर दबाव बढ़ता जा रहा था। उस साल एवरेस्ट पर ग्यारह पर्वतारोहियों की

जान जा चुकी थी और 2019 के अंत तक कई नए नियम लागू होने वाले थे। पर्यटन विभाग आखिरकार पर्वतारोहियों से यह साबित करने को कहेगा कि उन्होंने नेपाल में कम से कम एक 6,500 मीटर ऊंची चोटी पर चढ़ाई की है, जो मेरे विचार जितना चुनौतीपूर्ण तो नहीं था, लेकिन कम से कम एक शुरुआत तो थी।

दूसरी ओर, एवरेस्ट पर पर्वतारोहण करने वाले किसी भी शेरपा को अगर गाइड बनना होता तो उसे अपना अनुभव साबित करना पड़ता, और हर पर्वतारोही को अपने अच्छे स्वास्थ्य का प्रमाण देना होता। बेशक, इन सभी प्रस्तावों के कुछ नुकसान भी थे। नए मानदंडों के तहत लगभग हर शेरपा योग्य हो जाता, और स्वास्थ्य प्रमाण पत्र आसानी से जाली बनाए जा सकते थे, लेकिन फिर भी, ये सही दिशा में एक कदम थे।

हिमालय में पहले चरण के दौरान मैंने जितनी भी त्रासदी झेली थी, उसके बाद ये प्रयास, भले ही परिपूर्ण न हों, लेकिन कुछ न करने से बेहतर थे।

*

मां की हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा था। उनकी हृदय की स्थिति बिगड़ती जा रही थी।

जब वह अस्पताल में आराम कर रही थीं, तब परिवार के मित्र बिनेश उन्हें प्रोजेक्ट पॉसिबल के बारे में नियमित रूप से जानकारी देते रहते थे। बिनेश का हमसे पहला संपर्क तब हुआ जब मैं 2003 में गोरखा सेना में शामिल हुआ था। उस समय सभी बच्चे घर छोड़कर चले गए थे, इसलिए मम्मी-पापा अकेले रह गए थे। लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि वे चितवन में रोज़मर्रा की ज़िंदगी के तनावों से जूझ रहे थे। यह बात मुझे छुट्टी पर उनसे मिलने के दौरान ही समझ में आई।

एक दोपहर मैं माँ के साथ लोकल बस में सवार हुई, लेकिन जब बस नज़र आई तो मैंने देखा कि डिब्बा खचाखच भरा हुआ था, मानो किसी नरक से कम नहीं। व्यस्त समय में, ड्राइवर केवल लंबी दूरी तय करने वाले यात्रियों को ही बिठाते थे; यह ज़्यादा पैसे वसूलने का एक तरीका था। उस दोपहर हमारा गंतव्य केवल छह किलोमीटर दूर था, इसलिए बस में चढ़ने की संभावना बहुत कम थी, और हमें अगली बस के लिए शायद कुछ देर इंतज़ार करना पड़ता।

ड्राइवर ने हमें मना करने की कोशिश की। उसने कहा, 'मैं आपको नहीं ले जा सकता।'

माँ ने हिम्मत नहीं हारी और बस में चढ़ने के लिए आगे बढ़ीं, लेकिन तभी एक बस कंडक्टर ने उन्हें झट से धक्का देकर दरवाज़ा बंद कर दिया। मुझे विश्वास नहीं हुआ; उन कमीनों के जाते ही मेरा गुस्सा फूट पड़ा और मैं गुस्से में घर भागकर अपनी मोटरसाइकिल लेने गई, गलियों में तब तक तेज़ी से भागती रही जब तक कि बस नहीं मिल गई। बस के आगे पहुँचकर मैं उसमें चढ़ गई और कंडक्टर को खूब खरी-खोटी सुनाई।

‘कभी भी किसी के साथ ऐसा मत करना!’ मैंने चिल्लाकर कहा, और वह एक सीट पर दुबक कर बैठ गया। ‘खासकर बुजुर्ग महिलाओं के साथ तो बिल्कुल नहीं।’ वह आदमी बहुत डरा हुआ लग रहा था।

जब मैं आखिरकार उसके पास वापस पहुंची, तो मैंने कहा, 'माँ, मैं अब आपको यह सब नहीं

करने दूंगी। मैं आपके लिए एक कार खरीदूंगी, ताकि आपको फिर कभी बस का इस्तेमाल न करना पड़े।'

मेरी योजना में दो कमियाँ थीं: पहली यह कि नेपाल में कभी-कभी खरीदे गए वाहनों पर 288 प्रतिशत तक टैक्स लगता था और मुझे काठमांडू के किसी बैंक से लोन लेना पड़ता। दूसरी यह कि न तो मम्मी और न ही पापा को गाड़ी चलाना आता था, इसलिए गाड़ी खरीदने के बाद मैंने बिनेश को उन्हें किराने का सामान खरीदने के लिए काम पर रख लिया, जब भी उन्हें खाने-पीने की ज़रूरत होती थी। वह अक्सर उन्हें उनके दोस्तों के घर पार्टियों और डिनर के लिए भी ले जाता था। देखते ही देखते बिनेश हमारे पारिवारिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया और 2019 तक, ग्यारह साल बाद, जब बच्चे काम के लिए बाहर जाते थे, तो उसे मेरे माता-पिता की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी सौंप दी गई थी।

मई में जब मैं हिमालय की यात्रा कर रहा था, बिनेश काठमांडू में मेरी माँ के अस्पताल के बिस्तर के पास बैठा था और उन्हें मेरे अभियानों और विश्व रिकॉर्डों के बारे में अखबारों में छपी खबरें पढ़कर सुना रहा था। उसने उन्हें फेसबुक से वीडियो क्लिप दिखाए और बताया कि मैंने डॉ. चिन को कैसे बचाया था; बिनेश ने माँ को कंचनजंगा त्रासदी के बारे में भी बताया।

पर्यटन विभाग के साथ मेरी बैठक समाप्त होने के बाद, मैं जितना हो सके अस्पताल में उनसे मिलने जाती थी, उनका हाथ थामे उन्हें अपनी कहानियाँ सुनाती थी। कुछ देर बाद, उन्होंने मेरी ओर देखा और मुस्कुराईं। उन्होंने कहा, 'ऐसा लगता है जैसे मेरा बेटा अजेय है।'

माँ जानती थीं कि प्रोजेक्ट पॉसिबल मेरे लिए कितना महत्वपूर्ण था, और उन्होंने मेरे जुनून को स्वीकार कर लिया था, हालाँकि मेरे द्वारा उठाए गए कुछ जोखिमों से उन्हें स्पष्ट रूप से चिंता होती थी। माँ यह भी जानती थीं कि काम पूरा होने के बाद मैं उन्हें और पिताजी को एक साथ एक अपार्टमेंट में लाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूँगा। लेकिन उन्हें अस्पताल के बिस्तर पर तारों और बजती मशीनों से बंधी हुई देखना बहुत दुखद था। बातचीत के दौरान उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। माँ मेरे लिए सब कुछ थीं; उन्होंने ही मुझे वह इंसान बनाया था जो मैं आज हूँ, और उन्हें पीछे छोड़ने का ख्याल मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था। एक पल के लिए मेरे मन में संदेह आया।

मां की खराब सेहत को देखते हुए, क्या प्रोजेक्ट पॉसिबल अभी भी उचित था?

अगर मैं इसे पूरा नहीं कर पाई, तो सुची और मेरा क्या होगा?

और अगर मैं अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाया तो मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा?

माँ को शायद मेरी चिंता का एहसास हो गया था। उन्होंने कहा, 'निम्स, तुमने यह मिशन शुरू कर दिया है। इसलिए इसे पूरा करो। हमारी दुआएं तुम्हारे साथ हैं।'

मैंने उसका हाथ दबाया और वादा किया कि मैं जितनी जल्दी हो सके सुरक्षित घर लौट आऊँगी। और फिर मुझे याद आया।

हार मानना मेरे स्वभाव में नहीं था।

*

जून 2019 के अंत में जब मैंने प्रोजेक्ट पॉसिबल के दूसरे चरण में कदम रखा, जो मुझे नंगा

परबत, गाशेरब्रुम I और II, K2 और ब्रॉड पीक तक ले जाना था, तब पर्वतारोहण समुदाय में मेरे लक्ष्यों को लेकर चर्चा में थोड़ा बदलाव आया था। हाँ, कई लोग मिशन के पहले चरण में ही छहों पर्वतों पर चढ़ने की मेरी गति की सराहना कर रहे थे, लेकिन कई अन्य लोग भी थे जो मुझ पर संदेह जता रहे थे।

सबसे आम शिकायत यह थी कि नेपाल मेरा गृह क्षेत्र था; लोगों का तर्क था कि मैंने शायद दूसरे देशों के पर्वतारोहियों की तुलना में स्थानीय संस्कृति और भूभाग को बेहतर समझा था और इसी वजह से मुझे फायदा मिला। यह बात कुछ हद तक सही थी, हालांकि इसमें इस तथ्य को नज़रअंदाज़ कर दिया गया था कि मैं केवल सात वर्षों से ही पर्वतारोहण कर रहा था। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक दावा किया कि प्रोजेक्ट पॉसिबल केवल इसलिए सफल रहा क्योंकि मैंने कुछ बेस कैंपों के बीच हेलीकॉप्टर से यात्रा की थी, जबकि पाकिस्तान में इस तरह की आवागमन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

'हाँ, तैयार रहो दोस्तों', मैंने मन ही मन थोड़ा चिढ़ते हुए सोचा। 'तुम्हें तो पता भी नहीं है...'

दूसरी ओर, मुझे समझ आ गया था कि पाकिस्तान एक बिल्कुल अलग चुनौती पेश करता है। यह चढ़ाई के लिए निश्चित रूप से एक अधिक अप्रत्याशित क्षेत्र था। K2 पर मौसम अपने खराब होने के लिए जाना जाता था; गाशेरब्रुम I और II के पार, अचानक भयंकर तूफान आ सकते थे, जिससे धूप वाले दिन भी चारों ओर बर्फ ही बर्फ हो जाती थी। कराकोरम पर्वत श्रृंखला में स्थित बेस कैंपों में संचार और आवास जैसी सुविधाएं भी नेपाल की तुलना में कम उन्नत थीं, इसलिए मुझे हेलीकॉप्टर लेने के बजाय पैदल ही बेस कैंपों के बीच यात्रा करनी पड़ती।

कुल मिलाकर, पाकिस्तान में पर्वतारोहण के दौरान मेरा सबसे बड़ा तनाव नांगा परबत पर आतंकवादी हमले में मेरी टीम के पूरी तरह से मारे जाने का खतरा था। पाकिस्तान के लोगों के साथ मेरा अनुभव हमेशा शानदार रहा था, वे बहुत प्यारे थे, लेकिन प्रोजेक्ट पॉसिबल की तैयारी के महीनों के दौरान तालिबान बलों के हमले को एक बहुत ही वास्तविक चिंता माना जा रहा था।

इस घटना की शुरुआत 22 जून 2013 को हुई, जब अर्धसैनिक वर्दी पहने और AK-47 राइफल व चाकू लिए सोलह तालिबान लड़ाके बेस कैंप में घुस आए और बारह पर्वतारोहियों को उनके तंबुओं से घसीटकर रस्सी से बांध दिया। सभी के पासपोर्ट जब्त कर लिए गए; पकड़े गए प्रत्येक पर्वतारोही की तस्वीरें ली गईं और उनके स्मार्टफोन और लैपटॉप पत्थरों से तोड़ दिए गए। अंततः, समूह को शिविर के बाहर एक मैदान में ले जाकर मार डाला गया। केवल एक व्यक्ति बच निकला, झांग जिंगचुआन नाम का एक चीनी पर्वतारोही, जो गोलीबारी शुरू होते ही सौभाग्य से अपने बंधनों से मुक्त हो गया।

गोलियों की बौछारों के बीच भागते हुए झांग अंधेरे में नंगे पैर भाग निकला। बेचारा सिर्फ़ गर्म अंडरवियर पहने हुए था, लेकिन वह एक चट्टान के पीछे छिप गया और ठंड से कांपने लगा। जब तक उसे लगा कि वह सुरक्षित है, तब तक वह रेंगकर अपने तंबू तक पहुंचा और वहां एक सैटेलाइट फोन और कुछ गर्म कपड़े ढूंढने लगा। उसके आसपास ग्यारह लोग, उसके दोस्त और सहकर्मी, मारे जा चुके थे। यह जानते हुए कि आतंकवादी अभी भी आसपास हो सकते हैं, वह तेज़ी से भागा और मदद के लिए अधिकारियों को फोन किया। उसी सुबह, एक सैन्य हेलीकॉप्टर

बेस कैंप के ऊपर मंडरा रहा था और झांग को बचा लिया गया।

स्पेशल फोर्सेज के साथ लड़ाई के दौरान मुझे इस कहानी के बारे में पता चला और उस अत्याचार ने हमारी लड़ाई को और भी प्रासंगिक बना दिया। लेकिन जब कई साल बाद प्रोजेक्ट पॉसिबल शुरू हुआ, तो मिशन के दौरान तालिबान हमले का वास्तविक खतरा मुझे डरा रहा था, खासकर इसलिए कि मैं पाकिस्तान में उनके इलाके में ऑपरेशन कर रहा था। पहली बात तो यह थी कि कोई भी लड़ाका बहुत जल्दी आ सकता था, क्योंकि गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र के दियामेर जिले (जहां नंगा पर्वत स्थित था) तक निकटतम शहरों से पैदल जाने में केवल एक दिन लगता था, जबकि काराकोरम पर्वतमाला, जहां के2 और गाशेरब्रुम I और II जैसे ठिकाने स्थित थे, दस दिन की दूरी पर थी और कई सैन्य चौकियों को पार करना पड़ता था। इसके अलावा, मैं निहत्था होता और बेस कैंप में इंतजार करते समय अगर कोई गड़बड़ होती तो मैं अपना बचाव करने में असमर्थ होता।

यह सिर्फ मेरे बारे में नहीं था; मुझे टीम में कई अन्य लोगों का भी ध्यान रखना था और उनमें से किसी के पास भी सैन्य अनुभव नहीं था। दूसरी चिंता प्रोजेक्ट पॉसिबल के आयोजन के दौरान मेरे द्वारा बनाई गई छवि थी। मैंने फंडिंग हासिल करने के लिए अपनी महत्वाकांक्षाओं के बारे में खुलकर बात की थी, और परिणामस्वरूप सोशल मीडिया पर मेरी उपस्थिति बढ़ गई थी। इन सब बातों ने मुझे नाम कमाने की चाह रखने वाले किसी भी आतंकवादी के लिए एक आसान निशाना बना दिया था। यह जानते हुए कि मेरा सैन्य अनुभव किसी से छिपा नहीं था, आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में मेरी भागीदारी को लेकर किसी को भी कोई द्वेष हो, तो नांगा परबत पर मुझे असुरक्षित और कमजोर स्थिति में पा सकता था। मुझे बहुत सावधानी से काम करना होगा।

कम से कम फंडिंग अभियान को लेकर कुछ अच्छी खबर तो मिली। पाकिस्तान में अपनी पर्वतारोहण यात्राओं की योजना बनाते समय, मुझे इस बात का दुखद एहसास हो गया था कि मिशन को समय पर पूरा करने के लिए अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। अब तक मैंने जो कुछ भी कमाया था, वह सब पहले चरण में खर्च हो गया था और मुझे भारी मात्रा में धन की आवश्यकता थी। लेकिन उम्मीद की एक किरण नज़र आई।

स्पेशल फोर्सेज में मेरे कई साथियों ने ब्रिटिश घड़ी कंपनी ब्रेमोंट के साथ काम किया था। एक आपसी दोस्त के ज़रिए परिचय होने पर, उन्होंने मुझे चौदह घड़ियों के डायल देने की पेशकश की थी, जब मैं लंदन से हिमालय और पहले चरण के लिए रवाना होने की तैयारी कर रहा था। योजना यह थी कि प्रोजेक्ट पॉसिबल के दौरान हर एक डायल को चोटियों पर ले जाया जाए और उन्हें एक अनोखी घड़ी में बदल दिया जाए। फिर सभी घड़ियों की नीलामी की जाएगी, और उससे मिलने वाली अधिकांश राशि मेरे अभियान के खर्चों में वापस लगा दी जाएगी। फिर आया सकारात्मक मोड़। जब तक मैंने पहला चरण पूरा किया, ब्रेमोंट अपनी भागीदारी बढ़ाना चाहता था।

उन्होंने घोषणा की, 'हम प्रोजेक्ट पॉसिबल को प्रायोजित और बढ़ावा देना चाहते हैं और आपको बिना ब्याज के 200,000 पाउंड अग्रिम रूप से देना चाहते हैं।'

मैं बेहद खुश था। उस समय कोई और फंडिंग प्रस्ताव नहीं था और वित्तीय सहायता के बिना

परियोजना का पूरा होना असंभव लग रहा था। लेकिन ब्रेमोंट के समर्थन से, जो इस मिशन का प्रचार भी करेंगे - जिसे अब ब्रेमोंट प्रोजेक्ट पॉसिबल कहा जाएगा - पाकिस्तान में मेरे अभियानों का एक बड़ा हिस्सा वहन किया जा सकेगा। कुछ और मार्गदर्शक अभियानों और मेरे गोफंडमी पेज से प्राप्त अतिरिक्त धनराशि के साथ, दूसरे चरण के लिए आवश्यक संख्या जुटाना मेरे लिए संभव हो गया था। लेकिन इसमें एक बड़ी बाधा थी।

ब्रेमोंट ने कहा, 'नांगा परबत पर चढ़ाई करने से पहले हम आपके प्रायोजक के रूप में नामित होना पसंद करेंगे।'

मैं रुक गया। उनका सुझाव अमूल्य था और ब्रेमोंट की भागीदारी की घोषणा करना मुझे बेहद खुशी थी, लेकिन नांगा परबत पर सुरक्षित चढ़ाई पूरी करने के बाद ही। तब तक मुझे तालिबान की नजरों से दूर रहना था।

मैंने समझाया, 'देखो, मेरे सैन्य पृष्ठभूमि के कारण, मैं एक भी जोखिम नहीं उठा सकता। बस एक बदमाश को यह कहने की ज़रूरत है, "ठीक है, यह आदमी जा रहा है, इसे सबक सिखाने के लिए ये लो 200 डॉलर।" कोई भी पलक झपकते ही इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगा।'

ब्रेमोंट समझ गया था। कोई भी नहीं चाहता था कि प्रोजेक्ट पॉसिबल का अंत खून-खराबे में हो। वैसे भी, नांगा पर्वत के पास मुझे खत्म करने की अपनी योजनाएँ थीं।

हार मानना खून में नहीं होता।

मैंने नांगा परबत मिशन को बम से सुरक्षित बनाने के लिए कड़ी मेहनत की।

संभावित आतंकवादी हमलावरों को भ्रमित करने के लिए, मैंने जुलाई महीने में पाकिस्तान के लिए तीन अलग-अलग उड़ानें बुक कीं, ताकि मैं अपने निशान मिटा सकूँ। इसके परिणामस्वरूप कुल खर्च में कुछ हज़ार डॉलर और जुड़ गए, लेकिन यह किसी हमले या अपहरण का शिकार होने से बेहतर था। साथ ही, जब तक मैं दियामेर जिले से सुरक्षित बाहर नहीं निकल गया, तब तक मैंने सोशल मीडिया पर अपनी किसी भी गतिविधि का खुलासा नहीं किया।

अंतिम सावधानी के तौर पर, मैंने खुद को हमारी निजी क्लाइंट से अलग कर लिया, जो एक कुशल पर्वतारोही थीं और टीम के साथ नांगा परबत की चोटी पर चढ़ने के लिए पैसे देकर आई थीं। मैंने सोचा कि शायद उनके लिए बेस कैंप में हमसे मिलना ज़्यादा सुरक्षित होगा। अगर कोई अप्रिय घटना होती, तो मैं नहीं चाहता था कि किसी और को इसका खामियाजा भुगतना पड़े।

मेरे साथियों को भी कुछ प्रक्रियाओं में बदलाव करने पड़े, जिनमें पहाड़ों में हमारे आरामदेह रवैये में बदलाव भी शामिल था। ट्रेकिंग के दौरान, हमें खूब शराब पीना और तेज़ संगीत बजाना पसंद था, और हम अक्सर बेस कैंपों में शोरगुल भरा माहौल बना देते थे, जहाँ सोने, खाने और बातें करने के अलावा कुछ खास करने को नहीं होता था। एक छोटे से ब्लूटूथ स्पीकर की मदद से, प्रोजेक्ट पॉसिबल की टीम रात के अंधेरे में किसी भी डाइनिंग टेंट को क्लब में बदल देती थी, जहाँ हम सुबह के शुरुआती घंटों तक नेपाली पॉप हिट्स और तेज़ रॉक संगीत बजाते थे, और साथ ही बीयर और व्हिस्की की बोतलें एक-दूसरे को देते रहते थे।

अन्नपूर्णा में ही शराब पीना और नाचना शुरू हो गया था, और धौलागिरी की खतरनाक चढ़ाई के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा। जीवन-मरण के इस अभियान से बच निकलने के बाद हम सबने मिलकर मौज-मस्ती की और गाने बजाए। टीम-बिल्डिंग के लिहाज से यह तुरंत सफल रहा: मैंने देखा कि कुछ शांत स्वभाव के लड़के भी कुछ बीयर पीने के बाद मिशन के बारे में खुलकर बात करने लगे। कुछ अन्य लोगों में ऊँचाई पर होने वाले अपने डर या चौदह पर्वतों पर चढ़ाई पूरी करने के बाद की अपनी महत्वाकांक्षाओं के बारे में बात करने का आत्मविश्वास आ गया। साथ मिलकर पार्टी करने से हर कोई प्रोजेक्ट में अधिक शामिल महसूस करने लगा, हम संवाद कर पाए और एक-दूसरे से जुड़ पाए, जिससे एकजुटता की भावना पैदा हुई, और टीम के सदस्यों के बीच यह समझ बन गई कि हाँ, हम यहाँ कड़ी मेहनत करने के लिए हैं, लेकिन मौज-मस्ती करने

की भी गुंजाइश है। हालांकि, लापरवाही करना नामुमकिन था। जब भी हम रात भर पार्टी करते थे, मैं यह सुनिश्चित करता था कि मैं बाकी सब से पहले उठूँ। मैं अपने काम को लेकर गंभीर था, मैं उत्कृष्टता की मांग करता था और यह महत्वपूर्ण था कि मेरे आस-पास के सभी लोग इसे जानें।

शुरुआत में, हमारा वो जोशीला अंदाज़ पाकिस्तान पहुँचने पर भी बरकरार रहा। जब इस्लामाबाद से नंगा परबत ले जाने वाली वैन आई, तो ड्राइवर के रेडियो में गाना बज रहा था। हमने आवाज़ और तेज़ कर दी, गाते-चिल्लाते हुए हमने पहाड़ों की ओर अपनी यात्रा शुरू की, लेकिन लगभग तुरंत ही मुझे इस बात का एहसास हो गया कि हम किस चुनौती का सामना करने जा रहे हैं, जब प्रसिद्ध पाकिस्तानी पर्वतारोही मुहम्मद अली सदपारा का फोन आया।

अली पहले भी कई बार नंगा परबत पर चढ़ चुका था। वह उस क्षेत्र से भली-भांति परिचित था, और मैंने उसे हमारे बेस कैंप मैनेजर के रूप में काम करने के लिए कहा था। लेकिन बातचीत के दौरान पृष्ठभूमि में बज रहे संगीत और गायन को सुनकर, अली ने हमें आने वाले सप्ताह के दौरान अदृश्य और अनसुना रहने की सख्त याद दिलाई।

'निम्स, मुझे तुम्हारी प्रतिष्ठा के बारे में बताया गया है,' उसने कहा। 'मुझे पता है कि तुम्हें रात भर पार्टी करना पसंद है। तुम शराब पीते हो; तेज़ संगीत बजाते हो। लेकिन पाकिस्तान में ऐसा नहीं चलेगा। यह नेपाल नहीं है। यहाँ कोई लापरवाही नहीं चलेगी!'

उनकी चेतावनी ने मुझे थोड़ा डरा दिया, हालाँकि वे सही थे: मेरी स्थिति को देखते हुए, जहाँ तक संभव हो, चुपचाप रहना ही समझदारी थी। सतर्क रहना भी बहुत ज़रूरी था, और जब हमने बाद में नंगा परबत की यात्रा शुरू की, तो टीम रात में चुपचाप गाँवों और ट्रेकिंग लॉजों से गुज़री, पूरी तरह से एकाग्रचित्त। बेस कैंप में पहुँचने के बाद, जैसे ही सूरज ढलने लगा, मैंने अपने सैन्य प्रशिक्षण से प्राप्त रक्षात्मक कौशल का इस्तेमाल किया, सतर्क रहा और टेंटों और साथियों से संपर्क बनाए रखा, जो धीरे-धीरे बातें कर रहे थे।

माहौल रहस्यमय था। मैं बीच-बीच में क्षितिज पर रोशनी या किसी भी असामान्य गतिविधि के संकेत के लिए नज़र रखता था, लेकिन मेरी गश्ती ड्यूटी तो बस आधी ही थी। मुझे एहसास हुआ कि नांगा परबत पर इंतज़ार कर रहे अन्य अभियान दलों के किसी भी ट्वीट या इंस्टाग्राम पोस्ट से मेरी स्थिति खतरे में पड़ सकती है, इसलिए मैंने उनके अलग-अलग टीम लीडरों को बुलाया और उन्हें गोपनीयता के महत्व के बारे में बताया, खासकर सोशल मीडिया पर लोगों को टैग करते समय। मैं यह जोखिम नहीं उठा सकता था कि पाकिस्तान में कोई आतंकवादी समूह इस जानकारी को हासिल कर हम पर हमला कर दे।

मैंने कहा, 'मैं गुप्त रूप से काम इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि सुरक्षा का मुद्दा है। 2013 में यहाँ जो हुआ वह बहुत क्रूर था और अब भी यह जगह शत प्रतिशत सुरक्षित नहीं है।'

किसी ने तर्क दिया कि मैं जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया दे रही थी, लेकिन मैं उनकी बात मानने को तैयार नहीं थी।

'आतंकवादी गुट जो बेस कैंप तक पहुंचने की उम्मीद कर रहा है, वह शायद चौबीस घंटे में यहां पहुंच सकता है। और अगर वे आ भी गए, तो उनका अंत मुझसे नहीं होगा। इसलिए, कृपया लोगों को यह न बताएं कि मैं यहां हूं।'

मैं बहुत सावधानी बरत रहा था, लेकिन जोखिम न लेना ही बेहतर लग रहा था, खासकर तब जब चिंता करने के लिए और भी कई खतरे मौजूद थे। फांसी की सजा से मरने के बजाय हिमस्खलन में मरना मुझे ज्यादा पसंद था।

*

हमारे पहुंचने से पहले ही कुछ अभियान दल नांगा परबत पर डेरा डाले हुए थे, जिनमें जॉर्डन, रूस, फ्रांस और इटली के पर्वतारोही शामिल थे। उनमें से एक-दो दल सक्रिय थे, और जॉर्डन के पर्वतारोही बेस कैंप में दावा कर रहे थे कि उन्होंने कैंप 2 से कैंप 3 तक जाने वाली रस्सियों को ठीक कर दिया है। दूसरी ओर, एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने कैंप 1 से कैंप 2 तक जाने वाली रस्सियों को ठीक कर दिया था, और उनके पर्वतारोहियों ने बाद में ट्विटर पर यह दावा किया कि रस्सियां पूरी तरह से सुरक्षित हैं। अभियान दलों के बीच इसे व्यापक रूप से विश्वसनीय जानकारी माना गया और हमने उसी के अनुसार योजना बनाई। (चूंकि हमें शुरुआत में कोई रस्सियां ठीक नहीं करनी थीं, इसलिए हम लगभग तीस किलो वजन के बैकपैक के साथ चढ़ाई के दौरान उपकरण ले जा सकते थे।)

पहाड़ पर सभी पर्वतारोहियों पर भरोसा करने के आदी थे, और जैसे ही हम व्यवस्थित हुए, मैंने बेस कैंप से कैंप 1 की ओर अनुकूलन के लिए एक रोटेशन का नेतृत्व किया, ताकि किंशोफर वॉल पर चढ़कर कैंप 2 तक पहुंचा जा सके - बर्फ और चट्टान की एक डरावनी, खड़ी दीवार जिसे बर्फ की कुल्हाड़ियों की मदद से पार किया गया था। लेकिन जैसे ही हमने चढ़ाई शुरू की, अचानक एक भयंकर मौसम हमारे चारों ओर छा गया। पहाड़ हिमपात से ढक गया और कैंप 1 से आगे बढ़ने के बाद हमारी किस्मत और भी खराब हो गई। अंतरराष्ट्रीय टीम द्वारा निर्धारित रेखाएँ कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थीं।

मुझे यह डर सताने लगा था कि शायद सुरक्षा घेरा पूरी तरह से नहीं बना था। लेकिन इस उम्मीद में कि अंतरराष्ट्रीय टीम की मेहनत शायद बर्फ़बारी के कारण नज़र न आ रही हो, हम बढ़ते हुए बर्फ़ के ढेरों को खोदने में जी-जान से जुट गए। खुदाई और इधर-उधर चलने से काफ़ी मेहनत करनी पड़ रही थी। वहीं, हमारे आसपास का इलाका इतना ढलान वाला था कि थोड़ी सी भी बर्फ़ गिरने से बाढ़ आ सकती थी, जो ऊपर से बरसकर लावा की तरह चट्टानों को चीरती हुई बह जाती।

कुछ ही देर में मुझे एक जानी-पहचानी सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी: ऊपर से भारी मात्रा में बर्फ़ गिर रही थी और देखते ही देखते सबको इधर-उधर पटक रही थी। उस समय मेरी नज़र मिंगमा पर थी। वह कहीं ज़मीन में दबी रस्सी को ढूँढ़ रहा था। देखते ही देखते वह बर्फ़ में समा गया।

मैं घबरा गई। क्या मैं उसे खोने वाली थी?

होश संभालते हुए, मैं अपने चारों ओर उमड़ते घने कोहरे और बर्फ के बीच रेंगता हुआ आगे बढ़ा, इस उम्मीद में कि शायद वह बच गया हो। तभी, सौभाग्यवश, उसका शरीर नज़र आया। मिंगमा ने अपने हाथों को चारों ओर जमी बर्फ में फंसाकर खुद को पास की चट्टान से गिरने से

बचा लिया था, लेकिन उसकी स्थिति नाज़ुक थी। अफरा-तफरी में उसके पैर मुड़ गए थे और बर्फ पर उसकी पकड़ इतनी कमजोर थी कि वह अपना वजन संभाल सके। एक भी गलत कदम उसके चारों ओर जमी बर्फ को ढहा सकता था और उसे कम से कम कुछ सौ मीटर दूर गिरा सकता था।

ढलान को देखते हुए, गिरने से मिंगमा की मौत होने की संभावना कम थी, लेकिन अगर गिरते समय वह पास की किसी चट्टान से टकरा जाता तो उसे गंभीर चोट लग सकती थी। हम धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़े। बर्फ में दो बर्फ की कुल्हाड़ियों को अस्थायी सहारे के रूप में गाड़कर, हमने मिंगमा को मज़बूत पकड़ दी, और उसने अपने अंगों को छुड़ाकर सुरक्षित स्थान पर चढ़ गया। हे भगवान, वह कितना भाग्यशाली था कि उसे कोई चोट नहीं आई।

मेरा सब्र टूट चुका था, निशानियाँ मौजूद ही नहीं थीं, इसलिए हमने अपना सामान समेटा और किंशोफर वॉल पर चढ़ने की अपनी योजना छोड़ दी। जैसे ही टीम बेस कैंप की ओर उतरी, मैंने ट्विटर पर मुझे गुमराह करने वाले अंतरराष्ट्रीय दल से निपटने का पक्का इरादा कर लिया। मैं गुस्से से आग बबूला था, पहाड़ों पर मुझसे झूठ बोलने वालों से तंग आ चुका था, खासकर कंचनजंगा के बाद, और इस बार तो इस झूठ ने मेरी टीम को सीधे खतरे में डाल दिया था। मैं खुद से भी नाराज़ था - मैंने ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा कर लिया था। जब मुझे कुछ अंतरराष्ट्रीय पर्वतारोही मिले, तो उनके झूठे निशानों और मिंगमा के बाल-बाल बचने की घटना पर मेरा गुस्सा और बढ़ गया। मैं उनके तंबू में घुस गया।

मैंने चिल्लाकर कहा, 'तुमने झूठ क्यों बोला? तुमने लाइनें ठीक करने का दावा क्यों किया जबकि तुमने नहीं की थीं? तुम्हारी वजह से मैं अपना सबसे काबिल आदमी खोने से बाल-बाल बचा।'

मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने इससे बचने के लिए कोई झूठ बोलने की कोशिश नहीं की।

समूह में से एक ने कहा, 'निम्स, हमें खेद है। लाइनें आंशिक रूप से ठीक कर दी गई हैं। हमने ट्विटर पर जानकारी दी थी, लेकिन शायद वह पर्याप्त विस्तृत नहीं थी। हमें उम्मीद नहीं थी कि आप लोग भी इसे देखेंगे।'

'हां, लेकिन इसकी वजह से मुझे अपनी योजना बदलनी पड़ी। मैं भारी बोझ उठाने के बजाय हल्का बोझ लेकर जाता।'

मैंने अपना सिर हिलाया। सब कुछ बहुत उलझन भरा लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि उन्होंने अपने प्रायोजकों और सोशल मीडिया पर अपने फॉलोअर्स को प्रभावित करने के लिए यह पोस्ट किया था, और यह एक चिंताजनक बात थी। उस समय मुझे एहसास हुआ कि नंगा परबत पर भरोसेमंद लोग सिर्फ प्रोजेक्ट पॉसिबल के लोग ही थे। लेकिन मुझे यह भी समझ आ गया कि अगर मैंने बेस कैंप में बाकी लोगों से झगड़ा शुरू कर दिया तो शिखर तक पहुंचने का हमारा सफर और भी मुश्किल हो जाएगा।

मैंने खुद को संभाला; शांत होने का यही सही समय था। मुझे पता था कि जब कूटनीति का विकल्प मौजूद है तो झगड़ा करने का कोई फायदा नहीं है।

मैंने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, ‘सुनो भाइयों, हमें यहाँ स्पष्टवादी होना होगा। अब से

हम केवल सटीक जानकारी पर ही विचार करेंगे। इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए हमें एक अचूक योजना की आवश्यकता है।'

किसी ने वोदका की एक बोतल और डिब्बाबंद टूना मछली निकाली। सुलह हो गई। समझौते के तौर पर, मैंने सुझाव दिया कि शिखर सम्मेलन के दौरान, जो अगले सप्ताह 3 जुलाई को निर्धारित था और जब मौसम में सुधार का अनुमान था, विभिन्न टीमों के बीच लाइन ठीक करने का काम बाँट लिया जाए।

यह देखकर कि शिविर 1 और 2 के बीच कुछ रस्सियाँ आंशिक रूप से बिछाई गई थीं, मैंने सुझाव दिया कि प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम ताज़ा बिछी बर्फ़ पर रास्ता बनाने का काम करे और जहाँ आवश्यक हो वहाँ रस्सियों को ठीक करे, फिर शिविर 2 में रात भर आराम करे। बाद में, यदि जॉर्डनवासियों द्वारा पिछले वर्ष से बिछाई गई पुरानी रस्सी अभी भी मौजूद हो, तो शिविर 3 तक चढ़ाई करते समय विभिन्न टीमें कार्यभार बाँट सकती हैं। इसके बाद, मैं प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम को शिविर 4 तक रस्सी बिछाने की अनुमति देने के लिए तैयार था ताकि सभी इसका उपयोग कर सकें और फिर शिखर तक रास्ता बनाएँ।

अंतर्राष्ट्रीय टीम ने सहमति में सिर हिलाया। हमारे पास एक योजना थी। बेस कैंप में विश्राम कर रही बाकी टीमों को इसकी सूचना दे दी गई। फिलहाल के लिए, दुर्व्यवहार को जड़ से उखाड़ फेंका गया था।

जब असल में चढ़ाई शुरू हुई, तो प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम अगली सुबह पहाड़ पर कैंप 2 की ओर रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ी और रात को अपने टेंट में आराम करने से पहले पानी में डूबी हुई रस्सियों को बाहर निकाला। हमें कम नींद के लिए शुक्रगुजार होना पड़ा। अच्छी बात यह थी कि जॉर्डन के लोग एक मजबूत टीम साबित हुए और उन्होंने भारी काम का बोझ बाँटने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई, क्योंकि वे अगली सुबह कैंप 3 तक आगे बढ़े। पिछले साल की उनकी कुछ रस्सियों को आसानी से ढूँढ लिया गया, लेकिन कुछ बर्फ की मोटी परत के नीचे दब गई थीं। उस पर चढ़ने के लिए हमें रस्सी को खींचकर निकालना पड़ा, लेकिन बर्फ ज्यादा गहरी नहीं थी, इसलिए काम काफी आसान रहा।

लेकिन हमारा काम शुरू होने के बाद, अभियान दल के कुछ सदस्य आपस में ताना-बाना और शिकायत करने से खुद को रोक नहीं पा रहे थे। कुछ लोग शिकायत कर रहे थे कि कुछ पर्वतारोही अपेक्षित प्रयास नहीं कर रहे हैं, या बस धीरे-धीरे उनका पीछा कर रहे हैं। कम से कम दो टीमें शिखर पर पहुँचने के बाद नांगा परबत से स्की करके नीचे उतरने की योजना बना रही थीं, और वे एक-दूसरे से आगे निकलने के लिए बहुत उत्सुक लग रही थीं। (एक फ्रांसीसी पर्वतारोही हमसे पहले ही अल्पाइन शैली में शिखर पर पहुँच चुका था और उसने भी यही कारनामा किया था।)

मेरे लिए तो हद तब हो गई जब एक अनुभवी पर्वतारोही ने रस्सी ठीक करने में मदद करने से इनकार कर दिया। उसका बहाना क्या था? कि उसके लिए ज़रूरी था कि वह अपने साथ लाए ड्रोन को उड़ाए, जिसका इस्तेमाल वह अपनी फिल्म बनाने के लिए कर रहा था। मुझे फिर से गुस्सा आ गया। हर कोई ड्रोन उड़ाना और रोमांचक फिल्म फुटेज कैप्चर करना चाहता था। मैं भी यही चाहता था। लेकिन ऐसे अभियानों में जहाँ कई पर्वतारोही दल एक साथ काम करने का

फैसला करते हैं, वहाँ किसी भी ज़िम्मेदारी से बचना गलत माना जाता था। टीम वर्क और पूरा मिशन व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर होता था।

हालांकि हम सीधे तौर पर शामिल नहीं थे, फिर भी यह कहा-सुनी ध्यान भटकाने वाली थी। अपने पूरे करियर में, मुझे कभी भी व्यक्तिगत पहचान या यश की चाहत नहीं रही; एक सैनिक के रूप में व्यक्तिगत प्रसिद्धि या पहचान मेरे लिए मायने नहीं रखती थी और मुझे टीम में काम करना अच्छा लगता था। मेरे आस-पास के सभी लोगों के लिए भी यही बात थी, जिसका मतलब था कि स्क्वाड्रन में हम सभी एक-दूसरे पर पूरी तरह भरोसा कर सकते थे। सैन्य अभिजात वर्ग में मैंने अपनी प्राथमिकताओं को समझा: मिशन और समूह सर्वोपरि थे, और कोई भी मुझे दरकिनार नहीं करेगा, या अनावश्यक जोखिम नहीं उठाएगा जिससे मेरे साथियों की जान खतरे में पड़ जाए, खासकर व्यक्तिगत सफलता के लिए तो बिल्कुल नहीं।

अफसोस की बात है कि नांगा पर्वत पर मुझे कंचनजंगा पर सीखे गए कुछ कठिन सबक फिर से याद आ गए। कुछ लोग सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए काम करते हैं।

कैंप 3 में रात बिताने और फिर एक खड़ी चढ़ाई चढ़कर कैंप 4 तक पहुँचने के बाद अगली सुबह अन्य टीमों के प्रति मेरी निराशा और भी बढ़ गई। कैंप 4 में बर्फ बहुत गहरी थी और रस्सियाँ बाँधने का काम शारीरिक रूप से बहुत कठिन साबित हुआ। शिखर पर चढ़ाई की तैयारी के लिए, अभियान दल ने कैंप 4 में कुछ घंटों के लिए आराम करने का फैसला किया, हालाँकि सोने का बहुत कम मौका था। छह लोग एक ही तंबू में ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे, क्योंकि हमने पहाड़ को कम से कम सामान के साथ पार करने का फैसला किया था।

जब जाने का समय आया, तो मुझे तम्बू के बाहर कानाफूसी सुनाई दी। बाकी टीमें इकट्ठा हो गई थीं और एक बार फिर हमारे नेतृत्व करने का इंतज़ार कर रही थीं, जबकि वे खुद भी पहल कर सकते थे। वे हम पर भरोसा कर रहे थे, वे चाहते थे कि प्रोजेक्ट पॉसिबल टीम उनके लिए राह बनाए, और थोड़ी देर के लिए हम अंदर ही बैठे रहे, यह सोचते हुए कि क्या उनमें से कोई यह ज़िम्मेदारी उठाएगा, लेकिन कोई भी नहीं हिला। एक बार फिर रास्ता दिखाने की ज़िम्मेदारी हम पर आ गई थी। मैं नाराज़ था, लेकिन मेरी नाराज़गी तब और बढ़ गई जब शिखर तक पहुँचने के हमारे अंतिम प्रयास के बारे में मुझे दी गई जानकारी थोड़ी गलत निकली।

नांगा पर्वत के निचले शिविरों के बीच के कुछ हिस्से कठोर बर्फ से ढके हुए थे, जिन पर पर्वतारोही को अपने क्रैम्पोन की मदद से ज़मीन पर मज़बूती से पकड़ बनानी पड़ती थी और सावधानी से आगे बढ़ना पड़ता था, बशर्ते कि कोई लाइन लगी हो। अगर लाइन न लगी हो, तो पर्वतारोही के फिसलने और गिरने की पूरी संभावना थी, मानो वो बर्फ के मैदान पर फिसलती हुई पक की तरह पहाड़ पर लुढ़क रहा हो। अगर किस्मत अच्छी रही, तो सेल्फ-अरेस्ट सिस्टम उसे बहुत तेज़ गति पकड़ने से रोक सकता था। लेकिन जमी हुई बर्फ पर, गुरुत्वाकर्षण बल उसे मौत के मुंह में धकेल सकता था।

इसी कारणवश, बिना किसी निश्चित रस्सी के उस प्रकार की बर्फ पर चढ़ना उचित नहीं माना जाता था। फिर भी, हम यहाँ थे, नांगा पर्वत की चोटी के पास पहुँच रहे थे, बर्फ से ढकी फिसलन भरी ढलान पर धीरे-धीरे कदम रख रहे थे, बिना रस्सी के, क्योंकि हमारे अभियान की तैयारी के

दौरान मैंने जो जानकारी जुटाई थी, उससे मुझे पता चला था कि कैंप 4 से शिखर तक रस्सी की आवश्यकता नहीं है। यह बात शायद एक-दो पिछले अभियानों के लिए सच रही हो, लेकिन हमारे अभियान के लिए नहीं।

कुछ दिन पहले, अंतरराष्ट्रीय टीम की फिक्स्ड लाइनों के बारे में किए गए दावों से मुझे झटका लगा था। अब मुझे फिर से झटका लग रहा था और जिस ढलान पर हम चल रहे थे, वह लगभग पचास डिग्री के तीव्र कोण पर झुकी हुई थी। मुझे अपनी जानकारी की तीन बार जाँच करनी चाहिए थी। और फिर एक बार और तीन बार जाँच करनी चाहिए थी।

जब मैंने नीचे देखा, तो ठंड का मंजर साफ नज़र आ रहा था और बादलों के बीच से बेस कैंप दिखाई दे रहा था। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मेरे हाथ पसीने से भीग रहे थे। हम सबने मिलकर बर्फीली ढलान को किनारे से पार करने का फैसला किया और ऐसा लग रहा था मानो एक भी गलत कदम मुझे नीचे चढ़ रही दूसरी टीमों से आगे ले जा सकता है और मैं नीचे चट्टान पर गिरकर चूर-चूर हो जाऊँगा। मैंने बाकी लोगों को देखा; वे काफी स्थिर गति से आगे बढ़ रहे थे। तभी मैंने गेलजेन को आवाज़ दी। कैंप 3 और 4 के बीच का ज़्यादातर रास्ता उसने ही बनाया था और जब हम उस सुबह शिखर पर चढ़ाई के लिए उठे, तो वह बिल्कुल थका हुआ लग रहा था – इतनी ज़ोरदार मेहनत के बाद। गेलजेन का चेहरा पीला पड़ गया था; वह बिल्कुल टूटा हुआ लग रहा था।

क्या अब उसे भी डर महसूस हो रहा था?

'अरे भाई, क्या यह थोड़ा संदिग्ध नहीं है?' मैंने चिल्लाकर कहा।

गेलजेन हँस पड़ा। 'वाह, क्या बात है! ये तो कमाल है, निम्सदाई। हमें बहुत सावधान रहना होगा।'

यह जानकर कि मैं अकेला नहीं था, मैंने राहत की सांस ली। लेकिन डर की उस एक झनझनाहट ने मुझे अपनी स्थिति का फिर से आकलन करने पर मजबूर कर दिया। मैंने पूरी ताकत लगा दी, अपने क्रैम्पोन को पहाड़ में गाड़ दिया, धातु के दांत बर्फ के टुकड़ों को चीरते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि एक गहरी पकड़ नहीं बन गई। फिर मैंने अपनी बर्फ की कुल्हाड़ी से एक और पकड़ बनाई। और फिर एक और।

'दोस्तों, बाकी लोगों के लिए रास्ता बनाओ!' मैंने चिल्लाकर कहा। 'नहीं तो यहाँ से गिरकर किसी की जान जा सकती है।'

हमने किसी तरह रास्ता बनाते हुए चोटी तक पहुँच बनाई और एक स्पष्ट निशान बनाते हुए, टीम आखिरकार 3 जुलाई को सुबह लगभग 10 बजे शिखर पर पहुँच गई। हमसे कुछ दूरी पर, बहस और तीखी झड़पें अभी भी जारी थीं, लेकिन टीम वर्क और साझा लक्ष्य ने प्रोजेक्ट पॉसिबल को पाकिस्तान के पहले 8,000 मीटर ऊँचे पहाड़ की चोटी तक पहुँचा दिया था।

*

मैंने सब कुछ बंद कर दिया। सिर्फ एक या दो सेकंड के लिए, लेकिन वह मुझे लगभग मार डालने के लिए काफी था।

मैं बेस कैंप तक जल्दी पहुँचने के लिए उत्सुक था, इसलिए मैंने कैंप 4 में रात भर आराम किया और सुबह जल्दी नीचे उतरने का फैसला किया। किंशोफर वॉल से आगे बढ़ते हुए, मैं उस नरम बर्फ में आ गया जिसने कुछ दिन पहले मिंगमा को लगभग अपनी चपेट में ले लिया था। मैंने लगभग साठ या सत्तर डिग्री के काफी ढलान पर सावधानी से कदम रखा, और रस्सी को मजबूती से पकड़े रहा – यह ऐसा ढलान था जिस पर मुझे और अधिक सावधानी बरतनी चाहिए थी।

मुझे नहीं पता कि मेरा ध्यान क्यों भटक गया। लेकिन जब नीचे से एक पर्वतारोही ने चिल्लाकर कहा कि मुझे रस्सी से हट जाना चाहिए, तो मैंने बिना सोचे-समझे अपना कैराबिनर खोला और पीछे हटकर नीचे उतर गया। मुझे लगता है कि वह आदमी रस्सी पर कोई अतिरिक्त तनाव नहीं चाहता था, जो कि अनुचित था, लेकिन मुझे खुशी थी कि मैंने उसे रास्ता दे दिया क्योंकि वह शायद किसी छोटी-मोटी परेशानी में फंसा हुआ था। यह लगभग जानलेवा कदम था।

मैंने पहले एकाग्रता के लिए जो उदाहरण दिया था, वह पूरी तरह से सचेत हुए बिना भी काफी हद तक सतर्क और सक्रिय रहने की क्षमता के बारे में था, ठीक उसी तरह जैसे कोई व्यक्ति गाड़ी चलाते समय बात कर सकता है। लेकिन जब मैंने लाइन से क्लिप हटाकर पीछे कदम रखा, तो मैं क्षण भर के लिए लापरवाह हो गया और मेरी एकाग्रता कम हो गई। यह एक लापरवाही भरा कदम था और असल में, मैं 90 मील प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चलाते हुए मैसेज कर रहा था। मैं पीछे की ओर फिसल गया, पीठ के बल गिरा और मेरा सिर ज़ोर से टकराया, फिर मैं तेज़ी से बढ़ती गति से पहाड़ से नीचे लुढ़कने लगा। मीटर दर मीटर धुंधला सा बीतता गया और मैं तेज़ी से नीचे गिरता चला गया।

इससे पहले भी मैं खतरनाक दुर्घटनाओं का शिकार हो चुका था, लेकिन कभी घबराया नहीं था। सेना के साथ पैराशूट प्रशिक्षण के दौरान, एक बार मैंने अपनी पैराशूट की रस्सी खींची, लेकिन पैराशूट हवा में उड़ गया। आसमान में तेज़ी से गिरते हुए घबराने के बजाय, मैंने अपने प्रशिक्षण का पालन किया और अपना अतिरिक्त पैराशूट खोल दिया। शुक्र है कि दूसरा पैराशूट मेरे चारों ओर खुल गया था।

यह लगभग वैसा ही अनुभव था और हर पल कीमती था। मैंने अपनी बर्फ की कुल्हाड़ी को बांधे रखने वाली रस्सी को ज़ोर से खींचा, कुल्हाड़ी को बर्फ में धंसा दिया, ताकि अपनी गति को धीमा कर सकूँ। एक बार रुक जाने पर, रस्सी तक वापस चलना संभव था, लेकिन कुल्हाड़ी नहीं टिक रही थी। कुछ गड़बड़ हो गई थी। अब दूसरे विकल्प का इस्तेमाल करने का समय था। मैंने कुल्हाड़ी से फिर वार किया, लेकिन सतह बहुत नरम थी और मैं ब्रेक नहीं लगा पा रहा था।

अब घबराने का समय था, मैं बेकाबू होकर नीचे गिर रहा था, और जब मुझे अपने बगल में रस्सी की एक झलक दिखाई दी, तभी मुझे एहसास हुआ कि बचने की थोड़ी सी उम्मीद बाकी है। मैंने हाथ बढ़ाकर रस्सी को कसकर पकड़ लिया और खुद को रोक लिया। किसी तरह, चमत्कारिक रूप से, मैं बच गया था। जिस रास्ते से मैं जा रहा था, वह मुझे नंगा पर्वत से नीचे गिरा देता, जिससे मेरा अंत भयानक हो जाता, और यह सब सिर्फ इसलिए हुआ क्योंकि मैंने एक पल के लिए ध्यान भटका लिया था। जैसे ही मैंने खुद को वापस रस्सी से जोड़ा, मेरे पैर थोड़े लड़खड़ा रहे थे, मैंने खुद से वादा किया - मैं हमेशा एकाग्र रहूंगा; मैं हमेशा सुरक्षित नीचे उतरूंगा।

जीवन के आदर्श वाक्यों में, यह किसी भी अन्य आदर्श वाक्य से कम नहीं था। मैं धीरे-धीरे पहाड़ से नीचे उतरा, बार-बार इन शब्दों को दोहराता रहा।

जश्न मनाने का समय नहीं था। हमने बिना किसी धूमधाम के नंगा पर्वत से प्रस्थान किया।

मैं भाग्यशाली था कि मैं जीवित रहा।

तूफान के बीच

प्रोजेक्ट पॉसिबल ने मुझे पहाड़ पर और पहाड़ से दूर, हर पल कई सबक सिखाए। समुद्र तल पर, मैं धन जुटाने, अकेले ही जनसंपर्क करने, पर्यावरण कार्यकर्ता और राजनीतिक प्रभाव डालने में अपने कौशल को निखार रहा था। 8,000 मीटर से ऊपर, मैंने दबाव में अपनी वास्तविक क्षमताओं के बारे में और अधिक जाना, जहाँ मैं नेतृत्व कर सकता था और गंभीर ऊंचाई की बीमारी, हिमस्खलन और बचाव अभियान जैसी संभावित आपदाओं का सामना करते हुए शांत रह सकता था। जब मौत के करीब के पल मेरे सामने आए, जैसे कि नंगा परबत पर मेरा गिरना, तो मैं पीछे नहीं हटा; मैंने इस समस्या का डटकर सामना किया।

जब हालात मुश्किल हुए तो मैंने कभी शिकायत नहीं की। इसके बजाय, मैंने युद्ध के सिद्धांतों का पालन किया और उदाहरण पेश करते हुए, कड़ी मेहनत और सकारात्मक सोच के माध्यम से टीम का मनोबल बनाए रखा। काम करने का यह तरीका अक्सर नागरिक जीवन में आसानी से लागू हो जाता था, क्योंकि प्राकृतिक आपदाएँ शायद ही कभी सामने आती थीं, लेकिन पहाड़ पर, जहाँ लगातार बदलती मौसम प्रणाली जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर तय कर सकती थी, वहाँ मेरे नेतृत्व के गुण स्पष्ट रूप से सामने आए।

कई बार ऐसा होता था कि बेस कैंप में अग्रिम दल का कोई सदस्य टेंट लगा रहा होता था और तभी अचानक भयंकर मौसम आ जाता था। तभी रेडियो पर घबराहट भरी आवाज़ आती: 'निम्सदाई, पहाड़ पर ज़ोरदार बर्फ़बारी हो रही है। चढ़ाई बहुत मुश्किल होने वाली है!' निराशा में डूबने के बजाय, मैं माहौल को हल्का करने के लिए कोई मज़ाकिया टिप्पणी कर देता। 'अरे यार, पहाड़ पर हमें क्या मिलेगा? क्या भयंकर लू चलेगी?' मैं अपनी टीम का नेतृत्व करते हुए, अक्सर खराब मौसम वाले चुनौतीपूर्ण इलाकों में आगे बढ़ने की चुनौती का भरपूर आनंद लेता था। कड़ी मेहनत मुझे संतुष्टि और प्रेरणा दोनों देती थी।

जब नेतृत्व का बोझ असहनीय लगने लगता और थकान हावी होने लगती, तो मैं एक गोरखा, एक विशेष बल अधिकारी और विश्व रिकॉर्ड तोड़ने वाले पर्वतारोही के रूप में अपनी प्रतिष्ठा का सहारा लेता। इससे अक्सर नकारात्मकता के किसी भी क्षण को दूर भगाने में मदद मिलती थी। परियोजना की शुरुआत करने वाली प्रेरणाओं को याद करने से मुझे अत्यधिक थकान के दौर से उबरने में भी सहायता मिलती थी। लेकिन सबसे बढ़कर, मुझमें विश्वास था। समुद्र तल पर काम करते समय, मुझे अक्सर ऐसा लगता था जैसे मैं यहाँ का नहीं हूँ, यह मेरी जगह नहीं है। लेकिन

विशाल पहाड़ों में, मैं अजेय प्रतीत होता था।

मैंने खुद से कहा, 'तुम चैंपियन हो। तुम यह कर सकते हो।' मुझे मुहम्मद अली की कहानियाँ याद आईं कि कैसे, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी, उन्होंने कभी हार नहीं मानी। ठीक वैसे ही जैसे उसैन बोल्ट ने ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने के दौरान किया था। हर पहाड़ के बेस कैंप पर, मैंने इसी तरह सोचने की कोशिश की, कभी यह कल्पना भी नहीं की कि शिखर मेरी पहुँच से बाहर हो सकता है। इसके बजाय, मैंने खुद से कहा कि यह शिखर मेरे लिए ही बना है।

मैं कहता, 'तुम इसे कर दिखाओगे। तुम ही यहाँ के असली हीरो हो।'

कुछ लोगों को मेरा यह रवैया अहंकारपूर्ण, अति महत्वाकांक्षी, या शायद खतरनाक भी लग सकता था, लेकिन यह कभी अहंकार की बात नहीं थी – मेरा मिशन उससे कहीं बड़ा था। मैं न तो लापरवाह था और न ही पहाड़ की शक्ति को कम आंक रहा था। बल्कि, मुझे अपनी क्षमता और अपने लक्ष्य पर अटूट विश्वास था – और यही सबसे शक्तिशाली प्रेरणा थी। अब गाशेरब्रुम I और गाशेरब्रुम II, जो दुनिया के ग्यारहवें और तेरहवें सबसे ऊंचे पर्वत हैं, दूसरे चरण के कार्यक्रम में अगली चोटियाँ थीं। आराम करने का समय नहीं था।

मेरे मिशन की शुरुआत से ही वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था, इसके बावजूद मैं अपना ध्यान केंद्रित रखने में कामयाब रहा; काठमांडू में माँ और उनकी स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ मेरे लिए तनावपूर्ण थीं, जिन्हें मुझे यथासंभव संभालना था, साथ ही साथ अत्यधिक थकान भी थी। लेकिन कुछ मुद्दे मेरे नियंत्रण से बाहर थे। नांगा पर्वत से स्कार्दू और फिर जीआई और जीआईआई के साझा बेस कैंप तक की यात्रा में आठ दिन लगने थे और हमें कुछ ऐसे क्षेत्रों से होकर गुजरना था जहाँ तालिबान लड़ाकों की गश्त होती थी। यह महत्वपूर्ण था कि कराकोरम पर्वतमाला पहुँचने तक सभी लोग पूरी तरह सतर्क रहें। (अपने निशान मिटाने के लिए, हमने ट्रेकिंग लॉज से दूर सड़क पर डेरा डाला।)

आराम करने का समय नहीं था और हमने यात्रा के पहले भाग में चौबीस घंटे लगातार गाड़ी चलाई, पूरी टीम और हमारा सारा सामान एक मिनी-वैन में ठूंस-ठूंस कर भरा हुआ था। जब सड़क पर भूस्खलन से हमारी गति धीमी होने का खतरा मंडराया, तो हमने अपने बैग और उपकरण उतारे और फिर उन्हें दूसरी तरफ एक दूसरे वाहन में रख दिया। मुझे पता था कि दुश्मन सेना के पीछा करने के दौरान बेवजह आराम करना आत्मघाती कदम हो सकता है।

पैदल यात्रा शुरू करने से पहले, हमने अपना अधिकांश सामान बाकी रास्ते तक ले जाने के लिए खच्चरों और कुलियों को किराए पर लिया, लेकिन मुझे चिंता थी कि वे पगडंडियों पर बहुत धीरे चलेंगे। इससे हमारी गति धीमी हो जाएगी, इसलिए रवाना होने से पहले मैंने कुलियों से कहा कि वे हमारे सामान को ले जाने के लिए इस्तेमाल होने वाले खच्चरों की संख्या दोगुनी कर दें। समय हमारे खिलाफ था, पर्वतीय मौसम समाप्त होने वाला था, और नंगा पर्वत पर चढ़ने के बाद, मैंने तय कर लिया था कि मैं इस क्षेत्र के पांच 8,000 मीटर से ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ने का विश्व रिकॉर्ड, जो दो साल में पूरा किया जा सकता था, केवल तोड़ना ही नहीं चाहता था, बल्कि उसे ध्वस्त करना चाहता था। मेरे अंदर एक जुनून सवार था। मेरा घोषित लक्ष्य अस्सी दिनों में दुनिया के पांच सबसे ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ना था, लेकिन मेरी टीम पीछे रह रही थी।

मैंने कहा, 'देखो, हम सामान्य गति से नहीं जा सकते। चलो खच्चरों और कुलियों की संख्या दोगुनी कर देते हैं। अगर हम तीन दिनों में जीआई पहुँच जाते हैं, तो भी मैं तुम्हें पूरे आठ दिनों का भुगतान करूँगा।'

कुली को यह बात पसंद नहीं आई। 'निम्स, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि खच्चर तीस किलो भार ढोते हैं या चालीस किलो। वे हमेशा एक ही गति से चलते हैं।'

मैंने कहा, 'कोशिश करो। तुम्हें एक ही मौका मिलेगा। मैं नहीं चाहता कि इससे मिशन पर कोई असर पड़े।'

मेरी विनती अनसुनी कर दी गई। अगली सुबह, जब हम अस्कोले से निकलने ही वाले थे – जो काराकोरम क्षेत्र में अधिकांश ट्रेकिंग का शुरुआती बिंदु है – कुली उतने ही खच्चरों के साथ आ गया, और इस बात पर अड़ा रहा कि अतिरिक्त खच्चरों की कोई ज़रूरत नहीं है। पहली रात, हमने डेरा डाला और कुलियों के आने का चार-पाँच घंटे तक इंतज़ार किया। अगली शाम भी यही हाल हुआ। और तीसरी रात, मैं बहुत परेशान हो गया।

मैंने गुस्से में कहा, 'भाड़ में जाए ये सब। जानते हो क्या? तुम लोग अपने आरामदेह माहौल में काम करने में बहुत खुश हो। हमें तेज़ी से आगे बढ़ने की ज़रूरत है।'

मैंने मिंगमा, गेलजेन, गेसमैन और बाकी लोगों से बात की। 'अगर हम अपना क्लाइम्बिंग किट खुद उठा सकते हैं, तो हम बहुत जल्दी पहुँच जाएँगे। क्या आप तैयार हैं?'

टीम ने सहमति में सिर हिलाया। हम सुबह 4 बजे अपने शिविर से निकले और शाम 5 बजे के आसपास जीआई के निचले हिस्से में पहुँचे। हमने 54 किलोमीटर की दूरी 13 घंटे में तय की, और हर व्यक्ति 35 किलो से कहीं अधिक भार ढो रहा था। हम सब थक चुके थे, लेकिन हिम्मत नहीं हारी।

वहाँ तक पहुँचने में अथक परिश्रम के बावजूद, मैं कराकोरम पर्वतमाला के लिए पूरी तरह तैयार था। मुझे विश्वास था कि हम आगे आने वाली चुनौतियों का सामना कर लेंगे, साथ ही साथ मैं इस बात को लेकर भी सचेत था कि मुझे किस चुनौती का सामना करना है। गाशेरब्रुम प्रथम, भले ही के2 या अन्नपूर्णा की तरह प्रसिद्ध न हो, फिर भी एक चुनौतीपूर्ण पर्वत था और 1977 से अब तक तीस से अधिक पर्वतारोहियों की जान ले चुका था। इसे हल्के में लेना उचित नहीं था, खासकर नांगा पर्वत पर बाल-बाल बचने के बाद।

डर के साथ मेरा एक अजीब सा रिश्ता था। मज़ाक में कहा जाता था कि गोरखा सैनिकों को कभी आतंक या चिंता का अनुभव नहीं होता, लेकिन हकीकत बिल्कुल अलग थी। डरना मानवीय स्वभाव है; हमने बस इसके विनाशकारी प्रभावों को संभालना सीख लिया था। नकारात्मक भावनाओं को खुद पर हावी होने देने के बजाय, हमने डर को एक प्रेरणादायक ऊर्जा, एक प्रेरक शक्ति में बदल दिया। कई बार, मैं इसका इस्तेमाल अपने मुख्य मिशन के समग्र महत्व और शांत रहने के महत्व को याद दिलाने के लिए करता था। मैं खुद से कहता था, 'मैं डरा हुआ हूँ क्योंकि इसका कुछ मतलब है।'

उदाहरण के लिए, युद्ध में, विशेष बलों की एक भूमिका जानबूझकर हिरासत में लेना थी: वांछित और खतरनाक व्यक्ति को गिरफ्तार करना। ऐसी परिस्थितियों में, मेरा जीवन ऑपरेशन

के लिए गौण था; हमारा लक्ष्य लक्ष्य को पकड़ना था। वहीं, जिन संस्थानों का मैं प्रतिनिधित्व कर रहा था, उनके प्रति मेरा गर्व मेरी सेहत या मृत्यु के बारे में किसी भी चिंता से कहीं अधिक था। इस रवैये ने उन सभी नकारात्मक विचारों को शांत कर दिया कि अगर कोई मुझ पर गोली चला दे तो क्या होगा, या क्या किसी विस्फोट में मेरा कोई अंग कट जाएगा। पहाड़ पर भी यही मानसिकता सच साबित हुई।

मैं अक्सर मानता था कि किसी अभियान के दौरान मेरी मृत्यु की संभावना बहुत कम थी, और गंभीर रूप से घायल होने की भी संभावना थी, लेकिन मैंने इससे आगे कभी नहीं सोचा। मैंने कभी यह नहीं सोचा कि यह कैसे हो सकता है, या अपने अंतिम क्षणों में मुझे कितना दर्द सहना पड़ेगा। इसके बजाय, मैंने एक अनुभवी पर्वतारोही के रूप में अपनी प्रतिष्ठा पर ध्यान केंद्रित किया; मैंने बहादुरी और ईमानदारी से काम करने के महत्व को याद रखा। शक्ति और चतुराई मुझे कहीं भी ले जा सकती थी और दस आदमियों के साहस के साथ मैं विजय प्राप्त कर लूंगा। यदि मौसम खराब हो जाता, या पहाड़ हिमस्खलन के लिए तैयार दिखाई देता, तो मैं अपने धैर्य का उपयोग ध्यान केंद्रित करने के लिए करता, मुख्य रूप से अपने आसपास के पर्यावरणीय खतरों से उसी तरह निपटता जैसे कोई सैन्य इकाई दुश्मन को मात देने के लिए काम करती है। मैंने अपने संसाधनों का जायजा लिया और आगे मौजूद दुश्मनों का आकलन किया, फिर मैंने उन्हें बेअसर करने की सर्वोत्तम रणनीति तैयार की।

गाशेरब्रुम प्रथम और गाशेरब्रुम द्वितीय के साझा बेस कैंप में बसने के बाद, मैंने पहाड़ों द्वारा मेरे लिए बिछाई गई किसी भी बाधा को दूर करने पर ध्यान केंद्रित किया। फिर मैंने नंगा पर्वत पर गिरने से संबंधित बुरे विचारों को एक तरफ रख दिया और ऐसा करने के साथ ही पहाड़ों के साथ एक नया संवाद शुरू हो गया।

तो फिर आओ, कमीने। ये मुकाबला तुम्हारे और मेरे बीच है।

चोटी पर बादल घिर आए और तूफान के आने के आसार दिखाई देने लगे, लेकिन इससे कोई खास चिंता नहीं थी। मुझे पता था कि मेरी टीम के पास किसी भी संभावित खतरे से निपटने के लिए पर्याप्त संसाधन मौजूद हैं। आखिरकार, अत्यधिक ऊंचाई पर चढ़ाई करना शारीरिक चुनौती के साथ-साथ मानसिक चुनौती भी है।

यह तुम्हारा है, निम्स। यहीं पर तुम्हारा असली जीवन साकार होता है।

मैं अनादर नहीं कर रहा था। कंचनजंगा के बाद, मैंने जानबूझकर उन चोटियों के प्रति तटस्थ रवैया अपनाया था जिन पर मुझे चढ़ना था। वैसे, अति आत्मविश्वास खतरनाक होता है – इससे काम में लापरवाही और आलस्य होता है, और नंगा पर्वत पर मुझे जानकारी जुटाने और भरोसा करने के बारे में थोड़ी चेतावनी मिल चुकी थी। घबराहट भी ठीक नहीं थी – इससे व्यक्ति को ज़रूरत से ज़्यादा सोचने पर मजबूर होना पड़ता था जबकि उसे पूरी तरह से तल्लीन रहना चाहिए था। इसलिए किसी भी चढ़ाई से पहले मेरा सामान्य रवैया बीच का होता था, न तो बहुत डरा हुआ और न ही बहुत ज़्यादा आरामदेह, लेकिन मेरा लक्ष्य हमेशा आक्रामक रहना होता था: जब भी मैं किसी पहाड़ पर चढ़ाई करता हूँ, पूरी ताकत से करता हूँ।

मैं किसी और से ज़्यादा यह जानता था कि प्रकृति को प्रतिष्ठा, उम्र, लिंग या पृष्ठभूमि से कोई

लेना-देना नहीं होता। व्यक्तित्व के प्रति भी उसका रवैया उतना ही उदासीन था: पहाड़ को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उस पर घूमने वाले लोग नैतिक रूप से बुरे हैं या अच्छे। मैं बस इतना ही कर सकता था कि खुद को सही मानसिक स्थिति में लाऊं। तभी मैं ऊपर बताई गई चुनौतियों का सामना कर पाऊंगा।

गहरी बर्फ? मैं सौ आदमियों की तरह राह बनाऊंगा।

हिमस्खलन? मैं इसे कम कर सकता हूँ।

भयंकर बर्फ़ीले तूफ़ान? आने दो।

मुझे हर पहाड़ पर खुद को एक मजबूत ताकत बनाना था, जो किसी भी बाधा को पार करने में सक्षम हो। फिर जाने का समय आ गया।

*

अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन ने एक बार लिखा था कि अगर किसी का काम मेंढक खाना हो, तो सुबह सबसे पहले यही काम निपटा लेना सबसे अच्छा होता है। लेकिन अगर काम में दो मेंढक खाना शामिल हो, तो पहले बड़ा वाला खाना बेहतर होता है। दूसरे शब्दों में: सबसे मुश्किल काम को पहले निपटा लो। बेस कैंप में इंतज़ार करते हुए, हमने एक योजना बनाई। जीआईआई छोटा मेंढक था और हमारा इरादा था कि चढ़ाई के दौरान निचले शिविरों में आराम करते हुए, हम उसे आराम से खत्म कर लेंगे। लेकिन जीआई बड़ा और ज़्यादा खतरनाक था, इसलिए मैं मिंगमा और गेलजेन के साथ मिलकर उसे पहले ही खत्म करना चाहता था, उम्मीद है कि एक ही बार में।

काम बेहद कठिन था। किसी ने भी पहले से हमारे लिए ऑक्सीजन नहीं पहुँचाई थी, इसलिए टीम को ऑक्सीजन सिलेंडर, पूरा पर्वतारोहण किट, उपकरण और सामान खुद ही लादना पड़ा। दो दिन आराम करने के बाद भी, हमें जल्द ही एहसास हो गया कि नांगा परबत से चढ़ाई के बाद हम अभी भी बहुत थके हुए थे। पहाड़ के निचले चरणों में, हम दरारों से भरी एक घाटी से गुज़रे, जो खुंबू आइसफॉल का एक लंबा, लेकिन कम प्रभावशाली संस्करण था, और हमारी ऊर्जा तेज़ी से कम होती जा रही थी। शुक्र है, फिक्स्ड लाइनें हमें ऊपर तक ले जाएंगी और मुझे काफी उम्मीद थी कि मैं जीआई को अच्छे समय में पूरा कर लूंगा।

इससे पहले, मैंने एवरेस्ट और ल्होत्से पर्वतमाला पर चढ़ाई करने के बाद, चार-पाँच दिनों तक मुश्किल से सोए हुए, दुनिया के पाँचवें सबसे ऊँचे पर्वत मकालू पर अठारह घंटे में विजय प्राप्त की थी। दुनिया के तीसरे सबसे ऊँचे पर्वत कंचनजंगा पर भी मैंने धौलागिरी पर एक कठिन अभियान के बाद, इसी तरह की परिस्थितियों में विजय प्राप्त की थी। 8,080 मीटर की ऊँचाई पर, मुझे लगा कि हम गाशेरब्रुम प्रथम के उत्तर-पश्चिमी हिस्से को एक ही बार में फतह कर लेंगे। मेरे अनुमान के अनुसार, हम दोपहर के आसपास शिखर पर पहुँच जाएँगे।

सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक जापानी कौलॉयर थी, जो एक खड़ी, सत्तर डिग्री की ढलान वाली पहाड़ी थी और कैंप 2 को ऊपरी कैंपों से अलग करती थी। एक बार जब हम इसे पार कर चुके थे, तो हमारा काम खुद को शिखर तक खींचना था, जिसके अंतिम चरण में एक और तीव्र ढलान को पार करना शामिल था। यह काम बेहद कठिन था; इसमें हमें उम्मीद से कहीं ज्यादा

समय लगा और जब तक हमने जापानी कौलॉयर को पार कर कैंप 3 तक पहुंचे, तब तक सूरज डूब चुका था। आगे बढ़ना संभव नहीं था और हमें अपनी योजनाओं पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

मुझे पता था कि अंधेरे में आगे बढ़ना जानलेवा साबित हो सकता है; हमें शिखर की सही जगह का पता नहीं था, दूर-दूर तक कोई मार्ग चिन्ह नहीं दिख रहा था, और जीपीएस तकनीक होने के बावजूद भी सही रास्ता ढूंढने में हम लगभग पूरी तरह से भटक जाते। जीआई पर्वत पर हमारा मिशन त्रासदी में समाप्त होने की पूरी संभावना थी: हममें से कोई भी भ्रमित होकर खाई में गिर सकता था या किसी चट्टान के किनारे से नीचे गिर सकता था।

सबसे बड़ी समस्या उपकरणों की कमी थी। योजना शिखर तक एक ही बार में पहुंचने की थी, जिसमें हम असफल रहे, इसलिए हमारा अभियान अब खतरे में लग रहा था। अभियान को समय पर पूरा करने के लिए हमें कैंप 3 में रुकना होगा, जहां कम से कम एक पुराना, टूटा हुआ तंबू तो होगा जिसमें हम घुस सकते हैं। आश्रय मिलने के बाद, हम सुबह शिखर पर चढ़ाई शुरू होने तक कुछ घंटों के लिए आराम कर सकते थे, लेकिन टीम ने ऑक्सीजन सिलेंडरों के अलावा बहुत कम सामान रखा था, हमारे पास खाने का कोई सामान नहीं था और ठंड से बचने के लिए हमारे पास सिर्फ शिखर पर चढ़ने वाले सूट और एक स्लीपिंग बैग था।

कड़ाके की ठंड से बचने का हमारा एकमात्र उपाय एक साथ huddled होकर बैठना था। हमारे शरीर की गर्मी हमें गिरते तापमान से बचाती रही, और सुबह 3 बजे तक, इतनी ठंड थी कि नींद नहीं आ रही थी, हम शिखर पर चढ़ाई के लिए उठ खड़े हुए। सभी को अपना सामान इकट्ठा करने में नब्बे मिनट लग गए। हम पूरी तरह थक चुके थे।

शिखर तक चढ़ाई बेहद कठिन थी। हम बिना रस्सियों के ढलान पर चढ़ रहे थे, सुबह की हल्की रोशनी में यह समझ नहीं आ रहा था कि किस दिशा में मुड़ें। शिखर बाईं ओर था या दाईं ओर? मैं निश्चित नहीं था, लेकिन मुझे यह पक्का जानना था कि हम सही दिशा में जा रहे हैं। पर्वतारोहियों के एक शिखर पर पहुँचने के बाद बेस कैंप वापस आने पर पता चलने की कई डरावनी कहानियाँ थीं कि वे गलत शिखर पर पहुँच गए थे। मैं दिशा-निर्देश की गलती के कारण परेशान नहीं होना चाहता था और हर कदम पर थकान हावी होती जा रही थी, इसलिए मैंने बेस कैंप में फोन किया और एक पर्वतारोही से संपर्क हो गया जो कुछ हफ़्ते पहले ही शिखर पर पहुँच चुका था।

उनके निर्देशों का पालन करते हुए, हम शिखर तक पहुँच गए। दूर से दिख रहे जीआईआई और ब्रॉड पीक के नज़ारे देखते हुए, हम तीनों थके-हारे एक पतली सी चट्टान की ओर बढ़ते गए, जो हमारे वापसी का बिंदु था। तभी हमें जीआईआई की वास्तविकता का एहसास होने लगा। यह एक चुनौतीपूर्ण पर्वत था और आगे आने वाली चुनौतियों के बारे में तटस्थ रहने के अपने वादे के बावजूद, मैंने इसे थोड़ा कम आँका था।

धौलागिरी और एवरेस्ट जैसी ऊँची चोटियों पर मेरे पहले शिखर पर चढ़ने के प्रयास अजीब अनुभव थे, जहाँ समय के महत्व का निर्मम खुलासा हुआ। कई बार, चढ़ाई के दौरान मैंने खुद को ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर लगा दिया और परिणामस्वरूप थकावट और ऊँचाई की बीमारी से पीड़ित

हो गया, जैसा कि 2016 में एवरेस्ट पर हुआ था। मैंने अन्य अभियानों के पर्वतारोहियों को शिखर पर चढ़ने में बहुत धीमी गति से या बहुत देर से प्रयास करते हुए देखा, और फिर थकान और गलत निर्णय के कारण वे नीचे उतरने में असमर्थ रहे। कभी-कभी ये गलतियाँ घातक साबित हुईं; अन्य अवसरों पर पर्वतारोहियों को बचा लिया गया।

अपने शुरुआती अभियानों के दौरान, मैं उन गलतियों को दोहराना नहीं चाहता था और धौलागिरी और एवरेस्ट की चोटियों से जल्दी नीचे उतर जाता था, ताकि ऊंचे शिविरों के ऊपर किसी मुसीबत में न पड़ जाऊं, बजाय इसके कि नज़ारों का आनंद लूं और उस पल को जीऊं। एक तरह से, उस समय मुझे अपनी असली ताकत का अंदाज़ा नहीं था। एक पर्वतारोही को अपनी क्षमता पर भरोसा होना चाहिए। पहाड़ों पर यही सब कुछ होता है और मेरा आत्मविश्वास तब पूरी तरह विकसित नहीं हुआ था।

अनुभव के साथ सब कुछ बदल गया। 2017 में गोरखाओं के साथ एवरेस्ट पर चढ़ाई करने के बाद, मैं शिखर पर दो घंटे रुका। मिशन के दौरान, अन्नपूर्णा या मकालू जैसी चोटियों पर पहुँचने के बाद, मैं वहाँ एक घंटा ज़रूर रुकता था, अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाता था और बाकी टीम के साथ मिलकर खुशी मनाता था। मैं तस्वीरें लेता था और वीडियो बनाता था; झंडे लगाता था और घर पर उन लोगों का शुक्रिया अदा करता था जिन्होंने रास्ते में मेरी मदद की थी। मैं अपने लिए समय निकाल पाता था, क्योंकि मुझे पता था कि मैं बेस कैंप तक जल्दी से वापस आ सकता हूँ, अगर हालात ठीक रहे तो शायद कुछ ही घंटों में।

बहुत से लोगों के लिए, वही यात्रा आठ से दस घंटे की होती और सफ़र डर और चिंता से भरा होता। काम कभी आसान नहीं था। हम अक्सर बेहद खराब मौसम में नीचे उतरते थे, जहाँ हवा हमें पहाड़ से उखाड़ फेंकने की धमकी देती थी और बर्फीले तूफान से खतरनाक ढलानों पर चक्कर आने लगते थे, लेकिन टीम शायद ही कभी रेंगते हुए घर लौटती थी। अनुभव ने मेरा नज़रिया बदल दिया: मैं हर पहाड़ पर दृढ़ संकल्प के महत्व को समझने लगा। लेकिन सबसे बढ़कर, मैंने नज़ारे का भरपूर आनंद लिया।

इतनी ऊंचाई पर प्रकृति खूबसूरत और हिंसक दोनों हो सकती है, और जीआई पर मेरे सामने फैले हिमालय को देखकर मुझे एवरेस्ट की चोटी पर बिताए अपने पहले पल की याद आ गई। मुझे याद है कि मैं पासांग के साथ वहां खड़ा था, पहले तो मुझे राहत महसूस हुई। मैं एचएपीई के एक खतरनाक दौर से बच निकला था और धातु जैसी ठंड में मेरी उंगलियां और पैर की उंगलियां लगभग टूट रही थीं, लेकिन चोटियों से छनकर आती सूरज की पहली किरण ने सब कुछ बदल दिया। एवरेस्ट की ऊर्जा अंधेरे से उजाले में, मृत्यु से जीवन में बदल गई, और मुझे पता था कि मैं घर पहुंच जाऊंगा।

वही मनोदशा में बदलाव अब जीआई पर भी हो रहा था और हमारी परेशानियाँ दूर, किसी दूसरे जन्म की लग रही थीं। खासकर अब, जब पहाड़ों की चोटियाँ चमक रही थीं; उनके चारों ओर के घने बादल छंट रहे थे। एक नए दिन की शुरुआत हो रही थी; सब कुछ फिर से सुखद होने वाला था।

फिर गुरुत्वाकर्षण ने मुझे मेरे आरामदायक क्षेत्र से बाहर धकेल दिया।

जैसे ही हम उतरने के लिए मुड़े, मुझे डर सताने लगा। मैंने नीचे देखा। ज़मीन मानो मेरी ओर तेज़ी से आ रही थी, और एक पल के लिए नांगा पर्वत पर गिरने की घटना याद आ गई। सुरक्षा रस्सी न होने के कारण, मैं अचानक असुरक्षित और बहुत कमज़ोर महसूस करने लगा। मैंने घबराकर देखा कि गेलजेन और मिंगमा मुड़े और ढलान में अपनी बर्फ की कुल्हाड़ियाँ गाड़ने लगे, पीछे की ओर कदम बढ़ाते हुए, मानो यह कोई रोज़ाना का उतरना हो। लेकिन क्या सच में ऐसा था? मुझे यकीन नहीं था। मेरे पैर काँप रहे थे, एड्रेनालाईन तेज़ी से बढ़ रहा था, और इस मिशन में पहली बार मुझे अपनी जान का डर सता रहा था। आत्मसंदेह ने मुझे छुरे की तरह चोट पहुँचाई।

यहां फिसलना बहुत आसान होगा। क्या मैं मर जाऊंगा?

हम एक दूसरे से बंधे हुए नहीं थे। मैं रस्सी क्यों नहीं लाया?

अगर मेरा संतुलन बिगड़ गया, तो मैं बेकाबू होकर गिरने लगूंगा। क्या आत्म-संयम साधने की मेरी कोशिश फिर नाकाम हो जाएगी?

ये भावनाएँ मेरे लिए एक झटका थीं, लेकिन मेरी पोल खुल गई क्योंकि मैं अपने सबसे महत्वपूर्ण नियमों में से एक को भूल गया था: मैंने पहाड़ को कम आँका था। यह एहसास मुँह पर एक ज़ोरदार थप्पड़ जैसा लगा। एक और अपरिचित सच्चाई तो और भी डरावनी थी: मेरा आत्मविश्वास अचानक चकनाचूर हो गया था। मैं मुड़ा और अपने क्रैम्पोन बर्फ में गाड़ दिए, धीरे-धीरे, सावधानी से, कदम-दर-कदम नीचे उतरने लगा, मेरी हृदय गति आसमान छू रही थी। जब हम समतल ज़मीन पर पहुँचे, तो मुझे थोड़ा आराम महसूस हुआ और मैं आत्मविश्वास से कैंप 3 की ओर चल पड़ा, यह प्रार्थना करते हुए कि आत्मविश्वास का यह टूटना बस एक बार की बात हो।

फिर मुझे अपने प्रिय खेल जगत के महान खिलाड़ियों की याद आई: एक सच्चे चैंपियन की पहचान अक्सर हार या गिरने पर उसकी प्रतिक्रिया से होती है। मुहम्मद अली कई मुकाबलों में गिरे थे, लेकिन फिर भी उन्होंने जीत हासिल की। उसेन बोल्ट ने ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतने से पहले कई बार फाल्स स्टार्ट किया था या छोटी चैंपियनशिप में हार का सामना किया था। एक हफ्ते पहले मेरा गिरना भी एक मामूली झटका ही माना जा सकता है; यह एक बार की घटना थी और निश्चित रूप से परेशान करने वाली थी, लेकिन समय और मेहनत से मैं इसे भुला सकता था, खासकर अगर मैं गोरखाओं के भय से निपटने के रवैये को याद रखूँ। फिलहाल, मुझे खुद को संभालना था और फिर से मैदान में उतरना था।

*

इसमें और अधिक नाटकीयता की गुंजाइश हमेशा से थी।

जैसे ही हम बेस कैंप से संपर्क करते हुए कैंप 2 की ओर बढ़े, मेरे सैटेलाइट फोन पर एक अन्य अभियान दल का संदेश आया।

'निम्सदाई! कैंप 2 में मैथियास नाम का एक पर्वतारोही फंसा हुआ है। क्या तुम उसे बुलाकर नीचे ला सकते हो?'

मैंने आह भरी। दोपहर के लगभग 3 बज रहे थे और चूंकि हम संभवतः उसके बहुत करीब थे,

इसलिए मदद न करने का कोई कारण नहीं था। फंसे हुए व्यक्ति को ढूंढने के बाद, हम तीनों धैर्यपूर्वक इंतजार करते रहे जब तक कि मैथियास ने अपना सामान इकट्ठा नहीं कर लिया। पांच मिनट बीत गए। फिर दस मिनट। एक समय मैथियास ने कहा कि वह 'बस कुछ ही देर में' तैयार हो जाएगा, इसलिए गेलजेन अगले शिविर की ओर तेजी से बढ़ गया, यह सोचकर कि हम जल्दी ही उसके साथ पहुँच जाएँगे। पंद्रह मिनट बीतने के बाद, शुक्र है कि हम फिर से चलने लगे। मुझे कड़ाके की ठंड लग रही थी और मैं थका हुआ था, और इस देरी का हमें भारी नुकसान हुआ था।

अचानक, एक भयंकर तूफान आ गया और कुछ ही मिनटों में हम बादलों से घिर गए, आसमान से बर्फ की चादर सी बरसने लगी। हमारी दृश्यता बिल्कुल खत्म हो गई और इसी अफरा-तफरी में मुझे एक चीख सुनाई दी। मिंगमा! उसका पैर फिसल गया था और वह एक अनदेखी दरार में गिर गया था। मैं उसे ढूंढने के लिए रेंगता हुआ गया, सबसे बुरे की आशंका से सावधान था, कहीं मैं किसी और छिपे हुए गड्ढे में न गिर जाऊं; लेकिन जब मैंने शरीर के आकार के उस छेद में झांका, तो मिंगमा मुझे ही देख रहा था। संयोग से, उसका बैग किनारे पर अटक गया था, जिससे उसका शरीर वहीं जम गया था। कुछ सावधानी से छटपटाते हुए, मिंगमा अपने हाथ छुड़ाने में कामयाब रहा और बर्फ को पकड़ लिया, तभी हमने उसे उठाकर मुसीबत से बाहर निकाला। पहाड़ों पर दो बार मौत के मुंह से बाल-बाल बचा था वह।

नांगा पर्वत पर मेरे गिरने और अब गाशेरब्रुम प्रथम पर मिंगमा की दुर्घटना के बीच, ऐसा लग रहा था मानो पहाड़ों के देवता हमें निगलने की कोशिश कर रहे हों। और अगर मिंगमा किसी अदृश्य दरार में गिर सकता है, तो क्या गेलजेन ठीक होगा? बादलों में कैंप 1 का स्पष्ट दृश्य न होने के कारण, पूरी संभावना थी कि वह भी मिंगमा की तरह लाइन से हटकर पहाड़ में गायब हो जाए। मैंने अपना रेडियो उठाया और उसे वापस कॉल करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। तभी मुझे अपने बैग में एक हल्की सी बीप और खरखराहट सुनाई दी। ओह, नहीं! गेलजेन अपना संचार उपकरण पीछे छोड़ आया था!

मैंने एक पल रुककर अपनी स्थिति का जायजा लिया: ऊपर जाने का कोई रास्ता नहीं था, पूरा मार्ग कोहरे से ढका हुआ था। नीचे उतरने की भी कोई उम्मीद नहीं थी, बर्फ इतनी मोटी थी कि कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पहले तो हम तीनों ने अपनी बर्फ की कुल्हाड़ियों से बर्फ में गड्ढा खोदना शुरू किया। अगर हम तेज़ हवा और धुंध के बीच बर्फ की पर्याप्त परत बना पाते, तो शायद हम एक-दूसरे से चिपककर खुद को गर्म रख पाते, लेकिन जैसे-जैसे हम खोदते और तोड़ते गए, हमें खुद को बचाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं दिखी। मुझे पता था कि अगर हम यहाँ ज़्यादा देर तक रुके रहे, तो हमारी जान जा सकती है। अब और भी जोखिम भरा कदम उठाने का समय आ गया था।

मैंने कहा, 'धत् तेरे की, हमें वापस कैंप 2 पर जाना होगा।'

मैंने मैथियास की तरफ देखा। 'क्या ऊपर आपके तंबू में हमारे घुसने के लिए पर्याप्त जगह है?'

उसने सिर हिलाया। कम से कम हमारे बचने का एक मौका तो था, लेकिन यह जोखिम भरा था – अगर मिंगमा के अनुभव पर गौर करें तो, पूरी संभावना थी कि हममें से कोई एक और दरार में गिर जाए। सावधानी से, हम वापस कैंप 2 की ओर बढ़े। मैं बीच-बीच में नीचे मौजूद अभियानों

को रेडियो से संपर्क करता रहा, इस उम्मीद में कि गेलजेन शायद कैंप 1 तक पहुँच गया हो, लेकिन किसी ने भी उसे नहीं देखा था।

हे भगवान! क्या गेलजेन अभी भी ज़िंदा था?

मुझे सबसे बुरे की आशंका होने लगी थी। जब हम बादलों से निकलकर, बर्फीली आंधी से बचकर, एक छोटे से दो लोगों वाले तंबू में शरण लेने के लिए घुसे, तभी मुझे सुरक्षित महसूस हुआ। तभी मेरे रेडियो से बीप की आवाज़ आई और उसमें से कर्कश ध्वनि निकलने लगी।

'निम्सदाई! मैं घर आ गया!'

वो गेलजेन था। वो बिल्कुल ठीक था और उसने एक दूसरे पर्वतारोही से रेडियो उधार लिया था। कुछ पल के लिए हमें चैन की सांस लेने की जगह मिली।

सैवेज माउंटेन

हमने पूरी रात कड़ाके की ठंड में ठिठकते हुए बिताई। अगली सुबह जब हम नीचे उतरने लगे, तो मेरा आत्मविश्वास धीरे-धीरे वापस आने लगा; मैं अत्यधिक ठंड का सामना करने में अधिक मजबूत और सहज महसूस कर रहा था। बेस कैंप पहुँचने तक, जीआई पर्वत की चोटी पर मुझे जो घबराहट महसूस हुई थी, वह काफी हद तक कम हो चुकी थी, या कम से कम मुझे यही उम्मीद थी, हालाँकि मुझे लगता था कि मैं अभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था। मेरी योजना गाशेरब्रुम II के दौरान अपनी भावनाओं को काबू में रखने की थी, क्योंकि के2 के अधिक चुनौतीपूर्ण इलाके में जीवित रहने के लिए मुझे अपनी पूरी भावनात्मक शक्ति की आवश्यकता होगी। फिलहाल, मुझे एक पुरानी सैन्य कहावत को अपनाते हुए अपने मुख्य मिशन पर ध्यान केंद्रित करना था।

सबसे बुरे के लिए तैयार रहें, सबसे अच्छे की आशा रखें।

जब मैंने कैंप 1 से जीआईआई की ओर देखा, जो कि अपेक्षाकृत शांत मानी जाने वाली चोटी थी, तो मैंने खुद को एक चुनौती के लिए तैयार कर लिया, हालांकि इस बात से मैं उत्साहित था कि कम से कम मैं एक सामान्य पर्वतारोही की तरह चल सकता हूँ। हमारी योजना 8,034 मीटर की पूरी चढ़ाई एक ही बार में करने की नहीं थी। इसके बजाय, टीम कैंप 2 और 3 में आराम करेगी, और जैसे-जैसे हम पहाड़ पर चढ़ते गए, जीआईआई का मिजाज शांत होता गया। हमने 18 जुलाई को शिखर पर विजय प्राप्त की, और शिखर पर पहुँचकर मैं विस्मय और उत्साह से भर गया। दूर K2 दिखाई दे रहा था, और वह बेहद खूबसूरत लग रहा था। नुकीली चोटी क्षितिज की ओर शार्क के दांत की तरह मुड़ी हुई थी; सूर्योदय के समय वह गुलाबी रंग में चमक रही थी।

मैं इस पर पूरी तरह से ध्यान दूंगा। और मैं दुनिया को दिखाऊंगा कि यह कैसे किया जाता है।

हर कोई मेरी आशावादिता से सहमत नहीं था। जैसे-जैसे मैं जीआईआई से नीचे उतरता गया, मुझे पता चला कि के2 पर चढ़ाई का मिजाज काफी प्रतिकूल था। बेस कैंप पर कई अनुभवी पर्वतारोही इंतज़ार कर रहे थे और कई अभियान दल अनुकूल मौसम की प्रतीक्षा में वहीं रुके हुए थे – उनमें से कुछ तो महीनों से वहीं अटके हुए थे। उस वर्ष पाकिस्तानी अधिकारियों द्वारा लगभग दो सौ पर्वतारोहण परमिट (शेरपाओं सहित) जारी किए गए थे, लेकिन के2 पर चढ़ने की उम्मीद रखने वालों में से लगभग 95 प्रतिशत अपना सामान पैक करके घर लौट गए थे। बाकी पांच लोग वहीं रुके रहे, इस उम्मीद में कि शायद मैं उन्हें शिखर तक ले जाऊं।

जब मैं वहाँ पहुँचा तो रास्ते में कई टीमें पहाड़ से नीचे उतर रही थीं, जिनमें से कई रुककर हमें K2 पर चढ़ाई के अपने भयानक किस्से सुना रही थीं। शिखर पर चढ़ने के कम से कम दो प्रयास हो चुके थे, लेकिन दोनों ही बार चोटी पर चढ़ने की हिम्मत करने वाली टीमें भयानक परिस्थितियों के कारण पीछे हट गईं। वे केवल कैंप 4 से आगे बढ़कर बॉटलनेक नामक एक संकरे दर्रे तक ही पहुँच पाई थीं, जो समुद्र तल से 8,200 मीटर की ऊंचाई पर चोटी के ठीक नीचे स्थित था। इस बीच, रास्ते में कई चोटियाँ हिमस्खलन के लिए पूरी तरह से तैयार थीं। यहाँ तक कि शेरपा भी ऊपर होने वाली संभावित दुर्घटना से भयभीत थे।

जब मैं बेस कैंप में बाकी लोगों के साथ शामिल हुआ, तो मेरे एक दोस्त मिंगमा शेरपा ने मुझे एक तरफ बुलाया, जो विशाल पर्वतों पर चढ़ाई में माहिर थे। उन्होंने हाल के वर्षों में दो बार के2 पर चढ़ाई की थी और पर्वतारोहण में उन्हें एक कुशल पर्वतारोही माना जाता था। लेकिन इस बार, मिंगमा शेरपा पहाड़ से डर गए थे।

'निम्सदाई, यहाँ चढ़ना बहुत ही खतरनाक है,' उसने कहा और कुछ दिन पहले शिखर पर चढ़ने के अपने प्रयास के दौरान रिकॉर्ड किए गए कई मिनट के वीडियो फुटेज को चलाने के लिए अपना फोन निकाला। 'एक नज़र डालो...'

यह वीडियो वाकई चिंताजनक था। कुछ जगहों पर बर्फ सीने तक गहरी थी, जो मेरे या मेरी टीम के लिए शारीरिक रूप से कोई समस्या नहीं थी, लेकिन हर कदम जोखिम भरा था। मिंगमा शेरपा के अनुसार, एक जगह पर बचाव दल के प्रमुख पर्वतारोही हिमस्खलन में बह गए थे। सौभाग्य से, वे बच गए, लेकिन वीडियो देखकर मैं काफी चिंतित हो गया।

मैंने अपनी टीम को अपने चारों ओर इकट्ठा किया। 'ठीक है, आज रात हम शराब पिएंगे,' मैंने मिंगमा शेरपा की पीठ थपथपाते हुए कहा और एक सिगरेट जलाई। 'हम जमकर पार्टी करेंगे। और कल हम योजना बनाएंगे।'

अब सबसे बुरे हालात के लिए तैयार रहने का समय था।

*

मेरा मिशन खतरे में था।

बेस कैंप में विभिन्न अभियान दलों से मुलाकात करते हुए और K2 पर चढ़ाई करने के सर्वोत्तम तरीके पर विचार करते समय, शिशपंगमा के लिए मेरे परमिट आवेदन के संबंध में एक अपडेट आया - जो दुनिया का चौदहवां सबसे ऊंचा पर्वत है और परियोजना कार्यक्रम का अंतिम शिखर है। अब तक, इस तक पहुंचने में भू-राजनीतिक समस्या थी। तिब्बत में स्थित होने के कारण, यह तय करना चीनी सरकार के हाथ में था कि कौन इस पर चढ़ सकता है और कौन नहीं, और 2019 के पूरे पर्वतारोहण सत्र के लिए, यह तय किया गया था कि किसी को भी इस शिखर तक पहुंचने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

मुझे उम्मीद थी कि मेरे मिशन की विशालता को देखते हुए वे शायद कुछ छूट दे देंगे, लेकिन खबर अच्छी नहीं थी। चीनी पर्वतारोहण संघ (सीएमए) ने सुरक्षा संबंधी कई चिंताओं का हवाला देते हुए मेरा प्रस्ताव सिरे से खारिज कर दिया था, और शिशापंगमा पर्वतमाला बिना किसी

अपवाद के बंद रहने वाली थी। तीसरे चरण के अंतिम पर्वत पर चढ़ने की मेरी संभावनाएँ अब लगभग असंभव लग रही थीं।

थोड़ा निराश होना स्वाभाविक था। अब तक, मैंने तय समय और तय तरीके से हर चोटी पर चढ़ाई कर ली थी, जैसा कि मैंने शुरुआत में वादा किया था। टीम ने आत्मनिर्भर और प्रभावी साबित किया था, और हमने तेज़ी से काम किया था। अब नौकरशाही मेरी महत्वाकांक्षाओं को कुचलने वाली थी, लेकिन मैं इसे अपने रास्ते से हटने नहीं दूंगा: काम पूरा करने का कोई न कोई रास्ता ज़रूर होगा। होना ही चाहिए। लेकिन अभी के लिए, तिब्बत और चीनी परमिट संबंधी मुद्दों पर नवीनतम जानकारी को समझना ज़रूरी था, इससे पहले कि मैं भावनात्मक रूप से इसे किनारे रख दूं। K2 के मामले को देखते हुए, किसी भी नकारात्मक विचार को जड़ से उखाड़ फेंकना ज़रूरी हो गया था। राजनीति और कागज़ी कार्रवाई इंतज़ार कर सकती थी।

अब पीछे मुड़कर देखने पर, यही सही फैसला था। K2 पर चढ़ाई करते समय, मुझे पता था कि यह काम अक्सर मानसिक और शारीरिक सहनशक्ति की परीक्षा बन जाता है – और ध्यान भटकाने की कोई गुंजाइश नहीं होती। हाँ, यह एक कठिन पर्वत था और परिस्थितियाँ अक्सर प्रतिकूल होती थीं, लेकिन मुझे विश्वास था कि मेरी टीम में काम के बोझ को संभालने की मानसिक क्षमता है, हालाँकि मुझे डर था कि शिशपंगमा के बारे में खबर उन्हें विचलित कर सकती है। सकारात्मक रवैया बनाए रखना महत्वपूर्ण लग रहा था, और थकान के बढ़ते स्तर के बावजूद, अभियान दल में हर कोई जोश से भरा और प्रेरित लग रहा था।

अब तक, ऊँची चोटियों पर चढ़ाई के लिए मेरी रणनीति यह थी कि मैं अनुभवी नेपाली पर्वतारोहियों को उन पर्वतों की चोटी तक ले जाऊँ जिन पर वे पहले कभी नहीं चढ़े थे; ऐसा करने से, उन्हें भविष्य में वहाँ काम करने का अनुभव प्राप्त हो जाएगा, और परिणामस्वरूप उनकी सेवाओं की मांग बढ़ जाएगी। (जब कोई पर्वतारोही पहली बार 8,000 मीटर ऊँची चोटी पर चढ़ाई करता है, तो वह हमेशा ऐसे गाइड को प्राथमिकता देता है जिसने पहले उस पर चढ़ाई की हो क्योंकि वह मार्ग और उसके खतरों से परिचित होता है।) यह मेरा तरीका था उन्हें एलीट हिमालयन एडवेंचर्स के साथ वैध गाइड के रूप में स्थापित करने का, साथ ही उनकी ऊर्जा को समग्र मिशन के लिए बचाए रखने का। परियोजना पूरी होने के बाद, वे उच्च सम्मान की उम्मीद कर सकते थे।

मुझे यह भी सोचना था कि K2 पर चढ़ाई करने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा। बेस कैंप पहुँचने से पहले, मैं ब्रॉड पीक पर पहले चढ़ाई करने के बारे में सोच रहा था – कुछ दिन पहले ही एक छोटी सी अभियान टीम ने इस पर चढ़ाई की थी, और सभी रास्ते बनाने और रस्सियाँ बाँधने का काम पूरा हो चुका था। लेकिन जब मैंने K2 पर मौजूद अन्य पर्वतारोहियों से बात की, तो मुझे एहसास हुआ कि वे मेरे आने का इंतज़ार कर रहे थे। वे यह देखना चाहते थे कि क्या मेरी टीम रस्सियाँ बाँधने का काम पूरा कर पाएगी, उसके बाद ही वे तय करेंगे कि उन्हें अपना सामान पैक करके घर लौटना है या नहीं। इससे हम पर दबाव ज़रूर बढ़ गया, लेकिन मुझे उन पर्वतारोहियों को पृथ्वी की सबसे खतरनाक चोटियों में से एक पर चढ़ाई करने के उनके सपने को पूरा करने में मदद करने का विचार अच्छा लगा।

मुझे हर तरह के अनुभव और जनशक्ति की ज़रूरत थी। K2 पर मौसम बेहद खराब रहने वाला था और अगले कुछ दिनों तक तेज़ हवाएँ चलने का अनुमान था; साथ ही, कड़ाके की ठंड भी पड़ने वाली थी। मैं समझता था कि K2 पर असफल होने का मतलब होगा कि ब्रॉड पीक पर चढ़ने से पहले मुझे इस पर एक या दो बार और प्रयास करने पड़ेंगे, और तब तक पाकिस्तान में पर्वतारोहण का मौसम समाप्त हो चुका होगा।

समय बेहद कम था और मैंने उसी के अनुसार मिशन की योजना बनाई: कैंप 4 के ऊपर पहाड़ पर आखिरी बची हुई रस्सियों को ठीक करना हमारी जिम्मेदारी थी। इस बीच, मैं गेसमैन और लकपा डेंडी शेरपा के साथ के2 पर चढ़ाई करने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन पहाड़ की दुर्गम प्रकृति और शिखर के आसपास की अनिश्चित परिस्थितियों के कारण मुझे लगभग सैन्य सटीकता के साथ योजना बनानी पड़ी।

मैंने कहा, 'देखो दोस्तों, यह चढ़ाई जोखिम भरी है। काम मुश्किल होने वाला है। मेरी योजना कैंप 4 से स्थिति का जायजा लेने की है। गेसमैन और लकपा डेंडी, तुम मेरे साथ आओगे। अगर ऊपर बहुत खतरा हुआ, तो हम नीचे आ जाएंगे और मैं तुम दोनों को बदल दूंगा। मिंगमा और गेलजेन, तुम दोनों पीछे आओगे और हम फिर से चढ़ाई शुरू करेंगे। मैं हर बार दो लोगों को बारी-बारी से भेजूंगा ताकि तुम आराम कर सको, लेकिन मैं आगे से इस चढ़ाई का नेतृत्व करूंगा। और मैं तभी रुकूंगा जब हम कम से कम छह-सात बार शिखर पर पहुंचने की कोशिश कर लेंगे।'

एक और गंभीर समस्या भी थी जिससे निपटना था। बेस कैंप पर घबराकर इंतज़ार कर रहे कई पर्वतारोही डर से कांप रहे थे, और उनमें से कुछ तो पहले से ही हारे हुए लग रहे थे। उन्हें पता चला था कि दक्षिण अफ्रीका में जन्मे स्विस पर्वतारोही माइक हॉर्न - जो गाशेरब्रुम प्रथम और द्वितीय, साथ ही ब्रॉड पीक और मकालू पर बिना ऑक्सीजन के चढ़ाई करने के लिए जाने जाते हैं - खतरनाक मौसम के कारण रुक गए थे।

कुछ अन्य दिग्गज पर्वतारोहियों के के2 पर्वत पर चढ़ने में असमर्थ होने की जानकारी ने अभियान दल के बचे हुए सदस्यों को परेशान कर दिया। कई लोग तो अभियान छोड़कर घर जाना चाहते थे, और स्थिति तब और बिगड़ गई जब चढ़ाई के दौरान उन्होंने अपने आगे एक रस्सी बांधने वाले को हिमस्खलन में बहते हुए देखा, जिससे कई लोग बुरी तरह डर गए थे। इस घटना ने कुछ लोगों के मन पर गहरा असर छोड़ा था।

एक दोपहर, क्लारा - चेक गणराज्य की एक महिला, जिसे मैं एक बहुत ही कुशल पर्वतारोही के रूप में जानता था - मेरे तम्बू में आई। वह डरी हुई थी।

'देखो, निम्स, मुझे नहीं लगता कि मैं यह कर सकता हूँ। यह बहुत ज्यादा है।'

बेस कैंप में मनोबल पूरी तरह टूट चुका था और इसे ठीक करना मेरी ज़िम्मेदारी थी। जब मैंने सबको एक साथ इकट्ठा करके ब्रीफिंग दी, तो मैंने अपनी योजना बताई, और अभियान दल के सदस्यों को विस्तार से समझाया कि मैं अपने गाइडों की मदद से शिखर तक का रास्ता कैसे बनाऊँगा, और कैसे सभी मेरे पीछे-पीछे चल सकते हैं। फिर मैंने समूह का आत्मविश्वास बढ़ाने की कोशिश की। मैं नकारात्मक ऊर्जा और निराशावाद के बीच तैयारी या काम करना पसंद नहीं करता था। K2 पर, मुझे लगा कि लड़ाई मानसिक रूप से हार रही है, लेकिन अगर सब हिम्मत

दिखाएँ तो चढ़ाई सबके बस में है। सकारात्मकता ज़रूरी थी।

बहुत से लोग सोचेंगे कि मुझे अन्य पर्वतारोहियों के अपने अभियानों को लेकर आत्मविश्वास की इतनी चिंता क्यों थी। सच तो यह है कि मेरे लिए स्वार्थी होना बहुत आसान था। मैं ब्रॉड पीक पर जा सकता था, वहाँ पहले चढ़ाई कर सकता था और अन्य दल के क्षेत्र छोड़ने के बाद थोड़ी देर बाद के2 पर लौट सकता था। लेकिन इसके बजाय, मैं उन्हें यह दिखाना चाहता था कि असंभव भी संभव है।

मैंने कहा, 'आप कैंप 4 तक जा चुके हैं। लेकिन आप इसलिए वापस लौट आए क्योंकि उसके आगे कोई निश्चित मार्ग नहीं था और हालात खराब थे। तब से आपको आराम करने का समय मिल गया है। आप मजबूत हैं।'

एक पर्वतारोही ने कहा, 'लेकिन वहां ऊपर चढ़ना बहुत मुश्किल है।'

देखो भाई, खुद को हतोत्साहित मत करो। मैंने बिना सोए लगातार दो पर्वतों पर चढ़ाई की है। नेपाल में मैंने बचाव कार्य किया और फिर अगले दिन दोबारा चढ़ाई शुरू कर दी। तुम्हें ऐसा नहीं करना पड़ा। एवरेस्ट, धौलागिरी या कंचनजंगा पर मेरी तुलना में तुम कहीं अधिक मजबूत स्थिति में हो। हम रास्ता दिखाएंगे और एक दिन बाद तुम शिखर पर पहुंच जाओगे।

मैंने उन्हें यूके स्पेशल फोर्सेज की चयन प्रक्रिया के बारे में बताया। कि कैसे हर साल लगभग 200 लोग इस प्रक्रिया से गुजरते हैं, यह जानते हुए कि कभी-कभी केवल पाँच या छह लोग ही योग्य हो पाते हैं। मैंने कहा, 'हाँ, असफलता का खतरा हमेशा बहुत अधिक होता है, लेकिन वे दो सौ लोग सभी सकारात्मक सोच के साथ शुरुआत करते हैं। वे पहले ही दिन हार नहीं मानते।'

मैंने उन्हें याद दिलाया कि सकारात्मक सोच, साहस और अनुशासन के साथ वे जीवित रह सकते हैं, लेकिन नकारात्मक मानसिकता के साथ के2 की ओर बढ़ना विफलता या मृत्यु का सबसे तेज़ रास्ता है।

'जंगल में थक जाने पर भी आप आराम कर सकते हैं और जीवित रह सकते हैं। रेगिस्तान में बिना भोजन या पानी के कुछ दिनों तक फंसे रहने पर भी आपको बचा लिया जाएगा – आपकी तुरंत मृत्यु नहीं होगी। लेकिन पहाड़ों पर मृत्यु बहुत तेजी से आती है और हार मान लेना, या आधे मन से प्रयास करना, केवल आपको रुकने पर मजबूर करेगा। और रुकने का मतलब है जम जाना और मर जाना।'

मुझे पता था कि रोमांच के प्रति मेरे उत्साह के बावजूद चढ़ाई कठिन ही साबित होगी। पहाड़ के सबसे लोकप्रिय मार्ग, अब्रुज़ी स्पर पर होने वाले हिमस्खलन और तूफानी हवाओं के अलावा, के2 के पास एक और खतरनाक जाल था: बॉटलनेक।

उस मोड़ पर मुझे ऑक्सीजन के सहारे ही आगे बढ़ना था, हालांकि इससे मुझे आगे आने वाले खतरों से निपटने में कोई मदद नहीं मिलने वाली थी। बॉटलनेक बर्फीले पत्थरों से भरा हुआ था और लगभग पचपन डिग्री के कोण पर स्थित था, इसलिए इसकी खड़ी, लटकती हुई सतह पर रस्सी और बर्फ की कुल्हाड़ियों से चढ़ाई नहीं की जा सकती थी। इसके बजाय, ऊपर जाने का एकमात्र रास्ता इसके चारों ओर सावधानीपूर्वक घूमना था, और साथ ही ऊपर मौजूद खतरनाक बर्फीले पत्थरों पर भी लगातार नज़र रखनी थी।

यह एक जोखिम भरा रास्ता था, लेकिन कोई दूसरा विकल्प नहीं था। बॉटलनेक शिखर तक पहुँचने का सबसे तेज़ मार्ग था, हालाँकि कुछ आँकड़ों के अनुसार, K2 पर होने वाली मौतों का एक चिंताजनक प्रतिशत यहीं हुआ था - 2008 में, पहाड़ पर हुई सबसे भीषण घटना में ग्यारह पर्वतारोही मारे गए थे; उनमें से कई की मौत चढ़ाई के उस हिस्से में हिमस्खलन के परिणामस्वरूप हुई थी।

समय भी एक अहम मुद्दा था। उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए, शिखर पर चढ़ाई के दौरान लगभग रात 1 बजे बॉटलनेक तक पहुँचना ज़रूरी था। आधी रात में ज़मीन ठंडी होती है और बर्फ़ जमने लगती है, इसलिए बिना फिसले-फिसले रास्ता बनाना संभव होता। इससे देर से पहुँचने पर बॉटलनेक तक पहुँचने वाले ज़्यादातर पर्वतारोहियों को सतह नरम और चढ़ाई में मुश्किल का सामना करना पड़ता था। उस समय चढ़ाई करने से मुझे एक मनोवैज्ञानिक लाभ भी मिला। अंधेरे में ऊपर मौजूद डरावने सेरैक को देखना संभव नहीं होता।

हम धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ते गए, रास्ते में आने वाले किसी भी एंकर को ठीक करते गए, और साथ ही शिखर तक पहुंचने का अपना रास्ता भी तय करते रहे। चढ़ाई शारीरिक और भावनात्मक रूप से कई चुनौतियों से भरी थी। हमारी पीठ रस्सी, एंकर और ऑक्सीजन के बोझ से दबी हुई थी, और कैंप 1 और 2 के बीच हमें हाउस चिमनी को पार करना पड़ा, जो 100 फुट ऊंची चट्टान की दीवार थी, जिसका नाम इसके बीचोंबीच मौजूद 'चिम्नी' जैसी दरार के कारण पड़ा था, और इसलिए भी क्योंकि अमेरिकी पर्वतारोही बिल हाउस ने 1938 में सबसे पहले इस पर चढ़ाई की थी। सौभाग्य से, हम शिखर से लटकती कुछ निश्चित रस्सियों का भरपूर उपयोग करते हुए इसे आसानी से पार करने में सफल रहे।

बाद में, कैंप 2 से आगे, पहाड़ का कुख्यात ब्लैक पिरामिड खंड था, एक विशाल, त्रिकोणीय चट्टानी टीला जो 365 मीटर तक फैला हुआ था और जिस पर चढ़ने के लिए हमें चट्टान और बर्फ के एक मुश्किल हिस्से पर चढ़ाई करनी पड़ी। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, ताकि कोई भयानक दुर्घटना न हो, लेकिन मेरे शरीर में कुछ अजीब सा महसूस हो रहा था। मैंने शुरुआत तो अच्छी की थी, लेकिन जैसे ही हम शोल्डर के पास पहुँचे, एक हिमनदी टीला जिसे बिना रस्सी के पार किया जा सकता था, मेरे पेट में एक अजीब सी गड़गड़ाहट हुई। फिर एक और। मेरी आंतों में ऐंठन और गांठें पड़ रही थीं, और मुझे दस्त के पहले लक्षण महसूस हुए। मैंने प्रार्थना की कि यह एहसास बस एक बार का हो।

दोपहर 3 बजे जब हम कैंप 4 पर पहुँचे, तब तक मेरा पेट थोड़ा शांत हो चुका था, लेकिन मुझे पता था कि हालात और भी मुश्किल होने वाले हैं, क्योंकि हमें कठिन परिस्थितियों में रस्सियाँ लगानी थीं। हमारे ऊपर बॉटलनेक और K2 की चोटी थी। अच्छे मौसम में भी, वहाँ पहुँचने में लगभग छह घंटे लग सकते थे। बॉटलनेक के बाद एक छोटी लेकिन चुनौतीपूर्ण बर्फीली पहाड़ी थी, जो अंततः चोटी तक जाती थी, और ऐसी कहानियाँ थीं कि कई पर्वतारोही चोटी के आसपास तेज़ हवाओं के कारण बुरी तरह फँस गए और उनकी मौत हो गई। अपना संतुलन खो देने के कारण, वे K2 के किनारे से नीचे गिर गए, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई।

मैंने तय किया कि इन समस्याओं के घटित होने पर ही उन पर ध्यान देना सबसे अच्छा होगा।

फिलहाल, मेरी सबसे बड़ी चिंता पेट में हो रही बेचैनी को संभालना था, क्योंकि मुश्किल अभियानों में हमेशा कुछ न कुछ अप्रत्याशित घटनाएँ घटित हो जाती हैं, चाहे पहाड़ का मिजाज कैसा भी हो।

मैंने अपनी सोच बदलने का फैसला किया, कैमरा निकाला और कई तस्वीरें खींचीं, ज़ूम करके संकरे रास्ते से निकलने का सबसे अच्छा रास्ता चुना। मैं एक वैकल्पिक मार्ग खोजना चाहता था, अगर जाना-माना रास्ता उम्मीद से ज़्यादा मुश्किल साबित हो। मेरी टीम मेरे चारों ओर इकट्ठा हो गई थी। हम सब बर्फ की कुल्हाड़ियों, क्रैम्पोन, स्नो बार, रस्सियों और आइस स्क्रू से पूरी तरह लैस थे। हम तैयार थे। अब युद्ध संबंधी जानकारी देने का समय आ गया था।

मैंने कहा, 'दोस्तों, हम नेपाल के सर्वश्रेष्ठ पर्वतारोही हैं। अब दुनिया को अपनी क्षमता दिखाने का समय आ गया है। चलिए इसे कर दिखाते हैं।'

हमने अपने भारी बैग और ऑक्सीजन मास्क पहन लिए। फिर हमने सौ आदमियों की ऊर्जा के साथ शिखर की ओर चढ़ाई शुरू की।

एक पर्वतीय मन

हमने रात 9 बजे शिखर की ओर चढ़ाई शुरू की और आखिरकार सुबह एक बजे बॉटलनेक पर पहुँचे। मेरे शरीर में एड्रेनालाईन का प्रवाह तेज़ था। मैं जानता था कि बर्फीले टीले हमारे ऊपर एक नुकीले जबड़े की तरह लटके हुए हैं। बस एक टीले के टूटने और ढलान से नीचे गिरने की देर थी, और हम सब एक भयानक टक्कर में मारे जा सकते थे, या फिर बर्फ का एक टुकड़ा हमारी रस्सी को चीरकर पूरी टीम को ज़ोरदार झटके के साथ पहाड़ से नीचे खींच सकता था। उस डरावने इलाके में धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, मैंने अपने विचारों को एकाग्र किया और पेट में होने वाले ऐंठन के occasional हमलों को नज़रअंदाज़ किया, जब हम बाद में शिखर की चोटी तक पहुँचने के लिए आगे बढ़े।

तेज़ हवाओं का सामना करते हुए मेरा दिल खुशी से भर गया था, लेकिन सफलता का उत्साह अजीब तरह से क्षणिक था। 24 जुलाई की सुबह दुनिया के सबसे खतरनाक पहाड़ों में से एक पर चढ़ाई पूरी करने के बाद - जो दुनिया के सबसे ऊंचे पहाड़ से भी ज़्यादा खड़ी और जोखिम भरी थी - मैं साफ नीले आसमान को ज़्यादा देर तक निहारने या वर्तमान क्षण का आनंद लेने से कतरा रहा था।

मैं जल्द से जल्द नीचे उतरना चाहता था, क्योंकि (1) पिछले कुछ दिनों से मेरे पेट में कुछ गड़बड़ थी और मुझे लगा कि नीचे उतरना भी उतना ही मुश्किल हो सकता है जितना ऊपर चढ़ना। (2) मैं अगले अभियान में ब्रॉड पीक पर जल्द से जल्द पहुंचना चाहता था। और (3) पाकिस्तान वाला चरण जितनी जल्दी पूरा हो जाता, शिशपंगमा के परमिट हासिल करने के अहम मुद्दे को मैं उतनी ही जल्दी सुलझा पाता। इस बार सोचने-समझने या भावनाओं में बहने का कोई मौका नहीं था।

कई बार, पहाड़ चढ़ने के प्रति मेरा रवैया सैन्य अभियानों के दौरान अपनाई गई मेरी मनोवैज्ञानिक स्थिति से मिलता-जुलता था। दोनों ही परिस्थितियों में मुझे कभी यकीन नहीं होता था कि मैं ज़िंदा वापस आऊँगा या नहीं, और एक बार मिशन पूरा हो जाने पर, सुरक्षित और कुशलतापूर्वक वहाँ से निकल जाना ही अक्सर सबसे अच्छा उपाय होता था। बेशक, मुझे हमेशा जानकारी का सहारा मिलता था: सैन्य कार्यों से पहले हम दुश्मन, उनके स्थान और उनकी क्षमताओं के बारे में जुटाई गई खुफिया जानकारी के आधार पर काम करते थे। पर्वतारोहण अभियानों में, हम पहाड़ के अपने ज्ञान, मौसम रिपोर्टों और अपने उपकरणों पर बहुत अधिक

निर्भर रहते थे; लेकिन दोनों ही स्थितियों में कुछ कारक हमेशा हमारे नियंत्रण से बाहर होते थे।

युद्ध में, अप्रत्याशित शत्रु आस-पास घात लगाए बैठे हो सकते हैं। पर्वतारोहण के दौरान, कहीं से भी चट्टान गिर सकती है। एक बार जब कोई टीम कार्रवाई में जुट जाती है, तो अनिश्चितता एक खतरनाक प्रतिद्वंद्वी बन जाती है। इससे निपटने का सबसे अच्छा तरीका है बिना किसी भावना के, स्थिर और व्यवस्थित ढंग से काम करना।

मैं कोई रोबोट नहीं था। पहाड़ों पर काम करते हुए कई बार मुझे बहुत थकान महसूस हुई। मिशन के दौरान कई बार तो मैंने मौत की दुआ भी की (हालाँकि मुझे कभी इसकी चिंता नहीं हुई, न ही डर लगा), क्योंकि एक कदम आगे बढ़ाना भी इतना मुश्किल लगता था कि उसके बारे में सोचना भी नामुमकिन था।

ये घटनाएँ, हालाँकि दुर्लभ थीं, आमतौर पर पथ-प्रदर्शक बनने या मार्ग-निर्धारण के प्रयासों के दौरान होती थीं, जहाँ बीस घंटे या उससे अधिक समय तक चढ़ाई करने के बाद मैं इतना थक जाता था कि एक-दो सेकंड के लिए भी आँखें बंद करने पर मुझे नींद आ जाती थी। जैसे ही मेरा शरीर ज़मीन पर गिरता, मेरा दिमाग़ अक्सर झटके से जाग जाता, ठीक वैसे ही जैसे उन गिरने वाले सपनों में होता है जो तब आते हैं जब कोई व्यक्ति बहुत जल्दी सो जाता है, उसकी मांसपेशियाँ अचानक शिथिल हो जाती हैं; जिससे एक हिप्नगोगिक झटका लगता है, जिसमें दिमाग़ कल्पना करता है कि शरीर बिस्तर से गिर रहा है या किसी सीढ़ी पर ठोकर खा रहा है। कुछ चोटियों पर, झपकी लेने की इच्छा से लड़ना एक कभी न खत्म होने वाला संघर्ष बन जाता था।

कभी-कभी मौसम की मार मुझ पर भी भारी पड़ती थी। तापमान में अचानक गिरावट के साथ भीषण मौसम में चढ़ाई करने से मेरी हड्डियाँ और हाथ-पैर जलने लगते थे। तूफानी हवाओं से धूल के गुबार उठते थे; वे मेरे सूट से टकराकर वापस उछलते थे, और अजीब बात यह है कि कभी-कभी शानदार मौसम भी उतना ही निराशाजनक साबित होता था। कंचनजंगा पर, साफ और शांत आसमान के नीचे, घायलों को सुरक्षित निकालने के संघर्ष में मेरे शरीर की हर मांसपेशी दर्द से कांप रही थी।

कैंप 4 की ओर बढ़ते हुए हर कदम असहनीय लग रहा था, और बीच-बीच में मेरे मन में यह ख्याल आता था कि काश मेरे ऊपर हिमस्खलन हो जाए और मुझे कितनी राहत मिले। बर्फीले तूफान में गिरने की कल्पना करते हुए, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे हिमस्खलन मुझे और नीचे खींच रहा हो, कोई चट्टान या बर्फ का टुकड़ा मुझे बेहोश कर दे। बेहोश होकर, मैं जल्दी ही दम घुटकर मर जाऊँगा, दर्द से पूरी तरह मुक्त हो जाऊँगा; सारी पीड़ा समाप्त हो जाएगी। शुक्र है, ये सारे विचार बस कुछ पल के लिए ही थे।

मैं कभी भी दूसरों के सामने दर्द का बखान करने वाला या अपने भावनात्मक कष्टों को खुलकर बताने वाला इंसान नहीं रहा हूँ – कम से कम बहुत ज्यादा तो नहीं। इन विचारों को लिखते हुए भी मुझे अजीब सा असुरक्षित महसूस हो रहा है: यह एक संवेदनशील प्रक्रिया है। लेकिन मेरी इस ताकत का बहुत बड़ा हिस्सा सैनिक होने से जुड़ा है, जहाँ पुरुष प्रधान संस्कृति में काम करने वाले लोगों को चुपचाप पीड़ा सहन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

मेरे साथ काम करने वाले जवान शायद ही कभी असुविधा की शिकायत करते थे, या अपनी मनोवैज्ञानिक चुनौतियों पर चर्चा करते थे, और मैंने भी उनका अनुसरण किया, चयन के दौरान अपनी समस्याओं को अकेले ही संभाला। कभी-कभी सुची मुझसे पूछता कि कैसा रहा, और मैं कुछ अस्पष्ट और संक्षिप्त वर्णन ही कर पाता। मुझे लगता है कि यह स्वीकार करना कि दर्द मेरे काम का हिस्सा है, उसकी वास्तविकता को स्वीकार करना होगा, और ऐसा करने से मेरे दर्द से कुचल जाने की संभावना बढ़ जाएगी। यूके स्पेशल फोर्सेज को ऐसे लोगों की ज़रूरत थी जो दर्द को मुस्कुराते हुए सह सकें। मैंने अपने ऊपर आने वाली पीड़ा को सहा और जितना हो सके हँसा।

मेरी जुझारू मानसिकता ने बाद में मुझे डेथ ज़ोन की उथल-पुथल से उबरने में मदद की। एक तो, मैं असुविधा को सकारात्मक रूप से इस्तेमाल करने में सक्षम था, उसे प्रेरणा का स्रोत बना लिया। कमजोरी के उन दुर्लभ क्षणों में, जब मैं कुछ पल के लिए पीछे मुड़ने का सोचता, तो मैं सोचता: हाँ, लेकिन अगर मैं अभी हार मान लूँ तो क्या होगा? बेशक, हार मानने से कुछ ज़रूरी राहत मिल जाती, लेकिन वह राहत अस्थायी साबित होती – हार मानने का लंबे समय तक चलने वाला दर्द बेहद कष्टदायक होता।

इस मिशन के दौरान मेरी सबसे बड़ी चिंता यही थी कि कहीं मैं इसे पूरा न कर पाऊं, चाहे कमजोरी से या मृत्यु से। इसलिए मैंने असफलता के संभावित परिणामों को ही हार न मानने का जरिया बनाया। मैंने उन निराश लोगों की कल्पना की जिन्होंने कभी मेरे प्रोजेक्ट से प्रेरणा ली थी, या उन मज़ाकिया संदेहियों की जो इंटरव्यू में टिप्पणी करेंगे और ऑनलाइन मेरी आलोचना करेंगे। उनके चेहरों ने मुझे जोश से भर दिया। सबसे बढ़कर, मुझे लगा कि चौदह अभियानों को सुरक्षित पूरा करना मेरे लिए बहुत ज़रूरी है। मुझे अपनी कहानी को सच्चाई और पूरी तरह से सुनाना था क्योंकि मेरी सफलता कोई संयोग नहीं थी।

फिर मुझे अपने द्वारा उठाए गए वित्तीय जोखिमों की याद आई। मैंने कल्पना की कि मेरा मिशन पूरा होने के बाद, निकट भविष्य में मेरे माता-पिता एक साथ रह रहे होंगे, और उनके प्रति मेरा प्रेम सकारात्मक कदम उठाने के लिए पर्याप्त था। मेरा हृदय और इरादे शुद्ध थे। मैं नहीं चाहता था कि असफलता उन्हें कलंकित करे, इसलिए जब मैं सबसे निराश होता था, जैसे कि दिनभर के कठिन मार्ग पर चलते हुए, तो मैं अपमान की पीड़ा की कल्पना करके अपने पैरों और पीठ की मांसपेशियों के दर्द को भूल जाता था। मैं जल्द ही भारी बर्फ में या रस्सी के सहारे एक और कदम बढ़ा पाता था, जब तक कि एक कदम दो, दो कदम दस और दस कदम सौ नहीं हो जाते।

मैं हार मानने को बिल्कुल तैयार नहीं था, इसलिए मैंने अपने अजेय रिकॉर्ड को भी याद किया। मैंने गोरखाओं से लेकर स्पेशल फोर्सेज और फिर ऊँचाई वाले इलाकों तक, अपने सभी लक्ष्य हासिल कर लिए हैं। अब हिम्मत हारने का समय नहीं है।

कई मायनों में, यह युद्ध के दौरान इस्तेमाल की गई मेरी एक पुरानी मानसिक तरकीब की गूंज थी। दर्द से निपटने की कोशिश करते समय, मैं अक्सर एक बड़ा, अधिक नियंत्रणीय दर्द पैदा करने का प्रयास करता था, जो पहले वाले दर्द को दबा दे – एक ऐसी पीड़ा की जगह ले ले जो मेरे नियंत्रण से बाहर थी। अगर मेरा बर्गेन बहुत भारी लगता, तो मैं और तेज़ी से दौड़ता। मेरी पीठ

का दर्द जल्द ही मेरे घुटनों के चुभते दर्द के आगे दब जाता था। के2 पर, मैं अपने पेट की ऐंठन को भूलने के लिए तेज़ी से चलता था, लेकिन एक बार मैं दांत के तेज़ दर्द के साथ भी चढ़ाई कर रहा था, जो बैरोडोंटैल्जिया नामक स्थिति का परिणाम था, जिसमें दांतों के बीच के खाली स्थान या फिलिंग में फंसा बैरोमेट्रिक दबाव ऊंचाई के साथ बदल जाता है। (कुछ लोगों ने पर्वतारोहण अभियान के दौरान फिलिंग के निकल जाने की शिकायत की है।)

उस समय पीछे हटने का कोई विकल्प नहीं था; मुझे अपने ग्राहकों के एक समूह का नेतृत्व करना था, इसलिए मैंने एक दूसरे, अधिक असहनीय दर्द का पता लगाने की कोशिश की, जिसे ज़रूरत पड़ने पर मैं बंद कर सकूँ। उस दिन, मैं बिना रुके, पूरे चौबीस घंटे इतनी तेज़ी से चढ़ाई करता रहा कि मेरी साँस फूलने लगी। मेरे फेफड़े जकड़े हुए थे, मेरा पूरा शरीर अशांत था, लेकिन जब तक मैं शिखर पर पहुँचा, मेरे मसूड़ों का दर्द पूरी तरह से गायब हो चुका था।

कभी-कभी कष्ट सहने से मुझे एक अजीब तरह की संतुष्टि मिलती थी। हमेशा अपना 100 प्रतिशत देने की मनोवैज्ञानिक शक्ति, जहाँ केवल यह जानना कि मैं अपना पूरा प्रयास कर रहा हूँ, मुझे थोड़ा और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी: किसी काम को अंत तक पूरा करने पर मुझे गर्व का अनुभव होता था।

मुझे याद है कि मिशन के पहले और दूसरे चरण के दौरान कई बार ऐसा हुआ जब अपने गर्म स्लीपिंग बैग को छोड़ने का ख्याल ही मुझे डरा देता था। मुझे पता था कि बाहर का तापमान असहनीय रूप से ठंडा होगा और चढ़ाई कठिन होगी, लेकिन आराम से अंदर रहने से मिशन धीमा हो जाता – मैं अपनी पूरी ताकत नहीं लगा पाता। सबसे अच्छा विकल्प था तेज़ी से और उद्देश्यपूर्ण तरीके से आगे बढ़ना। बस दरवाज़े की ज़िप खोलकर अपने क्रैम्पोन्स पहनना ही मुझे अगले प्रयास के लिए प्रेरित करता था।

शारीरिक रूप से भले ही यह एक छोटा कदम था, लेकिन अभियान के दौरान यह एक बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक संकेत था क्योंकि इससे इच्छाशक्ति का पता चलता था। ठीक उसी तरह जैसे सुबह उठते ही बिस्तर ठीक करना एक नए दिन की शुरुआत का मानसिक संकेत होता है, वैसे ही बूट और क्रैम्पोन पहनने के लिए किया गया कठिन प्रयास आने वाले काम के लिए एक प्रेरणा था। मिशन के दौरान आत्म-अनुशासन मेरी सबसे बड़ी ताकत थी। मैं हमेशा सबसे पहले उठता था, भले ही ऐसा करना कितना भी भयानक क्यों न लगे, और कई बार तो मुझे लगता था कि काश कोई मुझे प्रोत्साहित कर पाता। लेकिन इसके बजाय, मुझे अपने आश्रय के अपेक्षाकृत आराम से बाहर निकलने के लिए हर समय खुद को प्रेरित करना पड़ता था।

एक बार बाहर निकलने के बाद, मौसम की स्थिति के अनुसार योजना बनाना कहीं अधिक आसान था; पीछे रहकर केवल कंप्यूटर या रेडियो संचार पर निर्भर रहना मौसम की जानकारी प्राप्त करने का एक शॉर्टकट लगता था, और अभियान के दौरान कोई भी शॉर्टकट अपनाने से मेरे आस-पास के सभी लोगों को यह संकेत मिलता कि मैं पूरी तरह से प्रतिबद्ध नहीं हूँ। परिणामस्वरूप, वह एक अधूरा प्रयास चढ़ाई के दौरान अनगिनत अन्य अधूरे प्रयासों का कारण बन सकता था।

यह जानकर कि मैं अपना 100 प्रतिशत दे रहा था, मिशन के लिए धन जुटाने के अभियान में

मुझे बहुत प्रेरणा मिली। मैंने कई ऐसे लोगों से संपर्क किया, जो कागज़ पर तो मदद करने के लिए नामुमकिन लग रहे थे। उदाहरण के लिए, सफल उद्यमी और अरबपति सर रिचर्ड ब्रैनसन: मिशन शुरू होने से पहले मैंने उन्हें एक हस्तलिखित पत्र भेजा, जिसमें मैंने बताया कि मैं कौन हूँ, मैं क्या कर रहा हूँ और क्यों कर रहा हूँ। मैंने यह सोचकर पत्र भेजा कि सर रिचर्ड को शायद हर हफ्ते ऐसे सैकड़ों अनुरोध मिलते होंगे, और मेरा पत्र भी उनके लिए कूड़ेदान में फेंकने जैसा ही होगा। मैंने लिफाफे को मोम से सील किया और स्टेशनरी की दुकान से खरीदे एम्बॉसर से उस पर 'N' का निशान भी लगाया। अंत में कोई दान नहीं मिला, लेकिन यह जानकर कि मैंने हर संभव कोशिश की, मुझे रात को चैन की नींद आई। मैं अपना सब कुछ दांव पर लगा रहा था, इसलिए यह ज़रूरी था कि मुझे कोई पछतावा न हो।

संतुलन बनाए रखना ज़रूरी था, और मैंने हर समय धैर्य बनाए रखने को अपना कर्तव्य बना लिया था। इतने कम समय में इतना कुछ हासिल करने की मेरी चाहत के कारण, बेचैनी हम सभी के लिए एक आसान जाल बन गई थी। समूह तीन महीने से चढ़ाई कर रहा था। शरद ऋतु से पहले अंतिम चरण तक पहुँच पाना लगभग असंभव था, और वह भी तभी जब शिशपंगमा पर चढ़ाई की अनुमति मिल जाए। इस बीच, हमें शांत रहना था। इतनी ऊँचाई पर जल्दबाजी करने या जल्दबाज़ी में फैसले लेने का कोई मतलब नहीं था, क्योंकि हम उन घटनाओं का इंतज़ार कर रहे थे जो हमारे नियंत्रण से बाहर थीं, जैसे कि परमिट के लिए आवेदन। पहाड़ पर बिताया हर पल एक कठिन परीक्षा थी, जहाँ बेचैनी घातक साबित हो सकती थी।

हर दिन हमारे सामने नई चुनौतियाँ आ रही थीं। मैं लगातार एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर चढ़ रहा था, इसलिए अपनी टीम, अपने अभियान और खुद का लगातार आकलन करना ज़रूरी था। क्या हम तैयार थे? शिखर पर चढ़ाई शुरू करने का सबसे अच्छा समय कब है? क्या हमारा शरीर चढ़ाई करने के लिए बहुत थक चुका है?

मैंने एक पल भी बर्बाद नहीं किया। अगर मौसम की वजह से मुझे कहीं रुकना पड़ता, तो मैं शायद ही कभी आराम करता। उदाहरण के तौर पर, बेस कैंप में फंसे रहने के दौरान, मैं आने वाली परिस्थितियों से निपटने के सर्वोत्तम तरीकों पर काम करता, या मिशन के लिए धन जुटाने का काम करता। मैं उन पलों का उपयोग प्रशिक्षण के लिए या आसपास के वातावरण और दृश्यों को निहारकर अपने मन को शांत करने के लिए भी करता था। परिणामस्वरूप, ऊँचाई पर काम करते समय मुझे अक्सर शांति का अनुभव होता था।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैंने प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से काम करना सीखा। अपने सैन्य जीवन के दौरान मुझे लगभग हर तरह के वातावरण में जीवित रहने और सफल होने का प्रशिक्षण दिया गया था, इसलिए पहाड़ों में काम करना मेरे लिए आसान था। लेकिन यही मानसिकता हर पर्वतारोही के लिए उपलब्ध थी। एक नौसिखिया भी बेस कैंप में जीवन की कठोर वास्तविकताओं से बहुत जल्दी अभ्यस्त हो सकता था; कुछ दिनों या कुछ हफ्तों के बाद, पहाड़ की ऊँचाई पर भी जीवित रहना बहुत से लोगों के लिए एक आदत बन जाती है, खासकर अगर उनमें सकारात्मकता हो।

युद्ध ने मुझे व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं के मामले में बहुत ही निम्न स्तर पर ला खड़ा किया था,

जिससे मुझे काफी मदद मिली। जैसा कि मैंने सुची को परियोजना के शुरुआती चरणों के लिए वित्तपोषण करते समय बताया था: मैं महीनों तक सिर्फ एक तंबू में रह सकता था और फिर भी परिवार के लिए पैसे कमाने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लेता। मैं पहले काम के सिलसिले में जंगल, पहाड़ और रेगिस्तानी इलाकों में रह चुका था। इसके अलावा कुछ भी विलासिता जैसा लगता था। मैं ऊँचाई वाले क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए पूरी तरह तैयार था। जैसे ही हम के2 से नीचे उतरे और ब्रॉड पीक के लिए खुद को तैयार किया, मेरा मन दृढ़ महसूस कर रहा था। दस चोटियों पर चढ़ाई पूरी हो चुकी थी। असुविधा मेरे लिए ऊर्जा का स्रोत थी।

*

दूसरे चरण के समाप्त होते ही, मृत्यु का डर एक बार फिर मुझ पर हावी हो गया। K2 के बेस कैंप में तीन घंटे आराम करने और मिंगमा और हालुंग से मिलने के बाद, हम ब्रॉड पीक की ओर बढ़े, जो समुद्र तल से 8,051 मीटर की ऊंचाई पर स्थित दुनिया का बारहवां सबसे ऊंचा पर्वत है। मुझ पर दबाव बढ़ता जा रहा था। मैंने दूसरे चरण के अंतिम पर्वत पर एक ही दिन में चढ़ाई पूरी करने की उम्मीद की थी, लेकिन चुनौतियां बढ़ती ही जा रही थीं। हम शारीरिक और भावनात्मक रूप से पूरी तरह थक चुके थे, और मुझे अभी भी अस्वस्थता महसूस हो रही थी। इससे भी बुरा यह था कि K2 पर मेरा सारा सामान भीग गया था। बेस कैंप में तैयारी करते समय, मैंने अपने उपकरणों को जितना हो सके हवा में सुखाने की कोशिश की, लेकिन इतने कम समय में अपने भारी शिखर सूट को सुखाना संभव नहीं था।

जब हम कैंप 1 के लिए निकले, तो मेरी पैंट और कोट किसी गीले, चिपचिपे भालू के आलिंगन जैसे लग रहे थे। इतनी अधिक ऊंचाई पर यह अप्रिय अनुभूति खतरनाक साबित हो सकती थी, खासकर अगर मेरे सूट के अंदर की नमी बर्फ में बदल जाती। मैं जल्दी ही जम जाता, इसलिए कैंप 1 पर मैंने तेज धूप का फायदा उठाया और अपने सामान को जितना हो सके सुखाया। ब्रॉड पीक को जल्द से जल्द फतह करना कितना जरूरी है, यह बात सबको समझ में आने लगी थी। लेकिन पहाड़ों के देवताओं की योजना कुछ और ही थी।

ब्रॉड पीक बर्फ से ढका हुआ था; हमारे पहुंचने से कुछ ही समय पहले भारी बर्फबारी हुई थी, जिससे सभी फिक्स्ड लाइनें दब गई थीं। हालांकि कुछ पर्वतारोहियों ने, जो कुछ दिन पहले कैंप 4 तक पहुंच गए थे, एक हल्का रास्ता बनाया था, लेकिन उनके पदचिह्न बर्फ में दब गए थे। हमें शिखर तक पहुंचने के लिए खुद रास्ता बनाना पड़ा। भारी मेहनत का बोझ मिंगमा, हालुंग दोरची शेरपा और मुझ पर था, और जैसे ही हम बर्फ में आगे बढ़े, मेरा शरीर इस भार को सहन करने में असमर्थ लग रहा था। न केवल शिखर तक जाने वाली रस्सी बर्फ में दबी हुई थी, जिसे हमें कई फीट बर्फ में से खींचकर ऊपर लाना पड़ रहा था, बल्कि आगे बढ़ने के लिए हमें बार-बार अपने घुटनों को ऊपर उठाना पड़ रहा था।

मेरी सांसें फूल रही थीं। मेरे अंदर जो ऊर्जा का भंडार था, वह खत्म हो चुका था और पेट में अभी भी नाली जाम होने जैसी गड़गड़ाहट हो रही थी। बीच-बीच में मैं पेट के दर्द को सहने की कोशिश करता, जब तक कि उसे नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन न हो जाए। आखिरकार कुदरत

अपना काम कर रही थी।

'अरे यार, नहीं', मैंने सोचा और शौच करने के लिए बेचैनी से इधर-उधर देखने लगा। लेकिन मेरी मौजूदा स्थिति बहुत ही नाजुक थी और इतनी ऊंचाई पर शौच करना आसान नहीं था। शून्य से नीचे के तापमान में, रस्सी के साथ या बिना रस्सी के, एक खड़ी ढलान पर खड़े होकर, शिखर पर चढ़ने वाले सूट की ज़िप और वेल्क्रो से जूझना एक अजीब स्थिति थी। मैं खुद को असुरक्षित पाता और सबसे खतरनाक परिस्थितियों में गिरने की संभावना थी, इसलिए मैं दर्द में आगे बढ़ता रहा, जब तक कि मुझे अपने ऊपर लगभग 200 मीटर की दूरी पर पहाड़ समतल होता हुआ दिखाई नहीं दिया।

'यही मेरा मौका है,' मैंने सोचा, और मैं तेजी से आगे बढ़ा, मेरे फेफड़े जल रहे थे।

चढ़ाई कभी खत्म न होने वाली लग रही थी, लेकिन मेरे पैरों और सीने का दर्द मेरे पेट की बेचैनी पर हावी हो गया, आखिरकार मुझे एक ऐसी जगह मिल गई जहाँ मैं बिना ज़्यादा मेहनत किए खुद को संभाल सकता था। मैंने अपने सूट की ज़िप खोली और कुछ बेहद अप्रिय निजी काम निपटाए।

शारीरिक रूप से मैं लगभग हार मान चुका था। यह महसूस करते हुए कि पाकिस्तान में 8,000 मीटर से अधिक ऊँचाई वाली चोटियों को रिकॉर्ड समय में पार करना संभव है, मैंने पर्वतारोहण की मानसिकता को पूरी तरह से अपना लिया। दृढ़ निश्चय के साथ, मैंने और भी अधिक मेहनत की। पेट में हो रही ऐंठन को दबाते हुए, मैं एक-एक करके, पूरी ताकत से शिखर की ओर बढ़ता रहा। जब हम 7,850 मीटर की ऊँचाई पर पहुँचे, तब तक मेरी मेहनत रंग ला चुकी थी और मेरी पीठ और टांगें जवाब दे रही थीं। पेट की तकलीफ भले ही कम हो रही थी, लेकिन मैं पूरी तरह से थक चुका था। बर्फ में धंसते हुए, मेरी मांसपेशियों और हड्डियों में असहनीय दर्द होने लगा।

जब भी मुझे खांसी आती, तो जीभ पर खून का स्वाद आ जाता, जो इस बात का संकेत था कि ऊँचाई का असर मेरे शरीर पर पड़ रहा था। ब्रॉड पीक ने मुझे थका दिया था, लेकिन हमारे मनोबल की स्थिति नाजुक थी, इसलिए एक स्पष्ट कार्य योजना बनाना ही समझदारी भरा कदम लगा; स्थिति को स्पष्ट रूप से न समझाना, चाहे वह कितना भी सीधा क्यों न लगे, कभी-कभी टीम को प्राथमिकताओं या अपेक्षाओं के गलत निर्धारण की ओर ले जा सकता है। मुख्य बात यह थी: ब्रॉड पीक की चोटी तक का रास्ता बेहद कठिन था और इसके लिए हमें रिजलाइन की ओर एक खड़ी ढलान वाली घाटी से होकर गुजरना था। वहाँ से हम असली चोटी तक पहुँच सकते थे और सूर्योदय के समय शिखर पर पहुँच सकते थे।

मैंने कहा, 'दोस्तों, हम सब बुरी तरह फंस गए हैं। यहां की परिस्थितियां बहुत कठिन हैं, इसलिए हमें थोड़ा आराम करना चाहिए, फिर से संगठित होना चाहिए और उसके बाद शिखर तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।'

मेरी हालत को देखते हुए, यह मिशन के दूसरे चरण की सबसे कठिन घटनाओं में से एक होने वाली थी, लेकिन कुछ घंटों बाद ही हम ऑक्सीजन मास्क लगाए फिर से आगे बढ़ रहे थे। लगभग 8,000 मीटर की ऊंचाई पर चढ़ने के बाद, मेरी सांसें और भी तेज़ चलने लगीं, और जब

मैंने मिंगमा और हालुंग से बात की, तो उन्होंने पुष्टि की कि हां, काम का बोझ सामान्य से भी अधिक चुनौतीपूर्ण लग रहा था; हालुंग कुछ समय से हमारे पीछे चल रहा था और चढ़ाई के दौरान हमारी मदद नहीं कर पाया था।

पहले तो मैंने हमारी सामूहिक सुस्ती का कारण के2 पर्वत पर चढ़ाई के शारीरिक दुष्परिणामों को माना, लेकिन ऊर्जा में गिरावट चिंताजनक थी और जब मैंने अपने ऑक्सीजन सिलेंडरों का वजन देखा, तो हमारी धीमी गति की भयावह सच्चाई सामने आ गई। धिक्कार है, हमारे पास हवा ही नहीं बची थी! इससे भी बुरी बात यह थी कि फिक्स्ड लाइनें खत्म हो चुकी थीं, इसलिए हमें ब्रॉड पीक की चोटी तक अंतिम पचास मीटर या उससे कुछ अधिक दूरी को जितनी जल्दी हो सके, अल्पाइन शैली में तय करना था। मेरे सामने जीवन-मरण का एक ऐसा निर्णय था जो युद्ध के दौरान अक्सर सामने आता है, जहाँ मूल्यांकन और निर्णय लेना ही निर्णायक साबित होता है।

पहला विकल्प: कैंप 3 में वापस लौटना, जहां हम कुछ अतिरिक्त ऑक्सीजन इकट्ठा कर सकते थे और एक दिन बाद शिखर पर चढ़ाई शुरू कर सकते थे, हालांकि खराब मौसम का एक सिस्टम तेजी से आने वाला था।

दूसरा विकल्प: काम को पूरा करना, बिना किसी स्पष्ट मार्ग के, आगे बढ़ने के लिए हमारे जीपीएस सिस्टम पर भरोसा करते हुए, साथ ही पहाड़ से गिरने के खतरनाक खतरे से खुद को बचाना।

तो फिर दूसरा विकल्प ही सही था।

हम पहाड़ की चोटी पर घूमते हुए, हर कदम को सुरक्षित रखते हुए, ब्रॉड पीक के सबसे ऊंचे बिंदु की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन जैसे ही हम वहां पहुंचे, सामने बादलों में से एक और, उससे भी ऊँचा शिखर दिखाई दिया। और फिर एक और। अत्यधिक थकावट के बीच भावनात्मक उतार-चढ़ाव को संभालना ही काफी चुनौतीपूर्ण था, लेकिन जीपीएस के सहारे चलना जल्द ही नामुमकिन हो गया।

हालांकि मौसम का सबसे बुरा दौर अभी आना बाकी था, फिर भी कड़ाके की ठंड और तेज़ हवा चल रही थी; दृश्यता बहुत कम थी, हम घने बादलों से घिरे हुए थे और मुश्किल से अपने सामने देख पा रहे थे। चूंकि हममें से किसी ने भी पहले ब्रॉड पीक पर चढ़ाई नहीं की थी, इसलिए हमें पूरी तरह से पता नहीं था कि किस दिशा में जाना है। (और ठीक इन्हीं कारणों से पर्वतारोही अनुभवी गाइडों के साथ काम करना पसंद करते हैं।) बेस कैंप, काठमांडू और लंदन में मौजूद अपने रेडियो संपर्कों से संपर्क करके ही, जो सभी हमारी स्थिति का पता लगाने के लिए दूसरे जीपीएस से जुड़े हुए थे, हम अपनी सटीक स्थिति का पता लगा पाए। बादलों में से आती आवाज़ें हमें बाएँ, दाएँ या आगे बढ़ने का संकेत दे रही थीं।

काम में शायद ही कभी कोई राहत मिली; हम अपनी चरम सीमा पर थे। अत्यधिक थकान ने हम सभी को जकड़ लिया था, और जैसे-जैसे हम दिशाहीन होते जा रहे थे, हमारी जान खतरे में पड़ गई थी। पूरी संभावना थी कि हममें से कोई एक घातक गलती कर बैठे या कोई मूर्खतापूर्ण निर्णय ले ले। उन भ्रमित पर्वतारोहियों की तरह, जिनके बारे में मैंने सुना था, जो मृत्यु क्षेत्र में मतिभ्रम या प्रलाप के शिकार हो जाते हैं, हम भी खतरे में थे। एक समय, मैंने नीचे देखा और

महसूस किया कि हम काफी देर से अल्पाइन शैली में चढ़ाई कर रहे थे और सुरक्षा रस्सी FN14 से जुड़ना भूल गए थे - जो उच्च ऊंचाई पर स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

एक-दूसरे से अलग होकर, मुझे पता था कि अगर मिंगमा, हालुंग या मैं फिसल गए, तो गिरने से रोकना नामुमकिन होगा – पहाड़ से नीचे एक गहरी खाई में भयानक रूप से गिरना तय था; लेकिन अगर हम सब एक-दूसरे से जुड़े रहते, तो समूह का संयुक्त वजन और प्रयास ब्रेक लगाने में मदद कर सकता था। हमारी यह चूक अत्यधिक थकान का नतीजा थी। मैंने एक रस्सी निकाली और सबको एक साथ बांध दिया।

शिखर पर चढ़ाई के दौरान मैं कम से कम सामान और आपूर्ति लेकर चलना पसंद करता था, जबकि मिंगमा अक्सर एक-दो विलासिता की चीजें साथ लेकर चलता था। थोड़े आराम के दौरान, मैंने देखा कि वह अपने बैग में कुछ ढूंढ रहा था, तभी उसे कोरियाई कॉफी का एक पैकेट मिला। पैकेट फाड़कर उसने पिसी हुई कॉफी मुंह में डाली और इशारा किया कि हम सब भी ऐसा ही करें। कॉफी कड़वी और चिपचिपी थी, तीखे स्वाद से हमें खांसी आ गई, लेकिन कैफीन का असर जल्द ही हमारे शरीर में दिखने लगा।

कुछ ही देर में, दूर से ब्रॉड पीक का शिखर ध्वज दिखाई देने लगा। हम वहाँ बस थोड़ी देर ही रुके, इस बात पर उदास होकर हँस रहे थे कि पहाड़ ने हमें लगभग मार ही डाला था, और बस कुछ तस्वीरें खींचकर वापस नीचे उतर गए। खुशी नाम की कोई चीज नहीं थी। मैं नीचे उतरने के लिए बेताब था और टीम गुस्से में थी। कई बार तो ऐसा लगा जैसे ब्रॉड पीक ने हमें हरा दिया हो, जबकि हम मुश्किल परिस्थितियों में शिखर तक पहुँच गए थे।

मिंगमा और हालुंग ने कैंप 3 में कुछ घंटों के लिए सोने का फैसला किया, लेकिन घर जाने की जल्दी में मैं आगे बढ़ता रहा और घने बादलों के बीच भटक गया। बहुत बड़ी गलती। मैं जल्द ही भ्रमित हो गया, ब्रॉड पीक की तलहटी तक ले जाने वाली निश्चित रस्सी को ढूंढ नहीं पा रहा था। एक समय तो मैं एक गहरी खाई के किनारे के बेहद करीब पहुँच गया, जो कई सौ फीट गहरी थी। मैंने अपनी किस्मत और नासमझी को कोसा। 'ये सब क्यों करते हो?' मैंने सोचा। मेरा गीला शिखर सूट जम रहा था; मुझे ठंड लग रही थी और आगे के इलाके पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था, और मैं वास्तव में सोना चाहता था। अचानक, हार मान लेना एक उचित विकल्प लगने लगा।

अगर मैं यहीं मर जाऊं तो यह सारा दर्द खत्म हो जाएगा।

फिर वही हुआ। मैं इस प्रयास से अभिभूत हो रहा था, लेकिन हारा नहीं था। किसी भी सैन्य अभियान से पहले, विफलता का एक निश्चित संकेत यह होता है कि हार निश्चित मानी जाए। सफलता का एकमात्र रास्ता सकारात्मक सोच ही है।

मुझे अपने पुनरुद्धार की शुरुआत करनी होगी।

अपने विचारों को बदलते हुए, मुझे प्रेरणा मिली: मैंने खुद को एक साल बाद की स्थिति में देखा, जब मैं अंत में असफल होने पर क्रोधित हो रही थी। मैंने उन लोगों के बारे में सोचा जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया था, उन दोस्तों के बारे में जो मुझे रास्ते में मिले थे - और सबसे बढ़कर मैंने सुची और उसके परिवार के बारे में सोचा। उन्हें मेरी वापसी की ज़रूरत थी। अंत में, मैंने अपनी

मंज़िल की कल्पना की, शिशपंगमा पर्वत पर चढ़ाई और काठमांडू में मेरा स्वागत, जब दुनिया को मेरी सफलता के बारे में पता चलेगा। निराशा का बादल छंटने लगा था।

बस इसे कर दिखाओ। यहाँ हार नहीं मान सकते।

जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ता गया, मुझे यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि गड़बड़ी के चलते मैं कहीं न कहीं अपने पहले वाले रास्ते से भटक गया था। हमारी चढ़ाई ज़्यादातर बादलों में और रात के अंधेरे में हुई थी, और हमने कैंप 4 तक पहुँचने के लिए ज़्यादातर फिक्स्ड लाइनों का अनुसरण किया था; हमें परेशानी तभी हुई जब हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, और जब सैटेलाइट तकनीक बहुत ज़्यादा दिक्कत देने लगी, तब रेडियो संचार ने हमें शिखर तक पहुँचने में मदद की।

इतनी घनी बादलों में, थकावट के बावजूद, सिर्फ देखकर नीचे उतरने की सोचना एक गलती थी। मुझे किसी तरह पहाड़ी की चोटी से दोबारा जुड़ना था – ऐसा करके, मैं शायद फिक्स्ड लाइन का पता लगा सकूँ, और वहाँ से मैं ऑटोपायलट मोड में जा सकूँ। मुझे बस किसी दृश्य संकेत की तलाश थी। मैंने क्षितिज पर बर्फ में पैरों के निशान ढूंढे, और वहाँ, मुझसे लगभग सौ मीटर ऊपर, एक मुश्किल से दिखाई देने वाला रास्ता था, जो हमारे पहले बनाए गए रास्ते के निशानों से बना था, और उन निशानों के पीछे एक रस्सी बंधी हुई थी।

मैं मुड़ा, अपनी पूरी ताकत लगाकर ऊपर गया, फिर नीचे आया, इस पूरे रास्ते में सफलता के इनाम और असफलता के क्रोध की कल्पना करता रहा।

जन परियोजना

ब्रॉड पीक से नेपाल में अपने घर लौटते समय, मेरे रास्ते में आने वाली बाधाएँ बढ़ती ही जा रही थीं, और मैंने उन्हें एक-एक करके दूर करने का फैसला किया। मेरी सबसे बड़ी समस्या शिशपंगमा थी। उस पर चढ़ाई के लिए आवश्यक कागजी कार्रवाई अभी भी चीनी और तिब्बती अधिकारियों द्वारा रोकी हुई थी, जिससे मिशन का कार्यक्रम पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया था। समाधान खोजने के लिए मुझे तेजी से काम करना पड़ा, लेकिन हार मानने की अनिच्छा के बावजूद, अब एक वैकल्पिक योजना पर विचार करने का समय था, कोई ऐसा विकल्प जो चौदहवीं चोटी पर चढ़ाई के लिए आवश्यक प्रयास और लगन को दोहरा सके।

इस चुनौती की विशालता को देखते हुए, मैंने सोचा कि क्या मैं किसी और 8,000 मीटर से ऊँची चोटी पर दोबारा चढ़ सकता हूँ – शायद एवरेस्ट, अन्नपूर्णा या के2। अंत में, मैंने तय किया कि अगर सबसे बुरा ही हुआ, तो मुझे धौलागिरी पर दोबारा चढ़ाई करनी चाहिए। चढ़ाई बेहद कठिन थी; यह मेरा पहला 8,000 मीटर का अभियान भी था, और मैंने एवरेस्ट को एक बोनस मिशन के रूप में भी शामिल कर लिया था। सात महीनों में पंद्रह खतरनाक चोटियों पर चढ़ना मेरा मूल लक्ष्य नहीं था, लेकिन इससे आने वाले हफ्तों और महीनों में मेरी उपलब्धियों पर सवाल उठाने वालों को चुप कराने में मदद मिल सकती है।

कई विश्व रिकॉर्ड टूट चुके थे: मैंने पाकिस्तान के 8,000 मीटर से ऊंचे पहाड़ों को 23 दिनों में फतह कर लिया था; दुनिया के पांच सबसे ऊंचे पहाड़ों (एवरेस्ट, के2, कंचनजंगा, ल्होत्से, मकालू) पर सत्तर दिनों में चढ़ाई कर ली थी (जबकि मैंने शुरू में इसे अस्सी दिनों में करने की योजना बनाई थी); लेकिन मैं समझता था कि अंतिम लक्ष्य को पूरा करने में विफलता के परिणामस्वरूप किसी न किसी स्तर पर विरोध का सामना करना पड़ेगा।

शिशपंगमा पर्वत पर चढ़ने की मेरी दूसरी योजना तिब्बत में प्रवेश करने का एक वैकल्पिक मार्ग खोजना था। यदि किसी गुप्त मार्ग से सीमा पार करना संभव होता, तो अधिकारियों को सचेत किए बिना शिशपंगमा पर चढ़ाई करना संभव हो सकता था। मैंने नक्शा देखा। नेपाली सीमा से तिब्बत में ट्रेकिंग करके शिशपंगमा तक पहुँचना निश्चित रूप से एक विकल्प था, लेकिन यह योजना जोखिम भरी थी।

सबसे पहले, अधिकारियों को यकीन था कि वे सोशल मीडिया पर मेरी गतिविधियों पर नज़र रख रहे होंगे। साथ ही, मेरा प्रोजेक्ट काफी चर्चित हो चुका था और हर कोई इस बात से भली-

भांति वाकिफ था कि मेरे पास सीमित समय बचा है। सीमा गश्ती दल मेरे आने के लिए तैयार थे और मैं पकड़े जाने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था, न ही मैं कोई कूटनीतिक विवाद खड़ा करना चाहता था। चीनी क्षेत्र में घुसपैठ करने वाले एक पूर्व स्पेशल फोर्सेज ऑपरेटिव से कुछ तीखे सवाल पूछे जाने की संभावना थी। वहीं, मेरे साथियों के लिए भी खतरा उतना ही अधिक था; मैं अपने मकसद के लिए उनकी सुरक्षा को खतरे में नहीं डालना चाहता था। शिशपंगमा में घुसपैठ करना एक ऐसा काम था जिसे मुझे अकेले ही करना था।

अंततः, मैंने इस विचार को कुछ समय के लिए टाल दिया। मेरी सबसे बड़ी उम्मीद यही थी कि मैं चीनी और तिब्बती अधिकारियों को अपना निर्णय बदलने के लिए मना सकूँ। अगर मैं थोड़ा राजनीतिक दबाव डाल पाता, तो शायद मुझे परमिट मिल जाता, लेकिन मैं जानता था कि ब्रिटेन के राजनयिक चैनलों का इस्तेमाल करना व्यर्थ था – दोनों देशों के बीच संबंध बहुत ही तनावपूर्ण थे। मेरे लिए नेपाल के माध्यम से अधिकारियों से संपर्क करना बेहतर था; नेपाल की सीमा चीन से लगती है और दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध थे।

इसके अलावा, मेरा मिशन किसी एक राष्ट्र या किसी एक संस्था का प्रतिनिधित्व करना नहीं था। मैं ग्रेट ब्रिटेन या नेपाल की उपलब्धियों को बढ़ावा देने के लिए 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर नहीं चढ़ रहा था। न ही मैं यूके स्पेशल फोर्सेज या गोरखा रेजिमेंट की प्रतिष्ठा बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। (हालाँकि इसका कुछ अप्रत्यक्ष प्रभाव अवश्य पड़ा।) मेरे लक्ष्य संस्कृति, जाति, रेजिमेंट या देश से कहीं अधिक व्यापक थे। मैं मानव जाति के प्रयासों का प्रतिनिधित्व कर रहा था।

मैंने नेपाल में अपने दोस्तों को फोन किया और संपर्क साधा; मैंने अपने सभी परिचितों से संपर्क किया, जिनके पास प्रभाव था, ताकि मदद करने की क्षमता रखने वाले किसी भी व्यक्ति से मुलाकात का इंतजाम हो सके। मेरी राहत के लिए, गृह सचिव, पर्यटन मंत्री, पर्यटन बोर्ड, नेपाली पर्वतारोहण संघ और रक्षा मंत्रालय सहित कई सरकारी मंत्रियों से मुलाकात तय हो गई, और अंततः मुझे नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल से मिलने का मौका मिला – एक ऐसे राजनेता जिनके चीनी सरकार से काफी अच्छे संबंध थे। यही मेरा मौका था।

जब मुझे उनके कार्यालय में ले जाया गया, तो मैं उनके कद से बिल्कुल भी विचलित या अभिभूत नहीं हुआ। मेरे पिछले करियर ने मुझे उच्च पदस्थ लोगों से मिलने के तौर-तरीकों से अवगत कराया था; मैं सम्मान के सूक्ष्म पहलुओं, शिष्टता के महत्व और सांस्कृतिक एकीकरण को समझता था। मैं लोगों के समय की कीमत भी जानता था। श्री कुमार एक व्यस्त व्यक्ति थे और परियोजना को पूरा करने के अपने उद्देश्यों को प्रस्तुत करने के लिए मेरे पास सीमित समय था। मुझे लगा कि उनके पास फालतू की बातों या औपचारिकताओं के लिए ज्यादा समय नहीं था - लेकिन मेरे पास भी नहीं था।

मैंने चौदह अभियानों के पीछे अपने उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन किया, सबसे पहले मैंने श्री कुमार को नेपाली पर्वतारोहण समुदाय की प्रतिष्ठा बढ़ाने में अपने काम के बारे में बताया।

मैंने कहा, 'मैं उन्हें फिर से मानचित्र पर लाना चाहता था।'

फिर मैंने 8,000 मीटर ऊंची चोटियों को प्रभावित करने वाले कुछ पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में

जागरूकता बढ़ाने के अपने प्रयासों के बारे में बताया।

'क्या यह एक ऐसा अभियान नहीं है जिसके पीछे नेपाली लोग एकजुट हो सकते हैं?'

श्री कुमार ने चुपचाप सिर हिलाया। क्या यह सब ठीक चल रहा था या बुरा? मैं बता नहीं सकता था।

लेकिन मैं यह भी चाहती हूं कि यह कहानी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक बने, चाहे वे कहीं से भी आए हों। यह प्रयास मानवता के लिए है। इसीलिए मैं इस कहानी को आगे बढ़ाने के लिए हर दिन इतनी मेहनत कर रही हूं। श्री कुमार, मैं कल्पना की शक्ति को साबित करना चाहती हूं। लोगों ने मेरा मजाक उड़ाया है, मुझ पर हंसे हैं, लेकिन मैं अब भी दृढ़ हूं। अगर मुझे चीन से परमिट मिल जाता है, तो मुझे अपना काम पूरा करने से कोई नहीं रोक पाएगा।

श्री कुमार अब मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने कहा, 'निम्स, मुझे कुछ फोन करने दीजिए। मैं यह वादा नहीं कर सकता कि चीनी आपको आवश्यक कागजात दे देंगे, लेकिन मैं देखता हूं कि मैं क्या कर सकता हूं।'

हमने हाथ मिलाया; मुझे सकारात्मक महसूस हुआ। मुझे आभास था कि अगर नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री जैसी शख्सियत मेरे अभियान का समर्थन करती है, तो तिब्बती और चीनी अधिकारी अपना रवैया नरम कर सकते हैं। मुझे हर तरह के सकारात्मक प्रचार की ज़रूरत थी। उस समय, पर्वतारोहण समुदाय या मेरे सोशल मीडिया दायरे से बाहर बहुत कम लोग मेरी अब तक की उपलब्धियों पर ध्यान दे रहे थे; अखबारों और पत्रिकाओं, रेडियो या टीवी कार्यक्रमों के लिहाज़ से, मेरे प्रयासों को बहुत कम प्रचार मिला था, जो निराशाजनक था।

अगर मैं अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन या फ्रांस का पर्वतारोही होता, तो पूरी दुनिया के हर मीडिया संस्थान ने मेरे प्रयास पर ध्यान दिया होता। मैं यथार्थवादी भी था। सबसे ज़्यादा वैश्विक पहुँच वाली मीडिया कंपनियाँ मुख्य रूप से पश्चिमी निवेशकों के स्वामित्व में थीं। चितवन के एक पर्वतारोही की रिकॉर्ड तोड़ समय में दुनिया की सबसे ऊँची चोटियों पर चढ़ने की कोशिश की कहानी का उतना प्रभाव नहीं होता जितना न्यूयॉर्क, मैनचेस्टर या पेरिस के किसी पर्वतारोही की कहानी का होता है। हालाँकि मैं तकनीकी रूप से ब्रिटिश नागरिक था, लेकिन मेरी राष्ट्रीयता ने मुझे लगभग हर किसी की नज़र से दूर रखा था।

हालांकि, निचले स्तर पर, मिशन को अभी भी गति मिल रही थी। मेरा सोशल मीडिया प्रोफाइल दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था, और मेरी तस्वीरों और वीडियो क्लिप पर अधिक लोग टिप्पणी कर रहे थे, खासकर मई में हिलेरी स्टेप की मेरी नाटकीय तस्वीर वायरल होने के बाद। (हालांकि, निराशाजनक रूप से, कई मीडिया आउटलेट्स जिन्होंने चौदह 8,000 मीटर ऊंची चोटियों पर चढ़ने के मेरे प्रयासों को नजरअंदाज किया था, उन्होंने तस्वीर का उपयोग करते समय मेरे काम का श्रेय देना जानबूझकर भूल गए थे।)

सेना छोड़ने के बाद मुझे जनसंपर्क का कोई अनुभव नहीं था, फिर भी मैंने किसी तरह लाखों फॉलोअर्स जुटाने की कला विकसित कर ली थी, जो व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए आश्चर्यजनक था, लेकिन इससे बड़े अभियानों के लिए पर्याप्त धनराशि नहीं मिल पाई। फिर भी मुझे जो संदेश मिले, वे प्रेरणादायक थे: बच्चों ने मुझे मेल करके बताया कि उन्होंने अब तक के सफल अभियानों

पर एक कहानी लिखी है और मेरी टीम की गतिविधियों के चित्र बनाए हैं। कुछ अन्य लोगों ने मेरी तस्वीरों पर टिप्पणी की, या स्कूल में पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का वादा किया। एक-दो और दान भी धीरे-धीरे प्राप्त हुए।

मेरा प्रोजेक्ट तेजी से जनता का प्रोजेक्ट बनता जा रहा था।

*

कम से कम समय तो मेरे पक्ष में था। मेरे पास अंतिम चरण के लिए धन जुटाने के लिए पूरा अगस्त महीना था और मैंने पर्वतारोहण और हाइकिंग उपकरण विशेषज्ञ कंपनी ऑस्प्रे और आईटी कंपनी सिल्को के साथ एक ब्रांडिंग समझौता कर लिया। इन दोनों ने मिलकर तीसरे चरण के लगभग 75 प्रतिशत रसद खर्च को वहन किया, और मेरे काम के बारे में जागरूकता अभियान के दौरान यूके में आयोजित नेपाली मेले में जाकर कुछ अतिरिक्त धनराशि जुटाई गई। यह एक बड़ी उपलब्धि थी। मेला यूके में रहने वाले नेपाली समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक उत्सव था, और 2019 का मेला अगस्त में केम्पटन पार्क में आयोजित किया जा रहा था।

लेकिन जब मेले में शामिल होने का प्रस्ताव आया तो मेरा दिल बैठ गया। मेले में काम करने के लिए मुझे एक स्टॉल से दूसरे स्टॉल पर जाना पड़ता, हर स्टॉल नेपाली संस्कृति के एक अलग पहलू को प्रदर्शित करता, और इस दौरान मुझे कई प्रभावशाली लोगों से मिलना पड़ता। फिर मुझे पैसे मांगने पड़ते। शर्मिंदगी का ठिकाना नहीं था: मैंने अपनी जिंदगी में कभी भीख नहीं मांगी थी और यह सोचकर ही मेरा स्वाभिमान ठेस पहुंची। मैं एक उच्च कोटि का सैनिक था और लोगों से मिलकर मदद और चंदा मांगना मुझे बहुत अजीब लग रहा था।

मैंने उदास मन से सोचा, 'यह मेरे लिए नहीं है।'

लेकिन मेरे पास और क्या विकल्प था? मेरी इस यात्रा का विचार ही शुरू से मेरे लिए बिल्कुल नया और अपरिचित था। इसलिए यह स्वाभाविक था कि वित्तपोषण प्रक्रिया भी मुझे बिल्कुल नई और अपरिचित लगे। मैंने अपना रवैया बदल लिया।

हाँ, निम्स, तुम्हें शर्म आ रही है। लेकिन ये तुम्हारा अहंकार बोल रहा है, जिसका कोई महत्व नहीं। इसके अंतिम परिणाम के बारे में सोचो। ये तुम्हारे भावनाओं के बारे में नहीं है। ये पूरी मानव जाति के लिए है।

मैं स्टॉलों के बीच घूमता रहा, लोगों से हाथ मिलाता रहा, संपर्क बनाता रहा और 5, 10 और 15 पाउंड के दान लेता रहा, जब तक कि मैं थक नहीं गया। मेरा स्वाभिमान थोड़ा आहत हुआ, लेकिन इस बात से राहत भी मिली कि मैंने अपना शत प्रतिशत दिया, जैसा कि मैंने सर रिचर्ड ब्रैनसन और अन्य व्यापारियों को लिखे पत्रों में किया था, भले ही किसी ने जवाब नहीं दिया था।

हालांकि, मुझ पर दबाव बढ़ता जा रहा था। साल के अधिकांश समय मैंने बुकिंग एजेंसियों और पर्वतारोहण संघों से निपटते हुए परियोजना का प्रबंधन किया था, लेकिन 2019 की गर्मियों में मुझे चीनी और तिब्बती अधिकारियों की भी चिंता करनी पड़ी। तीन अंतिम चढ़ाइयों - मनास्लू, चो ओयु और शिशपंगमा - के लिए रसद कार्यक्रम की योजना बनाना मेरे लिए एक बेहद चुनौतीपूर्ण अनुभव था। हालांकि सुची ने कुछ प्रशासनिक कार्यों में मदद की, लेकिन मैं लगभग

अकेले ही काम कर रहा था। कई बार, कागजी कार्रवाई और योजना बनाना उतना ही तनावपूर्ण लगता था जितना ब्रॉड पीक पर चढ़ाई करना या कंचनजंगा पर फंसे लोगों को बचाने में बिताई गई रात। मैं भावनात्मक रूप से पूरी तरह थक चुका था।

फिर मां दोबारा बीमार पड़ गईं।

उनकी हालत बिगड़ती जा रही थी। पूरे मिशन के दौरान, मैंने उनकी हिम्मत को प्रेरणा के रूप में इस्तेमाल किया था; मुश्किल समय में उनकी हिम्मत ने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया था और मैं उन्हें दिल में बसाए चौदह पहाड़ों को पार करने के लिए दृढ़ संकल्पित था। लेकिन मैं एक असंभव स्थिति में फंस गया था। चौदह 8,000 मीटर से ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ने के बाद, मैं अन्य पैसे कमाने वाले प्रोजेक्ट्स पर काम करने के लिए स्वतंत्र हो जाता, जिनसे मैं अपने माता-पिता को काठमांडू में एक साथ ला सकूं। अब समय मेरे खिलाफ था; यह बात हर हफ्ते और स्पष्ट होती जा रही थी। माँ को एक बार फिर अस्पताल में भर्ती कराया गया था, और डॉक्टर के अनुसार, उनके एक और दिल के ऑपरेशन से बचने की संभावना बहुत कम थी।

सर्जन ने कहा, 'उनकी उम्र में इस प्रक्रिया से गुजरने वाले 99 प्रतिशत लोगों की मौत हो गई है।'

उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया, और सबसे बुरे की आशंका से मैंने अपने परिवार को नेपाल बुलाया। उस समय मेरे भाई इंग्लैंड में रह रहे थे; मेरी बहन अनीता ऑस्ट्रेलिया से इतनी दूर से आईं। इस बात की पूरी संभावना थी कि हमें माँ को अलविदा कहना पड़ सकता है।

हालाँकि मेरी निजी महत्वाकांक्षाओं के मुद्दे पर हमारी राय हमेशा एक जैसी नहीं होती थी, फिर भी मेरा परिवार मेरे लिए सब कुछ था। पहले मिशन चरण की शुरुआत से पहले ही मैंने अपनी पीठ पर चौदहों 8,000 मीटर ऊँची चोटियों का टैटू बनवा लिया था। मेरी रीढ़ की हड्डी के ऊपरी हिस्से से शुरू होकर, हर चोटी की चोटियाँ मेरे कंधों पर एक भव्य चित्र की तरह फैली हुई थीं। यह टैटू उन सभी चीज़ों का प्रतीक था जिन्हें मैं हासिल करना चाहता था, और इसके दर्दनाक निर्माण के दौरान, मेरे माता-पिता, भाई-बहनों और सुची का डीएनए स्याही में मिल गया था। मैं इस यात्रा में सभी को अपने साथ ले जाना चाहता था, उन जगहों पर जहाँ वे सामान्य रूप से कभी नहीं जा पाते।

मेरे माता-पिता दोनों सत्तर वर्ष से अधिक आयु के थे और चलने-फिरने में असमर्थ थे – उनके लिए माउंट एवरेस्ट की चोटी से पूरे हिमालय पर्वतमाला को देखना, अन्नपूर्णा की डच रिब या के2 के बॉटलनेक का अनुभव करना असंभव था। सुची और मेरे भाई-बहनों ने भी मेरे साथ पर्वतारोहण करने की कोई इच्छा नहीं जताई थी, लेकिन मैं उन्हें दुनिया के कुछ सबसे खूबसूरत और दुर्गम स्थानों पर ले जाना चाहता था, कम से कम आध्यात्मिक रूप से। वे मेरे साथ आत्मिक यात्रा पर निकल रहे थे।

उनके डीएनए को अपने डीएनए के साथ मिलाने का एक और कारण था: यह एक सचेत करने वाला सबक था, एक तर्कसंगत आवाज़ थी। पहाड़ों में सही और गलत के बीच का अंतर बहुत कम होता है। मैं जोखिम उठा सकता हूँ और खुद को या अपनी टीम के किसी सदस्य को चोट पहुँचा सकता हूँ। कई बार शिखर पर पहुँचने की तीव्र इच्छा मुझे हद से ज़्यादा ज़ोर लगाने पर

मजबूर कर देती है, जिससे बहादुरी और मूर्खता के बीच की पतली रेखा टूट जाती है। अपने परिवार को अपने कंधों पर लेकर, मैं लगातार उन लोगों को याद करता रहता था जिनके लिए मैं लड़ रहा था।

अब तक, इस व्यवहार ने मुझे विनम्र और सुरक्षित रखा था, जबकि मैं आसानी से लापरवाह हो सकता था। अगर कभी जोखिम लेने का मन करता, तो मुझे माँ और पिताजी याद आते: काम खत्म होने के बाद उन्हें मेरी देखभाल की ज़रूरत थी। मुझे याद आता था कि कैसे मेरे भाइयों ने अपनी गोरखा की तनख्वाह से मुझे बोर्डिंग स्कूल भेजा था। मैं अपने परिवार का ऋणी था; मैंने अब तक जो कुछ भी हासिल किया था, वह सब उन्हीं की बदौलत था।

माँ समझती थीं कि वही मेरी प्रेरणा थीं। ऐसा लगता था मानो वह जीवन से चिपकी हुई थीं, यह जानते हुए कि उनकी मृत्यु चौदह पर्वतों पर चढ़ाई पूरी करने के मेरे सपने को चकनाचूर कर देगी। हिंदू धर्म में, जब किसी माता-पिता का निधन होता है, तो परिवार तेरह दिनों तक शोक मनाता है, इस दौरान वे अकेले ही मातम मनाते हैं। भावनाओं को खुलकर व्यक्त किया जाता है, ताकि पीछे रह गए लोग अपने जीवन में आगे बढ़ सकें और इस गहरे दुख से उबर सकें; शोक की ऊर्जा को किसी रचनात्मक कार्य में लगाया जाता है।

अगर माँ का देहांत हो जाता, तो मुझे सबसे अलग होकर अकेले में समय बिताना पड़ता, दिन में सिर्फ़ एक बार खाना खाना पड़ता, और वो भी बस कुछ सब्ज़ियाँ ही खाने की इजाज़त होती। मैं धार्मिक नहीं था, लेकिन माँ थीं। मैं उनकी याद में यह रस्म खुशी-खुशी अदा करता, भले ही इसका मतलब साल के आखिरी तीन अभियानों को रद्द करना होता। लेकिन वो हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा मज़बूत थीं। दिल की एक जटिल सर्जरी के बाद भी वो बच गईं।

जब मैं मां के बिस्तर के पास बैठी, उनका हाथ पकड़े हुए, मैंने उन्हें आने वाले महीने के लिए अपनी योजनाओं के बारे में बताया।

मैंने कहा, 'मुझे बस तीन पहाड़ चढ़ने हैं। मुझे ये करने दो।'

उसने सिर हिलाया और मुस्कुराई। लेकिन उसे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी – मैं जानती थी कि माँ मेरे साथ है। वह हमेशा से मेरे साथ रही है।

महाकाव्य

अंततः, प्रगति हुई।

पूरे एक महीने की कागजी कार्रवाई और राजनीतिक दांव-पेच के बाद, सही कदम यही था कि मैं तीसरे चरण को यथासंभव आगे बढ़ाऊं, पहले मानसुलु पर्वतमाला पर चढ़ाई करूं और फिर उसके तुरंत बाद तिब्बत में चो ओयु पर्वतमाला के लिए रवाना हो जाऊं। इस बीच, चीनी और तिब्बती अधिकारी मुझे शिशपंगमा पर्वतमाला का परमिट देने के विचार पर सकारात्मक रुख अपना रहे थे।

चूंकि अभी तक किसी भी बात की पूरी तरह पुष्टि नहीं हुई थी, इसलिए मैं खबरों पर पूरी तरह भरोसा करने में हिचकिचा रहा था। इसलिए मैंने अपनी कोशिशें कम करने के बजाय, जन दबाव का एक छोटा सा अभियान जारी रखा, जिसमें मैंने अपने दोस्तों और सोशल मीडिया फॉलोअर्स को दोनों सरकारों को ईमेल और पत्र भेजकर पहाड़ को खोलने की गुहार लगाने के लिए प्रोत्साहित किया। उस क्षण के आने तक, मैंने अपना ध्यान मनास्लू पर केंद्रित किया, जहां मुझे अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता थी क्योंकि मैं अपने ग्राहकों के एक दल का नेतृत्व कर रहा था। नेपाल का यह 8,000 मीटर से अधिक ऊंचा पर्वत, जहां मृत्यु दर बहुत अधिक है, दुनिया के सबसे खतरनाक पर्वतों की सूची में उच्च स्थान पर था।

इस तरह के चिंताजनक आंकड़ों को लेकर परेशान होना मेरा काम नहीं था, लेकिन कैंप 2 तक के पहले रोटेशन चक्र शुरू होते ही, भावनात्मक रूप से थोड़ा अभिभूत महसूस करना स्वाभाविक हो गया। मैं मिशन पूरा करने के बेहद करीब था, लेकिन साथ ही सब कुछ गड़बड़ सा लग रहा था।

माँ की सेहत की हकीकत ने मुझे बहुत परेशान कर दिया था। तय समय और तरीके से आखिरी पहाड़ों पर चढ़ाई पूरी करने का दबाव भी मुझ पर बोझ था। और फिर मेरे करियर के फैसलों के आर्थिक पहलू भी थे – कोई तुरंत पेंशन नहीं, कोई सुरक्षा नहीं। वैसे, मैं किसी को भी अपने दर्द की गहराई नहीं बताना चाहता था। जब भी मनास्लू में दूसरे पर्वतारोही काम के बोझ के बारे में पूछते या अब तक के मेरे अनुभवों का ज़िक्र करते, तो मैं मानसिक चुनौतियों पर बात करने से बचता था। एक बार फिर, मैंने अपने दर्द को स्वीकार न करने का फैसला किया।

हालांकि यह रवैया दबाव से भरा हुआ था, लेकिन यह मेरे लिए काफी फायदेमंद साबित हुआ। मानसुलु में एक सप्ताह बिताने के बाद, बेस कैंप में एक अफवाह फैली: ऐसा लग रहा था कि चो

ओयु पर्वतमाला उम्मीद से पहले ही सीज़न के लिए बंद हो रही है और किसी कारणवश चीनी अधिकारियों ने फैसला किया है कि 1 अक्टूबर तक सभी को पहाड़ खाली कर देना चाहिए। मैंने अपना कैलेंडर देखा। धिक्कार है! सितंबर में केवल दो सप्ताह बचे थे और मेरे पास मानसुलु अभियान को बीच में ही रोकने के अलावा कोई चारा नहीं था।

मैंने कुछ हिसाब-किताब लगाया। शायद मेरे लिए चो ओयु पर्वत पर चढ़ना और फिर अपने ग्राहकों के साथ शिखर पर पहुंचने के लिए मनास्लू लौटना संभव था। मैं उन्हें किसी भी कीमत पर निराश नहीं करना चाहता था – मैंने उन्हें वचन दिया था कि मैं उनके साथ चढ़ाई करूंगा और मैं अपना वादा नहीं तोड़ सकता था। हालांकि, यह बहुत बड़ा प्रयास था; इससे दबाव बढ़ गया और मेरे पास गलती की गुंजाइश बहुत कम थी, इसलिए गेसमैन के साथ, मैंने अपना सामान पैक किया और हेलीकॉप्टर और सड़क मार्ग से तिब्बत के लिए रवाना हो गया। कई सीमा जांचों के बाद, मुझे प्रवेश की अनुमति मिल गई, जो अचानक एक अफरा-तफरी भरे अभियान में बदल गया था।

ज़मीन पर मैंने अथक परिश्रम किया। मेरा पहला काम चो ओयु की चोटी तक जल्द से जल्द पहुँचने का तरीका खोजना था, और मुझे पता चला कि रस्सियाँ लगाने वाली टीम केवल कैंप 2 तक ही पहुँच पाई थी। मैंने ऊपरी शिविरों में रस्सियाँ लगाने में मदद करने की पेशकश की, फिर हम अपने ऑक्सीजन सिलेंडर, तम्बू और रस्सी को घसीटते हुए कैंप 1 तक ले गए, और फिर वापस बेस पर आ गए जहाँ असली काम शुरू हो सकता था।

चो ओयु पर्वत पर चढ़ाई के लिए सीमित समय होने के कारण, कई पर्वतारोही दल पर्वत पर एकत्रित हो रहे थे, जिनमें मेरा मित्र मिंगमा शेरपा भी शामिल था। वह एक प्रभावशाली पर्वतारोही था और उसके अच्छे संपर्क थे। वह चीन तिब्बत पर्वतारोहण संघ (सीटीएमए) के कई उच्च-अधिकारियों के साथ बेस कैंप का दौरा करने की योजना बना रहा था। वह भी लगभग उसी समय चो ओयु पर्वत पर चढ़ाई करने की योजना बना रहा था, जिस समय हम कर रहे थे। मुझे लगा कि वह शिशापंगमा पर्वत पर मेरे परमिट आवेदन के लिए कुछ मदद कर सकता है। मौसम प्रणाली, पर्वतारोहण के प्रयासों और कार्यभार पर बैठकों के बीच, मैं उसे ढूंढने के लिए अलग-अलग टेंटों में घूमता रहा, लेकिन पता चला कि उसके आने की खबर थोड़ी गलत थी। अंततः मुझे पता चला कि मिंगमा शेरपा अभी तक नहीं पहुंचा था, लेकिन मैंने फिर भी एक संदेश छोड़ दिया, इस उम्मीद में कि अगर वह उपलब्ध हो तो बात कर सकूं।

दूसरी ओर, मैंने कुछ पर्वतारोहियों के बीच एक अजीब सा माहौल पनपता हुआ महसूस किया। अभियान गाइड कंपनियों के बीच कभी-कभी ईर्ष्या की भावना पनपने लगती थी। बाज़ार काफी छोटा था और ग्राहकों के लिए प्रतिस्पर्धा बेहद कड़ी और गलाकाट थी, खासकर कुछ कठिन और दूरदराज के पहाड़ों पर। जब कोई नई कंपनी मैदान में उतरती थी, तो कभी-कभी मौजूदा संगठनों में असंतोष पैदा हो जाता था, खासकर अगर उन्हें अनुभवी कर्मियों के साथ एक गंभीर खिलाड़ी माना जाता था।

मेरे मिशन की बदौलत, एलीट हिमालयन एडवेंचर्स – और इसके साथ ही मिंगमा, गेसमैन, गेलजेन, दावा और अन्य जैसे लोग – सबकी नज़रों में आने लगे थे। अगर मैं अपनी सूची में

शामिल आखिरी तीन 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर चढ़ने में कामयाब हो जाता, तो हमारी प्रतिष्ठा और भी बढ़ जाती। हम निश्चित रूप से इस क्षेत्र के शीर्ष पर्वतारोहियों में से एक बनने की कगार पर थे, लेकिन हमारी उपलब्धियों से हर कोई खुश नहीं था। एक दोपहर जब मैं शिखर पर चढ़ाई की तैयारी कर रहा था, तभी एक दूसरी गाइड कंपनी का मेरा एक दोस्त कुछ परेशान करने वाली अफवाहें लेकर मेरे टेंट में आया।

उन्होंने कहा, 'निम्स, नेपाली पर्वतारोहण समुदाय को आपकी उपलब्धियों पर बहुत गर्व है। आपका नाम हर जगह जाना जाता है और यह बहुत अच्छी बात है कि आप हमारी क्षमताओं को उजागर कर रहे हैं...'

मैं उस आदमी को अच्छी तरह जानता था, वह एक अच्छा इंसान था, लेकिन उसे मेरी चापलूसी करने की ज़रूरत नहीं थी। कुछ बुरा होने वाला था। मुझे यह एहसास हो गया था।

मेरे साथी ने बोलना जारी रखा। 'लेकिन सावधान रहना, क्योंकि कुछ लोग जो हो रहा है उससे बहुत ईर्ष्या करते हैं। वे बातें बनाते हैं। और एक धक्का ही काफी है, और तुम हमेशा के लिए पहाड़ से गायब हो जाओगे।'

बस यही था। चेतावनी।

किसी ने कोई टिप्पणी की थी, या तो मज़ाक में, या मुझे जान से मारने की किसी और खतरनाक साज़िश के तहत, और मेरा दोस्त यह जानकारी आगे पहुंचा रहा था। मैं खुद को शक्की तो नहीं कहूंगा, लेकिन भोला भी नहीं था। ऊँचाई पर लोगों के साथ अक्सर जानलेवा हादसे होते रहते थे, यहाँ तक कि बेहद अनुभवी पर्वतारोहियों के साथ भी। अगर रस्सी बांधने वाली टीम के एक-दो अजनबी, प्रतिद्वंद्वी गाइड, हमारी नज़रों के बिना गेसमैन और मुझे पहाड़ से धक्का देना चाहते थे, तो उन्हें यह कहने से कौन रोक सकता था कि हम फिसलकर गिर गए? यह बहाना पूरी तरह से विश्वसनीय था। जानबूझकर किए गए किसी भी संदेह को साबित करने के लिए बहुत कम सबूत होते। अगर यह साज़िश कुछ अकेले लोगों के बजाय एक साथ काम करने वाले समूह द्वारा रची गई होती, तो यह और भी पुख्ता होती।

भावनात्मक रूप से, इस खबर का मुझ पर कोई खास असर नहीं हुआ। कुछ लोग जलन के मारे शिविर में इधर-उधर बातें कर रहे थे। भला किसे परवाह थी? लेकिन इससे मुझे यह कड़वी सच्चाई याद आ गई कि हर किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थितियों में जहाँ पर्वतारोहियों के बीच विश्वास बेहद ज़रूरी होता है – जैसे कि खतरनाक परिस्थितियों में रस्सियों को ठीक करने वाली टीम के लिए – यह बात चिंताजनक थी। मैंने अपने दोस्त से कहा कि वह अभियान के दौरान मेरी मदद करे और जब बाद में शिविर 2 से हमारा काम शुरू हुआ, तो मैंने रस्सी का एक लंबा फंदा उठाया और एक ही झटके में चार सौ मीटर का रास्ता तय कर लिया।

धमाका! धमाका! धमाका! मैं तेज़ी से आगे बढ़ा। मेरा मकसद किसी बात को साबित करना या दूसरों को थकाना नहीं था। लेकिन अगर एलीट हिमालयन एडवेंचर्स की सफलताओं से लोग थोड़ा नाराज़ थे, तो उन्हें यह दिखाना ज़रूरी था कि हमारी प्रतिष्ठा क्यों मज़बूत हो रही है। 23 सितंबर को मैं गेसमैन के साथ शिखर की ओर चल पड़ा। हमारी मेहनत और रफ़्तार ही सब कुछ बयां कर देगी।

*

चो ओयु को सफलतापूर्वक फतह करने के बाद जश्न मनाने का समय नहीं था। जल्द से जल्द मनास्लू लौटना बेहद ज़रूरी था। मौसम अनुकूल नहीं था, इसलिए मैंने अपना सामान पैक किया और निकल पड़ा। अगर इस पूरे मिशन को मैराथन की तरह देखा जाए, तो मैं 22 मील के मुश्किल पड़ाव पर पहुँच चुका था, जहाँ बची हुई दूरी पहले की तरह ही चुनौतीपूर्ण लग रही थी, लेकिन ऐसा सिर्फ़ कूटनीतिक बाधाओं के कारण था। मुझे पता था कि चो ओयु पर चढ़ाई के लगभग चार दिन बाद मनास्लू पर चढ़ाई करने के बाद, मैं चौदह में से तेरह 8,000 मीटर ऊँची चोटियों पर चढ़ चुका होऊँगा, लेकिन मेरे प्रयासों के बावजूद शिशपंगमा अभी भी मेरी पहुँच से बहुत दूर लग रही थी।

क्या मैं अपना शुरू किया हुआ काम पूरा कर पाऊंगा?

अब बहुत सारे लोग मुझे देख रहे थे। उनमें से कई ने शुरू में मेरी इस मुकाम तक पहुँचने की संभावना को नकार दिया था। कई विशेषज्ञ पर्वतारोहियों को तो शक था कि मैं पाकिस्तान में भी टिक पाऊँगा, इसलिए शिशपंगमा के बिना भी 2019 में किए गए मेरे प्रयास सराहनीय थे। मेरे साथ पर्वतारोहियों के प्रयासों ने भी काफी ध्यान आकर्षित किया था, इसलिए इस लिहाज से देखा जाए तो मेरा काम पहले ही सफल हो चुका था। अब मुझे सिर्फ तीन काम करने थे।

पहली प्राथमिकता थी मानसुलु पर्वतमाला और आखिरी पर्वत, संभवतः शिशपंगमा, धौलागिरी और एवरेस्ट पर चढ़ाई पूरी करना, और फिर दूसरी प्राथमिकता के रूप में माता-पिता को एक बार फिर एक ही छत के नीचे लाना। तीसरी प्राथमिकता थी दुनिया का ध्यान उस नुकसान की ओर आकर्षित करना जो हम पर्यावरण को पहुंचा रहे थे। और पर्वतारोहण समुदाय की निगाहें मुझ पर टिकी होने के कारण, मैंने फैसला किया कि मानसुलु सिर्फ एक चोटी नहीं है जिसे सूची से हटा दिया जाए; यह मेरे लिए एक मंच की तरह था।

मैं बिल्कुल शिखर पर चढ़ गया और अपनी बात रखी।

'आज 27 सितंबर है,' मैंने कहा, जब गेसमैन मेरा वीडियो बना रहे थे। 'मैं मनास्लू की चोटी पर हूँ। हम प्रोजेक्ट पॉसिबल के बारे में बात नहीं करेंगे, लेकिन मैं यहाँ से पर्यावरण के बारे में बात करने जा रहा हूँ। पिछले एक दशक से, यह स्पष्ट है कि ग्लोबल वार्मिंग के संदर्भ में एक बड़ा और महत्वपूर्ण बदलाव आया है। बर्फ के पिघलने में भारी बदलाव आया है। एवरेस्ट पर खुंबू हिमपात: हर दिन ग्लेशियर पिघल रहा है, यह पतला और छोटा होता जा रहा है। पृथ्वी हमारा घर है। हमें इसके बारे में अधिक गंभीर, अधिक सतर्क और अपने ग्रह की देखभाल करने के तरीके पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अंततः, अगर यह पृथ्वी नहीं रहेगी, तो हमारा भी अस्तित्व नहीं रहेगा।'

मेरे भाषण के बारे में पहले से कुछ भी तय नहीं था। शब्द दिल से निकले थे, लेकिन वे दुनिया के प्रति मेरी भावनाओं का सबसे शुद्ध प्रतिबिंब थे। जहाँ तक मेरा सवाल है, आने वाले एक-दो दशकों में मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती जलवायु परिवर्तन की समस्या होगी, लेकिन इसे हल करने के लिए व्यापक स्तर पर बदलाव की आवश्यकता है। हम सभी इस विशाल ग्रह पर नगण्य कण हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि एक व्यक्ति के कार्यों में सबसे कठिन समस्याओं को

भी हल करने की क्षमता होती है।

अगर मैं सात महीनों में डेथ ज़ोन की पर्वत श्रृंखला पर चढ़ाई कर सकता हूँ - अंतिम चोटी तक पहुँचने में थोड़ा समय लग सकता है - तो पर्यावरण विज्ञान, वैकल्पिक ऊर्जा या जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में किसी अन्य व्यक्ति को अपना व्यक्तिगत एवरेस्ट खोजने और उस पर चढ़ाई करने से कौन रोक सकता है? मेरे प्रयासों ने यह साबित कर दिया था कि हर किसी में मानवीय रूप से संभव मानी जाने वाली सीमाओं से कहीं आगे जाने की क्षमता है। यह आशा की एक किरण बनकर उभरा था। अब मैं चाहता हूँ कि दूसरे लोग इसे अपने स्वयं के लक्ष्यों और परियोजनाओं के लिए सकारात्मक कार्य के रूप में उपयोग करें। अगर मेरे काम से बदलाव की एक चिंगारी भी पैदा होती है, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, तो मुझे खुशी होगी।

*

और फिर शिशपंगमा शुरू हो गया।

यह सब कब और क्यों हुआ, इसकी पूरी कहानी फोन कॉल, ईमेल और मुलाकातों का एक धुंधला सा सिलसिला है, जिसे पूरी तरह से याद करना मुश्किल है, लेकिन अंत में मेरे पक्ष में पलड़ा पलटने के लिए सिर्फ एक प्रयास ही काफी था। मिंगमा शेरपा। वह व्यक्ति जिससे मैं चो ओयु के बेस कैंप में लगभग संपर्क करने ही वाला था, उसे मेरे प्रयासों के बारे में पता चला और अंतिम शिखर तक पहुंचने के हर संभव रास्ते को तलाशने की मेरी लगन से वह प्रभावित हुआ। तिब्बत और नेपाल में, विनम्रता बहुत काम आती है।

चूंकि मुझे पहले चीनी पर्वतारोहण संघ (सीएमए) जैसे पर्वतारोहण अधिकारियों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था, और उन्होंने अभी तक आधिकारिक तौर पर अपना निर्णय वापस नहीं लिया था, इसलिए नाराज़ होना और शिकायत करना मेरा अधिकार था। इसके बजाय, मैंने मिंगमा शेरपा के माध्यम से विनम्रतापूर्वक उनसे पुनः संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया, क्योंकि मैं मित्रता में समानता का दृढ़ विश्वास रखता था: मेरा मानना था कि सभी के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए, जब तक कि उनका व्यवहार इसके विपरीत न हो। जब लोग मेरा मज़ाक उड़ाते थे, तो मैं उन्हें उनकी जगह दिखा देता था; यदि कोई दया दिखाता था, तो मैं भी वैसा ही व्यवहार करता था और सभी को सुधार का मौका मिलता था। किसी सामूहिक निर्णय के कारण अधिकारियों के प्रति द्वेष रखना मेरे आदर्शों के अनुरूप नहीं था।

मुझे परमिट मिलने की खबर सबसे पहले मनास्लू के बेस कैंप लौटने पर मिली। एक प्रभावशाली पर्वतारोही ने दावा किया कि उसने सुना है कि शिशपंगमा पर चढ़ने के लिए मेरा आवेदन स्वीकार हो गया है। उसने उत्साह से कहा, 'निम्सदाई, यह हो रहा है!' टीम के बाकी लोग जश्न मनाने के लिए बीयर पीने की बातें करने लगे, लेकिन मैं उनके उत्साह में शामिल नहीं हो सका। मुझे डर सता रहा था कि कहीं यह झूठी उम्मीद तो नहीं है।

मैंने सोचा, 'मुझे उत्साहित होने से पहले कागजात देखने होंगे।'

मुझे ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा। सीटीएमए ने मुझसे संपर्क किया; वे बातचीत करना चाहते थे और बातचीत सकारात्मक रही। मेरे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट की विशालता को ध्यान में

रखते हुए, यह तय किया गया कि शिशपंगमा को कुछ समय के लिए खोला जाए ताकि मैं अपना मिशन पूरा कर सकूँ। मैंने राहत की साँस ली। आखिरकार, सारी परेशानियों के बाद मंज़िल नज़दीक थी।

लेकिन एक पेंच था। मिंगमा शेरपा ने बताया कि पहाड़ तक पहुँचने के लिए उन्हें मेरे साथ बेस कैंप तक जाना होगा – यह सीटीएमए की एक शर्त थी। पहले तो मुझे थोड़ा संदेह हुआ। मुझे लगा कि कहीं यह मेरी मेहनत का फायदा उठाने की कोशिश न हो, या शायद सीटीएमए द्वारा खुद को प्रसिद्धि दिलाने का एक तरीका हो। अंत में, मैंने अपनी चिंताओं को किनारे रख दिया और एक सफल मिशन के संभावित सकारात्मक प्रभाव को याद किया।

अगर मिंगमा शेरपा का हमारे साथ बेस कैंप तक आना चौदह पर्वतों को पूरा करने और बिल्कुल आखिरी समय में चूकने के बीच का अंतर था, तो मुझे शिविर में एक अतिरिक्त व्यक्ति के होने की खुशी थी। कम से कम, वह टीम को कुछ अतिरिक्त श्रमशक्ति तो प्रदान कर ही देते, हालांकि बाद में मुझे लगा कि उनकी भागीदारी को लेकर मुझे इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं थी। मिंगमा शेरपा ने जल्द ही खुद को एक महत्वपूर्ण सदस्य साबित कर दिया। उन्होंने एक साथी के रूप में, अभियान के लिए एक संसाधन के रूप में और परियोजना के कुछ अधिक जटिल पहलुओं को सुलझाने वाले के रूप में काम किया। पता चला कि मिंगमा शेरपा तिब्बत में सबसे अधिक संपर्कों वाले व्यक्ति थे।

उसके आने के बावजूद, हर तरफ से दबाव बना रहा। प्रायोजकों के फोन आने लगे, वे जानना चाहते थे कि मैंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर और तस्वीरें क्यों नहीं डालीं या कोई खास हैशटैग क्यों नहीं लगाया। मेरे अक्ल के दांत में फिर से दर्द होने लगा था। लेकिन सबसे अहम समस्या पहाड़ के दखलंदाज़ संपर्क प्रबंधक की लग रही थी। जब हम मौसम की जाँच कर रहे थे और चढ़ाई के लिए सबसे अच्छी तारीख तय कर रहे थे, तभी उसने एक खतरनाक चेतावनी के साथ दखल दिया।

उन्होंने कहा, 'पहाड़ बहुत खतरनाक है। मौसम बहुत खराब है।'

वह सही कह रहा था; बर्फ़ तेज़ी से गिर रही थी, लेकिन मैंने इससे भी बदतर हालातों में चढ़ाई की थी। पहले तो मैंने मज़ाक करने की कोशिश की। 'कोई बात नहीं, भाई,' मैंने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा। 'मैं जोखिम आकलन का गुरु हूँ!'

संपर्क प्रबंधक ने सिर हिलाया। 'माफ़ कीजिए, लेकिन नहीं,' उन्होंने कहा। 'अगर आपको कुछ भी होता है, तो यह मेरी ज़िम्मेदारी होगी। और हिमस्खलन की समस्या भी है।'

मैंने सोचा, ‘वाह! यह बंदा तो वाकई बहुत मेहनत का काम साबित हो रहा है।’

अंत में, मैंने उसे अपनी ज़बरदस्त ताकत से झुका दिया। मैंने समझाया कि कैसे मैंने K2 पर उन रस्सियों को ठीक किया था जब कोई और चढ़ाई करने को तैयार नहीं था। 2017 में G200E के लिए मेरे प्रयासों का भी ज़िक्र हुआ, जब पूरी परियोजना अधर में लटकी हुई थी। इसके अलावा, मैंने कुल उन्नीस सफल 8,000 मीटर की चढ़ाई पूरी की थी; इनमें से तेरह 2019 में की गई थीं और मेरे नेतृत्व में पहाड़ पर किसी की भी मृत्यु नहीं हुई थी, उंगली या पैर की उंगली खोने की तो बात ही छोड़ दें।

जब मैंने अपनी बात रखी, तो अपनी निराशा को काबू में रखना मुश्किल लग रहा था, लेकिन मुझे पता था कि चिल्लाना हार के बराबर है, और इतने अहम मौके पर अपनी भावनाओं पर नियंत्रण खोना आगे चलकर भारी पड़ सकता है। आखिरकार, संपर्क अधिकारी पीछे हट गया; आखिरी बाधा नज़र आने लगी थी। शिखर पर चढ़ाई की पूर्व संध्या पर, मैं शिशपंगमा पर्वत के नीचे बैठा और अपने विचारों को इकट्ठा किया।

'निम्स, शांत रहो,' मैंने खुद से कहा। 'तुम यहाँ हो; तुम्हें बस ज़िंदा रहना है। जब तक ज़रूरी न हो, कोई भी अनावश्यक जोखिम मत उठाओ। सब कुछ नियंत्रण में रखो। शांत रहो; धैर्य रखो। जब तक तुम ज़िंदा घर नहीं लौट आते, मिशन पूरा नहीं होगा।'

मैंने शिशपंगमा की चोटी की ओर देखा। बादल छा गए थे, नीचे घाटी में गरज की एक भयानक गड़गड़ाहट गूंज रही थी, और जैसे ही मैंने देखा, सामने फैले विशाल दृश्य को देखकर विस्मयचकित होना नामुमकिन था। चाहे मौसम कितना भी उग्र क्यों न हो, शिशपंगमा जैसा पर्वत हमेशा अडिग रहता है। यह कभी झुकता या टूटता नहीं, बल्कि ऐसा लगता है मानो इसके चारों ओर मंडरा रही कठोर परिस्थितियों का इस पर कोई असर ही न हो। मैं भी वैसा ही बनना चाहता था।

मुझे पता था कि उस समय शिशपंगमा की खूबियों और कमियों का आकलन करना व्यर्थ था, क्योंकि सामने खड़ी विशाल चोटी मेरा आकलन नहीं करने वाली थी। इसके बजाय, मुझे प्रेरणा का एक प्रवाह महसूस हुआ। अगर मैं पर्वत की आत्मा को अपने भीतर समाहित कर लूँ, दर्द, तनाव और भय से अप्रभावित हो जाऊँ, तो मुझे कोई नहीं रोक सकता। रात को आराम करने से पहले, मैंने शिशपंगमा से एक-दो आखिरी सवाल पूछे।

ठीक है, क्या आप मुझे ऐसा करने देंगे?

क्या मैं कर सकता हूँ? या क्या मैं नहीं कर सकता?

जवाब बर्फ के साथ उड़कर आया।

*

चढ़ाई के दौरान मौसम बेहद खराब था। ऐसा लग रहा था मानो पहाड़ मुझे अंतिम चढ़ाई से रोकना चाहता हो, या कम से कम यह जानना चाहता हो कि क्या मैं वाकई इस काम को पूरा करने के योग्य हूँ। 90 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाएँ मिंगमा डेविड, गेलजेन और मुझे पहाड़ पर चढ़ते हुए, निचले शिविरों से गुज़रते हुए, रास्ते में रस्सियों और लंगरों को ठीक करते हुए, बुरी तरह से प्रभावित कर रही थीं, लेकिन कोई भी चीज़ मुझे रोक नहीं सकी, हालाँकि हिमस्खलन बाल-बाल बचा। हम कैंप 1 की ओर बढ़ रहे थे और कुछ पलों के लिए, जब टीम आराम कर रही थी, मैंने अपने बैग से ड्रोन निकाला। शिशपंगमा पर चढ़ाई करना निस्संदेह एक बड़ी उपलब्धि थी। मिशन के अंत के रूप में यह भावनात्मक होने वाला था और मैं अंतिम अभियान के ज़्यादा से ज़्यादा पलों को कैमरे में कैद करना चाहता था। जब हवाएँ थोड़ी शांत हुईं, तो मैंने ड्रोन को हवा में उड़ाया और टीम को पहाड़ पर एक छोटी सी कतार में चढ़ते हुए फिल्माया।

अचानक, ज़मीन कांप उठी। मैं शायद बाकियों से पाँच-दस मिनट पीछे था, और जब मैंने ऊपर देखा, तो पाया कि बर्फ की एक मोटी परत उनके ठीक नीचे टूट गई थी। धीरे-धीरे वह पहाड़ से अलग हो रही थी। हिमस्खलन का कारण स्पष्ट नहीं था, लेकिन जैसे ही वह झटके से शिशपंगमा की ढलान से नीचे गिरने लगा, मैं अनजाने में उसका हिस्सा बन गया। असल में, मैं बर्फ पर फिसल रहा था और उसकी शक्ति का विरोध करने का कोई फायदा नहीं था।

मैंने ऊपर देखा, मानो पहाड़ों के देवता ही मेरा भाग्य तय कर रहे हों। ढलान पर फिसलते हुए, मेरे चारों ओर ज़मीन टूट रही थी। पल भर में, बर्फ़ ने मेरे शरीर को पूरी तरह निगल लिया और फिर मुझे बाहर निकाल दिया। जैसे ही मैं नीचे खींचे जाने और हमेशा के लिए दम घुटने के लिए तैयार हुआ, दुनिया थम सी गई। मैंने नीचे देखा। हिमस्खलन मेरे नीचे से तेज़ी से बह रहा था, चट्टानों पर बिखर रहा था और एक सफ़ेद मशरूम के आकार का बादल बना रहा था। लेकिन जिस बर्फ़ पर मैं खड़ा था, वह किसी तरह रुक गई थी। देवताओं ने मेरी जान बचा ली थी।

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा, भाई,' मैं हँसते हुए बोला। 'तुम इतनी दूर तक आए और पिछले अभियान में लगभग मर ही गए थे।'

उसके बाद से ड्रोन बैग में ही पड़ा रहा।

पाकिस्तान में गिरने के बाद से मेरा आत्मविश्वास धीरे-धीरे लौट रहा था। गाशेरब्रुम प्रथम की चोटी पर लड़खड़ाने के बाद, पहाड़ के निचले हिस्से में भयानक परिस्थितियों में रात गुजारना काफी मददगार साबित हुआ। लगभग दो सौ अन्य पर्वतारोहियों के हार मानने के बावजूद के2 पर आखिरी रस्सी को ठीक करना भी मेरे लिए एक मानसिक प्रोत्साहन था। शारीरिक रूप से पूरी तरह थक जाने के बावजूद ब्रॉड पीक पर चढ़ाई करने के दर्द ने मुश्किल परिस्थितियों से निपटने में मेरी दृढ़ता को और भी मजबूत कर दिया।

इसमें कोई शक नहीं था कि नांगा पर्वत पर मुझे मानसिक आघात लगा था, लेकिन मैं उससे उबरने और आगे बढ़ने में कामयाब रहा था। जब मैं वापस उस जगह की ओर बढ़ रहा था जहाँ मिंगमा और गेलजेन मेरा इंतज़ार कर रहे थे, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि एक और जानलेवा अनुभव के भावनात्मक झटके मुझ पर असर नहीं डाल रहे थे। लेकिन उस समय तक, इतने कम समय में लगभग चौदह 8,000 मीटर ऊँची चोटियों पर चढ़ाई करने के बाद, मेरे क्रैम्पोन मेरे शरीर से जुड़ गए थे; मेरी बर्फ की कुल्हाड़ी मेरे शरीर का एक अतिरिक्त अंग बन गई थी। मिशन के उस चरण तक, जब भी मैं अपने इन उपकरणों से अलग होता था, तो मुझे अक्सर थोड़ा असुरक्षित महसूस होता था, जैसा कि युद्ध में बहुत ही कम मौकों पर मेरे साथ हुआ था जब मैं अपने हथियार के बिना था।

शिशपंगमा की चोटी तक पहुंचने के लिए, हमने एक नया रास्ता चुना, क्योंकि हमें अल्पाइन शैली में चढ़ाई करने का पूरा भरोसा था। ढलान काफी आसान थी और कैंप 2 से आगे बढ़ते ही मौसम भी काफी शांत हो गया। जब हमारे चारों ओर बादल छंट गए, तो हवाएं थम सी गईं और सब कुछ शांत हो गया। मैं भी शांत था। शिशपंगमा की चढ़ाई का आखिरी आधा हिस्सा एक धीमी और स्थिर यात्रा में बदल गया, और हालांकि इसमें तकनीकी चढ़ाई की ज्यादा जरूरत नहीं थी, लेकिन शिखर पर पहुंचते ही भावनात्मक रूप से काफी मेहनत का बोझ महसूस हुआ।

आखिरकार, यह हो गया।

उस क्षण तक मैंने जो कुछ भी हासिल किया था, वह सब मुझे स्पष्ट होने लगा। मैंने छह महीने और छह दिनों में दुनिया के चौदह सबसे ऊंचे पहाड़ों पर चढ़कर संदेह करने वालों को चुप करा दिया था। मैंने कल्पना और दृढ़ संकल्प से क्या हासिल किया जा सकता है, यह दिखाया था, साथ ही पृथ्वी और उसके लोगों के सामने मौजूद कुछ चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला था।

मैंने असंभव को संभव कर दिखाया था।

दूर से मुझे एवरेस्ट दिखाई दिया, वह जगह जहाँ से सब कुछ शुरू हुआ था, और इतने लंबे समय से दबी हुई भावनाएँ एक साथ उमड़ पड़ीं: गर्व, खुशी और प्यार। मैंने सुची, अपने दोस्तों और परिवार के बारे में सोचा। सबसे ज़्यादा मुझे माँ और पिताजी की याद आई। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।

एक तरह से, यह मिशन खोज की एक प्रक्रिया थी – न केवल उन पहाड़ों पर जिनकी मैं खोज कर रहा था, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी। चौदह 8,000 मीटर से ऊँची चोटियों पर चढ़कर, मैं यह समझने की कोशिश कर रहा था कि आखिर मैं कौन हूँ; मैं यह जानना चाहता था कि मेरी शारीरिक और भावनात्मक सीमाएँ कहाँ तक फैली हुई हैं।

मुझे लंबे समय से पता था कि मुझमें एक असाधारण दृढ़ संकल्प है। जब मैं स्कूल में बच्चा था, तो मैंने अपने जिले का सर्वश्रेष्ठ धावक बनने के लिए कड़ी मेहनत की। बाद में, जब मुझे एहसास हुआ कि गोरखा सैनिक बनना सम्मानजनक माना जाता है, तो मैंने उनकी सेना में शामिल होने के लिए अपना सब कुछ झोंक दिया। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि केवल सेवा करना ही काफी नहीं है और मुझे इससे भी आगे जाना होगा। जब मुझे ब्रिटिश स्पेशल फोर्सेज द्वारा किए जाने वाले कार्यों और उनकी सेना में शामिल होने के लिए आवश्यक कठिन परिश्रम के बारे में पता चला, तो मैंने तब तक चैन नहीं लिया जब तक कि मेरा चयन नहीं हो गया।

यह इच्छा वास्तव में कहाँ से आई, मुझे ठीक से नहीं पता, लेकिन यह बचपन से ही स्पष्ट थी। चितवन में एक छोटे लड़के के रूप में, मैं घंटों तक नदी में पत्थरों को पलटता रहता था, केकड़ों और झींगों की तलाश में, और मैं तब तक नहीं रुकता था जब तक कि मैं हर एक के नीचे झाँक न लूँ, चाहे काम पूरा करने में कितना भी समय या मेहनत लगे। तीस साल बीत गए और कुछ खास नहीं बदला था। मेरा जज़्बा अभी भी वही था, बस परिस्थितियाँ बदल गई थीं, और स्थानीय नदी की खोज करने के बजाय, मैं 'डेथ ज़ोन' को पार कर रहा था। उस उपलब्धि को लगभग हासिल कर लेने के बाद, मैं पहले से ही उससे आगे की कल्पना करने लगा था।

मुझे और चाहिए था। लेकिन अब मैं आगे कहाँ जा सकता था?

शिशपंगमा की चोटी पर खड़े होकर मैंने चारों ओर के नज़ारे का आनंद लिया और अपने चेहरे पर कड़ाके की ठंड महसूस की। फिर मैंने घर फोन करके माँ को अपनी उपलब्धि और आगे की योजना के बारे में बताया।

मैंने फोन पर चिल्लाते हुए कहा, 'मैंने कर दिखाया! और मैं ठीक हूँ।'

फोन में हल्की सी आवाज आ रही थी, लेकिन मुझे उसकी हंसी मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

'बेटा, सुरक्षित घर पहुंच जाना,' उसने कहा। 'मैं तुमसे प्यार करती हूं।'

उपसंहार

चरम पर

मैंने जो उपलब्धि हासिल की थी, उसकी विशालता का एहसास मुझे कई दिनों तक नहीं हुआ। अगली सुबह, हैंगओवर के साथ, मैं सीमा पार करके नेपाल वापस लौटा, जहाँ मेरा और मेरी टीम का ज़बरदस्त स्वागत हुआ – जैसे ऊँचाई वाले पर्वतारोहण के विशेषज्ञ बल। मेरी रिकॉर्ड तोड़ उपलब्धियों की खबर हर जगह फैल चुकी थी।

मैंने न सिर्फ दुनिया की चौदह सबसे ऊंची चोटियों पर चढ़ाई करके विश्व रिकॉर्ड को सात साल से भी ज्यादा समय से तोड़ दिया, बल्कि एवरेस्ट से ल्होत्से और फिर मकालू तक की चढ़ाई का सबसे तेज समय भी दर्ज किया। पाकिस्तान की चोटियों पर मैंने तेईस दिनों में चढ़ाई कर ली थी, और एवरेस्ट, के2, कंचनजंगा, ल्होत्से और मकालू की पांच सबसे ऊंची चोटियों पर सत्तर दिनों में चढ़ाई कर ली थी, जबकि मैंने इसे अस्सी दिनों में पूरा करने की अपनी महत्वाकांक्षा की घोषणा की थी। इसके अलावा, मैंने एक ही मौसम (वसंत) में सबसे अधिक 8,000 मीटर ऊंची चोटियों पर चढ़ाई करके रिकॉर्ड बनाया, अन्नपूर्णा, धौलागिरी, कंचनजंगा, एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू पर इकत्तीस दिनों में चढ़ाई की। यह मिशन एक जबरदस्त सफलता थी। इसने सबको चकित कर दिया था।

मैंने माँ को फिर से फोन किया। काठमांडू में एक पार्टी का आयोजन हो रहा था और उनकी हालत के बावजूद, डॉक्टरों ने मुझे आश्वासन दिया था कि वे यात्रा करने के लिए पूरी तरह स्वस्थ हैं, इसलिए मैंने उन्हें जश्न मनाने के लिए हेलीकॉप्टर की सवारी पर मेरे साथ चलने का सुझाव दिया। पहले तो उन्हें यकीन नहीं हुआ। मैंने उन्हें बताया कि वे मेरे लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं, और यह मिशन मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है।

मैंने कहा, 'मैं चाहता हूं कि तुम इसका हिस्सा बनो।'

अंततः उसने कहा, 'हां, मैं आना चाहती हूं।'

जब हम काठमांडू त्रिभुवन हवाई अड्डे पर पहुँचे, तो नज़ारा अद्भुत था। एक मार्चिंग बैंड बज रहा था, दर्जनों फोटोग्राफर और पत्रकार आ चुके थे और हवाई अड्डे के चारों ओर भारी भीड़ जमा थी। मुझे यह सब समझ में नहीं आ रहा था। उस समय, मुझे लगता है कि माँ मेरी पर्वतारोहण को एक पागलपन भरा शौक, एक जोखिम भरा प्रोजेक्ट मानती थीं, जो मुझे खुशी देता था। उन्होंने एक पल के लिए भी नहीं सोचा था कि मेरे काम को व्यापक दुनिया देख रही है, कम से

कम बड़े पैमाने पर तो नहीं, लेकिन भीड़ और मेरी सफलताओं के आसपास के धूमधाम को देखकर उन्हें सच्चाई का एहसास हो गया।

जैसे ही हेलीकॉप्टर के घूमने वाले ब्लेड हमारे ऊपर धीमे हुए, एक सफेद रेंज रोवर गाड़ी हमारे सामने आकर रुकी, जिसके बोनट पर ग्रेट ब्रिटेन और नेपाल के झंडे लगे हुए थे। नेपाल में ब्रिटिश राजदूत रिचर्ड मॉरिस बाहर निकले और हाथ मिलाने के बाद उन्होंने मेरे प्रयासों के लिए मुझे धन्यवाद दिया।

उन्होंने कहा, 'हमें तुम पर बहुत गर्व है। तुमने जो हासिल किया है वह अविश्वसनीय है।'

जब अंततः हमें शहर से होते हुए एक स्वागत समारोह में ले जाया गया, तो भीड़ हर जगह हमारा पीछा करती रही।

लेकिन अभी भी बहुत काम करना बाकी था।

चौदह पर्वतों पर चढ़ाई पूरी होने के बाद के महीनों में, मैंने माँ और पिताजी को एक साथ लाने के लिए हर संभव प्रयास किया। नेपाल के एक बैंक से ऋण लिया और परिवार से भी पैसे उधार लिए। दूसरी ओर, एलीट हिमालयन एडवेंचर्स ने कई सफल अभियान चलाए। 8,000 मीटर की ऊँचाई पर मेरी सफलता के बाद, इन गाइड सेवाओं की बहुत मांग थी, साथ ही मेरे प्रेरक भाषणों की भी। आर्थिक लाभ से मैंने काठमांडू में एक अच्छा घर खरीदा जो मेरे माता-पिता दोनों के लिए उपयुक्त था।

उनके नए घर में आने को लेकर हम बहुत उत्साहित थे, इसलिए हमने 2020 की शुरुआत में कागजी कार्रवाई पूरी कर ली और पिताजी को चितवन के पुराने घर से नए पारिवारिक घर में स्थानांतरित करने की तैयारी में जुट गए। 25 फरवरी को सुची और मैं उन्हें मिलाने के लिए नेपाल गए, लेकिन जैसे ही हम उतरे, फोन की घंटी बज उठी। बहुत देर हो चुकी थी। माँ का कुछ घंटे पहले ही देहांत हो गया था और मेरा दिल टूट गया – मैंने जो कुछ भी हासिल किया था, वह सब उनकी प्रेरणा से ही संभव हो पाया था।

हिंदू शोक समारोह के दर्द से गुज़रते हुए मुझे आत्मचिंतन और विकास का अवसर मिला, और तेरह दिन बाद जब मैं इस दौर से बाहर निकला, तो मैंने सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया और अपने दुख को एक शक्तिशाली ऊर्जा में बदल दिया। अपने परिवार के प्यार और समर्थन के कारण ही मैं अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर पाया और दुनिया को यह साबित कर पाया कि मानव जाति द्वारा पहले से निर्धारित किसी भी अपेक्षा को पार करना संभव है।

इस बीच, शुरुआत में कई लोगों ने मेरी महत्वाकांक्षाओं का मजाक उड़ाया था, लेकिन जब मेरा मिशन पूरा हो गया, तो मुझे पता चला कि कई कुलीन पर्वतारोही एक या दो के बजाय साल में कई 8,000 मीटर ऊंची चोटियों पर चढ़ाई कर रहे थे। जो कुछ हासिल किया जा सकता था, उसकी सीमाएं विस्तृत हो गई थीं और मुझे इस बात पर बहुत गर्व हुआ।

यह जानकर बहुत खुशी हुई कि नेपाली शेरपा गाइड की प्रतिष्ठा भी बढ़ गई थी। मेरे साथ चढ़ाई करने वाले साथियों को सम्मान की नज़र से देखा जा रहा था। उन्हें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पर्वतारोहियों में गिना जाने लगा था, और यह बिल्कुल सही था: हम एक अपेक्षाकृत छोटी अभियान इकाई के रूप में, तीन, चार या पाँच लोगों की टीमों में काम करते थे, लेकिन हम दस

सांडों की ताकत और सौ आदमियों के हौसले के साथ आगे बढ़ते थे। वे उन सभी पुरस्कारों के हकदार थे जो उनका इंतजार कर रहे थे और उनकी कड़ी मेहनत को श्रद्धांजलि के रूप में, मैंने शिशपंगमा पर्वत पर अपने नए मार्ग को एक नाम दिया: प्रोजेक्ट पॉसिबल रूट।

सबसे महत्वपूर्ण बात जो मुझे समझ में आई, वह यह थी कि चौदह चोटियों पर विजय प्राप्त करना एक शुरुआती कदम था। मुझे और भी कुछ चाहिए था... लेकिन क्या?

पहाड़ तो चढ़ाई के लिए ही बने हैं; मुझे बस यह चुनना है कि किन पहाड़ों पर चढ़ना है और किस शैली में चढ़ना है। गति, शैली और शारीरिक शक्ति के आधार पर चुनौतियाँ हैं जिन पर विजय प्राप्त करनी है – मैं अपने लिए जो भी चुनौतियाँ तय करूँ, उनकी कोई सीमा नहीं है। उन मिशनों को पूरा करने की कोशिश में मेरी जान जाने की संभावना निश्चित रूप से पहले के किसी भी जोखिम से कहीं अधिक है, लेकिन असली बात तो यही है: मुझे अपनी सीमाओं को चरम सीमा तक ले जाना है। चुपचाप बैठे रहना, इंतज़ार करना और अतीत में जीना, ये कभी भी मेरी आदत नहीं रही है।

मैं एक बार फिर दुनिया के सबसे ऊंचे शिखर पर होना चाहता हूं, यह जानते हुए कि यह किसी भी क्षण मेरे पैरों तले से फिसल सकता है।

क्योंकि जीने और मरने का यही एकमात्र तरीका है।

परिशिष्ट एक

डेथ ज़ोन से सबक

1. नेतृत्व हमेशा आपकी इच्छाओं के बारे में नहीं होता।

मिशन के पहले चरण में धौलागिरी के बेस कैंप तक पहुँचने के बाद, यह स्पष्ट था कि मेरी टीम के कुछ जवान बुरी तरह थक चुके थे। शारीरिक रूप से वे बुरी तरह टूट चुके थे; उनका मनोबल पूरी तरह से बिखर चुका था। हालाँकि मैं अन्नपूर्णा पर्वत पर चढ़ाई करके और एक तनावपूर्ण खोज एवं बचाव अभियान चलाकर पूरी तरह से स्वस्थ महसूस कर रहा था, फिर भी मुझे पता था कि आगे बढ़ते रहना और दूसरों को उनकी सीमाओं तक धकेलना बुद्धिमानी भरा कदम नहीं होगा। इसके बजाय, मैंने टीम के हित में जो सबसे अच्छा था, वही सोचा।

समूह में अपनी गति से काम करना आसान होता है, खासकर अगर आप समूह में सबसे तेज़ या सबसे ताकतवर हों, लेकिन आपके आस-पास के लोग जल्द ही आप पर से भरोसा खो देंगे। वे आपको स्वार्थी, हद से ज़्यादा महत्वाकांक्षी और थोड़ा घमंडी समझेंगे। आम राय यही होगी कि आपको किसी और की परवाह नहीं है और टीम की मेहनत फीकी पड़ जाएगी। जब आपको अपने साथियों से दोबारा आगे आने की ज़रूरत होगी, तो वे कोई कदम नहीं उठाएंगे।

उस स्थिति में लोगों को नाराज़ करने के बजाय, खुद को उनकी जगह रखकर देखें। यह पता लगाएं कि आप कैसे समझौता कर सकते हैं: क्या ऐसा कोई तरीका संभव है जिससे सभी को फायदा हो? इस मामले में, मैंने टीम को थोड़ा आराम और विश्राम के लिए ले लिया। हाँ, इसके परिणामस्वरूप कुछ दिनों बाद हमें कुछ बेहद कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ा, लेकिन उस एक कदम ने टीम को यह संदेश दिया कि मिशन सिर्फ मेरे बारे में नहीं था।

परिणामस्वरूप, उन्होंने अगले छह महीनों तक इस उद्देश्य के लिए जी तोड़ मेहनत की।

2. बड़ी-बड़ी पहाड़ियों पर छोटी-छोटी चीजें ही सबसे ज्यादा मायने रखती हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, मैंने 8,000 मीटर से अधिक ऊँची चोटियों पर चढ़ाई करते समय अपने काम को आसान बनाने के लिए कुछ तकनीकें विकसित की हैं, और इनमें से एक सबसे महत्वपूर्ण

तकनीक मेरी साँस लेने से संबंधित है। जब भी मैं ऊँचाई पर होता हूँ, मैं एक बफ़ पहनता हूँ - यह मेरे चेहरे को धूप और कड़ाके की ठंड से बचाता है - लेकिन इसे पहनने पर मेरी साँस की नमी से मेरे गॉगल्स या धूप के चश्मे पर धुंध जम जाती है।

इससे उबरने के लिए मैंने सांस लेने और छोड़ने का तरीका बदल दिया। होंठों को सिकोड़कर, मैं नाक से हवा अंदर लेता हूँ और फिर गॉगल्स से दूर नीचे की ओर हवा छोड़ता हूँ। ठंडी हवा बफ़ के अंदर आती है, जिससे वह हल्का गर्म हो जाता है और शून्य से नीचे के तापमान में मेरे फेफड़ों को ठंड से बचाता है। यह सुनने में मामूली लग सकता है, लेकिन यह एक तकनीक मेरे शरीर को हाइपोथर्मिया से बचाती है, क्योंकि अंदर ली जाने वाली हवा उतनी ठंडी नहीं होती। यह मेरी उंगलियों को फ्रॉस्टबाइट से भी बचाती है, क्योंकि मुझे सफाई के कपड़े तक पहुँचने के लिए अपने दस्ताने उतारने की ज़रूरत नहीं पड़ती। (वैसे, 8,000 मीटर से ऊपर यह सब करना बेहद थका देने वाला होता है।)

छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना बड़े लक्ष्य को पूरा करने में सहायक होता है। आपके लिए, इसका मतलब किसी अनुबंध की बारीकियों को जानना हो सकता है ताकि आप काम पर किसी सौदे में सफल हो सकें, या यह जानना कि 10 किलोमीटर की दौड़ के लिए सही जूते खरीदने से छाले नहीं पड़ते। ठीक उसी तरह जैसे सांस लेने की सही तकनीक, ऊर्जा स्रोतों का सटीक ज्ञान, या बर्फ काटने की कुल्हाड़ी को हमेशा पास रखना, मुझे 8,000 मीटर की चढ़ाई पर तनाव से बचाता है।

3. आगे आने वाली चुनौतियों को कभी कम मत आंकिए।

मैंने पहली बार 2015 में किसी पर्वतारोहण को कम आंकने से जुड़े खतरों के बारे में जाना, लेकिन वह सबक मुझे बहुत मुश्किल से सीखने को मिला। एक शुरुआती पर्वतारोही के रूप में, जो अभी भी अनुभव प्राप्त कर रहा था, मैंने एंडीज पर्वतमाला के अर्जेंटीना क्षेत्र में स्थित एकोनकागुआ पर्वत पर चढ़ाई की। यह पर्वत सात चोटियों में से एक है, एक प्रतिष्ठित चोटी है, और हालांकि यह 8,000 मीटर की चोटी नहीं है, फिर भी 6,961 मीटर की ऊंचाई पर यह उच्च ऊंचाई की एक चुनौतीपूर्ण परीक्षा है।

डेथ ज़ोन में काम करने की महत्वाकांक्षा रखने वाले पर्वतारोही अक्सर एकोनकागुआ को अपनी क्षमता के शुरुआती परीक्षण के रूप में इस्तेमाल करते हैं, और चूंकि यह नीचे से ऊपर तक की एक यात्रा है, और शिखर तक पहुंचने के लिए रस्सी के कौशल की कोई आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए बहुत से लोग इसे अपेक्षाकृत सौम्य मानते हैं।

मेरा रवैया तो यही था। कुछ पर्वतारोहण गाइड और पत्रिकाओं को सरसरी तौर पर देखने और अकोनकागुआ की चोटी पर चढ़ते बच्चों और बुजुर्ग जोड़ों की ढेरों तस्वीरें देखने के बाद, मेरा रवैया थोड़ा उदासीन था। आखिर यह कितना मुश्किल हो सकता है? धौलागिरी और लूचे ईस्ट की अपनी यात्राओं के दौरान बने मेरे दोस्तों को लगता था कि अकोनकागुआ मेरे लिए बहुत आसान होगा।

एक ने कहा, 'तुम कमाल कर दोगे। एक दिन में बेस कैंप तक पहुंच जाओगे। फिर शिखर तक

पहुंचने में एक-दो दिन लगाओगे और वापस आ जाओगे। कोई परेशानी नहीं होगी।'

मुझे अपनी क्षमता पर इतना भरोसा था, और एकोनकागुआ के शांत स्वभाव पर भी, कि मैंने अपने अभियान के लिए पर्वतारोहण सूट पैक करने की ज़हमत ही नहीं उठाई। मैं गर्मियों के महीनों में यात्रा कर रहा था, साल की शुरुआत में जब दक्षिणी गोलार्ध में मौसम काफी गर्म होता है। सामान की बात करें तो, मुझे लगता है कि मैंने कुछ हाइकिंग ट्राउज़र, एक वाटरप्रूफ कोट और एक जोड़ी पहाड़ी जूते पैक किए थे। लेकिन जैसे ही मैं पेनीटेंटेस में राष्ट्रीय उद्यान में दाखिल हुआ, बर्फ गिरने लगी।

एकोनकागुआ एक दूरस्थ पर्वत है, बेस कैंप तक पहुँचने में ग्यारह घंटे की यात्रा लगी, और चूंकि मैं अकेला यात्रा कर रहा था, इसलिए मुझे वहाँ पहुँचने के लिए अपने नक्शे और कंपास का उपयोग करना पड़ा, क्योंकि ऊपर जाने वाले रास्ते भारी बर्फ से ढक गए थे। जब मैं अंततः बेस कैंप पहुँचा और पर्वत पर मौजूद अन्य पर्वतारोहियों से मिला, तो माहौल निराशाजनक था। कई लोगों ने शिखर तक पहुँचने का प्रयास किया था, लेकिन मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण उन्हें वापस लौटना पड़ा था।

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ माउंटेन गाइड्स के एक मित्र ने कहा, 'वहां ऊपर बहुत खतरा है। हिमस्खलन का खतरा बहुत अधिक है और मौसम बेहद ठंडा है।'

मुझे लगा कि मैं बेहतर जानता हूँ। एक दूसरे पर्वतारोही से कुछ बूट लेकर, जो मेरे साथ लाए बूटों से कहीं अधिक मजबूत थे, और एक डाउन जैकेट उधार लेकर, मैं शिखर की ओर बढ़ गया, मौसम मेरे चारों ओर तेज़ी से घिर रहा था। जो ट्रेक काफी आसान होना चाहिए था, वह 8,000 मीटर ऊँची चोटी पर मेरी पहली चढ़ाई जितना ही कठिन हो गया, और शिखर से केवल 300 मीटर दूर, मैं हार मानने के कगार पर पहुँच गया था।

मेरी नज़र धुंधली हो गई। ऑक्सीजन के बिना चढ़ाई करने और ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के कारण, मुझे लगा जैसे मैं बेहोश हो जाऊँगा। एक कुशल पर्वतारोही बनने की मेरी सारी उम्मीदें दांव पर लग गईं। धिक्कार है निम्स, अगर तुम यहाँ शिखर तक नहीं पहुँच सकते, तो एवरेस्ट पर चढ़ने की उम्मीद कैसे कर सकते हो? मैं बुरी तरह हिल गया था।

मैंने अपने थर्मस फ्लास्क से एक घूंट लिया और एक चॉकलेट बार खोला।

आपमें बहुत तेजी से ऊपर चढ़ने की क्षमता है। इसका उपयोग करें।

शिखर की ओर बढ़ते हुए, मैं वापस मुड़ने के लिए बेताब था, क्योंकि मैंने ऊँचाई पर एक और सबक सीख लिया था: जिस पहाड़ पर आप चढ़ने वाले हैं, उसे कभी कम मत आंकिए - चाहे दूसरे लोग इसे कितना भी आसान क्यों न समझें।

और एक और बात: आत्मविश्वास रखें, लेकिन सम्मान भी दिखाएं।

उसके बाद से, मैंने हर अभियान पर पूरी सावधानी बरती। मैंने आगे आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को तैयार किया और खुद से कहा कि अगर मैंने सावधानी नहीं बरती, तो कोई भी पहाड़ मेरा आखिरी पहाड़ साबित हो सकता है। लापरवाही बरतने के परिणामों को याद दिलाने के लिए, मैंने मिशन के दूसरे चरण के दौरान गाशेरब्रुम प्रथम को कुछ समय के लिए कम आंका और इसका मुझे भारी नुकसान उठाना पड़ा।

आप जो भी कर रहे हों, अपनी चुनौती का सम्मानपूर्वक सामना करें। इससे आपको किसी भी अप्रिय आश्चर्य से बचने में मदद मिलेगी।

4. आशा ही ईश्वर है।

भाई, सिर्फ़ कल्पना करने से तुम्हारा सपना पूरा नहीं होगा। लेकिन अगर तुम उसे अपना परम लक्ष्य या ईश्वर बना लो और पूरी तरह से उसमें लीन हो जाओ, तो मुमकिन है कि वो तुम्हें मिल जाए।

बचपन में, ज़िला चैंपियनशिप में दूसरे स्कूल के धावक से हारने पर मुझे इतना गुस्सा आया कि मैं रात के अंधेरे में छुपकर अभ्यास करने लगा। मैंने यही रवैया गोरखाओं में भी अपनाया। अगर प्रशिक्षण में हमें तीस किलोमीटर दौड़ना होता था, तो मैं अंत में बीस किलोमीटर और दौड़ लेता था ताकि खुद को और ज़्यादा चुनौती दे सकूँ, क्योंकि मैं स्पेशल फोर्सेस में जाना चाहता था। यह काम मेरे लिए धर्म बन गया था और मैंने अपना सारा प्रयास इसी में लगा दिया था।

इसलिए, अपने अगले प्रोजेक्ट या चुनौती के बारे में सोचने, प्रार्थना करने और इंतजार करने (और उसे न करने) के बजाय, गंभीर कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध हों।

5. किसी व्यक्ति का असली स्वभाव जीवन-मरण की स्थितियों में ही सामने आता है।

बहुत से सैनिक बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। सेना अड्डे पर वे बड़े नायकों की तरह व्यवहार करते हैं, उन गोलीबारी के बारे में बढ़-चढ़कर बातें करते हैं जिनमें वे शामिल हुए हों या न हुए हों। लेकिन जैसे ही असल में लड़ाई शुरू होती है, जब गोलियां चलने लगती हैं और उनके आसपास लोग मारे जाने लगते हैं, तो वे या तो कोने में छिप जाते हैं या घबरा जाते हैं।

पहाड़ों पर भी यही रवैया देखने को मिलता है। बेस कैंप में, जब मौसम सुहावना और धूप वाला होता है, तो पर्वतारोही सेल्फी लेते हैं और मौज-मस्ती करते हुए पहाड़ पर विजय पाने की बातें करते हैं। लेकिन जैसे ही मौसम खराब होता है और ध्यान केंद्रित रखना और अनुशासन बनाए रखना ज़रूरी हो जाता है, वे घबरा जाते हैं। तब उनका असली रूप सामने आता है: वे स्वार्थी हो जाते हैं, काम में ढिलाई बरतते हैं और कभी-कभी दूसरों की सुरक्षा की परवाह नहीं करते।

जब हालात खराब हों, तब किसी व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

6. किसी भयावह स्थिति को सकारात्मक चीज़ में बदलें।

एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू की अपनी पहली चढ़ाई के दौरान, पहाड़ पर मेरी ऑक्सीजन चोरी हो गई थी। मैंने कई कैंपों में सिलेंडर छोड़ने का अनुरोध किया था, लेकिन जैसे ही मैं हर कैंप में पहुँचा, पता चला कि सारे सिलेंडर चोरी हो चुके थे। पहले तो मुझे बहुत गुस्सा आया, जो उस

परिस्थिति में स्वाभाविक था, लेकिन शांत रहना ज़रूरी था। इसे खोने से मेरी ऊर्जा बर्बाद हो सकती थी और शायद इसी प्रक्रिया में मुझे ऑक्सीजन एक्यूट ऑक्सीजन एक्यूटी (HACE) हो जाती। जैसा कि मैंने पाठ 2 में बताया था, बड़े पहाड़ों पर छोटी-छोटी बातें बहुत मायने रखती हैं। एक नकारात्मक प्रतिक्रिया, जैसे कि थोड़ा सा गुस्सा, बाद में अभियान में मुझे बहुत भारी पड़ सकती थी।

मैं शांत हो गया और मानसिक रूप से स्थिति को अपने पक्ष में मोड़ लिया। अपने गुस्से में डूबे रहने के बजाय, मैंने खुद से कहा कि हवा उस व्यक्ति को मिली है जिसे इसकी मुझसे ज़्यादा ज़रूरत थी।

मैंने मन ही मन सोचा, 'शायद किसी को ऊंचाई पर होने वाली गंभीर बीमारी हो गई हो और उसे खुद को बचाने के लिए मेरे सिलेंडरों की जरूरत पड़ी हो,' हालांकि मुझे पता था कि यह शायद सच नहीं था। 'अगर ऐसा है, तो ठीक है।'

हाँ, यह एक तरह से झूठ ही था – हालाँकि यह पाठ 8 में बताए गए झूठ से बिल्कुल अलग था। फिर भी, यह आत्मरक्षा का एक महत्वपूर्ण उपाय था। अगर मैं अपनी साँसें रुकने की वजह से उदास होकर शिकायत करता रहता, तो मैं अपनी कीमती ऊर्जा बर्बाद कर देता, जबकि मुझे आगे के मिशन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए था।

8,000 मीटर की ऊंचाई पर जीवित रहने का एकमात्र तरीका सकारात्मक सोच रखना है। आत्म-दया में डूबे रहने से कोई भी मौत को धोखा नहीं दे सकता।

7. वर्तमान क्षण को अपना शत प्रतिशत दें...

...क्योंकि यही तुम्हारे पास सब कुछ है।

चयन प्रक्रिया के दौरान कई बार ऐसा हुआ जब मेरे सामने बेहद कठिन काम का कार्यक्रम रखा गया था: हफ़्तों तक चलने वाले अभ्यास, मार्च और प्रतिकूल परिस्थितियों में कसरत, जहाँ मुझे अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ती थी। इतने भारी कार्यभार से घबरा जाना या इस बात से तनावग्रस्त हो जाना आसान था कि पहले दिन की तीस मील की दौड़ मुझे दूसरे दिन की और भी लंबी दौड़ के लिए थका देगी। लेकिन मैंने अपना सब कुछ उस काम में लगा दिया और कल की चिंता करने का फैसला किया। किसी भी चुनौती का सामना करने का यही एकमात्र तरीका था।

चौदह डेथ ज़ोन चोटियों पर चढ़ाई करने के मेरे मिशन में भी यही रवैया लागू होता था। पहाड़ पर चढ़ते समय, मैं अगली चढ़ाई के बारे में न सोचने की पूरी कोशिश करता था, क्योंकि मुझे पता था कि अगर मैंने सामने मौजूद चुनौती से नज़र हटाई तो शायद मैं उसे पूरा न कर पाऊँ। K2 पर चढ़ाई करते समय ब्रॉड पीक पर ध्यान केंद्रित करने से मेरा ध्यान भटक जाता। और ऊर्जा बचाकर रखना भी व्यर्थ था। मुझे उस दिन अपना पूरा ज़ोर लगाना था, क्योंकि मुझे पता था कि अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो इसके क्या परिणाम होंगे।

कल शायद न आए।

8. कभी झूठ मत बोलो। कभी बहाने मत बनाओ।

कई बार ऐसा हुआ जब मैं पहाड़ पर कुछ शॉर्टकट अपना सकता था। 2017 में जी200ई के बाद, जब निशाल ने मुझे नामचे बाज़ार से मकालू के कैंप 2 तक हेलीकॉप्टर से जाने का प्रस्ताव दिया, तो मैंने मना कर दिया। उनकी मदद से मैं एक ही पर्वतारोहण सत्र में एवरेस्ट पर दो बार, ल्होत्से और मकालू पर चढ़ने वाला पहला व्यक्ति बन जाता, लेकिन यह सही ढंग से नहीं हो पाता। बेशक, निशाल के अलावा दुनिया में किसी को पता नहीं चलता। लेकिन मुझे यह बात जीवन भर याद रखनी पड़ती।

बहाने बनाना आसान है। हो सकता है आप धूम्रपान या शराब छोड़ने की कोशिश कर रहे हों। एक घूंट भर बीयर या सिगरेट का एक कश, इन सब बातों को नज़रअंदाज़ करना आसान लगता है। लेकिन ऐसा नहीं है। खुद से झूठ बोलकर आप अपने लक्ष्य को नाकामयाबी की ओर धकेल रहे हैं। झूठ बोलना या अपनी लापरवाही भरी हरकतों के लिए बहाने बनाना, खुद से किया वादा तोड़ने जैसा है। एक बार ऐसा करने पर आप बार-बार गलतियाँ करते रहेंगे।

उदाहरण के लिए, मेरे लिए K2 पर चढ़ाई का विचार छोड़ देना बहुत आसान होता, क्योंकि बहुत से लोगों ने कोशिश की थी और असफल रहे थे। अगर मैंने धन की कमी के कारण परियोजना छोड़ दी होती, तो कोई मुझे दोष नहीं देता, लेकिन मैं किसी भी कीमत पर इस तरह के बहाने से इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकता था।

अगर मैं कहूँ कि मैं एक घंटे दौड़ूँगा, तो मैं पूरे एक घंटे दौड़ूँगा। अगर मैं एक ट्रेनिंग सेशन में तीन सौ पुश-अप्स करने का प्लान बनाऊँ, तो मैं तब तक नहीं रुकूँगा जब तक सारे पुश-अप्स पूरे न हो जाएँ। क्योंकि मेहनत को नज़रअंदाज़ करना खुद को निराश करना है और मैं ऐसा नहीं जीना चाहता।

और आपको भी ऐसा नहीं करना चाहिए।

परिशिष्ट दो

चौदह पर्वत: कार्यक्रम

[illegible] (मीटर में)	[illegible]
Annapurna I	2019
Dhaulagiri I	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019
[illegible]	2019

परिशिष्ट तीन

विश्व रिकॉर्ड

8,000 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले सभी चौदह पर्वतों पर चढ़ने का सबसे तेज समय।
छह महीने, छह दिन।

एवरेस्ट की चोटी से ल्होत्से की चोटी और मकालू की चोटी तक पहुंचने का सबसे कम समय।
अड़तालीस घंटे और तीस मिनट।

विश्व की पांच सबसे ऊंची पर्वत चोटियों - कंचनजंगा, एवरेस्ट, ल्होत्से, मकालू और के2 - पर चढ़ने का सबसे तेज समय।
सत्तर दिन।

पाकिस्तान की सभी पांच 8,000 मीटर से अधिक ऊंची चोटियों (के2, नंगा परबत, ब्रॉड पीक, जीआई और जीआईआई) पर चढ़ने का सबसे तेज समय।
तेईस दिन।

एक ही मौसम (वसंत) के दौरान सबसे अधिक 8,000 मीटर की चोटियाँ (छह): अन्नपूर्णा, धौलागिरी, कंचनजंगा, एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू।
इकत्तीस दिन।

स्वीकृतियाँ

इस तरह की किताब लिखते समय, प्रोजेक्ट पॉसिबल को साकार करने में मदद करने वाले सभी लोगों को याद रखना मुश्किल होता है, इसलिए मैं यहाँ अपनी पूरी कोशिश करूँगा। उम्मीद है, मैं किसी को भूल नहीं जाऊँगा।

मेरे अभियान के प्रायोजकों के समर्थन के बिना, प्रोजेक्ट पॉसिबल कभी संभव नहीं हो पाता। धन्यवाद की सूची में सबसे ऊपर ब्रेमोंट का नाम है, जिन्होंने प्रोजेक्ट पॉसिबल घड़ियों की एक श्रृंखला बनाई है (जो उनकी वेबसाइट पर खरीदने के लिए उपलब्ध है) और वित्तीय बाधाओं को दूर करने में मेरी मदद की, जिससे मेरा सपना साकार होने से रुक सकता था। इसके अलावा, SILXO, Osprey, Ant Middleton, DIGI2AL, Hama Steel, Summit Oxygen, OMNIRISC, The Royal Hotel, Intergage, AD Construction Group, Branding Science, AMTC Group, Everence, Thrudark, Kenya Air, KGH Group, Marriott Kathmandu और Premier Insurance को भी हार्दिक धन्यवाद।

इस मिशन के लिए रसद संबंधी सहायता एलीट हिमालयन एडवेंचर्स, सेवन समिट ट्रेक्स और क्लाइम्बालाया द्वारा प्रदान की गई थी। हालाँकि बेस कैंप के ऊपर अधिकांश फिल्मांकन मैंने और मेरी टीम ने किया, लेकिन मेरी कहानी पर बनने वाली आगामी फिल्म के लिए सागर गुरुंग, अलीत गुरुंग और सैंड्रो ग्रोमेन-हेस का भी सहयोग मिला, जो के2 बेस कैंप में मेरे साथ शामिल हुए और मेरे साथ मनास्लू पर्वत पर चढ़ाई की। मैं नोआ मीडिया ग्रुप में घंटों के फुटेज को एक साथ जोड़ने के लिए कड़ी मेहनत करने वाले सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ, विशेष रूप से टॉरकिल जोन्स और बैरी को, और परिचय कराने के लिए मार्क वेबर को भी धन्यवाद। लेकिन इस मिशन में एसबीएसए और राजदूत दुर्गा सुबेदी, और नेपाल के कई प्रमुख व्यक्तियों से भी मदद मिली: नेपाल पर्यटन बोर्ड, नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल, नेपाल के उप रक्षा मंत्री ईश्वर पोखरेल, आईजीपी शैलेंद्र खनाल और यति ग्रुप के सोनम शेरपा। ब्रिगेडियर डैन रीव्स को उनकी सभी सहायता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

यूके में, एक प्रशासनिक टीम ने मेरे जनसंपर्क प्रबंधन और 8,000 मीटर ऊँची चोटी पर चढ़ाई के दौरान आने वाली अन्य सभी रसद संबंधी समस्याओं को सुलझाने में मेरी मदद की। सबसे बढ़कर, इसमें मेरी सहयोगी पत्नी सुची और प्रोजेक्ट पॉसिबल के सहायकों - वेंडी फॉक्स, स्टीव और टिफ़नी कुरेन, ल्यूक हिल और किशोर राणा का योगदान रहा। अन्नपूर्णा (हाकॉन अश्वंग और रूपर्ट जोन्स-वार्नर), नंगा पर्वत (स्टेफी ट्रोगेट) और मनास्लू (स्टीव डेविस, एमी मैककुलोच, ग्लेन

मैकक्रोरी, दीया पुन और स्टेफी ट्रोगेट) पर मेरे साथ शामिल हुए सभी ग्राहकों का भी धन्यवाद। साथ ही, दुनिया भर से गोफंडमी पर मिशन के लिए दान करने वाले और सामान खरीदकर परियोजना का समर्थन करने वाले सभी लोगों का भी धन्यवाद। कई संगठनों ने मेरी इस यात्रा में मेरी मदद की, और मैं उन सभी का बहुत आभारी हूं, लेकिन मेरा विशेष आभार नेपाली पर्वतारोहण समुदाय, मेरे शेरपा भाइयों और गोरखा एवं नेपाली समुदायों के प्रति है: म्याग्दी संगठन यूके, मदत शमुहा, मगर एसोसिएशन यूके, फ्रेंडली ब्रदर्स दाना सेरोफेरो कम्युनिटी यूके, पुन मगर समाज यूके, पुन मगर सोसाइटी हांगकांग, पेलकाचौर और चिमेकी गौले समाज यूके, तामु प्ये लहू संघ यूके और मेडस्टोन गोरखा नेपाली समुदाय।

2017 में एवरेस्ट, ल्होत्से और मकालू की विश्व रिकॉर्ड तोड़ने वाली चढ़ाई में मेरी टीम के सदस्यों का भी उल्लेख करना जरूरी है: लकपा शेरपा, जांगबू शेरपा, हालुंग दोरची शेरपा और मिंगमा दोरची शेरपा।

मेरे परिवार के बिना यह सब संभव नहीं होता। मेरे माता-पिता ने बचपन में मेरी साहसिक प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया और मुझे पहाड़ों पर जाने की अनुमति दी, जब मैंने उनसे वादा किया था कि मैं उन्हें एक छत के नीचे एकजुट रखूंगा। मेरे भाइयों कमल, जीत और गंगा और मेरी बहन अनीता ने मुझे गोरखाओं में शामिल होकर एक नेक जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया और सेना के अंदर और बाहर मेरे कई दोस्त हैं, जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं: स्टैज़, लुई, पॉल डाउबनर, गैज़ बैनफोर्ड, लुईस फिलिप्स, सीपी लिंबू, क्रिस सिल्वन, रमेश सिलवाल, खड़का गुरुंग, सुभाष राय, गोविंदा राणा, थानेश्वर गुरंगई, पीटर कनिंघम, श्रंखला खतिवाड़ा, डैन, बिजय लिंबू, मीरा आचार्य, स्टुअर्ट हिगिंस, फिल मेसी, रूपर्ट स्वैलो, अल मैक, ग्रेग विलियम्स, मिंगमा शेरपा, डैनी राय, धन चंद, शेप, ताशी शेरपा, सोभित गौचन और गुलाम।

अंत में, हॉडर एंड स्टॉटन के सभी लोगों, विशेष रूप से रूपर्ट लैंकास्टर, कैमरून मायर्स, कैटरियोना हॉर्न और रेबेका मुंडी की कड़ी मेहनत के बिना यह पुस्तक संभव नहीं हो पाती। द ब्लेयर पार्टनरशिप के मेरे एजेंट नील ब्लेयर और रॉरी स्कार्फ का भी धन्यवाद। और अंत में, मैं अपने मित्र और भाई मैट एलन को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने मेरी कहानी को लिखने में अपना दिल और दिमाग लगा दिया। उनकी मदद (दिल से) के बिना यह पुस्तक संभव नहीं थी।

Nirmal Purja, 2020

चित्र आभार

लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक में चित्रों को पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति देने के लिए निम्नलिखित कॉपीराइट धारकों को धन्यवाद देना चाहते हैं:

गंगा बहादुर पुरजा: 1, 2 (ऊपर बाएँ)। अज्ञात फोटोग्राफर: 2 (ऊपर दाएँ, नीचे)। शेरपा कुली, नाम अज्ञात: 3, 5 (नीचे)। पासांग शेरपा: 4 (ऊपर, मध्य), 5 (मध्य)। एलुन रिचर्डसन: 4 (नीचे), 5 (ऊपर)। शेरपा G200E मरम्मत टीम, नाम अज्ञात: 6। निर्मल पुरजा: 7 (ऊपर)। निर्मल पुरजा/प्रोजेक्ट पॉसिबल: 7 (मध्य, नीचे), 9 (ऊपर, मध्य), 10 (मध्य), 14 (ऊपर), 16 (नीचे)। गेलजेन शेरपा/प्रोजेक्ट पॉसिबल: 8 (ऊपर), 10 (नीचे), 11 (नीचे)। गेसमैन तमांग/प्रोजेक्ट पॉसिबल: 8 (नीचे), 14 (नीचे)। लक्पा डेंडी शेरपा/प्रोजेक्ट पॉसिबल: 9 (नीचे), 13 (नीचे)। सोनम शेरपा/प्रोजेक्ट पॉसिबल: 10 (ऊपर)। मिंगमा डेविड शेरपा/प्रोजेक्ट पॉसिबल: 11 (ऊपर), 12, 16 (ऊपर)। सैंड्रो ग्रोमेन-हेज़/प्रोजेक्ट पॉसिबल: 13 (ऊपर), 14 (मध्य), 15।

लेखक और प्रकाशक ने कॉपीराइट धारकों से अनुमति प्राप्त करने के लिए सभी उचित प्रयास किए हैं और क्रेडिट देने में किसी भी चूक या त्रुटि के लिए क्षमा चाहते हैं। भविष्य के संस्करणों में सुधार किए जा सकते हैं।

फुटनोट

FN1 शेरपा नाम का अर्थ दो चीजें हैं: (1) यह नेपाल का एक स्वदेशी समूह है, लेकिन (2) यह विदेशी खोजकर्ताओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले हिमालयी पर्वतीय गाइड के लिए एक बोलचाल या सामान्य शब्द भी है।

FN2 पर्वतारोही आमतौर पर 8,000 मीटर ऊँची चोटियों पर कुछ महीने बिताते हैं। कुछ हफ्तों के अंतराल में, पर्वतारोही बेस कैंप से कैंप 1 तक जाते हैं ताकि ऊँचाई के हानिकारक प्रभावों के अभ्यस्त हो सकें। फिर वे कैंप 1, 2 और 3 के बीच आते-जाते रहते हैं, दिन में ऊँचाई पर चढ़ते हैं और रात में नीचे सोते हैं, जब तक कि तीव्र पर्वतीय रोग (AMS) के लक्षण, जैसे मतली, सांस फूलना और तेज सिरदर्द, कम नहीं हो जाते। इन चढ़ाइयों को 'अनुकूलन चक्र' कहा जाता है। ऊँचाई पर स्थिर होने के बाद, वे धैर्यपूर्वक, कभी-कभी हफ्तों तक, शिखर पर चढ़ने के लिए उपयुक्त मौसम का इंतजार करते हैं, जब मौसम चढ़ाई के लिए अनुकूल माना जाता है। फिर वे शिखर की ओर बढ़ते हैं।

FN3 में मैंने पर्वतारोहण की विभिन्न शैलियों के बारे में भी सीखा। धौलागिरी पर हमने एक फिक्सिंग टीम के साथ काम किया, जो एंकरों की मदद से पहाड़ पर रस्सियाँ लगाती थी। पर्वतारोही उन रस्सियों का उपयोग करके खड़ी ढलानों और खड़ी चट्टानों पर शिखर तक पहुँचते थे। अल्पाइन शैली के पर्वतारोहण में एक टीम सुरक्षा के लिए एक साथ बंधी रहती है और तेज़ी से इलाके में आगे बढ़ती है। यदि समूह में से कोई फिसल जाता या गिर जाता, तो बाकी लोग उसे गिरने से बचाने के लिए मजबूती से पकड़ लेते थे। अंत में, जहाँ तक मेरा मानना था, एकल पर्वतारोहण में एक पर्वतारोही को अकेले ही शिखर की ओर बढ़ना होता है, और अपने रास्ते पर खुद ही आगे बढ़ते हुए चढ़ाई करनी होती है।

FN4 सेराक हिमनदों पर दरारों के बीच पाई जाने वाली बर्फ की एक चोटी या ब्लॉक होती है, जो आमतौर पर खड़ी ढलान पर स्थित होती है। आमतौर पर इनका आकार एक घर जितना या उससे भी बड़ा होता है, और ये पर्वतारोहियों के लिए बहुत खतरनाक होती हैं, क्योंकि ये बिना किसी चेतावनी के गिर सकती हैं और हिमस्खलन का कारण बन सकती हैं।

FN5: ऊँचाई पर चढ़ाई की बारीकियों से अपरिचित लोगों के लिए, निश्चित रेखाएँ रस्सियों से बने मार्ग होते हैं जिन्हें सीज़न की शुरुआत में एक नामित टीम द्वारा स्थापित किया जाता है। ये अभियान दल को पूरे सीज़न के दौरान खड़ी ढलानों पर अधिक आसानी से चढ़ने में मदद करते हैं।

FN6 HACE का मतलब हाई एल्टीट्यूड सेरेब्रल एडिमा है, जो एक गंभीर और संभावित रूप से घातक चिकित्सीय स्थिति है जिसमें मस्तिष्क में तरल पदार्थ भर जाने से सूजन आ जाती है, जिससे भ्रम, अनाड़ीपन और लड़खड़ाने जैसी समस्याएं होती हैं।

FN7 एवरेस्ट और ल्होत्से के लिए साउथ कोल मार्ग पर बेस कैंप से कैंप 3 तक साझा शिविर हैं। कैंप 3 के बाद, दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत पर चढ़ाई करने की इच्छा रखने वाला पर्वतारोही साउथ कोल के पार बाईं ओर एवरेस्ट के कैंप 4 की ओर जाता है। ल्होत्से पर चढ़ाई करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति सीधे ऊपर की ओर बढ़ता है। मकालू साझा बेस कैंप से हेलीकॉप्टर द्वारा पहुंचा जा सकता था।

पहले, लोग अपने अनुकूलन चक्रों को बहुत अलग-अलग तरीकों से आयोजित करते थे। अभियान दल कैंप 1 तक चढ़ाई करते, वहाँ रात बिताते और फिर बेस कैंप तक उतरते। अगली चढ़ाई में, समूह कैंप 1 और 2 तक जाता, रात बिताता और फिर वापस नीचे उतरता। अंत में, अपने तीसरे चक्र के लिए, कैंप 2 तक जाना, आराम करना और फिर कैंप 3 तक चढ़ाई करके बेस कैंप लौटना सबसे अच्छा माना जाता था। पिछले कुछ वर्षों से, यह अधिक प्रभावी माना जाता है कि पर्वतारोही केवल एक अनुकूलन चक्र पूरा करने के बाद शिखर पर पहुँच जाए, कैंपों से तेजी से गुजरते हुए कैंप 1 और 2 में रात बिताए और फिर कैंप 3 तक पहुँच जाए। यह रणनीति पर्वतारोही के जीवन के खतरे को भी कम करती है, क्योंकि उन्हें बार-बार बेहद खतरनाक खुंबू आइसफॉल से नहीं गुजरना पड़ता। यह विधि उन पर्वतारोहियों पर लागू होती है जो बोतलबंद ऑक्सीजन का उपयोग करते हैं।

FN9 रस्सी बिछाने की प्रक्रिया, अनुकूलन की तरह, एक अभियान के लिए रस्सियाँ बिछाने हेतु कई बार चढ़ाई करने की आवश्यकता होती है, कभी-कभी तो शिखर तक भी जाना पड़ता है। इस कार्य के लिए नियुक्त टीम में आमतौर पर उस समय पर्वत पर मौजूद सर्वश्रेष्ठ पर्वतारोही शामिल होते हैं, लेकिन यह काम कठिन होता है और इलाके, मौसम की स्थिति और इसमें शामिल पर्वतारोहियों के आधार पर इसे पूरा होने में कई सप्ताह लग सकते हैं।

मैंने FN10 के तहत पहाड़ पर बने ऊंचे शिविरों में ऑक्सीजन की व्यवस्था की थी। यह अनुकूलन के दौरों और सामान ढोने वाली चढ़ाइयों के दौरान किया गया था, जहां ऑक्सीजन जैसे उपकरण मिशन में बाद में उपयोग के लिए छोड़ दिए जाते थे। बड़े अभियान दल शिखर पर चढ़ाई के दौरान शायद ही कभी अपना सारा उपकरण साथ ले जाते हैं।

मुझे अपने करियर को अपने जुनून के साथ जोड़ने का विचार पसंद आया और इसलिए मैंने दिसंबर 2017 में एलीट हिमालयन एडवेंचर्स की स्थापना की। 2018 में समूह ने ग्राहकों - विशेषज्ञ पर्वतारोहियों, जिन्होंने कुशल गाइडों की एक टीम द्वारा निर्देशित होने के लिए भुगतान किया - को 8,000 मीटर की चोटियों के शिखर तक ले जाना शुरू किया।

FN12 कई मायनों में, गुमनाम रहकर काम करना मेरे लिए बहुत अच्छा रहता। समस्या यह थी कि आर्थिक रूप से मुझे बिल्कुल शुरुआत से शुरू करना था। पैसा जुटाने के लिए मुझे स्पॉन्सरशिप की ज़रूरत थी। स्पॉन्सरशिप हासिल करने के लिए मुझे पहाड़ पर और उससे दूर काम करते हुए एक तरह का प्रदर्शन करना पड़ता।

FN13 यहाँ विज्ञान की बात है। युद्ध में आपातकालीन निकासी (CASEVAC) के मामले में, चिकित्सकों के पास एक 'स्वर्ण घंटा' होता है - वह समय सीमा जिसके भीतर घायल सैनिक को युद्धक्षेत्र से अस्पताल पहुँचाया जा सकता है। इस समय के भीतर उन्हें निकालने से घायल के जीवित रहने की संभावना बढ़ जाती है, हालांकि, निश्चित रूप से, गोली के घाव या चोट की गंभीरता के अनुसार संभावनाएँ बदलती रहती हैं। ऊँचाई के मामले में, समय महत्वपूर्ण है, लेकिन ऊँचाई अत्यंत महत्वपूर्ण है: जैसे ही आप घायल को नीचे लाना शुरू करते हैं, उनके शरीर में अधिक हवा पहुँचती है, और रक्त प्रवाह, साँस और हृदय गति सामान्य होने लगती है, जिससे महत्वपूर्ण अंगों को मदद मिलती है। जीवित रहने के लिए केवल ऑक्सीजन ही सहायक नहीं है। वायुमंडल के भार (बैरोमेट्रिक दबाव) को बढ़ाना भी अनिवार्य है और हवा की तरह यह भी ऊँचाई पर कम हो जाता है। यही कारण है कि कुछ पर्वतारोही ऊँचे शिविरों में ऑक्सीजन दिए जाने के बावजूद भी मर गए हैं।

FN14 इस तरह चढ़ाई करते समय, अगर हममें से कोई फिसलकर गिर जाता, तो बाकी साथियों को ज़मीन पर लेटकर अपनी बर्फ की कुल्हाड़ियों को बर्फ में गाड़ना पड़ता। यह तरीका इसलिए अपनाया गया था ताकि कोई भी पहाड़ से नीचे न गिर जाए।

Hanging out with Mum and Dad at Kathmandu International Airport. The three of us were waving off my older brother Ganga who was returning to the UK with the Gurkhas.

With one of my other brothers, Jit. This was taken in the jungle village of Dana.

Getting myself battle-primed for the trials of Gurkha Selection.

All the pull-ups and sit-ups couldn't break me. I was ready for the Gurkhas.

Working hard in the desert. The work was relentless but rewarding.

My first-ever serious climb took place on Lobuche. Just getting used to the feel of the crampons was a new experience.

Once I'd made it to the top of Lobuche, I knew I wanted to climb more and more mountains.

Taking on a fearsome ladder crossing over a crevasse in the Khumbu Icefall during my first expedition on Everest.

Waiting at the South Col on Everest for my summit push to the world's highest point.

Delivering a ladder crossing demonstration to the lads on the G200E in 2017.

Camp One on Everest with the G200E. Politics and pressure would shape an eventful expedition.

When the line-fixing team was unable to set the lines above Everest's high camps, I finished the job with a team of Gurkha and Sherpa brothers.

Job done. Against all odds my line-fixing team made it to the top of Everest.

Making the impossible possible.

Everest in 2017 was no joke. The snow seemed to ricochet off my summit suit like tiny bullets.

The challenging Dutch Rib on Annapurna. Despite the difficulty, this was the safest line to the top.

Search and rescue: bringing down Dr Chin from Annapurna.

After five gruelling days on Dhaulagiri we made it to the top, unbroken.

The conditions were so bad on Dhaulagiri the snow seemed to strike us like bullets.

Mingma, Gesman and myself attempt to rescue Biplab from Kanchenjunga.

With one photo I captured the chaos that sometimes kicks off on Everest.

Making it to the peak of Lhotse on May 22nd, 2019, shortly after summiting Everest.

Geljen works his way towards the end of the French Couloir on Makalu.

Hope is God: at the summit of Makalu.

By strength and guile I made it to the top of Nanga Parbat, despite a near-death fall.

Trailblazing like a badass.

This picture was taken at the shared base camp of Gasherbrum I and Gasherbrum II. You can clearly see the tattoo on my back. The ink is mixed with my family's DNA.

Working my way to the top of Gasherbrum II. The views in the Death Zone can be mind-bending.

The expedition brothers having completed the line fixing effort on K2, with Dawa, K2 basecamp manager, also included. From left: Lakpa Dendi Sherpa, Mingma David Sherpa, Geljen Sherpa, Nims, Dawa Sherpa, Halung Dorchi Sherpa, and Gesman Tamang.

Just 200 metres short of K2's summit, I was about to complete a task many people had believed was beyond me.

Lifting my knees through the powder on the Broad Peak summit push.

With Mum, my inspiration. Following the completion of the mission, she met me at the Nepal-Tibet border.

Opening up the route to Cho Oyu's peak.

Manaslu
Base Camp.

I was leading a team of clients to the top while climbing one of the final mountains of the mission. Guiding has become my passion.

On Shishapangma I opened up a new line to the summit:
The Project Possible Route.

Job done. The team descends Shishapangma, having climbed the fourteen Death Zone peaks in six months and six days.

***** *****

sjeet